## आधुनिक हिंदी कविता

**प्रश्न पत्र : Care Course**
**(DSC-IC)**
**HIND202**

**Credits : 06**
**पूर्णांक :100 ( आई.सी.डी.ई.ओ.एल. एवं प्राईवेट परीक्षार्थी )**
**पूर्णांक : 70 ( रेगुलर परीक्षार्थी )**
**आन्तरिक मूल्यांकन 30**
**समय : तीन घण्टे**

### इकाई-1

**1.1. भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय**

**1.2 भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की काव्यगत विशेषताएँ**

**1.3 भारतेंदु हरिश्चंद्र : कविताएँ**

भारत दुर्दशा
वर्षा विनोद
प्रेम शालिका
प्रेमाश्रु वर्षण

**1.4 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : कविताएँ**

प्रिय प्रवास
दुखिया के आँसू
एक बूँद
काँटा और फूल

### इकाई-2

**2.1 मैथिलीशरण गुप्त तथा जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय**

**2.2 मैथिलीशरण गुप्त तथा जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ**

**2.3 मैथिलीशरण गुप्त : कविताएँ**

भारत भारती
मातृभूमि
आशा
सन्देश

**2.4 जयशंकर प्रसाद : कविताएँ**

ले चल वहाँ भुलावा देकर
बीती विभावरी जाग री
अरुण यह मधुमय देश हमारा
हृदय का सौंदर्य

### इकाई-3

**3.1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला तथा सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सामान्य परिचय**

**3.2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला तथा सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की काव्यगत विशेषताएँ**

**3.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : कविताएँ**

वर दे, वीणा वादिनी वर दे

तोड़ती पत्थर

स्नेह निर्झर बह गया है

विधवा

3.4 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : कविताएँ

उड़ चल, हारिल

कलगी बाजरे की

साँप

नया कवि : आत्म स्वीकार

**इकाई 4**

**4.1 नागार्जुन तथा नरेश मेहता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय**

**4.2 नागार्जुन तथा नरेश मेहता की काव्यगत विशेषताएँ**

**4.3 नागार्जुन : कविताएँ**

यह दन्तुरित मुस्कान

प्रेत का बयान

**4.4 नरेश मेहता : कविताएँ**

तीर्थ जल

पीले फूल कनेर के

मेघ मैं

**प्राश्निक के लिए निर्देश :**

1. प्रश्न पत्र दो भागों में विभक्त होगा। पहला भाग अनिवार्य है, जिसमें एक प्रश्न के अन्तर्गत 14 वस्तुनिष्ठ बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाएँगे। वस्तुनिष्ठ प्रश्न समान रूप से चारों इकाइयों में से पूछे जाएँगे।

   14 x 1 = 14 अंक (रेगुलर आई.सी.डी.ई.ओ.एल. एवं प्राईवेट)

2. दूसरे भाग के अन्तर्गत चार प्रश्न शत-प्रतिशत विकल्प के साथ चारों इकाइयों में से पूछे जाएँगे। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न को दो उपविभागों में विभाजित किया जाएगा, जिनमें से दूसरा उपविभाग व्याख्या से सम्बन्धित रहेगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 7 अंक निर्धारित किए गए हैं।

   7+7 = 14 अंक (रेगुलर)

   10¾ + 10¾ + 21½ अंक (आई.सी.डी.ई.ओ.एल. एवं प्राईवेट)

**अंक विभाजन :**

**रेगुलर :** 14 + 14(7+7) 14(7+7) + 14(7+7) + 14(7+7) = 70 अंक

<u>**आई.सी.डी.ई.ओ.एल एवं प्राईवेट**</u> विद्यार्थियों के लिए दूसरे भाग के अन्तर्गत प्रत्येक प्रश्न 213% अंकों का होगा।

14 + 21½ + 21½ + 21½ + 21½ = 100 अंक

*****

# इकाई-1

# भारतेन्दु हरिश्चंद्र : जीवन एवं साहित्य

**संरचना**

1.1 भूमिका
1.2 उद्देश्य
1.3 भारतेन्दु हरिश्चंद्र : जीवन एवं साहित्य
1.3.1 जीवन परिचय
1.3.2 साहित्यिक परिचय
स्वयं आकलन प्रश्न-1
1.4 भाषा शैली
स्वयं आकलन प्रश्न-2
1.5 सारांश
1.6 कठिन शब्दावली
1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
1.8 संदर्भित पुस्तकें
1.9 सात्रिक प्रश्न

## 1.1 भूमिका

पिछली कक्षा में हमने हिन्दी कविता का अध्ययन किया है। इस कक्षा में हम आधुनिक हिन्दी कविता का अध्ययन करेंगे। प्रस्तुत पाठ में हम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवन और साहित्य का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत उनके जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय तथा उनकी भाषा शैली का गहनता से अध्ययन करेंगे।

## 1.2 उद्देश्य

इकाई एक का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि-

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या थी?
3. भारतेन्दु ने किन-किन विधाओं में साहित्य की रचना की?
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भाषा शैली किस प्रकार की थी?

## 1.3 भारतेंदु हरिश्चन्द्र : जीवन और साहित्य

19 वीं शताब्दी के एक नवीन क्रांतिकारी प्रगतिशील और ओजस्वी विचारों के सृजनकर्ता के रूप में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पहचाने जाते हैं। उनकी विविध रचनाओं के अध्ययन से हमें उनकी बहुआयामी प्रतिभा का ज्ञान होता है। उनका समस्त साहित्य हिंदी के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं। बचपन से ही माता-पिता के देहांत के याद बालक 'हरिश्चन्द्र' को अनेक कठिनाइयों का सामना करके उन मुश्किलों में से अपना रास्ता खुद बनाना पड़ा था। वे एक महान समाजसेवक, युगचेतन कर्ता तो थे ही, परतु उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों का जो, मानसिक तथा बौद्धिक उद्‌बोधन किया, वह प्रशंसनीय रहा।

### 1.3.1 जीवन परिचय

**जन्मतिथि :** भारतेन्दु हरिशचन्द्र का जन्म प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र काशी में भाद्रपद विक्रम संवत्, 6 सितम्बर 1850 को हुआ।

**जन्म स्थान :** हरिश्चन्द्र का जन्म काशी में हुआ था। उनके वंशज हिसार के निकट हरियाणा राज्य के थे।

**माता-पिता :** हरिश्चन्द्र के पिता का नाम गोपालचन्द्र था। वे स्वयं उच्च कोटी के कवि थे। वे संस्कृत और हिंदी के ज्ञाता थे। उनकी माता का नाम पार्वती देवी था जो दिल्ली के शाहजादों के दीवान राय खिरोधरलाल की पुत्री थी। गोपाल चन्द का विवाह इनके साथ 1843 में हुआ था। पार्वती देवी की चार संतानें हुई-मुकुंदी बीबी, हरिश्चन्द्र. गोकुलचन्द्र और गोविन्दी बीबी। 1860 ई. में गोपालचन्द्र की मृत्यु बहुत अधिक भाँग चढ़ जाने के कारण हुई।

**बचपन :** भारतेन्दु बाबू का बचपन विदवत समाज के बीच बीता था। पाँच वर्ष की आयु में जब उन्हें अक्षराभ्यास भी नहीं था, उस समय अपने पिता के, 'बलराम कथामृत' की रचना सुनकर एक दोहा कहा था। इससे उनकी ग्रहण क्षमता और कुशाग्रबुद्धि का परिचय मिलता है। माता-पिता के देहांत के बाद पाँच साल की उम्र से ही इस बालक को जीवन के उतार-चढ़ाव का डटकर सामना करना पड़ा।

**परिवार :** हरिश्चन्द्र का जन्म बनारस के एक अग्रवाल परिवार में हुआ। उनके परदादा सेठ फतेहचन्द्र, सेठ अमीचन्द्र के नौ बेटों में से थे। सेठ फतेहचन्द्र के पोते गोपालचन्द्र एक चतुर व्यापारी थे। जिस तरह कीचड़ में कमल खिलता है, उसी तरह अंग्रेज राजभक्त परिवार में देशभक्त हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ।

**शिक्षा:** माता-पिता के देहांत के बाद हरिश्चन्द्र को शिक्षा का पूरा प्रबन्ध न हो सका। प्रारंभ में उनकी शिक्षा घर पर ही हुई। उसके बाद वे बनारस के क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। राजा शिव प्रसाद सितार-ए-हिन्द तथा नन्द किशोर से उन्हें अंग्रेजी शिक्षा मिली। उसके बाद हरिश्चन्द्र को क्वीन्स कॉलेज में भर्ती किया गया था। स्कूल की पढ़ाई ग्यारह साल की उम्र में अचानक छोड़ दी। परन्तु उनको ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा प्राप्त थी और एक बार पढ़ने से ही सब कुछ याद हो जाता था। वे कुशाग्र और तीव स्मरण शक्ति के थे।

**विवाह :** भारतेन्दु का विवाह सन् 1861 के आसपास शिवाले के रईस लाला गुलाबराय की सुपुत्री मन्नोदेवी के साथ हुआ था। उनका विवाह अल्पायु में हुआ था। उनका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं था। उन्होंने आलीजान नामक एक वैश्या की शुद्धि करके उसे हिन्दू बनाया, उसका नाम माधवी रखा और उसे अपनी उपपत्नी के रूप में रख लिया। इसके बाद मल्लिका नाम की स्त्री हरिश्चन्द्र के जीवन में आई।

**संतान:** पत्नी मन्नोदेवी से हरिश्चंद्र के दो बेटे और एक बेटी हुई। बेटे तो बचपन में ही मर गए और बेटी, जो बची रही, यह बीमार रहा करती थी। उसका नाम विद्यावती था। उन्होंने अपनी पुत्री की शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था की थी। विद्यावती को हिंदी, बंगला और संस्कृत का अच्छा ज्ञान था।

**देशभक्त हरिश्चन्द्र:** अंग्रेज राजभक्त परिवार में जन्म होने पर भी हरिश्चन्द्र के मन में बचपन से ही अपने देश के प्रति प्रेम एवं आदर की भावना थी। उन्होंने अपने कुल के मान सम्मान की परवाह किए बिना शताब्दियों से जो अंग्रेज हुकुमशाह हिंदुस्तान पर अन्याय कर रहे थे, उनके विरोध में अपना क्रांतिकारी आंदोलन छेड़ दिया। अंग्रेजों ने जाति-धर्म-वर्ण को माध्यम बनाकर देश की जनता में फूट डाली जिससे समाज देशोन्नति को भूलाकर जाति-धर्म के नाम पर एक दूसरे से लड़ने लगा। ऐसे पथभ्रष्ट देशवासियों में देशप्रेम की भावना जगाने का कार्य भारतेन्दु ने किया। उन्होंने इस कार्य में साहित्य को सबसे अधिक सशक्त साधन मानकर उसके माध्यम से देश के लोगों में देश प्रेम की सोई हुई भावना को जगाने का कार्य किया।

**सहृदयता:** भारतेन्दु के व्यक्तित्व का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण था-सहृदयता। काशी के जनसाधारण की मस्ती, फक्कड़पन और हास-परिहास प्रियता उनकी सहृदयता को स्पष्ट करती है। किसी की भी पीड़ा देखकर उनका हृदय विकल हो उठता था; इसी सहृदयता के कारण ही वे न धन की रक्षा कर सकें और न उसे बढ़ा सके। धन के लालच ने उनके पूर्वजों के मन की सहृदयता, राष्ट्रीय आत्मसम्मान और मानव सुलभ भावनाओं को खा डाला था, इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया था कि, वे कभी धन का लालच नहीं करेंगे जो इन्सान की इन्सानियत को छीनता है। अपने देश में चारों ओर फैली दरिद्रता, भूखमरी के वातावरण में उनसे जितना हो सका उन्होंने पीड़ितों की मदद की। जो उनकी सहृदयता का प्रतीक थी।

**स्वाभिमानी:** भारतेन्दु एक स्वाभिमानी व्यक्तित्व से परिपूर्ण इन्सान थे। उन्होंने जीवन में कठिन परिस्थितियों में भी अपनी स्वाभिमानी वृत्ति के साथ समझौता नहीं किया।

भारतेन्दु से मिलने वालों और साथियों में बहुत से बड़े बड़े आदमी थे। उनके मित्रों में राजा, महाजन और जमींदारों की कमी न थी। स्वयं काशीराज की उन पर बड़ी कृपा थी; सहृदय और मिलनसार व्यक्तित्व के कारण वे अपने पास के धन से जरूरतमंदों की मदद करते थे, जिससे कर्ज और खर्चीलेपन के नाम से उनकी शिकायत होने पर काशिराज ने उनके आगे प्रस्ताव रखा कि, वे उन्हीं के पास रहें और हाथ खर्च के लिए बीस रूपये रोज ले जाए, उन्होंने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करके, वे अपने महाराष्ट्री मित्र के पास पढ़ने-लिखने का सामान लेकर चले गये। इस छोटी-सी घटना से स्पष्ट होता है कि, स्वाभिमान उनके व्यक्तित्व में कूट कूट भरा था।

**क्रांतिकारी :** भारतेन्दु के पूर्वज अंग्रेजों के भक्त थे। वे उनके इशारों पर ही अपनी राजव्यवस्था चलाते थे। सन् 1857 से पहले भी कम्पनी राज में ही अंग्रेजों की तरफदारी करनेवाले, देशी व्यापारी और महाजन भी यह देख रहे थे कि, अंग्रेजी राज में देश के उद्यम-व्यवसाय तबाह हो रहे हैं और चारों तरफ दरिद्रता फैल रहीं है। महँगाई, दुगुना टैक्स, रोग, पुलिस अफसरों के अत्याचारों से जनता त्रस्त है, लेकिन किसी में भी उनके खिलाफ़ आवाज़ उठाने की हिम्मत नहीं थी। इतिहास विख्यात अमीचन्द के घराने में जन्में देशभक्त साहित्यकार भारतेन्दु ने पहली बार लिखा-

**''अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।**
**पै धन बिदेस चलि जात इहै अति भारी॥''**

जिससे उनकी क्रांतिकारी भावना व्यक्त होती है। अंग्रेजों ने लूट-खसोट, जाति-धर्म, वर्णभेद के हथकंडे अपनाकर लोगों में फूट डाली, जिससे समाज अनेक टुकड़ों में बँट गया था। ऐसे समाज में एकता, देश प्रेम और विदेशी शासन के प्रति असंतोष निर्माण हुए समाज में देश प्रेम जगाने का क्रांतिकारी कार्य भारतेन्दु ने किया।

**उद्‌बोधनकारी व्यक्तित्व :** भारतेन्दु का व्यक्तित्व बहुआयामी उद्‌बोधनकारी था। भारतेन्दु की व्यक्तिगत इच्छाएँ देश और समाज की इच्छाओं में घुल-मिल गयी थी। उन्होंने धन का उपयोग धार्मिक उत्सव के लिए, विदेश यात्रा के लिए, हिन्दी विश्वविद्यालय स्थापना के लिए और व्यापार की उन्नति के लिए, कॉलेज खोलने के लिए किया। इन विविध क्षेत्रों की उन्नति को उन्होंने अपना लक्ष्य बनाया था। जिसकी पूर्ति के लिए ये सदैव प्रयासरत रहे। समाज की उन्नति के लिए उन्होंने शिक्षा के प्रसार को प्रभावी समझा। मिल्टन और प्रेमचन्द जैसे महान लेखकों की परम्परा का अनुसरण करते हुए भारतेन्दु ने अध्यापन कार्य किया था। पहले विद्यार्थियों की संख्या कम थी, तब उन्हें घर पर ही पढ़ाते थे, वाद में चौखंभे में स्कूल चलाया। अंधश्रद्धा, जातिप्रथा, देश की आंतरिक फूट-कलह को समूल नष्ट करके देश में नवचेतना जागृत की।

**अन्याय व अत्याचार के प्रति विद्रोह :** भारतेन्दु ने अन्याय व अत्याचार का विरोध करने के लिए साहित्य को अपना हथियार बनाकर उसके सहारे अन्याय के प्रति लड़ाई लड़ी। उन्होंने भक्त राज्य व्यवस्था, जातिप्रथा, उच्च वर्गो की खुशामद पसंदगी आदि की कड़ी आलोचना करके जनता को सचेत किया तथा विदेशी शासन व्यवस्था के विरोध में भारतेन्दु ने आवाज़ उठाई, अंग्रेज शासकों ने जिस छल-बल और व्यापारिक हथकंड़ों को अपनाकर भारत को लूटा था, उसका सजीव चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में विशेषत: नाटक व काव्य के अंतर्गत करते हुए अंग्रेजी शासन और उनकी भ्रष्ट कुटनीति से जनता को जागृत करके, उनमें अन्याय का विरोध करने की विद्रोही वृत्ति को जगाया।

**संघर्षशील एवं जुझारू व्यक्तित्व :** हरिश्चन्द्र पाँच वर्ष की आयु में ही मातृहीन और पितृहीन हो गए थे। इस प्रतिभाशाली बालक को बचपन से ही संसार में संघर्ष का सामना करके अपना रास्ता खुद बनाना पड़ा था। इसी कारण उनका व्यक्तित्व संघर्षशील जुझारू बना था। उन्होंने जीवन के कई उतार-चढ़ाओं, कठिन परिस्थितियों में हिम्मत न हारकर आत्मविश्वास के साथ उन मुश्किलों का सामना किया था। इसी संघर्ष की भावना ने उन्हें देशोन्नति के लिए, लोगों को जागृत करने की प्रेरणा दी थी।

**मृत्युः** 6 जनवरी सन् 1885 में भारतेन्दु देहावसान हुआ। मात्र चौंतीस वर्ष और चार महीने की जीवन अवधि में उन्होंने जितना कुछ किया, वह किसी शतायुषी से भी कम नहीं था। उनकी सामयिक मृत्यु का कारण उनकी पारिवारिक दु:स्थिति को माना जाता है।

## 13.2 साहित्यिक परिचय

भारतेन्दु ने हिंदी साहित्य क्षेत्र में साहित्य की विविध विधाओं का लेखन करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था। उन्होंने अपने अल्प जीवनकाल में नाटक. काव्य पुरातत्व और इतिहास, जीवनी, साहित्यिक निबन्ध आदि गद्य साहित्य का सृजन किया। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में भारतेन्दु ने एक कवि, नाटककार, सम्पादक, निबन्ध, लेखक, समीक्षक एवं पत्रकार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई थी। अपने विचारों को प्रसारित करने के लिए 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'बालाबोधिनी' आदि पत्रिकाएँ निकाली। अंग्रेजों के जुल्मी शासनकाल में जब सारा देश कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहा था, तब उनमें देशाभिमान की भावना जागृत करने के लिए यह पत्रिकाएँ वहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध रहीं। उनका साहित्यिक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा। वे 19 वीं शताब्दी के प्रतिनिधि साहित्यकार थे। मातृभाषा के नि:स्वार्थ सेवक, देशभक्त, परदु:खकातर, उदार, धर्मपरायण आदि गुणों से संपन्न एक सच्चे इन्सान और एक बहुमुखी साहित्यकार थे।

**कहानीकार :** भारतेन्दु ने केवल एक कहानी लिखी, जिसका नाम था 'एक कहानी आपबीती, कुछ जगबीती।'

**उपन्यासकार हरिश्चन्द्र :**

1) रामलीला
2) हमीरहठ (अपूर्ण अप्रकाशित )
3) राजसिंह (अपूर्ण)
4) गुलोचना
5) मदालसोपाख्यान
6) शीलवती
7) सावित्री चरित्र

**नाटककार हरिश्चन्द्र :**

**मौलिक नाटक :**

1) वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (प्रहसन) - 1873
2) प्रेमजोगिनी (नाटिका) 1875
3) सत्यवादी हरिश्चन्द्र (नाटक) 1875
4) भारत जननी (ओपरा) 1877
5) भारत दुर्दशा (दुखान्त नाटक) 1880
6) नीलदेवी (गीति - रूपक) 1881
7) अंधेरनगरी (प्रहसन) 1881

**अनुदित नाटक :**

1) विदयासुन्दर (नाटक) 1868
2) रत्नावली (नाटिका) 1868
3) कर्पूरमंजरी (भाण) 1875
4) मुद्राराक्षस (नाटक) 1878
5) दुर्लभ बन्धु (नाटक) 1880

**एकांकीः**

1) पाखण्ड विडम्बन (रूपक) 1872
2) धनंजय विजय (व्यायोग) 1873
3) विषस्य विष्मौषधम् (भाण) 1876

**आलोचनाएँ :**

1) नारद सूत्र
2) भक्ति सूत्र वैजयंती
3) तदीय सर्वस्व
4) अष्टपदी का भाषार्थ
5) श्रुति रहस्य
6) कुरान शरीफ का अनुवाद
7) प्रेमसूत्र

**यात्राएँः**

बीस साल की आयु में भारतेन्दु कानपुर, लखनऊ, सहारनपुर, मसूरी, लाहौर, अमृतसर, दिल्ली, आगरा आदि स्थानों की यात्राएँ की। उन्होंने हिन्द प्रदेश के अनेक पिछड़े हुए भाग देखें। उन्होंने लखनऊ यात्रा, संस्मरण, हरिद्वार यात्रा, जबलपुर यात्रा, सरयूपार यात्रा, वैद्यनाथ की यात्रा संस्मरण एवं जनकपुर की यात्रा संस्मरण भारतेन्दु की यात्रा सिर्फ शौकिनों की न थी, बल्कि उनकी शिक्षा का आवश्यक अंग था।

**काव्यसंग्रह :**

1) गीतगोविंदानंद
2) प्रेम माधुरी
3) प्रेम फुलवारी
4) प्रेम मालिक
5) प्रेम प्रलाप
6) प्रेम तरंग
7) मधुमुकुल
8) होली
9) मानलीला
10) कार्तिक स्नान
11) प्रेमाश्रुवर्षण

**पत्र पत्रिकाएँ :**

1) कविवचन सुधा
2) हरिश्चन्द्र मैगजीन
3) बालबोधिनी
4) हरिश्चन्द्र - चन्द्रिका
5) हिन्दी प्रदीप
6) सदादर्श
7) भागवत तोशिनी

**निबंधकार हरिश्चन्द्र :**

1) किसका शत्रु कौन है
2) ग्रीष्मवर्णन
3) गीष्म ऋतु
4) एक अद्‌भुत अपूर्ण स्वप्न
5) स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन
6) वैष्णवता और भारतवर्ष
7) नाटक
8) जातीय संगीत।

**ऐतिहासिक रचनाएँ :**

अग्रवालों की उत्पत्ति, चरितावली, पुरावृत्त लेख, महाराष्ट्र देश का इतिहास, दिल्ली का दरबार दर्पण, खत्रियों की उत्पत्ति, उदयपुरादेव, बूँदी का राजवंश, कालचक्र, रामायण का समय, पंचपवित्रात्मा, कश्मीर कुसुम, बादशाह दर्पण।

**धार्मिक रचनाएँ :**

तहकीकातपुरी की तहकीकात, दुषण मलिका, कार्तिक नैमित्तिक कृत्य। पुरूषोत्तम मास विधान, माघ स्नान मार्गशीर्ष महिमा, श्रुति रहस्य, भक्तिसूत्र- वैजयंती, तदीयसर्वस्व श्री वल्लभीय सर्वस्व, हिंदी कुरान शरीफ, श्री युगुल सर्वस्व उत्सबाबली, वैष्णव सर्वस्व, ईशासृष्ट और ईशकृष्ण, श्री वल्लभाचार्य कृत चतुश्लोलि, वैष्णवता और भारतवर्ष।

**प्रहसनात्मक रचनाएँ :**

स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, लेवी प्राण लेवी स्तोत्र पंचरतन, खुशी, जातीय संगीत, भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है, पाँचवें (चूसा) पैगम्बर, मुशायरा, कानून ताजीरात शौहर, संगीत सार।

भारतेन्दु के व्यक्तित्व की छाप उनकी कवित्य में दिखायी देती है। उनके व्यक्तित्व में देशप्रेम, स्वाभिमान और सत्यवादिता कूट-कूटकर भरी थी। अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से जीवन के विविध क्षेत्रों में जैसे राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि में व्याप्त विकृतियों से समाज को सचेत करने का उल्लेखनीय कार्य किया।

बहुमुखी साहित्यकार के साथ ही भारतेन्दु एक सहृदय व्यक्ति भी थे। उन्होंने कभी धन का लालच नहीं किया। लेकिन कठिन परिस्थितियों में भी अपना सब धन लुटाकर भी लोगों की मदद की। हास-परिहास से लोगों का स्नेह जुटाया और लोगों का मानसिक और बौद्विक उद्‌बोधन किया।

19 वीं शताब्दी में देश का वातावरण अंग्रेजों और मुसलमानों के आक्रमणों से इतना दूषित हुआ था कि, भारत की जनता एक अस्तित्वहीन, पराधीन जीवन व्यतीत कर रही थी। भारतेन्दु ने ऐसे अस्तित्वहीन समाज में देशप्रेम की भावना जगाकर उन्हें अपने अस्तित्व के लिए लड़ने के लिए प्रेरणा दी। उन्होंने लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाकर नवजागरण की प्रेरणा भर दी। जिससे समाज अपने अधिकारों के प्रति जागृत हुआ और स्वतंत्रता का अपना जन्म सिद्ध हक प्राप्त करने के लिए इकट्ठा होकर लड़ने लगा स्वातंत्र्य प्राप्ति की ज्वलंत भावना भारतीय जनता में भर देने का महान कार्य इस श्रेष्ठ रचनाकार ने किया। इसलिए वे एक महान सचेत रचनाकार माने गये।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न - 1**

प्रश्न - भारतेन्दु हरिश्चंद्र का जन्म कब हुआ था ?

प्रश्न - 'प्रेम सरोवर' के रचनाकार कौन हैं ?

### 1.4. भाषा शैली

भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली के प्रवर्तकों में से एक माने जाते हैं। इनके समय तक हिन्दी का रूप स्थिर नहीं हो पाया था, परन्तु हिन्दी नई चाल में ढल रही थी। भारतेन्दु भारतीय भाषाओं के पक्षधर थे और भाषा को राष्ट्र की उन्नति का साधन मानते थे। इसलिए उन्होंने अपनी कविता 'जय हिन्दी' में लिखा–

**''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।**
**बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।''**

निज भाषा से भारतेंदु अभिप्राय केवल हिन्दी से ही नहीं था बल्कि सभी भारतीय भाषाओं से था। हालांकि भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने खड़ी बोली, उर्दू, बांग्ला, गुजराती आदि भाषाओं में भी कविता की परन्तु कविता के लिए उन्होंने मुख्य रूप से ब्रजभाषा का ही प्रयोग किया। उनकी भाषा में सरलता, सरसता एवं प्रवाह गुण विद्यमान है। भावानुकूल माधुर्य और ओज भी उनकी भाषा में है। अग्रेजों की भाषा नीति के विरुद्ध भारतेन्दु की भाषा नीति, जातिय संस्कृति और जातिय भाषा के उत्थान की नीति थी। हिन्दी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के उत्थान के लिए उन्होंने लिखा भी था–

**''विविध कला, शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।**
**सब देसन से ले करहु, भाषा मौहि प्रचार।।''**

भारतेन्दु हरिश्चंद्र उर्दू भाषा के विरोधी नहीं थे परन्तु उर्दू के फारसीकरण के विरोधी थे। वे स्वयं 'रसा' उपनाम से उर्दू में कविता करते थे तथा 'गुलजारे पुरबहार' शीर्षक से उनका गजलों का संग्रह भी प्रकाशित हुआ था। भारतेन्दु का योगदान बहुमुखी था, इसीलिए, उन्हें नवजागरण का सूत्रधार कहा जाता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इनकी भाषा में विविधतापूर्ण शब्दावली, काव्य–गुणों, शब्द–शक्तियों, रस व अलंकारों का सहज समायोजन हुआ है। छंदोबद्ध कविताओं के साथ ही इन्होंने गेय पद–शैली में भी अपनी विदग्धता का परिचय दिया है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न –2**

**प्रश्न** – भारतेन्दु ने समाज सुधार की रचनाओं में किस शैली का प्रयोग किया है ?

**प्रश्न** – भारतेन्दु के काव्य की प्रधान भाषा कौन सी है ?

### 1.5 सारांश

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपना संपूर्ण जीवन हिंदी साहित्य की सेवा में समर्पित दिया था। हिंदी नाटक, गद्य, कविता और पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका योगदान अविस्मरणीय है। इसके अतिरिक्त वे पत्रकार, वक्ता, निबंधकार एवं उत्कृष्ट कवि थे। हिंदी साहित्य में खड़ी बोली में नाटक की शुरुआत का श्रेय भारतेन्दु को जाता है। उन्हें आधुनिक साहित्य का जन्मदाता भी कहा जाता है। हरिशचंन्द्र का काशी में 9 सितंबर, 1850 को हुआ था। सर्वप्रथम भारतेन्दु जी ने ही गद्य विधा में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया था। आधुनिक काल के प्रथम युग को हरिश्चंद्र के योगदान के कारण भारतेन्दु युग कहा गया।

### 1.6 कठिन शब्दावली

**चमत्कृत** – आश्चर्यचकित

**शिरोमणि** – श्रेष्ठ व्यक्ति

**विभूषित** – सुशोभित

**प्रतिष्ठित** – पदाभिषिक्त

**जन्मना** – जन्म के विचार से

## 1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न -1**

**उत्तर**- 9 सितंबर 1850 ।

**उत्तर**- भारतेन्दु हरिश्चंद्र ।

**अभ्यास प्रश्न -2**

**उत्तर**- व्यंग्यात्मक शैली ।

**उत्तर**- ब्रज भाषा ।

## 1.8 संदर्भित पुस्तकें


1. रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. राधाकृष्ण दास, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित, उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान, लखनऊ।
3. वीरेन्द्र सिंह यादव, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में साहित्य में भाव बोध: स्थापनाएँ और प्रस्थापनाएँ, ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली।


## 1.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. भारतेन्द्र हरिश्चंद्र के जीवन परिचय एवं साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न. भारतेन्दु हरिश्चंद्र का हिंदी साहित्य में क्या योगदान है, विवेचना कीजिए।

प्रश्न. हिंदी साहित्य में आधुनिक साहित्य के जन्मदाता भारतेन्दु के जीवन का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

*****

# इकाई-2
# भारतेंदु हरिश्चंद्र : काव्यगत विशेषताएँ

**संरचना**


2.1 भूमिका

2.2 उद्देश्य

2.3 भारतेंदु हरिश्चंद्र : काव्यगत विशेषताएँ
  स्वयं आकलन प्रश्न-1

2.4 भारतेन्दु हरिश्चंद्र के महत्त्वपूर्ण कार्य
  स्वयं आकलन प्रश्न-2

2.5 सारांश

2.6 कठिन शब्दावली

2.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

2.8 संदर्भित पुस्तकें

2.9 सात्रिक प्रश्न


## 2.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवन और साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्यगत विशेषताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अंतर्गत हम भारतेंदु हरिश्चन्द्र के महत्त्वपूर्ण कार्य का अध्ययन करेंगे।

## 2.2 उद्देश्य

इकाई दो का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि-

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ क्या हैं?
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के महत्त्वपूर्ण कार्य कौन-कौन से हैं?
3. भारतेंदु हरिश्चन्द्र की देशभक्ति व राजभक्ति में क्या अन्तर है?
4. भारतेंदु हरिश्चन्द्र का प्रकृति चित्रण किस प्रकार का था?

## 2.3 भारतेंदु हरिश्चन्द्र : काव्यगत विशेषताएँ

**उत्तर :** आधुनिक काल का आरंभ भारतेन्दु से होता है। आधुनिक काल के प्रथम चरण को भारतेन्दु युग कहा जाता है। इसकी अवधि इ.स. १८०० (सवंत १८५० से १९००) से १८४३ तक मानी गई है। भारतेन्दु आधुनिक हिन्दी साहित्य के 'जनक' माने जाते हैं। भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य का आरंभ हो चुका था और आरंभिक हिन्दी गद्य के चार लेखक तथा दो राजाओं ने इसके विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। पद्य में ब्रजभाषा तथा गद्य में खड़ीबोली का व्यवहार होता रहा ऐसे समय में भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य का नेतृत्व किया। साहित्यकारों को एक मंडली बनाई। पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य के विविध स्वरूपों को प्रस्तुत किया जाने लगा। वस्तुतः यह युग साहित्यिक प्रवृतियों से आंदोलित होता रहा। इनमें कव्यि की प्रवृति महत्त्वपूर्ण सिद्धि होती है। अब हम इन प्रवृत्तियों की विस्तृत चर्चा कर रहें हैं-

### ( 1 ) राष्ट्रीयता

भारतेन्दु युग में साहित्यकार रीतिकाल की परंपरा का त्याग कर राष्ट्रीयता को साहित्य की मूल चेतना और मुख्य विषय के रुप में स्वीकार करते हैं। भारतेन्दु प्रताप नारायण मिश्र, राधाकृष्णदास राधाचरण, गौस्वामी आदि ने

देशभक्ति के गीत गाये। इनकी कविताओं में अतीत गौरव का यशोगान और वर्तमान की दूरव्यवस्था के प्रति गहरा क्षोभ व्यक्त किया गया। इस युग के कवियों ने रानी विक्टोरिया के शासन की प्रशंसा की है और राजभक्ति के गीत गाये हैं, जैसे–

**''जयति राजराजेश्वरी जय जय परमेश।''**

राष्ट्र प्रेम के संदर्भ में अंग्रेजों की कूटिलनीति एवम् आर्थिक नीति और साम्राज्यवाद पर चुभते हुए गहरे व्यंग्य किये हैं, जैसे–

**''भीतर भीतर सब रस चूसै,**
**हँसि हँसि के तन मन धन मूसै**
**जाहिर बातन में अति तेज,**
**क्यों सखी सज्जन। नहिं अंग्रेज।''**

**( 2 ) सामाजिक चेतना**

भारतेन्दु युग के कवियों ने नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, अस्पृश्यता, रुढ़ियों का विरोध आदि विषयों पर कवितायें लिखी हैं। इन्होंने मध्यमवर्गीय समाज की परिस्थितियों का सच्चा चित्रण किया है। इन पर आर्यसमाज और ब्रह्मसमाज का प्रभाव देखा जा सकता है। भारतेन्दु, प्रताप नारायण मिश्र, प्रेमघन आदि की कविताओं में सामाजिक चेतना का स्वर प्रबल है। परंतु कुछ कवि इनसे दूर रहे और सनातन हिन्दू धर्म का समर्थन किया। अंबिकादत व्यास ने वर्णाश्रम धर्म को उचित माना। पंडित राधाचरण गोस्वामी ने विधवा विवाह का विरोध किया। कुछ कवियों ने अंग्रेजी शासन की प्रंशसा की, क्योंकि अंग्रेजी शासन में बिजली, रेल, डाक व्यवस्था, यातायात के साधन, सिंचाई आदि का भी विकास हुआ। जिसका लाभ प्रजा को मिला। परंतु भारतेन्दु और प्रताप नारायण मिश्र जैसे कवियों ने विदेशी शासकों की अर्थनीति, शोषण, अकाल, महंगाई, महामारी और कर के बोज की कटु निंदा की। भारतेन्दु ने समाज की पीड़ा को इन शब्दों में व्यक्त किया है–

**''रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई**
**हा। हा। भारत दूरदशा न देखी जाई॥''**
**तो मिश्रजी लिखते हैं -**
**''तब ही लखियों जहाँ रहियो एक दिन कंचन बरसत।**
**तई चौथा ही जन रुखी रोवहु रोटी को तरसत।''**

**( 3 ) भक्ति भावना**

इस काल के कवियों ने सगुण भक्ति के गीत गाये। भारतेन्दु स्वयं वल्लभ संप्रदाय के थे। वे कहा करते थे– **''सखा प्यारे कृष्ण के..... गुलाम राधा रानी के......।''**

कहीं कहीं कवियों में संप्रदाई भावना के भी दर्शन हो जाते हैं। हरिनाथ पाठक, तोताराय आदि कवि ने रामकाव्य पर कलम चलाई। इनकी कविताओं में भक्ति और राष्ट्रीयता का समन्वय मिलता है। इन्होंने जातीयता, राष्ट्रीयता और भक्ति को समान महत्व दिया।

**( 4 ) श्रृंगारिकता**

इन कवियों ने रातिकालीन कविओं का अनुसरण करते हुए कृष्ण कथा के संदर्भ में श्रृंगाररस के मधुर पद रचे है। इनका रूप माधुर्यपूर्ण भक्ति का होने के कारण इनमें नखशिख वर्णन और नायिका भेद का वर्णन भी हुआ है। जैसे भारतेन्दु ने प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी प्रेम तरंग, जगमोहन सिंह ने 'प्रेमलता', 'प्रेमसंपति' प्रेमधन ने 'वर्षाबिन्दु' आदि कविताओं में श्रृंगार को महत्त्व दिया है। कुछ कवियों ने इनमें मर्यादा का अतिक्रमण भी किया है। कुछ कवियों ने उर्दू कविता के प्रभाव स्वरुप क्षमा परवाना प्रतीक के माध्यम से वेदना का मार्मिक चित्रण भी किया है।

**( 5 ) प्रकृति चित्रण**

कवियों ने प्रकृति चित्रण में रीतिकालीन परिपाटी का अनुसरण किया और प्रकृति को उदीपक के रूप में चित्रित किया। किन्तु कहीं कहीं प्रकृति सौंदर्य का स्वछंद और स्वतंत्र चित्रण भी मिलता है। जैसे भारतेन्दु के वसंत होली अंबिकादत्त व्यास की 'पावस पचीसी' और जगमोहनदास की अनेक कवितायें प्रकृति के बड़े ही सुंदर और मनोहर चित्र अंकित किये गये हैं। इन कवियों ने संस्कृत काव्य से ही प्रेरणा ग्रहण की है। भारतेन्दु के प्रकृति चित्रण में अलंकारो का बाहुल्य दिखाई देता है।

**( 6 ) हास्य व्यंग्य का चित्रण**

**इस युग की कविताओं में हास्य** - व्यंग्य की मात्रा प्रचुर है। इन कवियों ने पश्चिमी सभ्यता विदेशी शासन, सामाजिक अंधविश्वास और रुढ़ियों पर पैना व्यंग्य किये हैं। विषय और शैली की दृष्टि से इन कवियों ने अनेक प्रयोग किये हैं। जिनमें भारतेन्दु का योगदान सर्वाधिक है। उर्दू नाटक 'इन्द्रसभा की पेरोणी' के रूप में भारतेन्दु ने बन्दसभा लिखा तथा खुसरो की शैली में मुकरियों लिखी जैसे -

**''है। है। उदूँ हाय हाय कहाँ सिधारी हाय हाय।''**

प्रताप नारायण मिश्र की बहुत सी कवितायें इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं।

**( 7 ) काव्यशास्त्र का निरुपण**

रीतिकाल में लक्षणग्रंथ की परंपरा थी। जो आधुनिक काल में लगभग समाप्त हो गई। लच्छीराम, रामचंद्रभूषण, मुरारीदीन आदि विद्वानों ने अलंकार, नायिकाभेद और पोंगलशास्त्र पर ग्रंथ लिखे। गद्य में भी साहित्य की समीक्षा लिखी जाने लगी।

**( 8 ) समस्यापूर्ति**

कविता के क्षेत्र में समस्यापूर्ति इस काल की विशेषता है। कवियों के जमघट में छोटे छोटे विषयों पर समस्यापूर्ति होती रहती है तथा पत्र पत्रिकाओं में भी समस्यापूर्ति का बोलबाला था। प्रेमधन, भारतेन्दु, प्रताप नारायण मिश्र आदि इस क्षेत्र में प्रसिद्ध कवि थे।

**( 9 ) काव्यानुवाद**

इस काल में राजा लक्ष्मणसिंह ने रघुवंश और मेघदूत का, भारतेन्दु ने नारद भक्तिसूत्र का ठाकुर जगमोहन सिंह ने 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' का तथा बाबू तोताराम ने 'वाल्मिकी रामायण' का पद्य में अनुवाद किया। श्रीधर पाठक ने अंग्रेजी काव्यों का हिन्दी में अनुवाद किया। एकांतवासी योगी और 'उजड़ ग्राम' नामक काव्यानुवाद बहुत ही सफल हुए। इस प्रकार अनुवाद के आरंभ का श्रेय भारतेन्दु युग को मिलता है।

**( 10 ) कलापक्ष**

इस काल में मुक्तक काव्य ही अधिक लिखे गये। कुछ प्रबंध काव्य भी मिलते हैं। भारतेन्दु ने प्रबंध काव्य भी लिखे। लोक संगीत और शैली को अपनाया गया। जैसे कजलीया, लावणर्णी, मुकरीया, गजल आदि प्रकार अपनाये गये।

इस काल के कवियों ने मिश्रित भाषा का प्रयोग और उर्दू फारसी के शब्दों का त्याग किया। इन कवियों पर क्षेत्रीय प्रभाव भी देखा जा सकता है। जैसे मिश्रणी की भाषा पर कनौजी भाषा का और प्रेमघन की भाषा पर मिरझापुरी बोली का प्रभाव परिलक्षित होता है।

**भारतेंदु हरिश्चंद्र युग की कविता**

**व्यंग्यात्मक शैली** - समाज-सुधार की रचनाओं में,

**उद्‌बोधन शैली** - देश-प्रेम की कविताओं में।

**रस:** भारतेंदु जी ने लगभग सभी रसों में कविता की है। श्रृंगार और शान्त रसों की प्रधानता है। श्रृंगार के दोनों पक्षों का भारतेंदु जी ने सुंदर वर्णन किया है। उनके काव्य में हास्य रस की भी उत्कृष्ट योजना मिलती है।

**छंद:** भारतेंदु जी ने अपने समय में प्रचलित प्राय: सभी छंदों को अपनाया है। उन्होंने केवल हिंदी के ही नहीं उर्दू, संस्कृत, बंगला भाषा के छंदों को भी स्थान दिया है। उनके काव्य में संस्कृत के बसंत तिलका शार्दूल विक्रीड़ित, शालिनी आदि हिंदी के चौपाई, छप्पय, रोला, सोरठा, कुंडलियाँ, कवित्त, सवैया, घनाक्षरी आदि बंगला के पयार तथा उर्दू के रखता, गजल छंदों का प्रयोग हुआ है। इनके अतिरिक्त भारतेंदु जी कजली ठुमरी लावनी मल्हार, चौती आदि लोक छंदों को भी व्यवहार में लाए हैं।

**अलंकार:** अलंकारों का प्रयोग भारतेंदु जी के काव्य में सहज रूप से हुआ है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक और संदेह अलंकारों के प्रति भारतेंदु जी की अधिक रुचि है। शब्दालंकारों को भी स्थान मिला है। निम्न पंक्तियों में उत्प्रेक्षा और अनुप्रास अलंकार की योजना स्पष्ट दिखाई देती है-

**तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।**
**झुके कूल सों जल परसन हित मनहु सुहाए ॥**

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -1**

**प्रश्न** - भारतेन्दु हरिश्चंद्र किस संप्रदाय से संबंधित थे ?

**प्रश्न** - 'रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई। हा ! हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई।'' पंक्तियों में क्या व्यक्त करने की कोशिश की गई है ?

### 2.4 भारतेन्दु हरिशचन्द्र के महत्त्वपूर्ण कार्य

### नवीन साहित्यिक चेतना और स्वभाषा प्रेम का सूत्रपात

आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतेंदु जी का अत्यत महत्वपूर्ण स्थान है। भारतेंदु बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास निबंध आदि सभी क्षेत्रों में उनकी देन अपूर्व है। भारतेंदु जी हिंदी में नत्र जागरण का संदेश लेकर अवतरित हुए। उन्होंने हिंदी के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया। भाव, भाषा और शैली में नवीनता तथा मौलिकता का समावेश करके उन्हें आधुनिक काल के अनुरूप बनाया। आधुनिक हिंदी के वे जन्मदाता माने जाते हैं। हिंदी के नाटकों का सूत्रपात भी उन्हीं के द्वारा हुआ।

भारतेंदु जो अपने समय के साहित्यिक नेता थे। उनसे कितने ही प्रतिभाशाली लेखकों को जन्म मिला। मातृ-भाषा की सेवा में उन्होंने अपना जीवन ही नहीं संपूर्ण धन भी अर्पित कर दिया। हिंदी भाषा की उन्नति उनका मूलमंत्र था -

**निज भाषा प्रगतिशील अहै सब प्रगतिशील को मूल।**
**बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल।**
**विविध कला शिक्षा अमित ज्ञान अनेक प्रकार।**
**सब देसन से लै करह, भाषा माहि प्रचार।**

1882 में शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) के समक्ष अपनी गवाही में हिन्दी को न्यायालयों की भाषा बनाने की महत्ता पर उन्होंने कहा-

यदि हिन्दी अदालती भाषा हो जाए, तो सम्मन पढ़वाने के लिए दो चार आने कौन देगा और साधारण सी अर्जी लिखवाने के लिए कोई रुपया-आठ आने क्यों देगा। तब पढ़ने वालों को यह अवसर कहाँ मिलेगा कि गवाही के सम्मन को गिरफ्तारी का वारंट बता दें। सभी सभ्य देशों की अदालतों में उनके नागरिकों की बोली और लिपि का प्रयोग किया

जाता है। यहीं (भारत) ऐसा देश है, जहाँ अदालती भाषा न तो शासकों की मातृभाषा है और न प्रजा की। यदि आप दो सार्वजनिक नोटिस, एक उर्दू में तथा एक हिंदी में लिखकर भेज दें तो आपको आसानी से मालूम हो जाएगा कि प्रत्येक नोटिस को समझने वाले लोगों का अनुपात क्या है। जो सम्मन जिलाधीशों द्वारा जारी किये जाते हैं, उनमें हिंदी का प्रयोग होने से रैयत और जमींदार को हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त हुई है। साहूकार और व्यापारी अपना हिसाब-किताब हिंदी में रखते हैं। स्त्रियाँ हिंदी लिपि का प्रयोग करती हैं। पटवारी के कागज़ात हिंदी में लिखे जाते हैं और ग्रामों के अधिकतर स्कूल हिंदी में शिक्षा देते हैं।

इसी सन्दर्भ में 1868 ई में 'उर्दू का स्यापा' नाम से उन्होंने एक व्यंग्य कविता लिखी-

**है है उर्दू हाय हाय। कहाँ सिधारी हाय हाय।**
**मेरी प्यारी हाय हाय। मुंशी मुल्ला हाय हाय।**
**बल्ला बिल्ला हाय हाय। रोये पीटें हाय हाय।**
**टाँग घसीटें हाय हाय। सब छिन सोचौं हाय हाय।**
**डाढ़ी नोचौं हाय हाय। दुनिया उल्टी हाय हाय।**
**रोजी बिल्टी हाय हाय। सब मुखतारी हाय हाय।**
**किसने मारी हाय हाय। खबर नवीसी हाय हाय।**
**दाँत पीसी हाय हाय। एडिटर पोसी हाय हाय।**
**बात फरोशी हाय हाय। वह लस्सानी हाय हाय।**
**चरब-जुबानी हाय हाय। शोख बयानि हाय हाय।**
**फिर नहीं आनी हाय हाय।**

अपनी इन्हीं कार्यों के कारण भारतेन्दु हिन्दी साहित्याकाश के एक दैदीप्यमान नक्षत्र बन गए और उनका युग भारतेन्दु युग के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हरिश्चंद्र चंद्रिका, कविवचनसुधा, हरिश्चन्द्र मैग्जीन, बाल बोधिनी जैसे प्रकाशन उनके विचारशील और प्रगतिशील सम्पादकीय दृष्टिकोण का परिचय देते हैं।

**साम्राज्य-विरोधी चेतना तथा स्वदेश प्रेम का विकास**

भारतेन्दु का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि उन्होंने हिन्दी साहित्य को और उसके साथ समाज को साम्राज्य विरोधी दिशा में बढ़ने की प्रेरणा दी। 1870 में जब कविवचनसुधा में उन्होंने लॉर्ड मेयो को लक्ष्य करके 'लेवी प्राण लेवी' नामक लेख लिखा तब से हिन्दी साहित्य में एक नयी साम्राज्य विरोधी चेतना का प्रसार आरम्भ हुआ। 6 जुलाई 1874 को कविवचनसुधा में लिखा कि जिस प्रकार अमेरिका उपनिवेशित होकर स्वतन्त्र हुआ उसी प्रकार भारत भी स्वतन्त्रता लाभ कर सकता है। उन्होने तदीय समाज की स्थापना की जिसके सदस्य स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रतिज्ञा करते थे। भारतेन्दु ने विलायती कपड़ों के बहिष्कार की अपील करते हुए स्वदेशी का जो प्रतिज्ञा पत्र 23 मार्च 1874 के 'कविवचनसुधा' में प्रकाशित किया, वह समूचे हिंदी समाज का प्रतिज्ञा पत्र बन गया। उसमें भारतेंदु ने कहा था, हम लोग सर्वातयांमी सब स्थल में वर्तमान सर्वद्रष्टा और नित्य सत्य परमेश्वर को साक्षी देकर यह नियम मानते हैं और लिखते हैं कि हम लोग आज के दिन से कोई विलायतों कपड़ा न पहनेंगे और जो कपड़ा का पहले से मोल ले चुके हैं और आज तक हमारे पास है उनको तो उनके जीर्ण हो जाने तक काम में लावैंगे पर नवीन मोल लेकर किसी भाँति का भी विलायती कपड़ा न पहनेंगे हिंदुस्तान का ही बना कपड़ा पहनेंगे। हम आशा रखते हैं कि इसको बहुत ही क्या प्राय: सब लोग स्वीकार करेंगे।

सबसे पहले भारतेन्दु हरिश्चंद्र साहित्य में जन भावनाओं और आकाक्षाओं को स्वर दिया था। पहली बार साहित्य में 'जन' का समावेश भारतेन्दु ने ही किया। उनके पहले काव्य में रीतिकालीन प्रवृत्तियों का ही बोलबाला था। साहित्य

पतनशील सामन्ती संस्कृति का पोषक बन गया था, पर भारतेन्दु ने साहित्य को जनता की गरीबी पराधीनता, विदेशी शासकों के अमानवीय शोषण के चित्रण और उसके विरोध का माध्यम बना दिया। अपने नाटकों, कविता, मुकरियों और प्रहसनों के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजी राज पर कटाक्ष और प्रहार किए, जिसके चलते उन्हें अंग्रेजों का कोपभाजन भी बनना पड़ा।

भारतेंदु अग्रेजों के शोषण तंत्र को भली-भांति समझते थे। अपनी पत्रिका कविवचनसुधा में उन्होंने लिखा था-

जब अंग्रेज विलायत से आते हैं प्राय: कैसे दरिद्र होते हैं और जब हिंदुस्तान से अपने विलायत को जाते हैं तब कुबेर बनकर जाते हैं। इससे सिद्ध हुआ कि राग और दुष्काल इन दोनों के मुख्य कारण अंग्रेज ही हैं।

यही नहीं 20वीं सदी की शुरुआत में दादाभाई नौरोजी ने धन के अपवहन यानी ड्रेन ऑफ वेल्थ के जिस सिद्धान्त को प्रस्तुत किया था, भारतेन्दु ने बहुत पहले ही शोषण के इस रूप को समझ लिया था। उन्होंने लिखा था-

**अंग्रेजी राज सुखसाज सजे अति भारी पर सब धन विदेश चलि जात ये ख्वारी।**

अंग्रेज भारत का धन अपने यहाँ लेकर चले जाते हैं और यही देश की जनता की गरीबी और कष्टों का मूल कारण है। इस सच्चाई का भारतेंदु ने समझ लिया था। कविवचनसुधा में उन्होंने जनता का आह्वान किया था-

**''भाइयो! अब तो सन्नद्ध हो जाओ और ताल ठोक के इनके सामने खड़े तो हो जाओ। देखो भारतवर्ष का धन जिसमें जाने न पावे वह उपाय करो।''**

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -2**

**प्रश्न** - भारतेन्दु ने लॉर्ड मेयो को लक्ष्य करके कौन सा लेख लिखा था ?

**प्रश्न** - भारतेन्दु ने विलायती कपड़ों के बहिष्कार की अपील कविवचनसुधा में कब की थी ?

## 2.5 सारांश

भारतेन्दु जी की यह विशेषता रही कि जहाँ उन्होंने ईश्वर भावी आदि प्राचीन विषयों पर कविता लिखी वहाँ उन्होंने समाज सुधार, राष्ट्र प्रेम आदि नवीन विषयों को भी अपनाया। भारतेन्दु की रचनाओं में अंग्रेजी शासन का विरोध १२ स्वतंत्रता के लिए उद्ध्दाम आकांक्षा और जातीय भाव बोध की झलक मिलती है।

## 2.6 कठिन शब्दावली

**उद्दाम** - विशाल

**काव्ययांग** - काव्य के अंग

**बर्हि द्वार** - बाहरी दरवाजा

**सामंती** - सामंत का

**प्रचलित** - जिसका प्रचलन हो

## 2.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न -1**

**उत्तर** - बल्लभ संप्रदाय।

**उत्तर** - भारतीय समाज की पीड़ा।

**अभ्यास प्रश्न -2**

**उत्तर** - लेवी प्राण लेवी।

**उत्तर**- 23 मार्च 1874

## 2.8 संदर्भित पुस्तकें

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. बाबू गुलाबराय, हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
3. रामविलास शर्मा, भारतेन्दु हरिशचंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

## 2.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. भारतेन्दु की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

प्रश्न. भारतेन्दु की भाषा शैली का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

प्रश्न. भारतेन्दु गद्य साहित्य के प्रणेता के रूप कैसे सफल हुए, प्रकाश डालिए?

*****

# इकाई-3
# भारतेन्दु हरिश्चंद्र : व्याख्या भाग

**संरचना**

3.1 भूमिका

3.2 उद्देश्य

3.3 भारतेन्दु हरिश्चंद्र : व्याख्या भाग (कविता)

- भारत दुर्दशा (कविता) : व्याख्या भाग
- वर्षा विनोद (कविता) : व्याख्या भाग
- प्रेम शालिका (कविता): व्याख्या भाग
- प्रेमाश्रु वर्षण (कविता): व्याख्या भाग

स्वयं आकलन प्रश्न

3.4 सारांश

3.5 कठिन शब्दावली

3.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

3.7 संदर्भित पुस्तकें

3.8 सात्रिक प्रश्न

## 3.1 भूमिका

किसी इकाई में हमने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्यगत विशेषताओं का विस्तार से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कविताओं की व्याख्या करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनकी भारत दुर्दशा, वर्षा, विनोद, प्रेम शालिका तथा प्रेमाश्रु वर्णन कविताओं की विस्तारपूर्वक व्याख्या करेंगे।

## 3.2 उद्देश्य

इकाई तीन का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि-

1. भारत दुर्दशा कविता का मूल भाव क्या है?
2. वर्षा विनोद कविता का सार क्या है?
3. प्रेमशालिका कविता में किसके प्रेमभाव का वर्णन किया गया है?
4. प्रेमाश्रुवर्णन में किसके आँसूओं का वर्णन है?

## 3.2 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : व्याख्या भाग

### भारत दुर्दशा (कविता) : व्याख्या भाग

**कविता का सार** - वस्तुत: 'भारत-दुर्दशा' कविता हरिश्चंद्र विरचित नाटक 'भारत-दुर्दशा' का एक गीत है। नाटक के प्रारम्भ में एक योगी लावनी के रूप में इसे गाता है। इस गीत के द्वारा कवि भारतवासियों को तत्कालीन अंग्रेजी शासन की शोषणकारी नीतियों के विषय में सचेत करता है और भारत के अतीत के गौरव को भी हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है। कवि का मानना है कि प्राचीन भारत कभी सबसे समृद्ध, ज्ञानवान, बलशाली और सबसे प्रगतिशील राष्ट्र था। आज वह पिछड़ गया है। भारत में महात्मा बुद्ध, दानी हरिश्चन्द्र, ययाति, युधिष्ठिर, श्रीराम और श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष हुए जिन्होंने इसे आगे बढ़ाया, परन्तु आज भारत आपसी फूट का शिकार है, अज्ञानता और निर्धनता का घर है। भारतेन्दु जी भारत के पतन का मूल कारण भारतीयों की आपसी फूट को मानते हैं जो धर्म, सम्प्रदाय, जाति आदि

के भेद के कारण पनपी है। विदेशियों के भारत में राज करने का रहस्य भी हमारी फूट है। अंग्रेजों के शासन के अनेक क्षेत्रों में उन्नति हुई है परन्तु अंग्रेज भारत का आर्थिक शोषण कर रहा है। उन्नति का लाभ भारत के गरीबों को नहीं मिल रहा।

**''अंगरेजराज सुख साज सजे सब भारी।**
**पै धन विदेश चलि जात इहै अतिख्वारी।''**
**रोवहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई।**
**हा! हा! भारतदुर्दशा न देखि जाई ॥**
**सबके पहिले जोहि ईश्वर धन वल दीनों।**
**सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो ॥**
**सबक पहिले जो रूप रंग रस भीनो।**
**सबके पहले विद्याफल जिन गहि लीनों॥**
**सबके पीछे सोई परत लखाई।**
**हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥**

**शब्दार्थ-रोबहु** रोओ। **आवहु** = आओ। **भीनो** = भीगा, डूबा, सुगन्धित। **गहि** = पकड़कर। **परत** = पड़ता है। **लखाई** = दिखना है।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंद्याश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित हिन्दी साहित्य में आधुनिक साहित्य के प्रवर्तक एवं राष्ट्रवादी कविता के जनक **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** विरचित कविता **'भारत दुर्दशा'** से अवतरित है। इन पंक्तियों में भारतेन्दु जी ने प्रभु से प्रार्थना की है कि भारत की दुर्दशा पर तरस खाएं और भारतीयों को सद्बुद्धि दें।

**व्याख्या**-कवि भारतवासियों को संबोधित करते हुए कहता है-हे मेरे भारतवासियों! आओ हम सब मिलकर भारत की दुर्दशा पर आँसू बहाएँ, क्योंकि मुझसे भारत की वर्तमान दुर्दशा देखी नहीं जाती। ईश्वर ने इस भारत को संसार में सबसे पहले सभ्य बनाया था। विश्व में सबसे पहले भारत ही रूप, रस और गन्ध से महक उठा था अर्थात् सृष्टि का प्रारम्भ भारत से ही हुआ था।

कवि कहता है कि सबसे पहले भारतवासियों ने ही विद्या प्राप्त की थी अर्थात् ज्ञान विज्ञान का प्रकाश सबसे पहले भारत में हो हुआ था परन्तु दुख की बात यह है कि संसार का सिरमौर, धन-धान्य, बत बुद्धि, ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न भारत आज सबसे पीछे दिखाई पड़ता है। गुलामी ने भारत को पूरी तरह असहाय बना दिया है।

अंत में कवि दु:खपूर्वक शोक व्यक्त करते हुए कहता है कि हे प्रभो! अब मुझसे भारत की दुर्दशा नहीं देखी जाती। हे मेरे भारतवासी भाइयों! आओ, हम सब मिलकर भारत की दुर्दशा पर आँसू बहाएँ।

**विशेष-**

1 भारत के प्राधीन गौरव का गान करते हुए तत्कालीन दुर्दशा पर शोक व्यक्त किया गया है।
2. सामान्य बोलचात की भावपूर्ण बज्रभाषा का प्रयोग है।
3. शब्द चयन सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थक है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग।
5. अनुप्रास, वीप्सा एवं उल्लेख अलंकारों का प्रयोग है।
6. प्रसाद एवं ओज गुण का प्रयोग है।

2 **जहँ भए शाक्य हरिचंदरु नहषु ययाति।**
**जहँ राम युधिष्ठिर वासुदेव सर्याति॥**
**जहँ भीम करन अर्जुन की छठा दिखाती।**
**तहँ रही मूढ़ता कलह अविद्या राती॥**
**अब जहँ देखहु तहँ दुःखहि दुःख दिखाई।**
**हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई ॥**

**शब्दार्थ - शाक्य** = बुद्ध। **कलह** = लड़ाई-झगड़ा। **राती** = लीन, डूबी।

**प्रसंग**- प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित हिन्दी साहित्य में आधुनिक साहित्य के प्रवर्त्तक एवं राष्ट्रवादी कविता के जनक **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** विरचित कविता **'भारत दुर्दशा'** से अवतरित है। इन पंक्तियों में कवि ने भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरवगान किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि, शाक्य वंश में जन्मे महात्मा बुद्ध की जन्म भूमि है। यहीं पर हरिश्चन्द्र जैसा दान करने वाला राजा हुआ, नहुष तथा ययाति जैसे यशस्वी राजा भी इसी धरती पर हुए हैं। इसी भारतभूमि पर सत्य बोलने वाला युधिष्ठिर, सोलह कला संपन्न भगवान कृष्ण और सर्याति जैसे राजा पैदा हुए। इसी ध रती पर बलशाली भीम, दानवीर कर्ण, अजेय धनुर्धर अर्जुन की शोभा देखने को मिली दी। आज पराधीनता के कारण भारत की ऐसी दुर्दशा हो गई हैं कि यहां पर मूर्खता, लड़ाई-झगड़ा और अज्ञान का ही राज है। यहाँ कण-कण में यही बुराइयाँ भरी हैं। आज तो भारत में जिधर भी देखो दुख: ही दुःख दिखाई पड़ता है। भारतेन्दु जी हाहाकार करते हुए दुःख व्यक्त करते हुए कहते हैं कि उनसे आज के भारत की दुर्दशा देखी नहीं जाती।

**विशेष**-

1. कवि ने इन पंक्तियों में भारतवासियों को अपने स्वर्णिम अतीत से परिचित करवाया है।
2. सामान्य बोलचाल की भावपूर्ण ब्रजभाषा का प्रयोग है।
3. शब्द-चयन सर्वथा उपयुक्त एवं साथर्क है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग।
5. अनुप्रास वीप्सा एवं ही उल्लेख अलंकारों का प्रयोग है।
6. प्रसाद एवं ओज गुण का प्रयोग है।

3 **लरि वैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी।**
**करि कलह बुलाई जवनसैन पुनि भारी॥**
**तिन नासी बुद्धि बल विद्या धन बहु वारी।**
**छाई अब आलस कुमति कलह अंधियारी ॥**
**भए अंध पंगु सब दीन हीन बिलखाई।**
**हा! हा! भारतदुर्दशा देखी न जाई ॥**

**शब्दार्थ-जवनसैन** = यवन सेना, मुस्लिम सेना। **कुमति** = दुर्बुद्धि। **बिलखाई** = रोकर।

**प्रसंग** - प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी साहित्य में आधुनिक साहित्य के प्रवर्त्तक एवं राष्ट्रवादी कविता के जनक **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** विरचित कविता **'भारत दुर्दशा'** से अवतरित है। इन पंक्तियों में कवि ने भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरवगान किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि वैदिक धर्म को मानने वालों एवं जैन धर्म को मानने वाले लोगों ने आपस में लड़ाई करके अनेक धार्मिक ग्रंथों को नष्ट करने का कार्य किया है। आपस में लड़कर उन्होंने भारी यवन

सेना को अपने देश में आमंत्रित किया, जिसने हमारे देश को भारी क्षति पहुँचाई। इस कारण हमारे देश के लोगों की बुद्धि, बल, विद्या एवं धन संपत्ति की भारी हानि हुई। और अब तो आलस्य और मूर्खता की अन्धेरी रात या कालिमा ही चारों ओर छाई है। आज भारतवासी अन्धे, पंगु और दीन-हीन होकर रो रहे हैं। मुझे बड़े दुःख से कहना पड़ रहा है कि अब मुझसे भारत की दुर्दशा नहीं देखी जाती।

**विशेष-**

1. भारत की दुर्दशा का मूल कारण आपसी फूट को स्वीकार किया गया है। भारतीयों की धर्मान्धता और मूर्खता ने ही विदेशियों को भारत पर आक्रमण के लिए बुलावा दिया।
2. सामान्य बोलचाल की भावपूर्ण ब्रजभाषा का प्रयोग है।
3. शब्द-चयन सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थक है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग।
5. अनुप्रास वीप्सा एवं ही उल्लेख अलंकारों का प्रयोग है।
6. प्रसाद एवं ओज गुण का प्रयोग है।

**4** **अँगरेजराज सुख साज सजे सब भारी।**
**पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी ॥**
**ताहू पै महँगी काल रोग बिस्तारी ।**
**दिन-दिन दूनी दुःख ईस देत हा हा री॥**
**सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई।**
**हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई ॥**

**शब्दार्थ-पै** = परन्तु । **ख्वारी** = कष्टकारक। **ईस** = ईश्वर। **टिक्कस** = टैक्स, कर। **आफत** = मुसीबत ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी में आधुनिक युग के प्रवर्त्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र विरचित कविता **'भारत दुर्दशा'** से अवतरित है। इन पंक्तियों में कवि ने अंग्रेजी राज्य के दुष्परिणाम पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि वर्तमान समय में भारत में अंग्रेजों का राज है। इस राज में भले ही अनेक प्रकार के सुखों का बोलबाला है, परन्तु अंग्रेज हमारे देश का धन अपने देश में ले जा रहे हैं। मेरे लिए यही सबसे अधिक कष्टदायक बात है। अंग्रेजी राज में गरीबी के साथ-साथ महंगाई भी महामारी की तरह फैली हुई है। हे ईश्वर! तुम इस भारत को प्रतिदिन नए से नया दुःख क्यों देते हो? मैं हाहाकार करता हूँ, आपके सम्मुख आँसू बहाता हूँ। इन सब कष्टों से ऊपर अब हर चीज पर कर लगने लगा है जो और भी बड़ी मुसीबत है। हे प्रभो! मुझसे मेरे भारत की दुर्दशा अब देखी नहीं जाती।

**विशेष-**

1. कवि ने अंग्रेजों की शोषणपरक अर्थनीति का विरोध किया है।
2. सामान्य बोलचाल की भावपूर्ण ब्रजभाषा का प्रयोग है।
3. शब्द-चयन सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थ है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग।
5. अनुप्रास वीप्सा एवं ही उल्लेख अलंकारों का प्रयोग है।
6. प्रसाद एवं ओज गुण का प्रयोग है।

**वर्षा-विनोद ( कविता ) व्याख्या भाग**

**कविता का सार - 'वर्षा विनोद'** भारतेंदु हरिश्चंद्र विरचित एक प्रसिद्ध कविता है, जो मूलतः एक विरह काव्य है। 'वर्षा विनोद' के चारों मदों में विराहिणी नायिका की मानसिक स्थिति का चित्रण हुआ है।

प्रथम पद में नायिका राधा अपनी सखियों को झूला झूलने के लिए आमंत्रित करती है। लाल चुनरी और उस पर काली चादर पहन कर, सज-धज कर सखियाँ झूला झूलती हैं। आकाश में बिजली चमक रही है। राधा अपने प्रिय कृष्ण के निकट न होने से बहुत दुखी है।

द्वितीय पद में वर्षा ऋतु का मोहक चित्रण है। बादल गड़गड़ा रहे हैं, राधा का दिल भय से काँप रहा है। अंध ेरा छाया है, कहीं-कहीं जुगनू चमक रहे हैं, बादल शोर कर रहे हैं, बिजली चमक रही है। ऐसे समय में राधा का प्रिय कृष्ण प्रदेश में जाना चाहता है। राधा सभी से विनती करती है कि कोई कृष्ण को परदेश जाने से रोके।

तृतीय पद में भी वर्षा वर्णन है। बादल छाए हैं, बिजलियाँ चमक रही हैं। हवाएँ इतनी तेज है कि पेड़ जमीन पर बिछे जा रहे हैं। नायिका की सेज सूनी है वह अकेली बिस्तर पर पड़ी विरह के आँसू बहा रही है। प्रियतम के दर्शन उसे नहीं हो रहे हैं। बिना प्रियतम के सावन का महीना बीत रहा है, उसका हृदय प्रिय के प्रेम का प्यासा है। काश उसके प्रियतम आ जाते और उसकी प्यास बुझा जाते।

चतुर्थ पर्द श्रीकृष्ण के झूला झूलने का है। एक सखी, दूसरी सखी से कहती है कि चलो देखें कि श्रीकृष्ण झूला कैसे झूल रहे हैं। वह सभी सखियों से कहती हैं कि सावन मास में बादल उमड़ रहे हैं, चारों ओर फूल खिले हैं, बिजली चमक रही है, बगुलों की पंक्तियां उड़ी जा रही हैं, मोर केंकार कर रहे हैं, ऐसे सुहावने समय में सारा संकोच और लज्जा त्याग कर, श्रीकृष्ण को झूला झूलते देखने के लिए चलो। सखी कहती है कि कृष्ण की शोभा में वह इतना खो गई है कि उसका वर्णन संभव नहीं। वह तो यही मानती है कि कृष्ण को किसी की नजर न लगे।

**प्यारी झूलन पधारो झुकि आए बदरा।**
**ओढ़ौ सुरुख चुनरि तापै श्याम चदरा ॥**
**देखो बिजुरी चमक्के बरसै अदरा।**
**'हरीचंद' तुम बिन पिय अति कदरा ॥**

**शब्दार्थ-बदरा** = बादल। **सुरुख** लाल। **श्याम** = काली। **चदरा** = चादर। **अदरा** = आर्द्रा, नक्षत्र में गिरने वाली वर्षा। **पिय** = पति, प्रेमी। **कदरा** = दीन-हीन, तुच्छ ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र विरचित** कविता **'वर्षा-विनोद'** से अवतरित है। इन पक्तियों में परम वैष्णव भारतेन्दु जी राधा जी से झूला झूलने के लिए कृष्ण के संग आने की प्रार्थना कर रहे हैं।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है, हे प्रिय राधे। अब तो झूला झूलने के लिए आ जाओ। अब तो बरसात के काले बादल भी उमड़ आए हैं। हे राधे! तुम्हारा गौर-वर्ण लाल चुनरी और श्याम चादर में और भी उभरता है इसलिए तुम लाल चुनरी और श्याम चादर ओढ़ कर आओ। हे राधे। देखो बिजली कितनी तेज चमक रही है। हे राधे। आर्द्रा नक्षत्र में झड़ी लगी हुई है, वर्षा हो रही है। देखो बिजली चमक रही है और बादल बरस रहे हैं। हरिश्चन्द्र जी कहते हैं कि हे प्यारी राधा! तुम्हारे वियोग में कृष्ण अत्यन्त दीन-हीन एवं दुःखी प्रतीत होते हैं।

**विशेष-**

1. वैष्णव भक्तों में वर्षा ऋतु में राधा-कृष्ण को झूला झुलाने की परम्परा है। जन्माष्टमी को भी कृष्ण को झूला बुलाया जाता है।
2. सामान्य बोलचाल की ब्रज भाषा का प्रयोग है।
3. शब्द-चयन सर्वचा उचित एवं सार्थक है।

4. संबोधन शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
6. माधुर्य सर्वत्र व्याप्त है।

**अगगग अगगग अगगग गरजै।**
**सुनि सुनि मोर जिय लरजै।**
**जुगनूँ चमकै बादल रमकै**
**बिजुरी दमकै झरकै तरजै॥**
**ऐसी समय चले परदेसवां**
**पिय नहिं मानत मोरी अरजै।**
**ऐसन नहिं कोई पटुका गहि कै**
**पिय 'हरिचंदहि' जो बरजै॥**

**शब्दार्थ-रमकै** = शोर करे, गरजें। **बिजुरी** = बिजली। **झरकै** = झलके। **तरजै** = कड़के। **पिय** = प्रियतम। **मोरी** = मेरी। **अरजै** = विनय। ऐसा। **पटुका** = पट, आंचल। **बरजै** = रोके।

**प्रसंग**- प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक एवं सभी विद्याओं में समान अधिकार से लिखने वाले साहित्यकार, कवि, भक्त एवं देशप्रेमी **'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र'** विरचित कविता **'वर्षा विनोद'** से अवतरित है। सावन माह में प्रेमी परदेस जाना चाहता है परन्तु प्रिया उसे घर पर रोके रखना चाहती है। इस पद में इसी भाव का वर्णन है।

**व्याख्या**- इन पंक्तियों में प्रेयसी अपनी सखी से कहती है कि बादल गड़गड़ाते हुए गरज रहे हैं! हे सखी! बादलों का गर्जन सुनकर मेरा दिल धड़क रहा है। वर्षा की इस रात में जुगनू इधर-उधर चमक रहे हैं अर्थात् घने अँधियारे में जुगनुओं की ही एकमात्र रोशनी मुझे दिख रही है। बादल गरज रहे हैं। आकाश में बिजली कभी चमकती है, कभी कौंधती है और कभी कड़कने लगती है। ऐसे समय में मेरे प्रियतम परदेस जाना चाहते हैं, घर छोड़कर दूर देश में जाना चाहते हैं और वे मेरी प्रार्थना को, विनती को नहीं मान रहे। मैं उन्हें घर पर रुकने के लिए बार-बार विनती कर रही हूँ। क्या कोई मेरा ऐसा शुभचिन्तमक नहीं है जो मेरे प्रिय का आँचल पकड़ कर उसे जाने से रोक दे। कोई ऐसा नहीं जो उन्हें इस घनी अन्धेरी रात में घर से दूर जाने से रोके।

**विशेष**-

1. एक पत्नी अथवा प्रिय अपने पति अथवा प्रेमी को घर पर रोकना चाहती है। वह सावन में विरह में जलना नहीं चाहती और साथ ही पति की कुशलता के प्रति भी चिन्तित है।
2. सामान्य बोलचाल की भावपूर्ण ब्रजभाषा का प्रयोग है।
3. शब्द-चयन सर्वधा उपयुक्त एवं सार्थक है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग।
5. अनुप्रास एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का प्रयोग है।
6. प्रसाद एवं ओज गुण का प्रयोग है।

**घिर घिर आए बादर छाए**
**रिमझिम जल बरसै।**
**चम चम चपला चमकै घन झमकै**
**झुकि झुकि बिरछन परसै ॥**

**सूनी तेज परी में व्याकुल**
**पिय की सूरत नहिं दरसै।**
**बिनु 'हरिचंद' पियरवा सावन में**
**हाय मोरा जियरा तरसै ॥**

**शब्दार्थ-चपला** = बिजली। **झमकै** = चमकना, शोर करना। **बिरछुन** = वृक्ष। **परसै** = स्पर्श करे। **दरसै** = दर्शन हुए।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पर **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र'** विरचित कविता **'वर्षा विनोद'** से अवतरित है। इस पद में कवि ने वर्षा ऋतु में विरहणी नायिका की पीड़ा को व्यक्त किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में विरहिणी नायिका कहती है कि चारों ओर बादल घिर आए हैं तथा आकाश में छा गए हैं। रिमझिम वर्षा हो रही है। आकाश में बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं। बिजली और बादल मानो झुक झुक कर पेड़ों को छू रहे हैं। अर्थात् तेज हवा के कारण पेड़ झुक झुक कर धरती को स्पर्श कर रहे हैं, पेड़ झुककर दुहरे हो रहे हैं। विरहणी नायिका कहती है कि ऐसे समय मैं प्रिय विहीन अपनी सेज पर अकेली सोई हूँ। मुझे प्रिय की सूरत देखे लम्बा समय बीत गया है। विरहणी नायिका कहती है कि सावन के महीने में प्रिय से बिछुड़ कर उसका हृदय तरस रहा है।

**विशेष-**

1. कवि द्वारा वर्षा ऋतु का चित्रण उद्दीपन रूप में किया गया है। साथ ही विरहिणी नायिका की विरहजन्य पीड़ा को भी दर्शाया गया है।
2. सामान्य बोलचाल की ब्रज भाषा का प्रयोग है।
3. शब्द-चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
6. माधुर्य सर्वत्र व्याप्त है।

**मन-मोहना हो झुलैं झमकि हिंडोर**
**एक तो सावन ए दूजे घन उनए**
**तीजे फूल नए छए फूले चहुँ ओर॥**
**चलु लाज तजु री देखु चमकै बिजुरी**
**बग-पाँति जुरी मोरा कारि रहे सोर।**
**सोभा कहाँ कस री मैं तो देखत हारी**
**भई बलिहारी 'हरिचंद' तृन तोर ॥**

**शब्दार्थ- मन-मोहना** = मन को मोहित करने वाला, कृष्ण। **झमकि** = झमक कर, उमग कर। **घन** = बादल। **उनए** = उमड़े। **बिजुरी** = बिजली। **बग पाँति** = बगुलों की पाँति। **तृन तोर** = तृण तोड़ना, नजर लगने से बचाने के लिए तिनका तोड़ा जाता है।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र विरचित कविता **'वर्षा-विनोद'** से अवतरित है। इस पद में एक सखी दूसरी सखी से कृष्ण के झूला झूलने का वर्णन कर रही है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि हिंडोले पर चढ़कर, उमंग से भरकर कृष्ण झूल रहे हैं। एक तो यह सावन का महीना है दूसरे बादल उमड़ कर आ गए हैं, तीसरे चारों ओर नए-नए फूलों से पौधे लद गए हैं। वह सखी अपनी अन्य सहेलियों से कहती है कि हे सखियो! तुम सब मेरे साथ संकोच त्याग कर बिजली को चमकता हुआ देखने चलो, कृष्ण को झूला झूलते देखने चलो। चलो हम चलकर देखें कि कहाँ बगुलों की पांत इकट्ठी हुई है और मोर कहाँ शोर मचा रहे हैं। सखी अपनी विवशता व्यक्त करती हुई कहती है कि मैं तो कृष्ण की शोभा में इतनी खो गई हूँ कि मैं उसका वर्णन किस प्रकार से करूँ। मैं तो उसके रूप पर बलिहारी हूँ। मैं तिनका तोड़ कर अर्थात् साथ लेकर कहती हूँ कि उसे किसी की नजर न लगे। मैं उस पर बलिहारी हूँ।

**विशेष**-

1. वर्षा ऋतु का उद्दीपन रूप में चित्रण हुआ है। कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम की भी अभिव्यक्ति हुई है।
2. सामान्य बोलचाल की ब्रज भाषा का प्रयोग है
3. शब्द-चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
6. माधुर्य सर्वत्र व्याप्त है।

**● प्रेम मालिका (कविता) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार** - 'प्रेम मालिका' भारतेंदु हरिश्चंद्र विरचित एक प्रसिद्ध कविता है। इसके दोनों पद श्रीकृष्ण की भक्ति से सम्बन्धित है। प्रथम पद कृष्ण की रूप माधुरी से जुड़ा है तो द्वितीय भ्रमरगीत परम्परा से जुड़ा हुआ है।

प्रथम पद में भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी श्रीकृष्ण की रूप-माधुरी को जी भर कर देखने का आह्वान करते हैं। श्रीकृष्ण का श्याम शरीर श्वेत चन्दन के लेप से सुगन्धित हो रहा है। उनके चेहरे पर बिखरी लटें मानो दो फंदे हैं, जिनमें देखने वाले का मन फँसकर रह जाता है, भाव यह है कि अलकें सुन्दर, मनमोहक हैं। मुकुट की चमक सूर्य और चन्द्रमा को लजाती है। कृष्ण के साथ राधा जी भी सुशोभित हैं और उन्हें आनन्दित कर रही हैं। हरिश्चन्द्र जी कहते हैं कि उनका लोभी मन, भँवरे की तरह उनके रूप रस का निरन्तर पान करना चाहता है।

द्वितीय पद में ब्रज की गोपियाँ उद्धव जी से दो टूक कहती हैं कि उनके पास तो मन है ही नहीं, वे योग-साधना कैसे करें? वे कहती है कि उद्धव जी अच्छा होता ईश्वर ने उन्हें एक साथ बहुत सारे मन दिए होते। यदि ऐसा होता तो वे एक मन कृष्ण को दे देती, दूसरे मन से योग को अपनाती, तीसरे मन से घर के काम काज करतीं, चौथे मन से ध्यान-साधना करतीं, पाँचवें से लोकलाज त्याग कर कृष्ण से प्रेमालाप करती रास रचातीं। वे उद्धव से पूछती हैं कि आप ही बताओ, ईश्वर ने हमारे साथ यह कैसा अन्याय किया है। एक ही मन हमें दिया था वह भी श्रीकृष्ण चुरा कर ले गए, अब तुम ही बताओ तुम्हारा योग कहाँ रखें, मन को कैसे साधे, ध्यान कैसे लगाएँ, मन ही नहीं बचा हमारे पास जिससे यह सब कर पातीं। अब श्रीकृष्ण का सौन्दर्य ही करोड़ों कामदेवों के समान था इसलिए वे हमारा मन सहज ही चुरा कर ले गए, हम विवश थीं। वे उद्धव से पूछती है कि तुम किसी ऐसे व्यक्ति को योग सिखाओ, जिसके पास अनेक मन हो।

**नैन भरि देखो गोकुल-चंद।**
**श्याम बरन तन खौर बिराजत अति सुन्दर नंद-नंद ॥**
**बिथुरी अलकैं मुख पै झलकैं मनु दोउ मन के फंद।**
**मुकुट लटक निरखत रवि लाजत छवि लखि होत अनंद ॥**
**सँग सोहत वृषभानु-नंदिनी प्रमुदित आनंद-कंद**
**'हरीचंद' मन लुब्ध मधुप ततैं पीवत रस मकरंद ॥**

**शब्दार्थ- श्याम** = काला। **बरन** = रंग। **खौर** = चंदन। **बिराजत** = शोभा देता है। **बिथुरी** = बिखरी । **फंद** = फंदा, जात । **छवि** = शोभा । **वृषभानु नंदिनी** = वृषभानु जी की बेटी, राधा। **मधुप** = भँवरा । **मकरंद** = पुष्प रस।

**प्रसंग**- प्रस्तुत पद **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **'भारतेन्दु'** विरिचत **'प्रेम मालिका'** नामक कविता से अवतरित है। इन पंक्तियों में कवि ने गोपी के माध्यम से श्रीकृष्ण एवं राध ा की बाल-युगल छवि की सुंदरता का मनमोहक वर्णन किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में एक गोपी अपनी सखियों से कहती है-हे सखियो! गोकुल के चन्द्रमा कृष्ण की सुंदरता को आज सब जी भरकर देख लो। उनका शरीर श्याम रंग का है जिस पर चन्दन का लेप हुआ है। इससे वह अत्यधि क शोभा पा रहा है। बालककृष्ण की बिखरी हुई लटें मुख पर लटक रही हैं। वे ऐसी लगती हैं मानो दर्शक के मन को फाँसने वाले फंदे हों। अर्थात् कृष्ण के चेहरे पर झूलती दोनों लटें मन को अनायास अपनी ओर खींचती हैं। कृष्ण के सिर पर धारण किए इस मुकुट की लटक अर्थात् चमक को देखकर सूर्य और चन्द्रमा लज्जित हो रहे हैं। कृष्ण के मुकुट की शोभा को देखकर मन अत्यधिक आनन्दित होता है। संसार को आनन्दित करने वाली, आनन्द की मूल श्री राधा जी, जो वृषभानु की पुत्री हैं, कृष्ण के साथ ही शोभा पा रही हैं। राधा भी अत्यधिक खुश नजर आ रही हैं। भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी कहते हैं कि गोपी कह रही है कि मेरा मन तो रस का लोभी भ्रमर है। वह तो उनके कमल मुखों का रस अथवा मधु पी रहा है और खुश हो रहा है। अर्थात् राधा कृष्ण की शोभा को देखकर सखियाँ सहज भी प्रसन्न हो रही हैं।

**विशेष**-

1. राधा और कृष्ण के बाल युगल रूप का सुन्दर चित्रण हुआ है।
2. भाषा ब्रज एवं मधुर रस प्रधान है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. अनुप्रास, यमक, उत्प्रेक्षा, प्रतीप आदि अलंकारों का प्रयोग है।
6. माधुर्य गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**ऊधो जौ अनेक मन होते।**
**तो इक श्याम - सुँदर को देते इक लै जोग संजोते।।**
**एक सों सब गृह - काज करते एक सों धरते ध्यान।**
**एक सों श्याम रंग रंगते तजि लोक-ताज कुल - कान।।**
**को जप करै जोग को साधै को पुनि मूँदे नैन।**
**हिये एक रस श्याम मनोहर मोहन कोटिक मैन।।**
**हयाँ तो हुतो एक ही मन सो हरि ले गए चुराई।**
**'हरीचंद' कोउ और खोजि कै जोग सिखाबहु जाई ।।**

**शब्दार्थ-संजोते** = साधते । **गृह** = घर। **लोक-लाज** = लोक की शर्म। **कुल-कान** = कुल मर्यादा। **कोटिक** = करोड़ों। **मैन** - कामदेव।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** विरचित कविता **'प्रेम मालिका'** से अवतरित है। कृष्ण के बाल सखा ज्ञानी उद्धव जब गोपियों को योग ध ारण करने के लिए कहते हैं, तो गोपियाँ इन पंक्तियों में उसका उत्तर देती हैं।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव ! अगर हमारे पास एक से अधिक मन होते तो हम तुम्हारी बात मान लेतीं। परंतु हमारे पास तो एक ही मन है, उससे क्या-क्या करें? अर्थात् उस एक मन से तो हम एक

ही काम कर सकती हैं। परन्तु यदि हमारे पास अनेक मन होते तो हम उनमें से एक कृष्ण को दे देतीं और दूसरे से योग-साधना करतीं। इसी प्रकार तीसरे मन से हम घर के सारे काम करतीं और चौथे से ध्यान लगातीं। यदि एक और मन होता तो उसे समस्त सामाजिक मर्यादाओं और पारिवारिक बन्धनों को ठुकरा कर कृष्ण के रंग में डुबा देतीं। परंतु हमारे पास तो एक ही मन है। अत: किस मन से जाप करें, किससे योग साधें और किससे आँख बन्द कर ध्यान लगाएँ? हमारे हृदय में तो एकमात्र मनोहर कृष्ण ही बसे हैं, जोकि करोड़ों कामदेवों को मोहित करने वाले हैं। अर्थात् कृष्ण का सौन्दर्य करोड़ों कामदेवों से भी बढ़कर है। हमारे पास जो एकमात्र मन था, उसे तो कृष्ण चुराकर ले गए हैं। अत: हे ऊधो! तुम किसी और को ढूँढ लो जिसके पास अनेक मन हो, यही तुम्हारे योग को अपना सकता है।

**विशेष-**

1. भारतेन्दु का यह पद भी भ्रमर गीत परम्परा में आता है। भ्रमर गीत में सगुण का मण्डन और निर्गुण अर्थात् योग आदि का खण्डन किया जाता है। इस पद में भी ऐसा ही हुआ है।
2. भाषा ब्रज एवं मधुर रस प्रधान है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. अनुप्रास, प्रश्न आदि अलंकारों का प्रयोग है।
6. माधुर्य गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**● प्रेमाश्रु वर्णन (कविता): व्याख्या भाग**

कविता का सार-**'प्रेमाश्रु वर्णन'** भारतेंदु हरिश्चंद्र जी की एक महत्त्वपूर्ण कविता है। इसकी रचना 1873 में प्रकाशित हुई कविता से निर्धारित दो पदों में से प्रथम पद में श्रीकृष्ण के विरह से व्याकुल गोपियों की आँखों से निकलने वाले प्रेमाश्रुओं वर्णन है। इसी प्रकार दूसरे पद में अपने भक्तों को असहाय अवस्था में देखकर श्रीकृष्ण की आँखों से निकलने वाले प्रेमाश्रुओं वर्णन है।

**हमारे नैन बहीं नदियाँ।**
**बीती जानि औधि सब पिय की जे हम सों बदियाँ॥**
**अवगाह्यौ इन सकस अंग ब्रज अंजन को खोयो।**
**लोक बेद कुल-कानि बहाई सुख न रह्यौ खोयो॥**
**डूबत हौं अकुलाइ अथाहन यहै रीति कैसी।**
**'हरीचंद' पिय महाबाहु तुप आछत गति ऐसी ॥**

**शब्दार्थ-औधि** = अवधि, समय। **बदियाँ** = बदा था, निश्चित किया था। **अवगाह्यो** = अवगाहन किया, डूबा दिया। **कुल कानि** = वंश की मर्यादा, परिवार की लाज। **आछत** = त्यागना, छोड़ना।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **भारतेन्दु हरिश्यन्द्र** विरचित **'प्रेमाश्रु वर्णन'** से अवतरित है। इन पंक्तियों में कृष्ण के विरह में प्रेम के आँसू बहाने वाली गोपियाँ अपनी आँखों का वर्णन कर है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में गोपियाँ अपनी विरहिणी आँखों का वर्णन करती हुई कहती हैं कि हमारी आँखों से तो लगातार आँसुओं की नदियाँ बहती रहती हैं। हमारी ये आँखें कृष्ण के विरह में रो रही हैं, क्योंकि इन्हें पता चल गया है कि कृष्ण जितने समय बाद आने के लिए कह गए थे उतना समय व्यतीत चुका है। और अब तो कृष्ण आने ही वाले हैं। कृष्ण से विलन की उमंग में हमारी इन आँखों में लगातार आँसू बह रहे हैं। इन आँखों से बहे हुए आँसुओं में गोपियों की आँखों का काजल भी धुला हुआ था। इन आँसुओं से सम्पूर्ण ब्रज का सिंचन हुआ है, पूरा ब्रज उनमें नहा गया है। इन आँखों ने रो-रोकर लोक, वेद और कुल की सारी मर्यादाएँ तोड़ दी हैं और निर्लज्ज होकर रो रही हैं। कृष्ण

को खोकर इन्हें किसी भी तरह सुख नहीं मिला है। ये आँखें जितना अधिक बेचैन होती हैं उतना ही अधिक कृष्ण के रंग में डूबती चली जाती हैं, पता नहीं इनका विचित्र व्यवहार क्यों है? गोपियों की आँखें कृष्ण विरह में पीड़ित हैं, फिर भी कृष्ण के ही रंग में रंगी हैं। आँखों को भी कृष्ण की सुन्दरता से व्याकुलता हुई है, लेकिन ये उसे छोड़ने के स्थान पर उसमें अधिकाधिक डूबती चली जा रही हैं। भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी कहते हैं कि हे कृष्ण! आप तो अत्यन्त बलशाली हैं, आप अपने विरह में तड़पती, आँसुओं में डूबती इन गोपियों को मझधार में मत छोड़ो।

**विशेष-**

1. गोपियों की श्रीकृष्ण के प्रति अन्य भक्ति प्रकट हुई है।
2. सामान्य बोल-चाल की ब्रज भाषा का प्रयोग है।
3. शब्द चयन सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थक है।
4. माधुर्य गुण का प्रयोग है।
5. सबोधन शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**हरि-तन करुणा-सरिता बाढ़ी।**
**दुखि देखि निजजन बिनु साधन उमगि चली अतिगाढ़ी ॥**
**तोरि कूल मरजादा के दोउ न्याव-कगार गिराए ।**
**जित तित परे करमफल-तरुगन जड़ सों तोरि बहाए ॥**
**अचल बिरुद गंभीर भँवर गहि महा पाँवगन बोरे।**
**असहन पवन बेग अति नेगहि दीन महान हलोरे ॥**
**भारी दीने जन हृदय-सरोवर तीनहुँ ताप बुझाई।**
**'हीरचंद' हरि-जस-समुद्र में मिली उमगि हरखाई॥**

**शब्दार्थ-सरिता** = नदी। **उमगि** = उमंग कर, उमड़ कर। **तोरि** = तोड़कर। **कूल** = किनारा। **न्याय-कगार** = न्याय के किनारे। **विरुद** = यश। **पाँवगन** = पापों के समूह। **बोरे** = डूबोए।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद **'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र'** विरचित **'प्रेमाश्रु वर्णन'** से अवतरित है। इन पंक्तियों में कवि ने भगवान की भक्त वत्सलता एवं करुणा का वर्णन किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि ईश्वर के शरीर से करुणा की नदी बह निकली है। उनके मन में स्थित करुणा की नदी में बाढ़ आ गई है। अपने भक्तों को दीन-हीन और निरुपाय देखकर यह करुणा रूपी नदी और भी अधिक उत्साह और उमंग के साथ आगे बढ़ गई है। इस करुणा रूपी नदी ने मर्यादा के दोनों किनारों अर्थात् वेद (शास्त्रों) की मर्यादा और लोक (समाज) की मर्यादा को तोड़कर भक्त को सुख पहुँचाया है। न्याय के किनारों को भी इस करुणा रूपी नदी ने गिरा दिया है। न्याय तो पाप-पुण्य, उचित अनुचित के विवेक पर आधारित है लेकिन ईश्वर की करुणा इस बन्धन को नहीं मानती। कर्मफल रूपी विशाल वृक्षों के झुँड इसने तोड़ डाले हैं और वे इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। जिस पर प्रभु करुणां करें उसके कर्मों का हिसाब नहीं किया जाता। इस करुणा रूपी नदी में प्रभु यश रूपी एक अमर भंवर है जो अत्यधिक गहरा है। उसी ने भक्त के सारे पाप डुबो का उसे इस करुणा रूपी नदी ने मुक्ति दी है। असह्य हवा के झोंकों ने पानी को भयंकर रूप से मथ दिया है और इसी से इस भँवर में वे सारे पाप डूब गए हैं, लुप्त हो गए हैं। अशान्त समुद्र या नदी के जल में तब कुछ डूब जाता है। भगवान के मन से निकली करुणा नदी के असह्य वेग में सब कुछ खो गया है। यह करुणा की नदी भयंकर आँधियों से उमड़कर जन-जन के मन तक पहुँच गई है। और इसके करुणाजल से तीनों प्रकार के ताप नष्ट हो गए हैं अर्थात् आधिदैविक, आधिभौतिक तथा दैहिक सभी तरह के दु:ख उसमें पुल गए हैं और मन शान्त हो गया है। हरिश्चन्द्र जी कहते हैं कि अब तो करुणा की यह नदी प्रभु के यश समुद्र में उमंगपूर्वक लीन हो रही है।

**विशेष**-

1. ईश्वर की करुणा रूपी नदी के जल से सिंचित भक्त की मनोदशा का चित्रण हुआ है।
2. सामान्य बोल चाल की ब्रज भाषा का प्रयोग है।
3. शब्द चयन सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थ है।
4. माधुर्य गुण का प्रयोग है।
5. संबोधन शैली का प्रयोग है।

6 अनुप्रास रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न**

प्रश्न - 'भारत दुर्दशा' कविता के रचयिता कौन हैं ?

प्रश्न - 'वर्षा विनोद' कविता में किस महीने का वर्णन है ?

प्रश्न - 'प्रेम मलिका' कविता में भारतेन्दु द्वारा किसका वर्णन किया है ?

प्रश्न - 'प्रेमाश्रु वर्षण' कविता में किसके विरह की बात की गई है ?

## 3.4 सारांश

'भारत दुर्दशा' कविता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक 'भारत दुर्दशा' से ली गई है। इस कविता का मुख्य विषय देश प्रेम है और इसमें भारतेन्दु समस्त भारतवासियों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि इस समय, अंग्रेजों के राज में, भारत की वह दुर्दशा हो चुकी है जो मुझसे देखी नहीं जाती और जिस पर हम सभी भारतीयों को चिंता और चिंतन करना चाहिए। 'वर्षा विनोद' भारतेन्दु की एक प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में कवि ने सावन के महीने में होने वाली वर्षा, बिजली का चमकना, बादलों का उमड़-घुमड़कर आना और बसना, नायक-नायिका के प्रेम, उनका झूला-झूलना आदि क्रिया-व्यापारों का वर्णन किया है। 'प्रेम मालिका' कविता के दो पद पाठ्यक्रम में संकलित है। प्रथम पद में राधा एवं श्रीकृष्ण की युगल छवि के रूप में सौंदर्य का वर्णन किया गया है तथा दूसरे पद में गोपियों द्वारा व्यंग्यपूर्ण तरीके से उद्धव के योग-साधना संबंधी ज्ञान को नकारा गया है। दूसरा पद सूरदास के प्रसिद्ध पद 'उधो! मन नाहि दस बीस की याद दिलाता है। 'प्रेमाश्रु वर्णन' कविता के दो पदों का ही पाठ्यक्रम में वर्णन किया गया है। प्रथम पद में श्रीकृष्ण के विरह में व्यथित गोपियों की आँखों से निकलने वाले प्रेमाश्रुओं का वर्णन है तो दूसरे पद में अपने भक्तों की असहाय अवस्था को देखकर श्रीकृष्ण की आंखों से निकलने वाले प्रेमाश्रुओं का वर्णन है।

## 3.5 कठिन शब्दावली

**संबोधित** - जिसका बोध कराया गया हो।

**मालिका** - पंक्ति, माला

**व्यंग्यपूर्ण** - व्यंग्यवाला

**प्रेमाश्रु** - प्रेम के कारण आँखों से निकलने वाले आँसू

**संकलित** - जिसका संग्रह किया गया है।

## 3.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न**

उत्तर - भारतेन्दु हरिश्चंद्र।

उत्तर - सावन के महीने का।

उत्तर - राधा-कृष्ण का।

उत्तर - गोपियों का कृष्ण विरह।

### 3.7 संदर्भित पुस्तकें

1. बाबू शिवनन्दन सहाय, हरिश्चन्द्र, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।
2. राधाकृष्णन दास, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
3. बाबू गुलाबराय, हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

### 3.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. 'वर्षा विनोद' कविता में वर्षा ऋतु में होने वाले क्रिया-कलापों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न. 'प्रेम मालिका' कविता में राधा और श्रीकृष्ण की युगल छवि के रूप सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

प्रश्न. 'प्रेमाश्रु वर्णन' कविता में भगवान अपने भक्तों की असहाय अवस्था को देखकर व्यथित मन का विवरण विस्तार से बताइए ।

प्रश्न. 'भारत दुर्दशा' कविता के पदों की व्याख्या कैसे करें, स्पष्ट कीजिए।

*****

# इकाई-4
# अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : जीवन एवं साहित्य

**संरचना**

4.1 भूमिका
4.2 उद्देश्य
4.3 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : जीवन एवं साहित्य
 4.3.1 जीवन परिचय
 4.3.2 साहित्यिक परिचय
स्वयं आकलन प्रश्न-1
4.4 भाषा शैली
स्वयं आकलन प्रश्न-2
4.5 सारांश
4.6 कठिन शब्दावली
4.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
4.8 संदर्भित पुस्तकें
4.9 सात्रिक प्रश्न

## 4.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने भारतेन्दु हरिशचन्द्र की कविताओं की विस्तारपूर्वक व्याख्या की। प्रस्तुत इकाई में हम अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के जीवन और साहित्य का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय तथा भाषा शैली का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

## 4.2 उद्देश्य

इकाई चार का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि-

1. हरिऔध का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2 हरिऔध की शिक्षा-दीक्षा कहाँ तक हुई थी ?
3 हरिऔध ने साहित्य की किन-किन विधाओं में काम किया ?
4. हरिऔध की भाषा शैली किस प्रकार की थी ?

## 4.3 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : जीवन और साहित्य

स्वर्गीय अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' आधुनिक युग के श्रेष्ठतम् साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य को गति प्रदान की है तथा हिन्दी साहित्यिकों का दिशा-निर्देशन किया है। उपाध्याय जी के निवास स्थान में सिक्ख सम्प्रदाय के महन्त बाबा सुमेर सिंह निवास करते थे। जिनका हिन्दी साहित्य के प्रति प्रगाढ़ प्रेम था। अनेकानेक साहित्यानुरागी इनके यहाँ एकत्र होते थे। उपाध्याय जी के व्यक्तित्व में सुमेर सिंह जी का तथा उनके निवास स्थल होने पर एकत्र होने वाले साहित्यानुरागियों का प्रभाव पड़ा।

उपाध्याय जी साहित्यिक समाज के सर्वप्रमुख अंग थे। साहित्यानुरागियों के मध्य ये अपनी समस्याओं की पूर्तियां सुनाया करते थे। इस प्रकार आपका साहित्यिक जीवन प्राचीन शैली की श्रृंगारी कविता से प्रारम्भ हुआ। बाद में आपने खड़ी बोली में रचना प्रारम्भ की। खड़ी बोली की रचना को अपनाने में आपने उर्दू के छन्दों को भी स्वीकार किया। छन्द इस प्रकार हैं:

**'चार उग हमने भरे तो क्या किया,**
**है पड़ा मैदान कोसों का अभी।**
**मौलवी ऐसा न होगा एक भी**
**खूब उर्दू जो न होवे जानता।।'**

इस रचना से उनकी प्रारंभिक खड़ी बोली रचना का नमूना प्राप्त होता है। पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से उपाध्याय जी की काव्य रचनाएं प्रभावित रहीं और इन्होंने खड़ी बोली काव्य संस्कृत गर्भित पदावली तथा संस्कृत छन्द की ओर अग्रसर हुए।

उपाध्याय जी कृत रचनाएँ गद्य तथा पद्य दोनों प्रकार की हैं। आपके काव्य ग्रन्थ हैं 'प्रिय प्रवास', 'वैदेही वनवास', 'चोखे चौपदे', 'रस-कलश', 'कल्पना' आदि। 'वेनिस का बाँका', 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' आपके द्वारा लिखित प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'प्रद्युम्न विजय व्यायोग' और 'रुक्मिणी-परिणय' दो लोकप्रिय नाटक लिखे। इन कृतियों के अतिरिक्त 'नीति- निबन्ध', 'विनोद-वाटिका', 'हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आपकी प्रमुख गद्य रचनायें हैं। 'कबीर वचनावली' के नाम से आपने कबीर साहित्य का सग्रह हिन्दी जगत् को प्रदान किया है। इन काव्य ग्रंथों, उपन्यास व नाटक तथा निबन्ध का अध्ययन व मनन करने पर उपाध्याय जी की प्रतिमा व व्यक्तित्व बहुमुखी था।

**• जीवन परिचय**

हरिऔध जी का जीवन वृत्त का अध्ययन निम्नवत अवतरणों के अंतर्गत करेंगे-

(i) **जन्मतिथि :** कविवर पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी आधुनिक युग में 'द्विवेदी युग' के नाम से विख्यात युग के प्रतिनिधि कवि थे। हरिऔध जी आधुनिक काल के मनीषी रचनाकार, निबन्ध, नाटक व गद्य रचनाओं के सर्वप्रमुख लेखक थे। पंडित उपाध्याय जी का जन्म बैसाख कृष्ण तृतीया तिथि संवत् 1922 में हुआ था। आपके पूर्वज अपने आदि निवास स्थान बदायूँ (रुहेलखण्ड) को छोड़कर निजामाबाद (जिला आजमगढ़) में बस गये थे।

**(ii) जन्म स्थान:** पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी का जन्म निजामाबाद (जिला आजमगढ़) में हुआ था। आपने भारतीय जीवन को एक आदर्श रूप में अपनाया था। इन्होने संवत् 1936 में वर्नाक्यूलर मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत काशी में स्थित क्वींस महाविद्यालय में अंग्रेजी पढ़ने के अभिप्राय से प्रवेश लिया। आपकी आर्थिक दशा शिथिल होने के कारण संवत् 1942 में नौकरी करनी पड़ी। सर्वप्रथम हरिऔध जी ने निजामाबाद के तहसील विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य किया तथा यहीं से उन्होंने नार्मल परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ वर्षो तक आपने इसी विद्यालय पर कार्यरत रहे। किंतु कुछ समय पश्चात् हरिऔध जी ने अपना जीवन साहित्य सेवा में समर्पित करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। सन 1923 ई. से आपने अवैतनिक शिक्षक के रूप में काशी विश्वविद्यालय में कार्य करना स्वीकार किया। सन् 1941 ई. तक इसी स्थान पर कार्य करते रहे। यहां से अवकाश ग्रहण करने पर थे आजमगढ़ वापस चले गये और वहीं अपना स्थायी निवास स्थान बनवा लिया। क्योंकि हरिऔध जी को अपने पूर्वजों की कर्मभूगि आजमगढ़ क्षेत्र से विशेष लगाव था।

**(iii) पूर्वज:** हिन्दी साहित्य के महाकवि पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध जी' सनाढ्य ब्राह्मण वंश में जन्म हुआ था। आपके पूर्वज पुरोहित एवम् विद्वान थे। आप आगे चलकर गुरु नानक पंथ के विचारों से प्रभावित रहे और सदैव सिक्ख धर्म के प्रति श्रद्धा रही। आपके पितामह पंडित गुरु दयाल जी के प्रपौत्र अयोध्या सिंह उपाध्याय जी के पिता भोला सिंह जी थे तथा इनकी माता का नाम रुक्मिणी देवी था। इनके माता-पिता पढ़े लिखे नहीं थे परन्तु भोला सिंह जी की पत्नी अर्थात हरिऔध जी की माता जी गाजीपुर के प्रतिष्ठित परिवार चन्द्रशेखर पाण्डेय की पुत्री थीं। वे अत्यन्त धर्मनिष्ठ तथा विद्वान महिला थीं। इनकी माता जी सदैव रामायण सुख सागर का पाठ भाव विभोर होकर किया करती थीं। हरिऔध जी के भाई का नाम गुरु सेवक सिंह उपाध्याय था। इनकी शिक्षा मुख्य रूप से संस्कृत व पारसी में हुई थी। लेकिन हरिऔध जी के हृदय पर अपनी माता, पिता और पितामह की छाप रही। आपने हिन्दी साहित्य में अपनी अमिट छाप छोड़ी।

**(iv) सामाजिक मान्यता :** पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय ने हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त समाज में भी महत्त्वपूर्ण स्थान था। आपके सामाजिक जीवन में बाबा सुमेर सिंह का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। सुमेर सिंह जी की प्रेरणा से ही हरिऔध जी कवि बने। इनके समय में अन्य हिन्दी लेखकों पर आर्य समाज का प्रभाव था। अधिकतर लेखक आर्य समाजी थे और इस समाज से भी उन्हें चरित्र बल पर जोर मिला तथा विदेशी साम्राज्य से परतंत्र भारत को मुक्ति प्रदान करायी जाये और आर्य समाज से समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध करने की प्रेरणा मिली। सरकारी नौकरी के कारण तथा धार्मिक सरसता तथा भक्त जैसी भावुकता के कारण हरिऔध जी डटकर स्पष्ट रूप से अंग्रेजी सरकार का विरोध न कर सके। भूमि-बन्दोबस्त काल में उन्हें कानूनगो पद पर नियुक्त किया गया। आपने धीरे-धीरे उन्नति की और रजिस्ट्रार कानूनगो, सदर कानूनगो तथा सदर नायब कानूनगो के स्थान पर लगभग चौंतीस वर्ष तक सफलतापूर्वक कार्य के पश्चात पेंशन ली। संवत् 1980 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में आप सभापति भी चुने गये थे। 'प्रिय-प्रवास' महाकाव्य की रचना पर उन्हें स्वत् 1995 में मंगला प्रसाद पारितोषिक एवम् सम्मेलन की ओर से विद्या वाचास्पति की उपाधि प्रदान की गयी।

**(i) सामाजिक संघर्ष :** पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय जी का सम्पूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण व्यतीत हुआ। जब आपकी आयु सत्रह वर्ष की थी, तब आपका विवाह बलिया जिले के सिकन्दरपुर के निवासी श्री विष्णु दत्त मिश्र की पुत्री अनंत कुमारी से हुआ। दो वर्ष पश्चात् आप तहसील विद्यालय पर शिक्षक पद पर जून 1984 से नियुक्त हुए और छः वर्ष तक अध्यापक पद पर कार्य करते रहे। इस बीच हरिऔध जी ने बड़े मनोयोग से बंगला भाषा सीखी। उनके लेख पंडित प्रताप नारायण मिश्र के 'ब्राहाण' पत्र से प्रकाशित हुआ करते थे। आपने कभी पुस्तकों से धन अर्जित करने का विचार नहीं किया क्योंकि वे स्वान्तः सुखाय रचना करते रहे। अतः उनकी साहित्य साधना वस्तुतः शुद्ध साध्य थी, किन्तु हरिऔध जी काफी भाव विभोर होकर लिखा करते थे। अकस्मात् उनकी पत्नी अनन्त कुमारी का देहान्त हो गया। पत्नी के देहान्त से वे टूट से गये थे। कुछ समय बीत जाने के पश्चात् वे संभल गये किन्तु आपका जीवन कठोर साध ना में व्यतीत हुआ। हरिऔध जी स्वभावतया संयमी और नियमित होने के कारण दीर्घ जीवी रहे। काव्य रचना के समय उनकी तन्मयता समाधि की स्थिति पहुँच जाती थी। इसी साधना के बल पर आप आत्म संतोषी, अपरिग्रही, उदार एवम् सहृदय बने रहे।

**(ii) वृत्ति एवं परिवर्ती कवियों का प्रभाव :** पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने अपना हिन्दी साहित्य में सर्वप्रमुख स्थान बना लिया है। उन्होंने अपने साहित्य कोष में अपना नाम सर्वोल्लेखनीय किया। कहा जाता है कि हरिऔध जी बाबा सुमेर सिंह जी के शिष्य थे और स्वयं बाबा सुमेर सिंह जी भी अच्छे कवि थे।

इनकी साहित्यिक रचनाओं पर बाबा सुमेर सिंह का प्रभाव दिखायी देता है और हरिऔध जी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में लोकप्रिय हुए। बाबा सुमेर सिंह जी भारतेन्दु के समकालीन कवि थे। इस समय काव्य रचनाओं में ब्रज भाषा का ही प्रयोग होता था। आप सवैयों के माध्यम से समस्या पूर्ति कला में महाराथ हासिल कर ली थी। कुछ समय तक वे इस समस्या पूर्ति में तल्लीन रहे और द्विवेदी युगीन काव्य धारा में नवीन परिवर्तन आ गया था। हरिऔध जी इस युग से प्रभावित होकर ब्रज भाषा को त्याग कर खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में अपनाया। जिससे उनकी काव्य प्रतिभा में नवीनता आ गयी और आप ने इसी भाषा में कई काव्य-रचनाओं की सर्जना की। द्विवेदी युग में हिन्दी साहित्य के दोनों अंगों गद्य तथा पद्य की भाषा में परिवर्तन हुआ, तभी आपको अपनी भाषा को सुज्जसित करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस युग की समाप्ति पर आधुनिक अनुभूतियों, समस्याओं और परिकल्पनाओं से अनुप्राणित किया। इन घटनाओं का भी हरिऔध के साहित्यिक जीवन पर प्रभाव पड़ा। हरिऔध जी को इस युग की प्रवृत्ति ज्ञात होते ही अपने साहित्य की नवीन रूप में सर्जना की। आपके काव्य साहित्य में तीनों युगों की चेतनाओं और समस्याओं का प्रतिपादन मिलता है। इस प्रकार हरिऔध जी द्वारा कृत काव्य-ग्रन्थों में भाषा, भाव और कला की दृष्टि से महान कवि थे।

**• सामाजिक जीवन**

**(i) आर्थिक स्थिति :** निज़ामाबाद में जन्मे अयोध्या सिंह उपाध्याय जी, जिनके माता-पिता पढ़े लिखे न होने के कारण आपकी शिक्षा अपने चाचा के घर में रहकर आरम्भ की। सम्वत् 1936 में मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की और संवत् 1939 में हरिऔध जी का विवाह कार्य सम्पन्न हुआ। इनके विवाह के बाद आर्थिक स्थिति शिथिल होने लगी तथा संवत् 1942 में निज़ामाबाद के तहसील विद्यालय में उन्होंने अध्यापक पद पर कार्य करना प्रारम्भ किया, उस समय उनकी आर्थिक अवस्था संभलने लगी। तत्पश्चात् हरिऔध जी कानूनगो के पद पर नियुक्त हुए। शनैः शनैः आपको प्रोन्नत करते हुए रजिस्ट्रार के पद पर सरकारी सेवा में कार्यरत रहे। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होने लगी। इसी पद पर आपने चौतीस वर्षों तक कार्यरत रहे और कार्य मुक्ति के पश्चात् इनको पेंशन मिलती रही। जिससे हरिऔध जी की आर्थिक अवस्था में किसी प्रकार की समस्या नहीं आयी, जिससे आपका जीवन सुखमय व्यतीत हुआ।

**(ii) जीवन शैली:** पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध जी' हिन्दी साहित्य के शिरोमणि कवि थे। उन पर बाबा सुमेर सिंह जी की अमिट छाप दृष्टि गोचर होती थी। वे सिक्ख सम्प्रदाय के गुरु थे, अच्छे कवि और विद्वान थे। निज़ामाबाद में स्थित गुरुद्वारे के प्रधान व्यवस्थापक होते हुए भी उनका स्वभाव रसिक और सहृदय था। वे नित्य प्रति गुरुद्वारे में ही संध्या वाले में साहित्य गोष्ठी और विचार गोष्ठी का आयोजन करते रहते थे। इन साहित्यिक और विचारात्मक गोष्ठियों के अंतर्गत धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर चर्चा की जाती थी। करने के सभी प्रतिष्ठित पढ़े-लिखे और सम्भ्रान्त जन इस गोष्ठी में भाग लेते थे। हरिऔध जी अपने पितृव्य के साथ एक ऐसी ही गोष्ठी में सम्मिलित हुए, वहाँ गुरु ग्रन्थ साहब से एक पद कहा "कबीर खोजो आसमान, राम समान न देखो आन" की व्याख्या चल पड़ी। आपने इस पद पर 'आसमान' शब्द का तीनों लोकों के रूप में अर्थ कर व्याख्या की, जिससे प्रसन्न होकर बाबा सुमेर सिंह जी ने इनको अपने पुस्तकालय की पुस्तकों का अध्ययन करने की अनुमति प्रदान कर दी। सुमेर सिंह से भारतेंदु हरिश्चन्द्र प्रकाशित कविवचनसुधा तथा सभी प्रकार का साहित्य अध्ययन करने के लिए प्राप्त हुआ। हरिऔध जी पुस्तक पढ़ने तथा गुरु सानिध्य में अपना सारा समय व्यतीत करते थे।

**(iii) पारिवारिक पृष्ठभूमि :** निज़ामाबाद (जिला आज़मगढ़) की पावन भूमि में जन्मे पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय जी ने पिता भोला सिंह जी की छत्र छाया में रहकर अपना बचपन प्रारम्भ किया, किन्तु पिता जी के कम पढ़े लिखे होने के कारण आपकी शिक्षा अपने चाचा के यहाँ आरम्भ हुई। कहा जाता है कि हरिऔध जी के पूर्वज पुरोहित और विद्वान थे। इनके पूर्वज आगे चलकर नानक पंथ से प्रभावित हुए। आप बाबा सुमेर सिंह जी नानक सिक्ख के शिष्य बन गये। तभी इन्होंने हिन्दी कवितायें लिखीं फिर हरिऔध जी ने सिक्ख धर्म के अनुयायी हुए। पंडित जी अपने माता पिता के साथ गुरुद्वारा में समय व्यतीत करते थे।

**(iv) समाज में स्थान :** हरिऔध जी हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यकार थे। इनका जन्म उस समय हुआ जब कविता का माध्यम ब्रज भाषा थी तथा इस युग में देश तथा सामाजिक चेतनाओं के साथ आपने काव्य प्रेरणा अवश्य ली। आगे चलकर इन्होंने अपनी कविता के लिए स्वयं पथ निर्माण किया। हरिऔध जी का हिन्दी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, बंगाली तथा गुरुमुखी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था और हिन्दी साहित्य के तो वे अमर कवि थे। आप हरि और गुरु सेवा के अतिरिक्त सामाजिक कार्यों में संलग्न रहा करते थे।

**• साहित्यिक परिचय**

किसी भी रचनाकार की काव्य-प्रतिभा का मूल्यांकन उसकी कृत्तियों से होता है। हरिऔध जी ने साहित्य क्षेत्र में सन् 1882 ई. में प्रवेश किया। उस समय से लेकर सन 1947 ई. तक वे अनवरत रूप में हिन्दी की आराधना करते रहे। उन्होंने लगभग 65 वर्ष तक हिन्दी की सेवा एवं साहित्य के विभिन्न अंगों की सेवा की है। इस अवधि में हरिऔध जी ने छोटी-बड़ी मिलाकर 49 पुस्तकों की रचना की। उनकी कृत्तियों का सामान्य परिचय निम्न है -

| स. | पुस्तक का नाम | रचनाकाल | प्रकाशन तिथि | प्रकाशन स्थान |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कृष्ण–शतक | 1880 | 1882 | भारतजीवन प्रेस बनारस |
| 2. | प्रेमाम्बु–वारिधि | 11.2.1899 | 1899 | श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई |
| 3. | प्रेमाम्बु–प्रस्रवणं | 16.2.1899 | 1899 | उपरोक्त |
| 4. | प्रेमाम्बु प्रवाह | 24.2.1899 | 1899 | उपरोक्त |
| 5. | रसिक–रहस्य | 1899 | 1899 | खग्डविलास प्रेस, पटना |
| 6. | प्रेम–पुष्पोहार | 24.2.1904 | 1904 | उपरोक्त |
| 7. | काव्योपवन | 1907 | 1909 | उपरोक्त |
| 8. | पद्म–प्रमोद | 1914–1916 | 1920 | ग्रंथमाला कार्यालय पटना |
| 9. | ऋतु मुकुर | 1880–1907 | 1917 | हिन्दी प्रेस प्रयाग |
| 10. | प्रियप्रवास | 1909–13 | 1915 | खण्डविलास प्रेस, पटना |
| 11. | पद्म–प्रसून | 1921 | 1924 | पुस्तक भण्डार, पटना |
| 12. | बोल चाल | 18.12.1923 | 1924 | खण्ड्विलास प्रेस, पटना |
| 13. | चोखे–चौपदे | 1924 | 1924 | उपरोक्त |
| 14. | चुभते–चौपदे | 1925 | 1928 | उपरोक्त |
| 15. | रसकलस | 1880–1931 | 1931 | पुस्तक भण्डार पटना |
| 16. | फूल–पत्ते | 1931–1932 | 1934 | हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ |
| 17. | कल्पलता | 1932–1933 | 1938 | गंगा ग्रन्धामार, लखनऊ |
| 18. | उपहार | 1934 | 1935 | तारा प्रिंटिंग प्रेस, बनारस |
| 19. | बाल–कवितावली | 12.7.1935 | 1939 | शर्मन प्रेस इटावा |
| 20. | परिजात | 15.12.1937 | 1940 | पुस्तक भण्डार, पटना |
| 21. | पवित्र पर्व | 1920–37 | 1941 | रामनारायणलाल बुकसेलर, प्रयाग |
| 22. | ग्रामगीत | 1938 | 1938 | प्रभात प्रिंटिंग काटेज, आजमगढ़ |
| 23. | वैदेही वनवास | 18.12.37 | 1940 | हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस |
| 24. | मर्म–स्पर्श | 1940–44 | 1944 | राजपाल एण्ड सन्स, देहली |
| 25. | दिव्य दोहावली | 1941–45 | 1946 | हिन्दी प्रेस, प्रयाग |
| 26. | सरस साहित्य | 1945–47 | 1946 | अप्रकाशित |
| **नाटक** | | | | |
| 27. | रुक्मिणी परिणय | 15.4.1885 | 1894 | भारतजीवन प्रेस, बनारस |
| 28. | प्रधुम्नविजय व्यायोग | 30.7.1886 | 1693 | उपरोक्त |
| 29. | ठेठ हिन्दी का ठाट | 30.3.1899 | 1899 | खण्डविलास प्रेस, पटना |
| 30. | अधखिला फूल | 5.10.1903 | 1908 | उपरोक्त |
| **निबंध संग्रह** | | | | |
| 31. | हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास | 1934–35 | 1935 | पुस्तक भण्डार, पटना |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 32. सन्दर्भ सर्वस्व | विभिन्न समय | 1943 | ग्रंथमाला कार्यालय, पटना |
| 33. इतिवृत्त | विभिन्न समय | 1944 | पुस्तक भवन, वाराणसी |
| 34. प्रेम-प्रपंच (कविता) | 27.2.1899 | 1899 | श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई |
| 35. बेनिस का बाकाँ | 4.4.1888 | 1888 | आर्यावर्त प्रेस, कलकत्ता |
| 36. रिपवान विंकिल | 15.6.1888 | 1899 | खण्डविलास प्रेस, पटना |
| 37. कृष्णकान्त का दान पत्र | 31.8.1897 | 1898 | उपरोक्त |
| **नीति ग्रंथ** | | | |
| 38. नीति-निबंध | 5.12.1699 | 1899 | खण्डविलास प्रेस, पटना |
| 39. उपदेश-कुसुम | 11.7.1887 | 1901 | इंडियन प्रेस, प्रयाग |
| 40. विनोद-वाटिका | 16.5.1881 | 1899 | श्रीवेकंटेश्वर प्रेस बम्बई |
| **जीवन-चरित्र** | | | |
| 41. चारु चरितावली | 30.8.1998 | 1899 | खण्डविलास प्रेस, पटना |
| **संग्रह ग्रन्थ** | | | |
| 42. चारु- चयन | 1924 | 1924 | खडविलास प्रेस, पटना |
| **सम्पादित-ग्रंथ** | | | |
| 43. कबीर-वचनावली | 1928-29 | 1930 | नागरीप्रचारिणी सभा काशी |
| **व्याख्यान माला** | | | |
| 44. उद्बोधन | 19.12.1904 | 1906 | खण्डविलास प्रेस, पटना |
| 45. साहित्य सम्मेलन | 1922 | 1922 | साहित्य सम्मेलन, प्रयाग |
| **सम्बन्धी भाषण** | | | |
| 46. सनाढ्य महासम्मेलन | 1930 | 1930 | शर्मन प्रेस, इटावा |
| 47. गौरक्षा संबंधी | 1931 | 1931 | दरभंगा, बिहार |
| **भाषण** | | | |
| 48. साहित्य सम्मेलन प्रदर्शनी संबंधी भाषण | 1936 | 1936 | साहित्य सम्मेलन, प्रयाग |
| **गणित** | | | |
| 49. अंक गणित | 15.12.1899 | 1899 | खण्डविलास प्रेस पटना |

**ब्रजभाषा-साहित्य** -

1. **कृष्ण शतक** - हरिऔध द्वारा लिखित प्रथम कृत्ति जिसमें 120 दोहों का संग्रह है। कवि ने कहीं आत्मनिवेदन और कहीं दैन्य भाव से कृष्ण का गुणगान किया है। ब्रजभाषा में निर्मित इस ग्रन्थ में पितृव्य एवं माता के संस्कारों का प्रभाव प्रतिबिम्बित होता है।
2. **प्रेमाम्बुवारिध** - यह स्तुति-विनय-प्रार्थना विषयिणी पदावली का संग्रह है। सूरदास शैली में लिखे गए 75 पदों का संग्रह है। ब्रजभाषा में लिखी इस रचना ने कृष्ण गुणगान किया गया है। धार्मिक सद्भावना निहित है। इसमें सभी धर्मो में व्याप्त बाह्याडम्बरों एवं कुरीतियों पर प्रश्नचिह्न लगाया है।
3. **प्रेमाम्बु प्रस्रवण** - शांत और करूण रस सम्बन्धी का संग्रह है। तत्कालीन ब्रजभाषा की समस्यापूर्ति सम्बन्ध ी कविताओं का इस संग्रह में संकलन है। इसमें 56 कवित्त एवं 30 सवैये हैं। कृष्ण भक्ति को केन्द्र में रखकर संसार की सारता तथा समाज में साधु तथा मानव के कर्तव्यों का उद्घाटन किया है।

4. **प्रेमाम्बु-प्रवाह** – ''श्रीकृष्ण-वियोग विधुरा प्रात: स्मरणीय गोपीजन की कातरोक्ति'' सम्बन्धी ब्रजभाषा की कविताओं का इस संग्रह में संकलन हुआ है। पिता की आज्ञा से हरिऔध ने इन सवैयों की रचना की। इस संग्रह में 42 सवैये 30 कवित्त और आठ पद संग्रहित है। वियोग-जन्य-पीडा और विषाद् युक्त गोपियों का हृदय स्पर्शी वर्णन किया है।
5. **रसिक-रहस्य** – महात्मा कबीर दास के कतिपय उत्तमोत्तम दोहों पर हरिऔध जी ने कुंडलियों की रचना की है। ब्रजभाषा में रचित कबीर के 32 दोहों के आधार पर कवि ने 70 कुंडलियाँ रची है। कालान्तर में इसे काव्योपवन कृति में कबीर-कुंडल शीर्षक से संगृहीत किया है।
6. **प्रेम प्रपंच**- यह ग्रन्थ मूलत: उर्दू ''ग्रन्थ फिसाना अजायब'' का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें 'हरिऔध' की कुछ मौलिक उद्‌भावनाएँ भी है। ब्रजभाषा में रचित इस रचना में विविध छन्दों यथा-दोहा, बरवै, कुण्डलियाँ, कवित्त, सवैया इत्यादि का प्रयोग है।
7. **उपदेश-कुसुम** – उपाध्याय जी ने फारसी के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'गुलिस्ताँ' के अष्टम अध्याय का अनुवाद किया था। उन्होंने इसके गद्य भाग का अनुवाद खड़ी बोली एवं पद्य भाग का अनुवाद ब्रज में किया। दोहे, कवित्त एवं सवैये का प्रयोग हुआ है।
8. **विनोद वाटिका** – इसी प्रकार फारसी के ग्रन्थ 'गुलजार दबिस्ताँ' का भी अनुवाद किया। इसमें सेवा, परोपकार, सत्यपालन, अहंकारहीनता आदि की शिक्षा द्वारा सत्पथ की शिक्षा दी गई है।''
9. **काव्योपयन** – यह कृति हरिऔध द्वारा ब्रजभाषा में समय समय पर रचित कविताओं का संग्रह है। आकार में 174 पृष्ठों का ग्रन्थ है। इसमें 24 शीर्षकों के अन्तर्गत विविध विषयों पर लिखित कविताएँ संकलित है। डॉ. मुकुन्ददेव शर्मा इसे हरिऔध जी की खड़ी बोली कविता का प्रथम प्रमुख ग्रंथ मानते हैं। दशगुरू प्रशंसा (सिख समुदाय के धर्मगुरुओं पर आधारित), विधागुरु प्रशंसा (ब्रहम सिंह एवं बाबा सुमेर सिंह की स्मृति में), राजप्रशसा (ब्रिटिश साम्राज्य की प्रशंसा में), शीर्षक कविताएँ प्रशंसात्मक शैली में हैं। इनके अतिरिक्त 'शोकोच्छवास' (भारतेन्दु के निधन पर), शोकाश्रु (पं. प्रतापनारायण मिश्र के निधन पर) स्वर्गारोहण (महारानी विक्टोरिया के निधन पर) इत्यादि श्रद्धांजलि स्वरूप संकलित है। रामायण पंचक, बाल विनोद प्रमोद पंचक भी है। डॉ. किशोरीलाल गुप्त का कथन है ''प्रियप्रवास के पहले 'हरिऔध' के काव्य की गतिविधि यदि किसी एक ग्रन्थ के द्वारा देखनी हो तो काव्योपन पर्याप्त है।''
10. **रसकलस** – यह हरिऔध जी की रीति-सम्बन्धी कविताओं का विशाल संग्रह है। सम्भवत: आचार्य पद्धति पर लिखित यह रस-ग्रन्थ ब्रजभाषा काव्य-रीति शास्त्र का हिन्दी में अंतिम ग्रन्थ है। इसमें सब रसों का पर्याप्त एवं समान उदाहरण देकर वर्णन किया है। कवि ने नयी उद्‌भावनाएँ एवं नवीन नायिकाओं की भी कल्पना की है।

**नाटक**

11. **रुक्मिणी परिणय** – इस नाटक की कथावस्तु, श्रीकृष्ण एवं रुक्मिणी के प्रेमविवाह पर आधारित है। उस समय हिन्दी में नाटक कम ही लिखे जाते थे। अत: तत्कालीन राज्यों में उस नाटक का बड़ा प्रचार हुआ एवं उपाध्याय जी की कीर्ति का विस्तार हुआ।
12. **प्रद्युम्न-विजय व्यायोग** – ब्रजभाषा में रचित दूसरा नाटक है जो व्यायोग है। इससे पूर्व भारतेन्दुजी धनंजय-विजय-व्यायोग लिखा था। यह नाटक श्रीकृष्ण के पुत्र प्रधुम्न के युद्ध एवं विजय प्राप्ति के पौराणिक आख्यान पर आधारित है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-1**

प्रश्न – 'हरिऔध' का पूरा नाम क्या है ?

प्रश्न – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की पहली रचना कौन सी है ?

**4.3 भाषा शैली**

हरिऔध जी ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में ही कविता की है, किंतु उनकी अधिकांश रचनाएँ खड़ी बोली में ही हैं। हरिऔध की भाषा प्रौढ़, प्रांजल और आकर्षक है। कहीं-कहीं उसमें उर्दू-फारसी के भी शब्द आ गए हैं। नवीन और अप्रचलित शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। संस्कृत के तत्सम शब्दों का तो इतनी अधिकता है कि कहीं-कहीं उनकी कविता हिंदी की न होकर संस्कृत की सी ही प्रतीत होने लगती है। राधा का रूप-वर्णन समय:

**रूपोद्याम प्रफुल्ल: प्राय: कलिका राकेन्दु-बिंबानना,**
**तन्वंगी कल-हासिनी सुरसि की क्रीड़ा-कला पुत्तली।**
**शोभा-वारिधि की अमूल्य मणि-सी लावण्य लीलामयी,**
**श्री राधा-मृदु भाषिणा मृगदगी-माधुर्य की मूर्ति थी।**

भाषा पर हरिऔध जी का अद्भुत अधिकार प्राप्त था। एक ओर जहाँ उन्होंने संस्कृत गर्भित उच्च साहित्यिक भाषा में कविता लिखी वहाँ दूसरी ओर उन्होंने सरल तथा मुहावरेदार व्यावहारिक भाषा को भी सफलतापूर्वक अपनाया। उनके चौपदों की भाषा इसी प्रकार की है। एक उदाहरण लीजिए:

**नहीं मिलते आँखों वाले, पड़ा अंधेरे से है पाला।**
**कलेजा किसने कब थामा, देख छिलते दिल का छाला ॥**

हरिऔध जी ने विविध शैलियों को ग्रहण किया है। मुख्य रूप से उनके काव्य में निम्नलिखित शैलियाँ पाई जाती हैं-

१. संस्कृत-काव्य शैली - प्रिय प्रवास में।

२. रीतिकालीन अलंकरण शैली - रस कलश में।

३. आधुनिक युग की सरल हिंदी शैली - वैदेही-वनवास में।

४. उर्दू की मुहावरेदार शैली- चुभते-चौपदों और चोखे-चौपदों में।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

प्रश्न- प्रियप्रवास कौन सी भाषा में लिखा गया है ?

प्रश्न- हरिऔध ने 'रस कलश' में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

**4.5 सारांश**

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध द्विवेदी युग के कवियों में ऐसे कवि थे जिन्होंने खड़ी बोली का पहला महाकाव्य लिखा। हिन्दी साहित्य में उनका वही स्थान है जो हिन्दी कथा जगत में 'उसने कहा था' के कथाकार चंद्रध र शर्मा गुलेरी का है। उन्होंने बज्र भाषा और खड़ी बोली दोनों में ही कविता की है। किन्तु उनकी अधिकांश रचनाएँ खड़ी बोली में ही है। उनकी भाषा प्रौढ़, प्रांजल और आकर्षक है। वे हिन्दी के कवि, निबंधकार तथा सम्पादक थे। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के रूप में कार्य किया। वे सम्मेलन द्वारा विद्यावाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किए गए थे। उन्होंने प्रिय प्रवास नामक ग्रंथ खड़ी बोली हिन्दी का पहला महाकाव्य लिखा, जिसे मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया था।

**4.6 कठिन शब्दावली**

**प्रांजल** - सरल या शुद्ध

**पारितोषिक** - पुरस्कार

**प्रवास** - देशांतरण

**आकलन**– अनुमान

**वैमनस्य** – मनमुटाव

## 4.7 स्वयं आकलन के प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न–1**

**उत्तर** अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

**उत्तर** प्रियप्रवास।

**अभ्यास प्रश्न–2**

**उत्तर** खड़ी बोली में।

**उत्तर** रीतिकालीन अंलकरण शैली।

## 4.8 संदर्भित पुस्तकें


1. डॉ. कन्हैया सिंह, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. बाबू गुलाबराय, हिन्दी का सुबोध इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।


## 4.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. अयोध्या सिंह हरिऔध के जीवन परिचय का विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।

प्रश्न. हरिऔध के साहित्यिक परिचय का वर्णन करो।

प्रश्न. आधुनिक साहित्य में हरिऔध के योगदान का विवेचन कीजिए।

*****

# इकाई -5

# अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : काव्यगत विशेषताएँ

**संरचना**

5.1 भूमिका
5.2 उद्देश्य
5.3 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : काव्यगत विशेषताएँ
स्वयं आकलन प्रश्न-1
5.4 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' भाषा-शैली
स्वयं आकलन प्रश्न-2
5.5 सारांश
5.6 कठिन शब्दावली
5.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
5.8 संदर्भित पुस्तकें
5.9 सात्रिक प्रश्न

## 5.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के जीवन और साहित्य का गहन अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में हम अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की काव्यगत विशेषताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनकी भाषा तथा शैलीगत विशेषताओं का भी अध्ययन करेंगे।

## 5.2 उद्देश्य

इकाई पाँच का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि-

1. हरिऔध जी के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ कौन-कौन सी है ?
2. हरिऔध की भाषा किस प्रकार थी ?
3. हरिऔध जी के काव्य की शैली किस प्रकार की थी ?
4. हरिऔध जी के प्रमुख प्रबंध काव्य कौन-कौन से हैं ?

## 5.3 अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध : काव्यगत विशेषताएँ

अयोध्या सिंह उपाध्याय की गणना द्विवेदी युगीन प्रमुख साहित्यकार के रूप में होती है। इन्हें ही खड़ी बोली हिन्दी में प्रथम महाकाव्य (प्रिय-प्रवास) लिखने का सौभाग्य प्राप्त है। इनका साहित्य विविधोन्मुखी है। इनके समस्त साहित्य के आधार पर इनकी प्रमुख साहित्यिक काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

**1. प्रबंधकाव्य महाकाव्य** - श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने 'प्रियप्रवास', 'पारिजात', 'वैदेही वनवास' आदि महाकाव्यों की रचना की है। इन्होंने भारतीय महाकाव्य परम्परा का अपने महाकाव्यों की रचना में पूर्ण रूप से पालन किया है। 'प्रियप्रवास' हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। इसका विषय राधा और श्रीकृष्ण का जीवन-चरित्र है। इनके इस महाकाव्य का लक्ष्य भी महाकाव्य परम्परा के अनुरूप है। 'प्रियप्रवास' में 'हरिऔध' जी ने रीतिकालीन कवियों के राधा-कृष्ण की भाँति बाग-बगीचों में काम-क्रीड़ा में तल्लीन रहने की अपेक्षा समाज सेवा, मानव-सेवा, देश-सेवा जैसे महान कार्यों एवं आदर्शों को प्रतिष्ठित करने को दिशा में समर्पित दिखाया है। उनके नायक श्रीकृष्ण रसिक-शिरोमणि, नटनागर और कुंज-विहारी न होकर ब्रज के लोगों की विपत्तियों से उद्धार करने वाले लोकनायक तथा लोकरक्षक हैं। उनकी राधा भी विरह में आँसू बहाने वाली नायिका नहीं है, वह जनहित के लिए सदा तत्पर रहती है।

'पारिजात' उनका दूसरा महाकाव्य है, जिसमें उनके चिन्तन की प्रौढ़ता और परिपक्वता के दर्शन होते हैं। इसमें कवि ने आध्यात्मिक एवं धार्मिक विषयों पर गम्भीरता से विचार व्यक्त किये हैं। इसी प्रकार 'वैदेही वनवास' शीर्षक महाकाव्य में 'हरिऔध' जी ने 18 सर्गों में रामकथा को नवीन संदर्भों और मौलिक उद्‌भावनाओं के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें राम और सीता के आदर्श चरित्रों का वर्णन किया है।

**2. राष्ट्र प्रेम की भावना** – 'हरिऔध' के कर्तव्य में राष्ट्र–प्रेम की भावना सशक्त रूप में चित्रित हुई है। कवि ने परमानन्द कविता में कहा है कि हम सब देशवासियों को देश को स्वदेश कहना चाहिए। उन्होंने देशभक्ति व राष्ट्रप्रेम के भाव की मार्मिक अभिव्यंजना के क्षेत्र में नया प्रयोग करते हुए कालिदास के मेघदूत के आधार पर 'पवन' को दूत बनाकर 'पवनदूत' की उद्‌भावना की है। विरहिणी राधा 'पवन' को दूत बनाकर उसके माध्यम से श्रीकृष्ण के नाम जो सन्देश भेजती है, उसमें वह अपनी विरह–वेदना को भूलकर समाज–सेवा व देशभक्ति को विशेष महत्त्व देती है। वह पवन को लक्ष्य करके कहती हैं कि प्यारे कृष्ण उसकी सुधि लेने के लिए भले ही न घर आवें, किन्तु वे चिरंजीव हों और सदा लोक–कल्याण की भावना में संलग्न रहें।

**3. समाज-सुधार की भावना** – 'हरिऔध' जी के काव्य में समाज–सुधार की भावना का व्यापक स्तर पर उद्‌घोष हुआ है। उन्होंने 'रसकलश' में नायिका–मेद पर विचार करते समय नवीन नायिकाओं का युगानुरूप समावेश किया है। यथा समाज सेवी नायिका। 'चोखे चौपदे', 'चुभते चौपदे' में भी जहाँ एक ओर तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विकृतियों के विनाश की कामना की है, वहीं समाज कल्याण की भी कामना की है।

**4. मानवतावादी भावना** – 'हरिऔध' जी के काव्य में उनके मानवतावादी विचारों का सुन्दर चित्रण हुआ है वे सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार, एक घर के समान समझते हैं और मानवमात्र के प्रति स्नेह–भावना को प्रोत्साहन देते हैं। उनका कथन है कि वही व्यक्ति परमानन्द का अधिकारी है, जिसे सभी देशों से प्यार हो तथा मानव मात्र को अपने सगे–सम्बन्धी समान मानता है–

**जिसे है सब देशों से प्यार।**
**सगे हैं जिसके मानवमात्र ।**
**सदन है जिसका सब संसार ।।**

**5. प्रकृति-चित्रण** – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के काव्य में प्रकृति के मनोरम दृश्यों का सजीव चित्रण हुआ है। उन्होंने प्रकृति के मनोरम दृश्यों के साथ–साथ भयंकर दृश्यों का भी वर्णन किया है। उनके काव्य में प्रकृति के आलम्बन, उद्दीपन व उपदेशिका आदि सभी रूपों में वर्णन हुआ है। संध्याकालीन प्राकृतिक दृश्यों को 'हरिऔध' जी ने इस प्रकार अंकित किया है–

**दिवस का अवसान समीप था।**
**गगन था कुछ लोहित हो चला।**
**तरू-शिखा पर भी अब राजती।**
**कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा ।।**

**6. भाषा** – श्री हरिऔध जी के काव्य का भाव पक्ष जितना विस्तृत एवं गौरवमय है, कला पक्ष भी उतना ही सक्षम है। उन्होंने आरम्भ में ब्रज भाषा में लिखना आरम्भ किया था किन्तु बाद में खड़ी बोली हिन्दी के शुद्ध साहित्यिक रूप का प्रयोग किया। हरिऔध जी वास्तव में भाषा के महान मर्मज्ञ एवं कुशल शिल्पी थे। यहाँ उन्होंने एक और संस्कृत वर्ण–वृत्तों में क्लिष्ट शब्द योजना की है तथा समासों का प्रयोग करके जटिल शैली रचना में सफलता प्राप्त की है, वहीं दूसरी ओर साधारण भाषा का भी अत्यन्त सरस एवं सरल रूप में प्रयोग किया है। उनकी सरल भाषा का निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य है–

**सामने हो पहाड़ तो क्या।**
**धूल में उसे मिलाता है।।**
**सामने आ रुकावटें सब।**
**उसे हैं रोक नहीं पातीं।**

**7. छन्द एवं अलंकार** – 'हरिऔध' जी के काव्य में तत्कालीन सुप्रसिद्ध एवं सुप्रचलित लगभग सभी छंदों एवं अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ है। उन्होंने संस्कृत के छंदों-द्रुतविलम्बित, मन्दाकान्ता, वंशस्थ, शिखरिणी, मालिनी आदि के साथ-साथ दोहा, रोला, चतुष्पद, चौपदे, तांटक आदि छंदों का भी प्रयोग किया है। 'हरिऔध' जी ने उर्दू के छंदों का प्रयोग भी किया है यथा-शेर, सबाई आदि के अनुकरण पर द्विपदों, चौपदों, षट्पदों आदि नये छंदों का भी निर्माण किया है। हरिऔध जी ने यमक, श्लेष, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सफल प्रयोग किया है। 'हरिऔध' जी की रचना 'रसकलश' में अलंकारों का चमत्कार देखते ही बनता है।

मुहावरे व लोकोक्तियों के प्रयोग से 'हरिऔध' जी ने अपने काव्य की भाषा को अत्यन्त सार्थक एवं प्रांजल रूप प्रदान किया है। उन्होंने वात्सल्य एवं श्रृंगार रस का वर्णन किया है। श्रृंगार रस का वर्णन करते समय कहीं भी अश्लीलता का समावेश नहीं होने दिया।

अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'हरिऔध' जी के काव्य का भावपक्ष अत्यन्त विशद एवं समृद्ध है तथा कला पक्ष भी उतना ही सशक्त एवं सम्पन्न है। आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास एवं खड़ी बोली हिन्दी को गद्य एवं पद्य दोनों स्तर पर उन्नत बनाने के लिए 'हरिऔध' जी को सदैव आदर भाव के साथ स्मरण किया जाता रहेगा।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-1**

प्रश्न 'प्रियप्रवास' किस प्रकार की काव्य रचना है ?

प्रश्न हरिऔध ने किस रचना में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक विकृतियों के विनाश की कामना की है ?

## 5.4 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी की भाषा-शैली

**अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की भाषा-शैली** – अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं। जिस समय हरिऔध जी काव्य-रचना कर रहे थे, उस समय भाषा के उत्थान पर अत्यधिक बल दिया जा रहा था। काव्य की भाषा खड़ी बोली हिन्दी को बनाया जा रहा था। भाषा के विषय 'हरिऔध' जी के बड़े व्यापक एवं उदार विचार रहे हैं। सिद्धान्त रूप में वे भाषानुकूल भाषा-प्रयोग के समर्थक थे। अपने इसी सिद्धान्त का उन्होंने अपने काव्य में पूर्णत: पालन किया है। वे भाषा के मर्मज्ञ विद्वान थे। भाव के अनुकूल ही उनकी भाषा रूप बदलती दिखलाई पड़ती है। इनके साहित्य की प्रमुख भाषागत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

**1. सरल, सहज एवं सरस भाषा** – प्रस्तुत काव्य में 'हरिऔध' जी ने अत्यन्त सरल, सहज व सरस भाषा का प्रयोग किया है। भाषा का प्रवाह सर्वत्र देखते ही बनता है। पाठक को विषय को समझने में भाषागत कठिनाई का सामना कहीं भी नहीं करना पड़ता।

प्रस्तुत काव्य की भाषा की आम विशेषता है कि उसमें तद्भव व तत्सम दोनों प्रकार की शब्दावली का सफल प्रयोग किया है। शब्द-योजना भी सफल बन पड़ी है-

**क्यों होती है निठुर इतना त्यों बढ़ाती व्यथा है।**
**तू है मेरी चिर-परिचिता, तू हमारी प्रिया है।**
**मेरी बातें सुन, मत सता, छोड़ दे यामता को।**
**पीड़ा खो के प्रणातजन की है बड़ा पुण्य होता ।।**

कहीं-कहीं कवि ने मुहावरों के सफल प्रयोग से भाषा को सुगठित एवं सारगर्भित रूप प्रदान किया है। ऐसी भाषा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

**तू बला यूँ ही बेलता पापड़ ।**
**पाँव जाता न दु:खों का यों जम।**
**तो न खेलती मुसीबत यों।**
**जो खुला आँख-कान रखते हम।**

**2. अलंकार-प्रयोग** - अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की काव्य-रचनाओं में भाव-सौंदर्य के साथ-साथ कला-सौंदर्य भी है। कला-सौदर्य हेतु कवि ने तत्कालीन प्रचलित लगभग सभी अलंकारों द्वारा अपनी काव्य भाषा को सजाया है। उनका अलंकार प्रयोग अत्यन्त सहज एवं स्वाभाविक है। उन्होंने शब्दालंकारों एवं अर्यालकारों दोनों प्रकार के अलंकारों का प्रयोग किया है। उनके हर पथ में अनुप्रास की छटा बिखरी हुई देखी जा सकती है। इसके अतिरिक्त पुनरुक्तिप्रकाश, वीप्सा, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, विरोधाभात, आदि विभिन्न अलंकारों का सफल प्रयोग किया है। अलंकार-प्रयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

**उपमा-** **नीले कमल दल सी गाल की श्यामलता है।**
**पीला प्यारा व कटि में पैन्हते फबीता।**

**रूपक** **''जो उपदेश उन्होंने मुझको दिये हैं,**
**वे जीवन के प्रिय अवलम्ब हैं।**
**उपवन-रूपी मेरे मानस के लिए,**
**सुरभित करने वाले कुसुम-कदम्ब हैं॥''**

**3. काव्य-गुण** - 'हरिऔध' जी के काव्य में प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है, परन्तु प्रधानता माधुर्य गुण ही है। चूंकि यह प्रसंग नायिका के करुणापूर्ण विरह से भरा पड़ा है। अत: रस की दृष्टि से अनुकूल इन काव्य गुणों का कवि ने बड़ी कुशलता के साथ प्रयोग किया है। यथा-

**'कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो।**
**तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को।'**

**4. शब्द** - शक्ति-'हरिऔध' जी विषय को सहज रूप में प्रस्तुत करने के पक्ष में थे। इसलिए उन्होंने मुख्य रूप से अभिधा शब्द-शक्ति का प्रयोग किया है। बीच-बीच में कुछ स्थलों पर मुहावरों का प्रयोग करके, यथा- **'बिगड़ी बात मेरी बना दे'** भाषा में लाक्षणिकता का भी समावेश किया है। प्रसंग के अंत में प्रतीकात्मक रूप से राधा के प्रेम की अभिव्यक्ति में व्यंजना शब्द-शक्ति
का भी प्रयोग हुजा है। यथा-

**''यो देना ऐ पवन बतला फूल-सी एक बाला।**
**म्लाना हो कमल पग को चूमना चाहती है।''**

**5. रस** - काव्य का प्रमुख लक्ष्य रसाभिव्यक्ति करना है। प्रस्तुत काव्य में राधा के विरह का चित्रण किया गया है। इसलिए यहाँ वियोग श्रृंगार रस का सुन्दर परिपाक हुआ है। यहाँ इस रस का आलम्बन राधा है। उनकी चेष्टाएँ ही उद्दीपन हैं। आश्रय यहाँ पाठक का हृदय या पाठक है। राधा का यह वियोग प्रवास वियोग श्रृंगार रस की कोटि में आता है। नायक श्रीकृष्ण प्रदेश में है, इसलिए राधा के हृदय में उनके प्रति वियोग उत्पन्न हुआ है। वियोग श्रृंगार रस का एक उदाहरण देखिए-

**मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नेत्रवाले।**
**जाके आये न मधुवन से, औ न भेजा संदेसा।**

**मैं रो-रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ।**
**जाके मेरी सब दुख-कथा श्याम को तू सुना दे।।**

**6. छंद प्रयोग** - अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने अपने काव्य में संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषा में प्रयुक्त होने वाले छंदों का प्रयोग किया है। 'हरिऔध' जी भाव एवं भाषा के अनुकूल छंद प्रयोग की कला में प्रवीण थे। यथा 'प्रियप्रवास' महाकाव्य में उन्होंने संस्कृत के वर्णिक छन्द का प्रयोग किया है। प्रस्तुत पठित काव्यांश में कवि ने मन्दाक्रांता छंद का सफल प्रयोग किया है।

इसके अतिरिक्त इनके काव्य में मालिनी, वंशस्थ, शिखरिणी, द्रुतविलम्बित आदि छंदों का प्रयोग भी हुआ है। यही नहीं हरिऔध जी ने उर्दू, फारसी के छंदों का भी खूब प्रयोग किया है। अतः स्पष्ट है कि हरिऔध जी के कारण में छंद-प्रयोग की विविधता दिखलाई पड़ती है। 'मन्दाक्रांता' छंद का निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य है-

**ज्यों ही मेरा भवन तज तू, अल्प आगे बढ़ेगी।**
**शोभावाली अमित कितनी, कुंज-पुंजें मिलेंगी।**
**प्यारी छाया मृदुल स्वर से, मोह लेंगी तुझे वे।**
**तो भी मेरा दुख लख वहाँ, तू न विश्राम लेना।**

अतः सार रूप में कहा जा सकता है कि हरिऔध जी के काव्य का अनुभूति पक्ष जितना सक्षम एवं विशद है उतना ही कला पक्ष या अभिव्यक्ति पक्ष भी समृद्ध है। अतः कवि ने अपने काव्य के कला पक्ष को समृद्ध बनाने हेतु शब्द-योजना, भाषा, छंद प्रयोग, अलंकार-योजना आदि पर पूरा ध्यान दिया है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

प्रश्न - हरिऔध के काव्य में किस काव्य गुण की प्रधानता है ?

प्रश्न - संस्कृत-हिन्दी के छंदों के अतिरिक्त हरिऔध ने किस भाषा के छंदों का प्रयोग किया है

## 5.5 सारांश

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने विविध विषयों पर काव्य रचना की है। यह उनकी विशेषता है कि उन्होंने कृष्ण-राधा, राम-सीता से संबंधित विषयों के साथ-साथ आधुनिक समस्याओं को भी लिया है और उन पर नवीन ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। प्राचीन और आधुनिक भावों के मिश्रण से उनले काव्य में एक अद्भुत चमत्कार उत्पन्न हो गया है। हरिऔध जी ने गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में भी सेवा की। वे द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने सर्वप्रथम खड़ी बोली में काव्य-रचना करने यह सिद्ध कर दिया कि उसमें भी ब्रज भाषा के समान खड़ी बोली की कविता में भी तरसता और मधुरता आ सकती है। हरिऔध में एक श्रेष्ठ कवि के समस्त गुण विद्यमान थे। उनका ग्रंथ 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य अपनी काव्यगत विशेषताओं के कारण हिंदी महाकाव्यों में 'मील का पत्थर' माना जाता है।

## 5.6 कठिन शब्दावली

**वात्सल्य** - स्नेह
**शिखरिणी** - स्त्रियों में श्रेष्ठ स्त्री
**शार्दूल** - बाघ, सिंह
**कामिनी** - स्नेहमयी स्त्री
**अभिव्यक्ति** - स्पष्टीकरण

## 5.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न-1**

**उत्तर**- महाकाव्य।

**उत्तर**- चौखे चौपदे, चुभते चौपदे।

**अभ्यास प्रश्न-2**

**उत्तर**- माधुर्य गुण की।

**उत्तर**- उर्दू के छंदों का प्रयोग।

## 5.8 संदर्भित पुस्तकें


1. डॉ. कन्हैया सिंह, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।
2. अयोध्या सिंह उपाध्याय, 'हरिऔध' प्रियप्रवास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. गणपतिचंद्र गुप्त, हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।


## 5.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. 'हरिऔध' की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न. 'हरिऔध' की साहित्यिक भाषा शैली का विवेचन कीजिए।

प्रश्न. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का साहित्यिक योगदान कैसा रहा, स्पष्ट कीजिए ।

*****

# इकाई-6
# अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : व्याख्या भाग

**संरचना**


6.1 भूमिका

6.2 उद्देश्य

6.3 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : व्याख्या भाग (कविता)

- प्रिय प्रवास (कविता) : व्याख्या भाग
- दुखिया के आँसू (कविता) : व्याख्या भाग
- एक बूँद (कविता) : व्याख्या भाग
- काँटा और फूल (कविता) : व्याख्या भाग

स्वयं आकलन प्रश्न

6.4 सारांश

6.5 कठिन शब्दावली

6.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

6.7 संदर्भित पुस्तकें

6.8 सात्रिक प्रश्न


## 6.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कविताओं की व्याख्या करेंगे। इसके अन्तर्गत हम प्रियप्रवास, दुखिया के आँसू, एक बूँद तथा काँटा और फूल कविता की विस्तार पूर्वक व्याख्या करेंगे।

## 6.2 उद्देश्य

इकाई छः का अध्ययन करने के पश्चात् एम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. प्रियप्रवास कविता का मूल भाव क्या है ?
2. दुखिया के आँसू कविता में किसके आँसुओं का वर्णन किया गया है ?
3. एक बूँद कविता का सन्देश क्या है ?
4. काँटा और फूल कविता का सार क्या है ?

## 6.3 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : व्याख्या भाग ( कविता )

### ● प्रिय प्रवास ( कविता ) : व्याख्या भाग

**कविता का सार**-'प्रिय प्रवास' अयोध्याय सिंह उपाध्याय विरचित खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। इसकी रचना 1913 ई. में हुई थी। पाठ्यक्रम में संकलित अंश इस महाकाव्य का प्रारंभिक अंश है। इस काव्य में श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर इसमें गोप-गोपियों, नन्द और यशोदा आदि की क्या दशा होती है और वे कृष्ण के विषय में क्या सोचते है, इसका चित्रण हुआ है। 'प्रिय प्रवास' काव्य का प्रारम्भ संध्या के वर्णन से होता है। कवि के अनुसार गोकुल में साँझ हो रही थी, आकाश में उगते सूर्य की लालिमा छाई थी और सूर्य ऊँचे पेड़ों के पीछे छुपने जा रहा था। वन में पक्षी चहचहा रहे थे। आकाश में कुछ पक्षी तरह-तरह की आवाजें करते हुए उड़े चले जा रहे थे। धीरे-धीरे लालिमा गहरी हुई और सारे आकाश तथा चारों दिशाओं में छा गई। सभी पेड़-पौधों के समूह भी इस लालिमा में डूब गए। आकाश की ताली, जमीन पर बह रही नदी के किनारे भी दिखने लगी। तालाबों और नदियों के जल में भी यह लाली दिखाई पड़ने लगी। सुन्दर पर्वतों की चोटियों पर किरणें चमकने लगीं।

**दिवस का अवसान समीप था।**
**गगन था कुछ लोहित हो चला।**
**तरु-शिखा पर यी अब राजती।**
**कमलिनी-कुत-वल्लभ की प्रभा।।**

**शब्दार्थ** - **अवसान** = समाप्ति। **समीप** = निकट। **लोहित** = लाल। **तरु-शिखा** = पेड़ की चोटी। **राजती** = शोभा देती। **कमलिनी**-कुल-वल्लभ = कमलनियों के कुल का स्वामी, सूर्य।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **अयोध्या सिंह उपाध्याय** 'हरिऔध' द्वारा रचित महाकाव्य 'प्रिय-प्रवास' से अवतरित है। प्रस्तुत पंक्तियों 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य की प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं। इनमें संध्या समय की प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। कृष्ण के गोकुल से मथुरा जाने का वर्णन है। कृष्ण के विरह में गोपियाँ दुखी है और विलाप करती हैं। प्रस्तुत पद्यांश में संध्या के समय का चित्रण करते हुए कविवर कहते हैं कि-

**व्याख्या**- इन पंक्तियों में कवि कहता है कि दिन का अन्त नजदीक था अर्थात् दिन ढलने वाला या और आकाश भी अब हुए लाल-सा हो गया था। ढलते सूर्य की लालिमा से सारा आकाश रंग गया था। अब सूर्य की किरणें पेड़ों की चोटियों पर ही शोभा दे रही थीं अर्थात् सूर्य की किरणें अब पेड़ों की चोटियों पर ही चमक रही थीं।

**विशेष**-

1. ढलते सूर्य की लाली से रंगे आकाश का दृश्य-बिम्ब अत्यधिक सुन्दर है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
4. चित्रात्मक शैली का प्रयोग है।
5. दुतविलम्बित छंद का प्रयोग हुआ है।
6. अनुप्रास एवं स्वभावोक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**विपिन बीच विहंगम-वृन्द का।**
**कलनिनाद विवर्द्धित या हुआ।**
**ध्वनिमयी-विविधा विहगावलि**
**उड़ रही नभ-मंडल मध्य थी।**

**शब्दार्थ-विपिन** = वन, जंगल। **विहंगम** = पक्षी। **वृन्द** = समूह। **कलनिनाद** = मधुर शोर। **विवर्द्धित** = बढ़ा हुआ। **ध्वनिमयी** = आवाज युक्त। **विविधा** = अनेक प्रकार की। **विहगावलि** = पक्षियों का समूह।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' विरचित 'प्रिय प्रवास' से अवतरित है। प्रस्तुत पक्तियों 'प्रिय-प्रवास' महाकाव्य की प्रारंभिक पक्तियां हैं। इनमें संध्या समय की प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

**सरलार्थ**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि वन में पक्षियों के समूह का मधुर स्वर प्रत्येक क्षण बढ़ता जा रहा था। अनेक प्रकार के पक्षियों की ना-ना प्रकार की आवाजें आकाश में चारों ओर फैल रही थीं अर्थात संध्या के समय पक्षियों की ध्वनि गूंजने लगती है।

**विशेष**-

1. पक्षियों के कल-कल स्वर से युक्त संध्या का सुन्दर चित्रण हुआ है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली हिन्दी है।

3. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

4. चित्रात्मक शैली का प्रयोग है।

5. द्रुतविलम्बित छद का प्रयोग हुआ है।

6. अनुप्रास एवं स्वभावोक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**अधिक और हुई नम लालिमा**
**दश-दिशा अनुरंजित हो गई।**
**सकल पादप पुंज हरीतिमा**
**अरुणिमा विनिमज्जित-सी हुई ।**

**शब्दार्थ- नभ-लालिमा** = आकाश की लाली। **अनुरंजित** = रंगी हुई। **पादप** = पौधे। **पुंज** = समूह। **हरीतिमा** = हरियाली। **अरुणिमा** = लाली। **विनिमज्जित** = पूरी तरह डूबे हुए।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' विरचित 'प्रिय प्रवास' से अवतरित है। प्रस्तुत पंक्तियाँ 'प्रिय-प्रवास' महाकाव्य की प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं। इनमें संध्या समय की प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि संध्या का प्रभाव बढ़ने से तो आकाश में ढलते सूर्य की लालिमा लगातार बढ़ने लगी है। दसों दिशाएँ उस लालिमा से रंग गई है। सभी पेड़-पौधों की हरियाली मानो संध्या की लालिमा में पूरी तरह डूब गई है अथवा उसमें स्नान कर रही है।

**विशेष**-

1. संध्या का चित्र अंकित करते हुए कवि ने शाम की लालिमा का वर्णन किया है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान प्रांजल खड़ी बोली हिन्दी है।
3. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
4. चित्रात्मक शैली का प्रयोग है।
5. द्रुतविलम्बित छंद का प्रयोग हुआ है।
6. अनुप्रास एवं स्वभायोक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**झलकने पुलिनों पर भी लगी।**
**गगन के तत की लालिमा।**
**सारे सरोवर के जल में पड़ी।**
**अरुणता अति ही रमणीय थी।**

**शब्दार्थ**-पुलिनों = किनारों। **गगन** = आकाश। **सरि** = नदी, सरिता। **सरोवर** = तालाब। **रमणीय** = सुंदर, रमण के योग्य।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** विरचित **'प्रिय प्रवास'** से अवतरित है। प्रस्तुत पंक्तियाँ **'प्रिय-प्रवास'** महाकाव्य की प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं। इनमें संध्या समय की प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि आकाश में फैली यह लालिमा अब नदियों के किनारों पर भी चमकने लगी है। नदियों और तालाबों के जल में डूबते सूर्य की लाली झलकने लगी थी जो अत्यधिक सुन्दर लगने लगी थी।

**विशेष-**

1. संध्या का चित्रण मनोहारी बन पड़ा है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान प्रांजल खड़ी बोली हिन्दी है।
3. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
4. चित्रात्मक शैली का प्रयोग है।
5. द्रुतविलम्बित छंद का प्रयोग हुआ है।
6. अनुप्रास एवं स्वभावोक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**अचल के शिखरों पर जा चढ़ी।**
**किरण पादप-शीश विहारिणी।**
**तरणि-बिंब तिरोहित हो चला।**
**गगन मंडल मध्य शनैः शनैः ॥**

**शब्दार्थ- अचल** = पहाड़। **शिखरों** = चोटीयों। **पादप** = पेड़, पौधे। **शीश** = चोटी। **विहारिणी** = विचरण करने वाली। **तरणि** = सूर्य। **बिंब** = परछाई। **तिरोहित** = डूब गाया। **शनै-ःशने** = धीरे-धीरे।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित **'प्रिय प्रवास'** से अवतरित है। प्रस्तुत पंक्तियाँ **'प्रिय-प्रवास'** महाकाव्य की प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं। इनमें संध्या समय की प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

**व्याख्या**-इन पक्तियों में कवि कहता है कि सूरज की वे किरणें जो कुछ समय पहले पेड़ों की चोटियों पर विचरण कर रही थीं, घूम रही थीं अब वे दूर स्थित पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ी दिखाई देती हैं। कहने का भाव यह है कि सूर्य की किरणें पेड़ों की चोटियों से दूर जाकर अब पहाड़ों की चोटियों पर चमक रही हैं। सूर्य का गोला अब डूब चुका है और आकाश अब खाली हो गया है। आकाश की गोद को छोड़कर सूर्य डूब चुका है।

**विशेष-**

1. संध्या का मोहक दृश्य बिम्ब उपस्थित किया गया है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान प्रांजल खड़ी बोली हिन्दी है।
3. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
4. चित्रात्मक शैली का प्रयोग है।
5. द्रुवविलम्बित छंद का प्रयोग हुआ है।
6. अनुप्रास एवं स्वभावोक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

- **दुखिया के आँसू ( कविता ) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार**-'दुखिया के आँसू' **अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** की एक प्रसिद्ध काव्य रचना है। इस कविता में कवि ने दुःखी व्यक्ति के आँसुओं के विषय में बताया है। कवि के अनुसार दुःखी व्यक्ति के आँसू हृदय में घुमड़ कर आँखों के रास्ते बाहर बह जाते हैं। दुःखी व्यक्ति अपने आँसुओं से अपने गाल गीले करता रहता है परन्तु कोई उस पर दया नहीं दिखाता। दुखी व्यक्ति के आँसुओं में अत्यधिक पीड़ा छुपी रहती है परन्तु फिर भी इन्हें देखकर शायद ही किसी को दया आती है। बच्चों के आँसुओं को देखकर हर पिता का मन उमड़ता है परन्तु न जाने दुखिया के आँसुओं में क्या कमी है जो संसार के स्वामी ईश्वर को भी इनके आँसुओं पर दया नहीं आती। चन्द्रवदनी सुन्दरियों के आँसू पोंछने तो बहुत से लोग आ जाते हैं परन्तु दुखियों के आँसु कोई नहीं पोंछता। संसार में आँसुओं ने बड़ा कमाल किया है, परन्तु इन दुखियों के आँसू सदा व्यर्थ ही जाते हैं। कवि कहता है कि किसी दयालु का हाथ इनके आँसू पोंछने के लिए ऊपर नहीं उठता। इन पर कोई प्यार से हमदर्दी तक नहीं दिखाता। इन आंसुओं का तो जन्म लेना ही व्यर्थ गया।

इन्हें तो दिल में ही दफन किया जाना चाहिए था। इन्हें देखकर जब किसी में करुणा ही पैदा नहीं होती तो फिर इनका जन्म लेना ही व्यर्थ है। कवि दुखिया लोगों के फूटे भाग्य को ही दोष देते हुए कहता है कि इनके भाग्य में ही शायद निरन्तर कष्ट सहना लिखा है। यही कारण है कि इनके आँसुओं का किसी पर कोई असर नहीं होता। **'हरिऔध'** जी कहते हैं कि दुखियों की आँखों से जो बह रहा है वह जल ही है, आँसू नहीं है। जिन आँसुओं का किसी पर भी कोई असर न होता हो, उन्हें आँसू कहना ही बेकार है। अंत में कवि कहता है कि कोई तो अपने दिल की सारी व्यथा को आँसुओं में दाल देता है परन्तु उन्हें देख किसी के दिल पर जरा भी असर नहीं पड़ता।

**बावले से घूमते जी में मिले।**
**आँख में बेचैन बनते ही रहे।**
**गिर कपालों पर पड़े बेहाल से।**
**बात दुखिया आँसुओं की क्या कहें॥**

**शब्दार्थ- बावले** = पगलाए से। **कपोल** = गाल।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि दुखिया के आँसू बावले होकर उसके हृदय में घूम रहे थे। अर्थात् दु:खी हृदय अपने दु:ख को आँसुओं में व्यक्त करना चाहता था। दु:खी व्यक्ति के आँसू, आँखों में आकर उमड़ने के लिए व्याकुल से दिखाई पड़ते थे। आखिरकार ये आँसू विवश होकर उसके गालों पर आ गिरे। कवि कहता है कि दु:खी व्यक्ति के आँसुओं के विषय में वह और क्या कह सकता है। वस्तुत: आँसूओं में डूबे व्यक्ति का दु:ख सचमुच बहुत अधिक है।

**विशेष**-

1. दुखिया के आँसुओं का सुन्दर चित्रण हुआ है।
2. भाषा सामान्य बोल चाल की खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**हैं व्यथाएँ सैकड़ों इनमें भरी।**
**ये बड़े गंभीर दुख में हैं सने।**
**पर इन्हें अवलोक करके दो बता।**
**हैं कलेजा थामते कितने जने ॥**

**शब्दार्थ-व्यथाएँ** = पीड़ाएँ। **गंभीर** = गहरी। **सने** = डूबे। **अवलोक** = देखकर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि दुखी व्यक्ति के इन आँसुओं में अगणित दु:ख एवं पीड़ाएँ भरी हुई हैं। ये आँसू गहरे दु:ख में डूबे हुए होते हैं। किसी दुखिया के आंसुओं को बहते देखकर कितने लोग हैं, जो अपना कलेजा थाम लेते हैं अर्थात् सचमुच दु:खी होते हैं। कहने का भाव यह है कि दुखिया के आँसुओं को देखकर कोई दुखी नहीं होता।

**विशेष**-

1. आँसुओं के माध्यम से गहन पीड़ा की अभिव्यक्ति होती है परन्तु आज दुखियों के आँसुओं को देखकर कोई दु:खी नहीं होता।
2. भाषा सामान्य बोल चाल की खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**बातों के आँसुओं को देखकर।**
**है उमड़ आता पिता-उर प्रेममय।**
**कौन सी इन आँसुओं में है कसर।**
**जग-जनक भी जो नहीं होता सदय।।**

**शब्दार्थ-प्रेममय** = प्रेम से भरा। **कसर** = कमी। **जग-जनक** = संसार का पिता, ईश्वर। **सदय** = दयालु।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** विरचित कविता 'दुखिया के आँसू' से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि बालकों के आँसुओं को देखकर पिता का हृदय पिघल उठता है तो फिर दुखिया के आँसुओं में ऐसी क्या कमी है, जो उनको देखकर भगवान का भी हृदय नहीं पसीजता। भगवान तो सारे संसार का पिता है। उसका मन तो दुखियों के आँसुओं को देखकर पिघलना ही चाहिए।

**विशेष**-

1. दुखिया के आँसुओं को देखकर ईश्वर भी दया नहीं करता, इसका कवि को दु:ख है।
2. भाषा सामान्य बोल चाल की खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**चन्द-बदनी आँसुओं पर प्यार से।**
**हैं बहुत से लोग तन मन वारते।**
**एक ये हैं, लोग जिनके वास्ते।**
**हैं नहीं दो बूँद आँसू ढालते ।।**

**शब्दार्थ-चन्द-बदनी** = चन्द्रमुखी। **वारते** = न्योछावर करते। **वास्ते** = के लिए।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि चन्द्रमुखी स्त्रियों के आँसुओं पर तो बहुत से लोग अपना तन-मन न्योछावर करते हैं अर्थात् स्त्रियों के आँसुओं से प्रभावित या उत्तेजित होकर लोग अपनी जान की बाजी तक लगा देते

हैं। दूसरी ओर एक ये दुखी लोग भी हैं जिनके लिए कोई दो आँसू भी बहाने के लिए तैयार नहीं है। कहने का भाव यह है कि आज सचमुच ससार कठोर हो गया है। दुखियों की कोई नहीं सुनता या आज कोई उनका दु:ख बांटना नहीं चाहता।

**विशेष**-

1. सुन्दर नारियों के आँसू पोंछने के लिए अनेक बहादुर प्राणों की बाजी लगा देते हैं परन्तु दु:खियों के आँसू का आज कोई मूल्य नहीं है।
2. भाषा सामान्य बोल चाल की खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**क्या न कर डाला खुला जादू किया।**
**आँख के आँसू कढ़े या जब बहे।**
**किन्तु ये ही कुछ हमें ऐसे मिले।**
**हाथ ही में जो विफलता के रहे।**

**शब्दार्थ- कढ़े** = निकले। **विफलता** = असफलता ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जब कभी किसी की आँख से आँसू गिरता है या बहता है तो संसार में कुछ भी हो सकता है। बड़ी उथल-पुथल मच सकती है। परन्तु दुखियों के आँसू ही ऐसे आँसू हैं, जो कि हमेशा व्यर्थ ही बहे हैं। दुखियों के आँसू व्यर्थ ही बह जाते हैं। उनके आँसुओं का कुछ मूल्य नहीं होता।

**विशेष**-

1. दुखियों के प्रति कवि की स्पष्ट सहानुभूति है।
2. भाषा सामान्य बोल चाल की खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**पोंछ देने के लिए धीरे इन्हें।**
**है नहीं उठता दयामय कर कहीं।**
**इन बेचारों पर किसी हमदर्द की।**
**प्यार वाली आँख भी पड़ती नहीं।।**

**शब्दार्थ-दयामय** = दयालु। **हमदर्द** = सहायक।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कवितों के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि दुखी लोगों के आँसू पोंछने के लिए किसी दयालु व्यक्ति का हाथ उठता उसे दिखाई नहीं पड़ता। अर्थात् अब दयालु व्यक्तियों की संख्या कम हो गई है। कवि कहता है कि आँसू पोंछना तो दूर रहा इन भाग्य के मारों पर कोई प्यार भरी नजर भी नहीं डालता।

**विशेष**–

1. संसार से दयाभाव कम होने संबंधी कवि की चिंता प्रकट हुई है।
2. भाषा सामान्य बोल चाल की खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**क्यों उरों से ये दृगों में आ कढ़े।**
**था भला, जो नाश हो जाते वहीं।**
**जो किसी का भी इन्हें अवलोक कर।**
**मन न रोया जो पसीजा तक नहीं।।**

**शब्दार्थ**–**उरों** = दिलों। **दृगों** = आँखों। **पसीजा** = द्रवित हुआ।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि दुखी लोगों के आँसू हृदय से बाहर ही क्यों निकले। इनका तो जन्म लेना ही अभिशाप है। इन्हें तो पैदा ही नहीं होना चाहिए था। इससे तो अच्छा था कि ये पैदा होने से पूर्व ही नष्ट हो जाते या हृदय में ही दबे रहते। इनका जन्म लेना, पैदा होना व्यर्थ गया, क्योंकि इन्हें बहते देखकर किसी भी मनुष्य का हृदय करुणा से नहीं भर रहा।

**विशेष**–

1. दुखिया के आँसुओं की अपेक्षा का मार्मिक चित्रण हुआ है।
2. भाषा सामान्य बोल चाल की खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास एवं प्रश्न अलंकारों का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**भाग फूटा, बेबसी लिपटी रही।**
**बहु दुखों से ही सदा नाता रहा।**
**फिर अजब क्या, इस अभागे जीव के।**
**आँसुओं का जो असर जाता रहा।।**

**शब्दार्थ**– **भाग फूटा** = भाग्य फूटना, बदकिस्मती। **बहु** = असंख्य, अनेक। **अभागे** = भाग्यहीन।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि इन दुखिया लोगों का भाग्य ही खराब था, जिसके कारण ये आजीवन वेबसी और लाचारी का जीवन जीने के लिए मजबूर हुए। इनका कसूर कुछ भी नहीं था, लेकिन इनका सम्बन्ध सदा अनेक प्रकार के दु:खों से ही बना रहा। इन दुखी लोगों का भाग्य ही बुरा है इसलिए इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है कि इनके आँसुओं का प्रभाव नष्ट हो गया है।

**विशेष**-

1. भाग्य के मारे दुखिया व्यक्ति के आँसुओं का असर भी समाप्त हो गया है। अब उसके आँसू भी किसी को पिघला नहीं पाते।
2 भाषा सरल, मुहावरेदार खड़ी बोली हिन्दी है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास एवं उल्लेख अलकारों का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**बह पड़ी जो धार दुखिया आँख से।**
**क्यों न पानी ही उसे कहते रहें।**
**है नहीं जिसने जगह जी में किया।**
**हम भला कैसे उसे आँसू कहें॥**

**शब्दार्थ**-**जी** = हृदय।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार ये दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि दुखी व्यक्ति की आँख से लगातार आँसुओं की धारा बहती रहती है परन्तु उन्हें पानी की धारा ही कहना चाहिए, आँसुओं की धारा नहीं, क्योंकि जो आँसू बहकर किसी दूसरे के हृदय में स्थान न बना पाए उन्हें आँसू कहना ही व्यर्थ है।

**विशेष**-

1. दुखिया लोगों के प्रति कवि की संवदेना प्रकट हुई है।
2. भाषा सरल, प्रवाह युक्त खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।

**है कलेजे को घुला देता कोई।**
**मैल चितवन पर कोई लाता नहीं।**
**कौन दुखिया आँसुओं पर हो सदय।**
**पूछ ऐसों की नहीं होती कहीं।**

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'दुखिया के आँसू'** से अवतरित है। इस कविता के गाध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में दुखी व्यक्ति के आँसुओं का कोई मूल्य नहीं है।

**शब्दार्थ- पुला** = घोल देना। **चितनवन** = नजर, आँखों में। **सदय** = दयालु।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि एक ओर दु:खी व्यक्ति अपनी तकलीफ को, अपने हृदय की सारी व्यथा को आँसुओं में घोल कर दिखाता है। दूसरी ओर सम्पन्न और सुखी लोगों की आँखों में उसका कोई प्रभाव ही दिखाई नहीं पड़ता अर्थात् दु:खी लोगों के आँसुओं की ओर कोई भी ध्यान नहीं देता है। दुखी लोगों के आँसुओं की ओर कोई इसलिए दया का भाव नहीं दिखाता क्योंकि संसार में ऐसे दुखी लोगों को पूछने वाला कोई नहीं होता है।

**विशेष**-

1. दुखियों के प्रति करुणा उपजाने का प्रयास किया गया है।
2. भाषा सरल खड़ी बोली है।
3. वर्णनात्मक शैली एवं दृश्य बिंब का प्रयोग हुआ है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. मात्रिक समछंद का प्रयोग है।
7. भाषा मुहावरेदार है।

**● एक बूँद (कविता) व्याख्या भाग**

**कविता का सार-'एक बूँद'** अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी की एक प्रसिद्ध एवं चर्चित कविता है। इस कविता में उन्होंने बूँद के माध्यम से एक उत्साही व्यक्ति की यात्रा पर प्रकाश डाला है, जो एकाएक रोमांच की खोज में घर से निकल पड़ता है और फिर अनेक खतरों और कठिनाइयों से गुजरता हुआ जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

कवि कहता है कि जब वर्षा जल की एक बूँद अचानक बादलों की सुरक्षित गोद को छोड़कर आकाश से गिरने लगी तो वह अपने भविष्य के प्रति चिन्तित होकर सोचने लगी कि उसने व्यर्थ ही अपना घर छोड़ा। यह सोचने लगी कि पता नहीं उसके भाग्य में क्या लिखा है। उसने सोचा कि हो सकता है कि वह जलती आग में गिरकर नष्ट हो जाए। यह भी हो सकता है कि वह किसी फूल में चू पड़े और सुखी हो जाए। उसी समय एक तेज हवा चली जो उस बूँद को न चाहते हुए भी समुद्र की ओर उड़ाकर ले चली। उस समय एक सुन्दर सीपी का मुँह खुला था और यह वर्षा की बूँद उस सीपी में जा गिरी और मोती बन गई। बूँद की इस यात्रा से कवि स्पष्ट करता है कि जब लोगों को अपना सुखद, सुरक्षित घर छोड़ना पड़ता है तब वे बेकार ही चिन्तित हो उठते हैं। परन्तु आमतौर पर घर छोड़ देने से उन्हें लाभ ही होता है और वे बूंद की तरह मोती बन जाते हैं।

**ज्यों निकल कर बादलों की गोद से**
**थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी,**
**सोचने फिर-फिर यही जी में लगी**
**आह! क्यों पर छोड़कर मैं यों कढ़ी।**

**शब्दार्थ**-जी = हृदय। कढ़ी = निकली।

**प्रसंग**- प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता **'एक बूँद'** से अवतरित है। इसके रचयिता **'अयोध्या सिंह उपाध्याय' 'हरिऔध'** हैं। इस कविता में उन्होंने एक बूँद की यात्रा एवं उसके चिंतन के माध्यम से घर छोड़ते समय लोगों की द्वंद्वभरी मानसिकता का परिचय दिया है।

**व्याख्या**- इन पंक्तियों में कवि कहता है कि बादलों की सुरक्षित और सुखपूर्ण गोद से निकल कर जैसे ही एक बूँद कुछ आगे बढ़ी तो अचानक सोच में पड़ गई। यह सोचने लगी कि वह अपना यह सुरक्षित घर छोड़कर व्यर्थ ही क्यों निकल आई है। उसे इस तरह अपना घर नहीं छोड़ना चाहिए था।

**विशेष**–

1. बूँद की चिंता के माध्यम से घर छोड़कर बाहर जाने वालों की चिंता पर प्रकाश डाला गया है।
2. भाषा सरल, बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं सार्थक है।
4. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**देव मेरे भाग में क्या है बदा।**
**मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।**
**या जलूँगी गिर अँगारे पर किसी।**
**चूँ पड़ूँगी या कमल के फूल में।।**

**शब्दार्थ**–बदा = लिखा। **धूल** = मिट्टी। **धूल में मिलना** = नष्ट होना।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित कविता **'एक बूँद'** से अवतरित है। इसके रचयिता अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** है। इस कविता में उन्होंने एक बूँद की यात्रा एवं उसके चिंतन के माध्यम से घर छोड़ते समय लोगों की द्वंद्वभरी मानसिकता का परिचय दिया है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि बादलों से बाहर निकली वर्षा की बूँद घबराई हुई सोचने लगी कि हे देव। न जाने मेरे भाग्य में आपने क्या लिखा है। बादलों से बाहर निकल कर मेरा क्या होगा, यह आप ही जानते हैं। अब पता नहीं मैं बचूँगी अथवा धूल में मिलकर नष्ट हो जाऊँगी। यह भी सम्भव है कि मैं किसी जलते हुए अँगारे पर जा गिरूँ और जल कर नष्ट हो जाऊँ, अथवा भाप बनकर उड़ जाऊँ और मेरा अस्तित्व समाप्त हो जाए। यह भी सम्भव है कि मैं किसी कमल के फूल में चू पड़ूँ और उसकी कोमल गोद का आनन्द लूँ और उसकी सुगन्ध और रस का पान करूँ।

**विशेष**–

1. बूँद के चिंतन के माध्यम से घर छोड़कर निकलने वाले व्यक्ति के मन की आशंका एवं दुविधा का चित्रण हुआ है।
2. भाषा सरल, बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं सार्थक है।
4 अनुप्रास एवं संदेह अलंकारों का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
7. भाषा मुहावरेदार है।

**बह गई उस काल एक ऐसी हवा।**
**वह समुंदर ओर आई अनमनी।**
**एक सुन्दर सीप का मुँह था खुला।**
**वह उसी में जा पड़ी, मोती बनी।।**

**शब्दार्थ**– **अनमनी** = न चाहते हुए भी, विवश होकर।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित कविता 'एक बूँद' से अवतरित है। इसके रचयिता **'अयोध्या सिंह उपाध्याय' 'हरिऔध'** हैं। इस कविता में उन्होंने एक बूँद की यात्रा एवं उसके चिंतन के माध्यम से घर छोड़ते समय लोगों की द्वंद्वभरी मानसिकता का परिचय दिया है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि बादलों से निकली हुई बूँद जब मन में पछताती हुई बादलों से निकलकर पृथ्वी की ओर आ रही थी तभी अचानक एक तेज आंधी चलने लगी। यह तेज पवन उस बूँद को उड़ाकर समुद्र की ओर बहा ले आई। इससे पहले कि बूँद कुछ सोच पाती यह एक सुन्दर सीप के खुले मुँह में जा गिरी और मोती बन गई।

**विशेष**–

1. कवियों में यह बात प्रसिद्ध है कि स्वाति नक्षत्र के आकाश में रहते जो बूँद सीपी में गिरती है वह मोती बन जाती है। अयोध्या सिंह उपाध्याय ने इसी कवि धारणा का प्रयोग यहाँ किया है।
2. भाषा सरल, बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं सार्थक है।
4. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
7. भाषा मुहावरेदार है।

**लोग यों हीं हैं झिझकते सोचते।**
**जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।**
**किंतु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें।**
**बूंद लॉ कुछ और ही देता है कर॥**

**शब्दार्थ**–**लौं** = की तरह, के जैसे। **अकसर** = प्राय:।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित कविता **'एक बूँद'** से अवतरित है। इसके रचयिता **'अयोध्या सिंह उपाध्याय' 'हरिऔध'** हैं। इस कविता में उन्होंने एक बूँद की यात्रा एवं उसके चिंतन के माध्यम से घर छोड़ते समय लोगों की द्वंद्वभरी मानसिकता का परिचय दिया है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जब लोगों को अपना घर–बार छोड़ना पड़ता है तो वे बेकार में ही सोचते–विचारते अर्थात् चिन्ताग्रस्त हो जाते हैं। कवि कहता है कि सामान्यत: घर को छोड़ने से वे बूँद की तरह कुछ और ही बन जाते हैं अर्थात् उन्नति कर जाते हैं। जो साहस करके घर से निकलता है, उसे संसार में ऊँचा स्थान मिलता है।

**विशेष**–

1. जो व्यक्ति साहस करके उन्नति करने हेतु घर से बाहर निकलते हैं। उन्हें उन्नति करने का अवसर अवश्य मिलता है। इस धारणा को पुष्ट किया गया है।
2. भाषा सरल, बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं सार्थक है।
4. अनुप्रास एवं उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

● **काँटा और फूल ( कविता ) व्याख्या भाग**

**कविता का सार 'काँटा और फूल'** अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी की एक महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है। कविता के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है कि संसार में भले लोगों को हमेशा कष्ट उठाने पड़ते हैं, वे अधिक दिन जीवित भी नहीं रह पाते, उन्हें सदा अपनी जान के लाले पड़े रहते हैं।

कवि कहता है कि काँटों की तरह विकसित होना बेकार है, क्योंकि ये हमेशा दूसरों को दु:ख देते हैं। इन्हें फूलों से सीखना चाहिए कि विकसित होकर कैसे दूसरों को सुख दिया जाता है। कवि मानता है कि भले लोग सदा ही समाज में कम होते हैं और बुरे ज्यादा होते हैं। इसी तरह पौधों की शाखाओं पर फूल कम होते हैं और काँटे ज्यादा। काँटे हमेशा ही अकड़ कर आकाश को ताकते दिखाई देते हैं। इसी प्रकार बुरे लोगों में भी अकड़ अधिक होती है। दूसरी ओर फूल न जाने कब खिलते हैं और कब चुपचाप झर जाते हैं। कवि कहता है कि हमें तो इसी बात का दु:ख है कि काँटों का हम कुछ भी बिगाड़ नहीं पाते। धूप, लू, और आँधियाँ भी सदा फूलों को ही नष्ट करती है, वे काँटों का कुछ भी बिगाड़ नहीं पातीं। जिस काँटे की नोंक से रक्त बहा, वह सदा आँखों में चुभता है, याद रहता है। तितलियों को अफसोस है कि दुखदायी काँटे तो लम्बा जीवन जीते हैं और सुखद फूलों का जीवन अल्पकालिक होता है कवि कहता है कि उसका हृदय यह देखकर दु:खी है कि काँटों का जीवन इतना लम्बा क्यों होता है। अद्‌भुत सौन्दर्य युक्त फूल आज खिलता और कल मुरझा जाता है। कवि कहता है कि फूल दो दिन भी नहीं रह पाता जबकि काँटे लम्बे समय तक अड़े रहते हैं। कवि के अनुसार अच्छे और लोकप्रिय लोगों को हमेशा ही जान का खतरा रहता है।

**है न काँटों सा उभरना काम का।**
**क्या रहा, जब दूसरों को दुख दिया।**
**सीख लेवें क्यों न खिलना फूल सा।**
**जब किया तब और को पुलकित किया।**

**शब्दार्थ- उभरना** = बढ़ना। **पुलकित** = आनन्दित।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'काँटा और फूल'** से अवतरित है। कवि ने इस कविता में स्पष्ट किया है कि काँटों जैसे बुरे, दुखदायी लोग संसार में सुख भोग रहे हैं, लम्बा जीवन जी रहे हैं जबकि फूलों जैसे अच्छे और सुख देने वाले लोगों की दुर्गति हो रही है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि काँटों की तरह उभरना अथवा ऊपर उठना किसी काम का नहीं होता। काँटे हमेशा ही घमण्ड से ऊपर की ओर ताकते नजर आते हैं। यह अकड़ अच्छी नहीं है। ऐसे जीवन का भी कोई लाभ नहीं है जो हमेशा दूसरों को दु:ख देने में ही व्यतीत होता है। इसलिए कवि कहता है कि क्यों न हम फूलों की तरह खिलना सीख लें। फूलों का जीवन धन्य है क्योंकि वे तो जीवन भर दूसरों को आनन्दित ही करते हैं, सुख ही देते हैं।

**विशेष**-

1. स्पष्ट किया गया है कि जीवन का लक्ष्य केवल अपनी उन्नति अथवा अपना ही सुख नहीं होना चाहिए। हमें दूसरों के लिए भी जीना सीखना चाहिए।
2. भाषा सरल एवं प्रवाहयुक्त खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**रंग जिन पर हो भलाई का चढ़ा।**
**सब जगह उनकी छटा सब दिन रही।**
**डालियों में है न काँटों की कमी।**
**पर दिखते फूल हैं दो चार ही।।**

**शब्दार्थ-भलाई** = उपकार। **छटा** = शोभा।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'काँटा और फूल'** से अवतरित है। कवि ने इस कविता में स्पष्ट किया है कि काँटों जैसे बुरे, दुखदायी लोग संसार में सुख भोग रहे हैं, लम्बा जीवन जी रहे हैं जबकि फूलों जैसे अच्छे और सुख देने वाले लोगों की दुर्गति हो रही है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जिन लोगों पर भलाई का रंग चढ़ा रहता है अर्थात् जिनमें भलाई करने का सहज भाव रहता है, उन्हीं की शोभा हर समय, हर स्थान पर रहती है। गुलाब के पौधों की डालियों पर असंख्य काँटे देखे जा सकते हैं परन्तु फूल तो दो चार ही लगते हैं। कहने का भाव यह है कि संसार में काँटों की तरह बुरे लोगों की कोई कमी नहीं परन्तु फूलों के समान अच्छे लोग तो बहुत कम ही दिखाई पड़ते हैं।

**विशेष**-

1. परोपकारी व्यक्तियों की सराहना की गई है।
2. भाषा सरल एवं प्रवाह युक्त खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।
7. 'भलाई का रंग चढ़ना' मुहावरेदार भाषा का प्रयोग है।

**जब उठी आँखें हमें काँटे मिले।**
**नोक अपनी वैसी ही सीधी किए।**
**पर नहीं जाना निराले फूल ये।**
**कब खिले और किस समय कुम्हला गए ।।**

**शब्दार्थ-निराले** = विशेष, विचित्र। = **कुम्हलाना** = मुरझाना।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'काँटा और फूल'** से अवतरित है। कवि ने इस कविता में स्पष्ट किया है कि काँटों जैसे बुरे, दुखदायी लोग संसार में सुख भोग रहे हैं, लम्बा जीवन जी रहे हैं जबकि फूलों जैसे अच्छे और सुख देने वाले लोगों की दुर्गति हो रही है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हमने जहाँ भी नजर उठा कर देखा, हमें चारों ओर काँटे ही काँटे बिखरे हुए दिखाई दिए हैं। काँटे हमेशा की तरह अपनी नोंक सीधी किए दिखाई पड़े अर्थात् घमण्ड से भरे बुरे लोग हमेशा आसमान की ओर ताकते ही दिखाई पड़े। दूसरी ओर विनम्र फूल कब खिले और कब अपनी सुगन्ध बिखेर कर मुरझा गए हमें इसका पता ही नहीं लगा। कहने का भाव यह है कि अच्छे लोगों का लघु जीवन भी औरों के लिए सुखदायी होता है, जबकि बुरे लोग लम्बा जीवन जीते हैं और सबको दु:ख देते हैं।

**विशेष**-

1. फूल एवं काँटों की तुलना के माध्यम से अच्छे व बुरे लोगों की तुलना की गई है।
2. भाषा सरल मुहावरेदार खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।
7. 'आँखे उठाना', 'नोक सीधी रखना' जैसे मुहावरों का काव्यात्मक प्रयोग हुआ है।

4. **क्या बतावें, है कलेजा मल रहा।**
**कुछ न काँटों का हुआ इनके किए।**
**धूप निकली, लू चली, आँधी उठी।**
**हाँ, इन्हीं सुकुमार फूलों के लिए॥**

**शब्दार्थ- कलेजा मलना** = पछतावा होना, दुःख होना। **लू चलना** = गर्म हवा चलना।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'काँटा और फूल'** से अवतरित है। कवि ने इस कविता में स्पष्ट किया है कि कॉटों जैसे बुरे, दुखदायी लोग संसार में सुख भोग रहे हैं, लम्बा जीवन जी रहे हैं जबकि मैंलो जैसे अच्छे और सुख देने वाले लोगों की दुर्गति हो रही है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि क्या कहूँ। मेरा हृदय अत्यधिक दुःखी हैं। मैं यह देखकर परेशान हूँ कि काँटों का अर्थात् बुरे लोगों का कोई कुछ नहीं बिगाड़ पाता। धूप निकलती है तो फूल मुरझा जाते हैं, सूख जाते हैं परंतु काँटों का कुछ नहीं बिगड़ता। लू चलती है तो भी काँटों का कुछ नहीं बिगड़ता। ऐसे में भी बेचारा फूल ही जलता है। आँधी चलती है तो फूल की पंखुड़ियाँ बिखर जाती हैं परन्तु काँटों का कुछ नहीं बिगड़ता। कवि कहता है कि ईश्वर की मार भी बेचारे फूल पर ही पड़ती है। धूप, लू, आँधी जैसी मुसीबतें भी काँटों का कुछ नहीं बिगाड़ पातीं, जबकि फूल इनसे नष्ट हो जाते हैं। कोमल फूलों के भाग्य में ही सारे कष्ट लिखे हैं। ये ही सारे कष्ट सहते हैं।

**विशेष**-

1. संसार में बुरे लोग सुखी और अच्छे दुःखी हैं यह देखकर कवि निराश है।
2. भाषा सरल मुहावरेदार है। 'कलेजा मलना' मुहावरे का काव्यात्मक प्रयोग हुआ है।
3. शब्द चयन उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**दूर आँखों से न वह काँटा हुआ।**
**नोक से जिसकी लहू कितना बहा।**
**पर बिचारी तितलियों के वास्ते।**
**दो दिनों भी फूल का न समाँ रहा॥**

**शब्दार्थ-लहू** = खून,। **वास्ते** = के लिए। **समाँ** = मौसम।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'काँटा और फूल'** से अवतरित है। कवि ने इस कविता में स्पष्ट किया है कि काँटों जैसे बुरे, दुखदायी लोग संसार में सुख भोग रहे हैं, लम्बा जीवन जी रहे हैं जबकि फूलों जैसे अच्छे और सुख देने वाले लोगों की दुर्गति हो रही है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि काँटा तो लम्बी उम्र भोगता है। इसलिए वह हमारी आँखों से दूर नहीं होता। यह काँटा जिसकी नोंक पर न जाने कितने लोगों का खून लगा है और जिसने चुभकर न जाने कितनों का शरीर छलनी किया है, यह आज तक जीवित है। दूसरी ओर बेचारी तितलियों के लिए फूलों का मौसम बहुत जल्दी समाप्त हो जाता है। दूसरी ओर फूलों के साथ उन्हें रहने का अवसर कम ही मिलता है। इसी प्रकार अच्छे लोगों के भाग्य में सुख कम ही रहते हैं।

**विशेष**–

1. बुरे लोगों को सुखी और अच्छों को दु:खी देख कवि परेशान है।
2. भाषा सरल मुहावरेदार है। खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**किसलिए काँटे बहुत दिन तक रहें।**
**आह, मेरा जी बहुत खिजला गया।**
**किसलिए इतना अनूठा फूल यह।**
**आज फूला और कल कुम्हला गया।।**

**शब्दार्थ**-**खिजला** = खीझ गया। अनूठा = अद्‌भुत। **कुम्हलाना** = मुरझाना।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'काँटा और फूल'** से अवतरित है। कवि ने इस कविता में स्पष्ट किया है कि काँटों जैसे बुरे, दुखदायी लोग संसार में सुख भोग रहे हैं, लम्बा जीवन जी रहे हैं जबकि फूलों जैसे अच्छे और सुख देने वाले लोगों की दुर्गति हो रही है।

**व्याख्या**– इन पंक्तियों में कवि कहता है कि काँटें बहुत दिनों तक जीवित रहते हैं। यह देखकर मेरा मन क्षुब्ध हो उठता है, अर्थात् कोप ते भर जाता है। मेरे लिए यह अत्यधिक दुख का विषय है। दूसरी ओर न जाने इतना सुन्दर फूल क्यों कम समय के लिए खिलता है और फिर मुरझा कर नष्ट हो जाता है। कहने का भाव यह है कि कवि को समझ नहीं आता कि बुरे लोगों को इतना लम्बा जीवन क्यों मिलता है।

**विशेष**–

1. अच्छे लोगों की अकाल मृत्यु और बुरे लोगों की दीर्घ आयु देखकर कवि दु:खी है।
2. पद्यांश की भाषा सरल, मुहावरेदार एवं खड़ी बोलचाल की है।
3. शब्द चयन उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. अनुप्रास एवं प्रश्न-अलंकारों का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**दो दिनों भी फूल रह पाया नहीं।**
**पर बहुत दिन तक रहे काँटें अड़े।**
**जो भले हैं सब जिन्हें हैं चाहते।**
**कब न जीने के उन्हें लाले पड़े॥**

**शब्दार्थ-लाले पड़ना** = कठिनाई होना।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी को पाठ्य-पुस्तक में सकलित अयोध्या सिंह उपाध्याय **'हरिऔध'** विरचित कविता **'काँटा और फूल'** से अवतरित है। कवि ने इस कविता में स्पष्ट किया है कि काँटों जैसे बुरे, दुखदायी लोग संसार में सुख भोग रहे हैं, लम्बा जीवन जी रहे हैं जबकि फूलों जैसे अच्छे और सुख देने वाले लोगों की दुर्गति हो रही है।

**व्याख्या**- इन पंक्तियों में कवि कहता है कि फूल का जीवन, दो दिन का भी नहीं रहा अर्थात् फूल बहुत जल्दी मुरझा गया। दूसरी ओर काँटे लम्बे समय तक डटे रहे अर्थात् जीवित रहे। इसी प्रकार अच्छे लोग भी ज्यादा दिनों तक जिन्दा नहीं रहते और बुरे लोगों को शायद परमात्मा भी अपने पास नहीं बुलाता। जो लोग भले हैं और जिन्हें सब चाहते हैं उन्हें सदा ही जीना कठिन
लगता रहा है।

**विशेष**-

1. अच्छे लोगों की तुलना में बुरे लोगों को दीर्घायु एवं समृद्ध देखकर कवि दुखी है।
2. भाषा सरल, मुहावरेदार, बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. अनुप्रास एवं प्रश्न-अलंकारों का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।
7. 'अड़े रहना', 'लाले पड़ना' जैसे मुहावरों का काव्यात्मक प्रयोग हुआ है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न**

प्रश्न - 'प्रियप्रवास' का वर्ण्य विषय क्या है?

प्रश्न - दुखिया के आँस कविता के रचयिता कोन हैं?

प्रश्न - 'एक बूंद' कविता में बूंद का उद्म कहां से होता है ?

प्रश्न - 'काँटा और फूल' कविता में कवि ने किसे फूल की तरह बनने की शिक्षा दी है ?

## 6.4 सारांश

'प्रियप्रवास' काव्य में कृष्ण प्रिय राधा का भी वर्णन है, जिसमें दर्शाया गया है, कैसे राधा अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर मानवता के हित के लिए अपने प्रेमी और प्रेम समर्पित कर दिया। 'प्रियप्रवास' में कृष्ण अपने शुद्ध मानव रूप में विश्व कल्याण के काम में एक जन नेता के रूप में अंकित किए गए हैं। 'दुखिया के आँसू' कविता में कवि ने अलग अलग आँखों में आने वाले आँसुओं का वर्णन किया है। एक और जहाँ लोग छोटे बालकों एवं चंद्रमुखी स्त्रियों को आँखों में आछ आँसूओं को देखकर द्रवित हो जाते हैं तथा कुछ भी करने को तत्पर हो जाते हैं, वहीं किसी असफल, असहाय, दुखी व्यकित की आँखों में आए आँसुओं को देखकर नहीं पिघलता। कोई उनका दुख दूर करने हेतु कदम नहीं उठाता। 'एक बूँद' कविता एक चर्चित और शिक्षाप्रद है। कविता में बादलों निकलकर जमीन की यात्रा करने वाली एक बूँद की सोच के माध्यम से कवि ने यह स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार बूँद बादलों से निकलने के पश्चात

यह चिंता करती है कि उसका क्या होगा, वह बचेगी या धूल में मिल जायगी। उसी प्रकार घर छोड़ते समय मनुष्य भी इसी प्रकार की चिंता करता है, परन्तु जिस प्रकार बँद सीप के मुँह में गिरकर मोती बन जाती है, उसी प्रकार घर से निकलकर आदमी भी बूँद की भांति मोती बन जाता है। 'काँटा और फूल' कविता में कवि ने मनुष्यों को फूल जैसे बनने की शिक्षा दी है, क्योंकि फूल अपनी महक से दूसरों को आनंदित करते है। हालांकि कवि ने यह भी स्पष्ट किया है कि संसार में काँटों की संख्या तथा आयु दोनों अधिक है, जो व्यक्ति फूलों की भाँति अर्थात् भले होते हैं, उन्हें अधिक कष्ट सहने पड़ते हैं।

### 6.5 कठिन शब्दावली

**समर्पित** - आदरपूर्वक सौंपा गया

**अंकित** - चिहिनत

**द्रवीभूत** - तरलित

**शिक्षाप्रद** - शिक्षादायक

**आनंदित** - हर्षित

### 6.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न**

**उत्तर** - श्रीकृष्ण के प्रति राधा के प्रेम-विरह का वर्णन।

**उत्तर** - अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध।

**उत्तर**- बादल में।

**उत्तर** - मनुष्य को।

### 6.7 संदर्भित पुस्तकें

1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', 'प्रियप्रवास', लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ।
3. डॉ. कन्हैया सिंह, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ ।

### 6.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. 'प्रियप्रवास' कविता में राधा मानवता के हित के लिए अपने प्रेम को कैसे समर्पित किया, स्पष्ट कीजिए?

प्रश्न. 'दुखिया के आँसू' कविता में असफल और असहाय व्यक्ति के जीवन में फैले अँधेरे से बहने वाले आँसुओं से किसी का हृदय द्रवित नही होता, इस कथन को कवि के मतानुसार स्पष्ट कीजिए?

प्रश्न. 'एक बूँद' कविता में कवि के मतानुसार व्यक्ति के जीवन में होने वाले अन्तर्द्वद्व को स्पष्ट कीजिए?

प्रश्न. 'काँटा और फूल' कविता में कवि द्वारा मनुष्य को दी गई शिक्षा को स्पष्ट कीजिए?

*****

# इकाई-7
# मैथिलीशरण गुप्त : जीवन एवं साहित्य

**संरचना**


7.1 भूमिका
7.2 उद्देश्य
7.3 मैथिलीशरण गुप्त जीवन एवं साहित्य
  7.3.1 जीवन परिचय
  7.3.2 साहित्यिक परिचय
  स्वयं आकलन प्रश्न-1
7.4 भाषा शैली
  स्वयं आकलन प्रश्न-2
7.5 सारांश
7.6 कठिन शब्दावली
7.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
7.8 संदर्भित पुस्तकें
7.9 सात्रिक प्रश्न


## 7.1 भूमिका

पिछली कक्षा में हमने अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कविताओं की व्याख्या की। प्रस्तुत इकाई में हम मैथिलीशरण गुप्त के जीवन और साहित्य का विस्तारघ्पूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत उनके जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय तथा भाषा शैली का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाएगा।

## 7.2 उद्देश्य

इकाई सात का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ?
2. मैथिलीशरण गुप्त की शिक्षा दीक्षा क्या थी?
3. मैथिलीशरण गुप्त की शिक्षा-दीक्षा क्या थी?
4. उनकी भाषा शैली किस प्रकार की थी?

## 7.3 मैथिलीशरण गुप्त : जीवन एवं साहित्य

हिंदी साहित्य में ऐसे अनेक महान पंडित हैं, जिन्होंने अपनी जीवनी नहीं लिखी या अपने जन्म, गाँव, पूर्वज आदि संबंधी स्वयं कुछ लेखन नहीं किया। मैथिलीशरण गुप्त भी इसके अपवाद नहीं। उनके पत्रों की न तो कोई फाइल है, न उनकी डायरी या दैनंदिनी। उनसे निकट का संबंध रखनेवाले किसी व्यक्ति ने भी उनकी जीवनी नहीं लिखी। परंतु उनके विषय में जो विवरण उपलब्ध होता है उससे हमें कुछ महत्त्वपूर्ण संकेत मिलते हैं।

### गुप्त जी के पूर्वज

भारत वर्ष में उत्तर-प्रदेश में बुदेलखंड नामक ऐतिहासिक भूप्रदेश में झाँसी नगर प्रमुख है। इसी झाँसी से चिरगाँव बहुत ही करीब है। भांडेर चिरगांव से १४ मील दूर है। १७ वीं सदी में इसी भांडेर से गुप्त जी के पुरखे चिरगाँव आये। चिरगाँव में गुप्त जी का परिवार पाँच पीढ़ियों से बसा हुआ है। गुप्त जी के परदादा राघवजू यहाँ कपास और घी का व्यापार करते थे। वे गहोई वैश्य थे। उन्हें ''कनकने'' नाम से पुकारा जाता था। ''कनकने'' के दो अर्थ हैं - एक तो जल्दी गुस्सा करने वाला और दूसरा किसी के आगे न झुकने वाला बहुत अमीर। उनका मकान बहुत बड़ा था, जिसका फाटक भी बड़ा था। घी का गोदाम था। उनके पास कई तरह के रथ, गाड़ियाँ, घोड़ा-गाड़ियाँ, नौकर-चाकर, ऊंट, बैल और हथियारबंद सिपाही भी पर्याप्त थे। उनकी वंश परंपरा इस प्रकार है -

- राघवजू
  - लल्लाजू
    - ललनमजू
      - (1) श्री रामचरण जी
        - (पहली पत्नी से)
          - (१) महाराम दासजी
        - (दूसरी पत्नी काशीबाई से)
          - (1) रामकिशोर
          - (2) मैथिलीशरण
          - (3) सियारामशरण
          - (4) चारूशालीशरण
          - (5) पुत्री लक्ष्मी
      - (2) श्री घनश्याम दासजी
      - (3) श्री महाराज दासजी

रामचरण जी के पास १०-१२ गाँवों की जमींदारी थी। लेकिन उनके साथियों ने उन्हें बहुत बड़ा धोखा दिया। रामचरण जी को बहुत घाटा हुआ। उन्होंने अपना व्यापार समेट लिया। रामचरणजी उदारवृत्ति के थे। वे अपना ज्यादातर समय भजन, पूजन और पाठ में ही व्यतीत करते थे। वे भक्ति कविता भी लिखते थे। ''सेठ रामचरण गुप्त को अंग्रेजी सरकार ने ''रायबहादूर'' की पदवी देकर ''ऑनरेरी मजिस्ट्रेट'' बनाना चाहा, पर उन्होंने इन दोनों बातों से इन्कार कर दिया।

- **जीवन परिचय**

**जन्म तथा नामकरण :** मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म ३ अगस्त सन् १८८६ को मघा नक्षत्र में हुआ। मैथिलीशरण जी का प्रारंभिक नाम उनके पिता ने रखा था ''श्री मिथिलाधिपनदिनीशरण''। यह नाम बहुत बड़ा था। अतः स्कूल के अंतर्गत इसे संक्षिप्त कर दिया गया ''मिथिलीशरण'' और धीरे-धीरे यह नाम ''मैथिलीशरण'' में बदल गया। ''रसिकेश'', ''रसिकेन्द्र'', ''मधुप'' और ''भारतीय'' इत्यादि अनेक उपनामों से भी गुप्त जी ने लेखन कार्य किया है।

**शिक्षा :** मैथिलीशरण गुप्त की आरंभिक शिक्षा चिरगांव में ही हुई। लेकिन उनका मन पहले से ही पढ़ाई में नहीं लगता था। उनके बचपन के साथी मुंशी अजमेरी ने, जो उनके साथ उसी गाँव के स्कूल में पढ़ते थे, उनका वर्णन इस प्रकार किया है -

''जिन दिनों मैं मदरसे में पढ़ता था, दो लड़के पढ़ने आते थे। मैं उनसे ऊँचे दर्जे में था। उनके बड़े-बड़े बस्ते खुले रहते थे और वे प्रायः मदरसे से चल दिया करते थे। दूसरे लड़के उनके बस्ते में से कागज कलम निकाल लेते थे और उनकी दवातों में से स्याही अपनी दवातों में उड़ेल लेते थे। पर वे कभी किसी से कुछ नहीं कहते थे। उनकी यह लापरवाही मुझे बुरी लगती थी, पर मैं उन्हें कुछ नहीं कहता था। मैं उन्हें जानता था कि ये कनकने (सेठ) के लड़के हैं रामकिशोर-मैथिलीशरण। मैथिलीशरण को आगे की पढ़ाई के लिए झाँसी भेजा गया। झाँसी के हाईस्कूल को बनते समय सब से ज्यादा चंदा गुप्त जी के पिता ने ३ हजार ३ सौ दिया था। अब वही हाईस्कूल कॉलेज बन गया है। उस कॉलेज का नाम वहीं के एक अध्यापक बिपिन बिहारी जैन के नाम से ''बिपिन बिहारी कॉलेज'' बन गया है। मैथिलीशरण के पिता चाहते थे, कि मैथिलीशरण पढ़-लिखकर डिप्टीकलक्टर बन जाए। लेकिन मैथिलीशरण जी का मन पढ़ाई से ज्यादा खेलकूद में ही अधिक रमने लगता था। वे परीक्षा के समय रामलीला मंडली के साथ ओरछा गए। उनका ध्यान शिक्षा में नहीं लगा। कवि के पिता श्री रामचरण जी ने कवि के लच्छन देखकर उन्हें वापस बुला लिया। घर पर ही उन्होंने अपने भाई चारूशीलाशरण जी से अंग्रेजी पढ़ी। उसी आयु में ''रामयश दर्पण'', ''चंद्रकांता'', ''चंद्रकांता संतत्ति'', ''सहस्त्र रजनी चरित्र'' जैसी अनेक अनुवादित कृतियाँ पढ़ी।

रामचरण जी की मृत्यु सन १९०३ में हुई। इस समय मैथिलीशरण गुप्त की उम्र थी सत्रहसाल। पिता की मृत्यु के बाद, उनकी नियमित शिक्षा तो समाप्त हो गई लेकिन उन्होंने स्वयं स्वाध्याय आरंभ किया। संस्कृत, बांगला भाषाओं के विभिन्न ग्रंथों का अध्ययन करते समय उन्होंने हिंदी साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया।

''उन्होंने तुलसी, सूर, नन्ददास, रहिम, बिहारी, घनानंद, सेनापति, मतिराम, देव, पदमाकर, ठाकूर और लाल आदि प्राचीन कवियों का स्वच्छंद अध्ययन किया। उन्होंने नायिकाभेद, अंलकार निरूपण, ऋतु-वर्णन, रीति-ग्रंथों, भक्ति-स्तुति विषयक काव्य ग्रंथों, संस्कृत के काव्य ग्रंथों, साहित्य-शास्त्र के भाषा टिका-सहित ग्रंथों का विशद अध्ययन किया। उन्होंने बांगला भाषा भी सीखी, माईकेल मधुसूदन दत्त, द्विजेन्द्रलाल राय, रवीन्द्रनाथ ठाकूर, नवीन चंद्रसेन, बंकिम चन्द्र, शरदचंद्र आदि के काव्य ग्रंथ एवं कथा साहित्य का उन्होंने अध्ययन किया।''

मैथिलीशरण जी के अनेक शौक थे खेलकूद, कसरत, कुश्ती, पंजा लड़ाना। उन्होंने बंदूक के फायर भी किये। मुंशी अजमेरी से सितार बजाना सीखा। वे स्वभाव से बड़े प्रसन्न थे।

**जीवन जीवन :** उस जमाने से बच्चों के विवाह छोटी उम्र में कर दिए जाते थे। गुप्त जी का प्रथम विवाह सन् १८९५ में उनकी नौ साल की उम्र में ही हुआ। पाँच साल बाद गौना हुआ और बहु घर में आई। शादी के ८ साल बाद प्रथम पत्नी का प्रसवपीड़ा में स्वर्गवास हो गया। थोड़े ही दिनों बाद मैथिलीशरण जी के पिता रामचरण जी का देहांत हुआ। घर का जो व्यापार था उसमें गुप्त परिवार को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा, सारा परिवार कर्ज में डूब गया। सन् १९०४ मैं उनकी माता काशीबाई का देहांत हो गया।

गुप्त जी के छोटे काका भगवानदास ने मैथिलीशरण का दूसरा विवाह सन् १९०४ में किया। दूसरी पत्नी से उन्हें एक पुत्र और एक पुत्री हुई, दोनों बचपन में ही गुजर गए और ७-८ साल बाद दूसरी पत्नी भी गुजर गई। मैथिलीशरण जी वैसे ही कोमल हृदय के थे और उस पर यह आपत्तियाँ-व्यापार में घाटा और प्रियजनों का विरह। उन्होंने अपनी खानदानी जमींदारी बेच डाली, घर के कीमती गहने, चीजें सब कुछ बेच दी। लेकिन कहते हैं न कर्जा हमेशा हनुमान की पूँछ की तरह बढ़ता ही जाता है। अंत में उन्होंने कर्जे के लिए अपनी कविता की किताबें बेचना शुरू किया। मुंशी अजमेरी जी के अनुरोध पर मैथिलीशरण गुप्त का तृतीय विवाह सन् १९१४ में श्रीमती सरयूदेवी के साथ हुआ। इस पत्नी के नौ संतानों को जन्म दिया, लेकिन अंतिम एक को छोड सब बाल्यावस्था में ही चल बसे। उर्मिलाचरण अंतिम जीवित संतान है, जिनका जन्म सन् १९३६ मैं हुआ।

**आर्थिक स्थिति :** मैथिलीशरण जी का पारिवारिक वैभव सन् १९०० के पश्चात नष्टप्राय हो गया। फिर भी उन्होंने हमेशा नई परिस्थितियों का सामना बड़े हिम्मत से किया और अपने उत्तरदायित्व को भली-भाँति निभाते रहें।

''कवि की युवावस्था आर्थिक कष्टों में बीती। उसने प्रेस और पुस्तक प्रकाशन को व्यवसाय बनाया तथा कृषि आदि से गृहस्थी चलाई।''

सन् १९३५ के उपरांत उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और उनका परिवार फिर से संपन्न हो गया।

**सामाजिक स्थिति :** मैथिलीशरण गुप्त की पचास वर्ष की आयु होते ही अनेक स्थानों पर उनका सम्मान किया गया। सन् १९४६ में हिंदी साहित्य सम्मेलन के कराची अधिवेशन में उन्हें ''साहित्य-वाचस्पति'' की सम्मानित उपाधि प्रदान की गई। २० नवंबर १९४८ को आगरा विश्वविद्यालय ने कवि को डी. लिट्. की उपाधि से सम्मानित किया। भारत शासन की ओर से सन् १९५४ में मैथिलीशरण जी को ''पद्मभूषण'' की उपाधि राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के कर कमलों द्वारा प्रदान की। राष्ट्रपति के द्वारा सन् १९५२ में गुप्त जी भारतीय राज्यसभा के सदस्य के रूप में छः वर्ष के लिए मनोनित किए गए। सन् १९५८ में छः वर्ष के लिए उन्हें दुबारा राज्यसभा का सदस्य मनोनित किया गया। फरवरी १९५४ में वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सम्मानित प्रोफेसर बनाए गए। वे साहित्यकार संसद प्रयाग के अध्यक्ष और नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति भी रहें। हिंदी साहित्य में वे ''राष्ट्रकवि'' तथा ''दद्‌दा'' के पद पर विभूषित हुए। इतना यश और सम्मान अपने जीवन काल में शायद ही किसी साहित्यकार को प्राप्त होता है।

**पारिवारिक जीवनः** मैथिलीशरण गुप्त जी का पारिवारिक जीवन मध्ययुगीन आदर्शों और मर्यादाओं का अवशेष कहा जाता था। परिवार के सभी सदस्य संयुक्त परिवार के रूप में एक ही जगह रहते थे। सामाजिक और व्यावहारिक रूप में सब एक थे। आर्थिक दृष्टि से चल–अचल संपत्ति में सब का अपना–अपना भाग होता था। ग्रामीण कृषि सभ्यता के संस्कार और रामोपासना के प्रभाव के कारण ही घर के सभी लोग स्वजन बंधुता के सूत्र में बंधे हुए थे।

गुप्त जी के परिवार में सारे विवाह बाल–विवाह ही होते रहें। स्कूल की पढ़ाई पूर्ण करने तक भी कोई घर का सदस्य पहुँच नहीं पाता था। महिलाओं को पर्दा करना आवश्यक समझा जाता था। घर के भीतर के सभी काम–काज चौका–बर्तन से लेकर खाना बनाने तक के सभी कार्य, घर की महिलाओं को ही करना आवश्यक होता था। सेवकों से भी घर के सदस्यों की तरह व्यवहार किया जाता था। घर का प्रत्येक व्यक्ति संवेदनशील, सेवापरायण तथा कार्यतत्पर रहता था। गुप्त जी परिवार प्रमुख होते हुए भी किसी पर अपने आदेश लादते नहीं थे। कवि परिवार की यह भी एक विशेषता थी, कि प्रत्येक के नाम के साथ ''जी'' का आदरयुक्त प्रयोग होता था जिसके कारण एक दूसरे के प्रति सम्मान रखने की सात्विक वृत्ति का प्रसार होता है। गुप्त परिवार की यह सांस्कृतिक विशेषता अनुकरणीय रही।

इस पारिवारिक परिवेश की दृष्टि गुप्त जी के काव्य में किसी भी पात्र के चरित्र चित्रण में सहज उपलब्ध हो जाती है। उनके पात्रों के चरित्र विश्लेषण में इस परिवेश के प्रभाव को आँकना अपरिहार्य हो जाता है। बच्चा बचपन में जो देखता है, उस बात का असर उसके कोमल मन पर बहुत गहरा होता है। गुप्तजी पर भी घरेलू वातावरण का प्रभाव बहुत पड़ा जो उनके साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। गुप्त जी पर पड़े प्रभाव का विस्तृत विवरण उनके साहित्य परिचय के बाद दिया गया है।

- **साहित्यिक परिचय**

काव्य निरपेक्ष नहीं होता, उसका एक स्वतंत्र अस्तित्व होता है। कवि के जीवन में जो प्रसंग आते हैं, उसे जो अनुभव आते हैं, उसी के साथ उसके व्यक्तित्व का विकास होता रहता है। यह विकास कवि के मानसिक अवस्था और सामाजिक परिस्थिति दोनों पर निर्भर होता है। मैथिलीशरण गुप्त ने जब साहित्यिक रचनाएँ लिखने का मन में संकल्प किया तब उसके मन में संपूर्ण प्राचीन भारत का गौरव विद्यमान था, जिसके लिए उनके पिताजी के साथ–साथ राष्ट्रीय पुनर्जागरण के सभी सुधारकों के विचार थे और साहित्यिक मार्गदर्शक के रूप में बंगाल के कवि रवींद्रनाथ टैगोर और हिंदी के आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा थी। समय की माँग के अनुसार उन्होंने अतीत के व्यापक फलक पर अपना लेखन प्रारंभ किया।

**स्चनाकाल**

मैथिलीशरण गुप्त ने प्रथम रचना सन १९०१ में लिखी और उनकी अंतिम स्चना सन् १९५७ में प्रकाशित हुई। उन्होंने १५ वर्ष की अवस्था में अपना काव्यारंभ किया जो ७२ वर्ष की अवस्था तक अनिर्वाय रूप से चलता रहा। और आगे भी वे अपने निर्वाण के दिन तक काव्य रचना करते ही रहे। इस प्रकार लगभग ६० साल वे साहित्य–सेवा करते रहे।

''गुप्त जी की विकासशील काव्य–सर्जना ना में सत्तावन वर्ष की सक्रियता के पश्चात भी किसी प्रकार का शैथिल्य नहीं दिखता। उसमें उत्तरोत्तर विकास होता गया, मानसिक भी और कलात्मक भी। कवि की युगचेतना, सांस्कृतिक–भावना, जीवन–दर्शन तथा काव्य–कला क्रमशः उत्कर्षाभिमुख रही। उसमें कहीं भी वैचारिक अथवा साहित्यिक –हास के लक्षण नहीं दिखाई पड़े। यह गुप्त जी की ऐसी विशेषता है, जो तुलसीदास, रविंद्रनाथ, शेक्सपिअर, गेटे अथवा मिलटन जैसे महाकवियों में ही उपलब्ध होती है।''

अपने जीवन की लंबी साहित्य साधना में उन्होंने ५१ प्रकाशित ७ अप्रकाशित मौलिक काव्य रचनाएँ की और ९ प्रकाशित, ८ अप्रकाशित काव्यानुवाद या नाटयानुवाद प्रस्तुत किए। इन ७५ रचनाओं के अतिरिक्त कवि की अनेक स्फुट रचनाएँ, मुक्तक पद्य, गीत तथा निराख्यान, कविताएँ अभी असंग्रहित हैं, जो पत्र–पत्रिकाओं में बिखरी हुई हैं अथवा पाण्डुलिपि के रूप में उपलब्ध हैं।

मैथिलीशरण गुप्त के समस्त रचनाकालल को डॉ. कमलाकांत पाठक ने पाँच विभागों में विभक्त किया है –

| | |
|---|---|
| १) काव्याभ्यास काल | १९०७ से १९१० |
| २) निर्माण काल | १९१० से १९२५ |
| ३) उत्कर्ष काल | १९२५ से १९३७ |
| ४) परिपक्व काल | १९३७ से १९४७–१२ |

**मैथिलीशरण गुप्त को ग्रंथ संपदा**

**प्रकाशित काव्य रचनाएँ**

| क्रम | सन् | नाम | |
|---|---|---|---|
| १ | १९१० | ''रंग में भंग'' | ऐतिहासिक खंडकाव्य। |
| २ | १९१० | ''जयद्रथ वध'' | महाभारतीय खंडकाव्य। |
| ३ | १९१२ | ''पद्य–प्रबंध'' | आख्यानक और निराख्यान कवितासंग्रह। |
| ४ | १९१३ | ''भारत–भारती'' | उद्‌बोधनात्मक पद्य–निबंध। |
| ५ | १९१४ | ''शकुन्तला'' | अभिज्ञान शाकुंतल पर आधारित पौराणिक खंडकाव्य। |
| ६ | १९१५ | ''तिलोत्तमा'' | सुर और असुर के संघर्ष का वर्णन। |
| ७ | १९१६ | ''पत्रावली'' | पत्र–गीति संग्रह। |
| ८ | १९१६ | ''चंद्रहास'' | भाग्यवाद का महत्त्व बताया है। |
| ९ | १९१७ | ''किसान'' | महायुद्ध का परिणाम। |
| १० | १९१८ | ''वैतालिक'' | उद्‌बोधन–गीति। |
| ११ | १९२५ | ''अनघ'' | बुद्धकालीन खंडकाव्य। |
| १२ | १९२५ | ''पंचवटी'' | रामायणीय खंडकाव्य। |
| १३ | १९२५ | ''स्वदेश–संगीत'' | राष्ट्रवादी गीति–संग्रह। |
| १४ | १९२७ | ''हिंदू'' | उद्‌बोधनात्मक पद्य–निबंध। |
| १५ | १९२७ | ''सैरंध्री'' | महाभारतीय खंडकाव्य। |
| १६ | १९२७ | ''बक–संहार'' | महाभारतीय खंडकाव्य। |
| १७ | १९२७ | ''वन–वैभव'' | महाभारतीय खंडकाव्य। |
| १८ | १९२७ | ''शक्ति'' | पौराणिक खंडकाव्य। |
| १९ | १९२८ | ''विकट–पट'' | ऐतिहासिक आख्यानक सव्य। |
| २० | १९२८ | ''गुरुकुल'' | ऐतिहासिक आख्यानक काव्य। |
| २१ | १९३० | ''झंकार'' | रहस्यवादी गीति–संग्रह। |
| २२ | १९३१ | ''साकेत'' | रामाणीय महाकाव्य। |
| २३ | १९३३ | ''शोषण'' | बुद्ध कालिन चम्पू खंडकाव्यात्मक स्वरूप। |
| २४ | १९३७ | ''सिद्धराज'' | ऐतिहासिक खंडकाव्य |
| २५ | १९३७ | ''द्वापर'' | ऐतिहासिक खंडकाव्य। |
| २६ | १९३७ | ''मंगलघट'' | आख्यानक और निराख्यानक |
| २७ | १९३८ | ''आस्वाद'' | वैविध्यपूर्ण कवितासंग्रह। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २८ | १९४१ | ''नहुष'' | महाभारतीय खंडकाव्य। |
| २९ | १९४२ | ''कुणालगीत'' | बुद्धकालीन गीति-काव्य। |
| ३० | १९४३ | ''अर्जन और विसर्जन'' | दो ऐतिहासिक आख्यानक काव्य। |
| ३१ | १९४३ | ''विश्ववेदना'' | महायुद्ध से प्रेरित सांस्कृतिक गीति। |
| ३२ | १९४७ | ''काबा और कर्बला'' | सांस्कृतिक खंडकाव्य का स्वरूप। |
| ३३ | १९४७ | ''अजित'' | राजनीतिक खंडकाव्य। |
| ३४ | १९५० | ''हिडिम्बा'' | महाभारतीय खंडकाव्य। |
| ३५ | १९५० | "प्रदक्षिणा'' | रामायणीय आख्यानक संकलन। |
| ३६ | १९५० | ''युद्ध'' | महाभारतीय खंडकाव्य। |
| ३७ | १९५० | ''अंजलि और अर्घ्य'' | शोक-गीत। |
| ३८ | १९५१ | "पृथ्वीपुत्र'' | काव्यरूप। |
| ३९ | १९५१ | ''दिवोदास'' | काव्य रूप। |
| ४० | १९५१ | ''जयिनी'' | काव्य रूप। |
| ४१ | १९५२ | ''अप-भारत'' | महाभारतीय प्रबंध-काव्य। |
| ४२ | १९५३ | ''भूमि-भाग'' | सामायिक गोति-संग्रह। |
| ४३ | १९५५ | ''कवि-श्री'' | ११ पौराणिक स्त्री पात्रों विषय की रचनाओं का संग्रह। |
| ४४ | १९५६ | ''राजा-प्रजा'' | निराख्यान निबंधकाव्य। |
| ४५ | १९५७ | ''विष्णुप्रिया'' | मध्यकालीन खंडकाव्य। |
| ४६ | १९६० | ''रत्नावली'' | काव्य। |
| ४७ | १९६० | ''उच्छवास'' | कविता संग्रह। |
| ४८ | १९६० | ''विजयपर्व'' | खंडकाव्य। |
| ४९ | १९६० | ''लीला'' | गीति काव्य। |
| ५० | १९६६ | ''गुरू तेगबहादुर'' | चरित्र वर्णन। |
| ५१ | १९४७ | ''स्वस्ति और संकेत'' | काव्य। |

**गद्य-साहित्य**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | १९३९ | ''ग्रहस्थ-गोता'' | श्री प्रकाराजी के लेखों के पद्य रूपांतर। |
| २ | १९७९ | ''मुंशी अजमेरी'' | संस्मरण। |
| ३ | १९८० | ''श्रद्धांजलि'' | संस्मरण-शब्दचित्र, साकेत प्रकाशन। |

**गीति-नाट्य**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | १९१५ | ''तिलोत्तमा'' | नाटक पौराणिक नाटक। |
| २ | १९१८ | ''चंद्रहास'' | पौराणिक नाटक। |
| ३ | १९२५ | ''अनद्य'' | बौद्धकालीन नाटक। |

**अनूदित रचनाएँ**

कवि की अनूदित रचनाएँ भाषा के आधार पर निम्न प्रकार वर्गीकृत की जा सकती हैं-

1. संस्कृत से – ''स्वप्नवासवदत्ता'', ''रुबाईयात'', ''दूत घटोत्कच''।

2. फारसी से – ''रूबाईयात'', ''उमरखैय्याम्'' ।

3. बाँगला से – ''विरहिणी'', ''वज्रांगना'', ''पालसी का युद्ध'', ''वीरांगना'', ''मेघनाद वध''।

4. हिंदी गद्य से पद्य में ''गृहस्थ-गीता''।

**अप्रकाशित अनूदित रचनाएँ**

1. ''अविमारक''
2. ''उरुभंग''
3. ''प्रतिभा''
4. ''अभिषेक''
5. ''दूतवाकयम''
6. ''चारूदत्त''
7. ''प्रतिज्ञा''
8. ''योग धराज्ञय''

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-1**

**प्रश्न** – मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ था ?

**प्रश्न** – भारत-भारती किस वर्ष प्रकाशिन हुई थी ?

**7.4 भाषा शैली**

मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा बड़ी बोली है। इस पर उनका पूर्ण अधिकार है। भावों को अभिव्यक्त करने के लिए गुप्त जी के पास अत्यन्त व्यापक शब्दावली है। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं की भाषा तत्सम है। इसमें साहित्यिक सौन्दर्य कला नहीं है। ''भारत-भरती'' की भाषा में बड़ी बोली की खड़बड़ाहट है, किन्तु गुप्त जी की भाषा क्रमशः विकास करती हुई सरस होती गयी। संस्कृत के शब्दभण्डार में ही उन्होंने अपनी भाषा का भण्डार भरा है, लेकिन 'प्रियप्रवास' की भाषा में सस्कृत बहुला नहीं होने पायी। इसमें प्राकृत रूप सर्वथा उभरा हुआ है। भाव व्यञ्जना को स्पष्ट और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए संस्कृत का सहारा लिया गया है। संस्कृत के साथ गुप्त जी की भाषा पर प्रांतीयता का भी प्रभाव है। उनका काव्य भाव तथा कला पक्ष दोनों की दृष्टि में सफल है।

शैलियों के निर्वाचन में मैथिलीशरण गुप्त ने विविधता दिखाई किन्तु प्रधानता प्रबन्धात्मक इतिवृतमव शैली की है। उनके अधिकांश काव्य इसी शैली में है 'रंग में भंग', 'जयद्रथ वध', 'नहुष' 'सिद्धराज', 'विपथक, 'साकेत' आदि प्रबंध शैली में हैं। यह शैली दो प्रकार की है 'खंड काव्यात्मक तथा महाकाव्यात्मक। साकेत महाकाव्य है तथा शेष सभी काव्य खंड काव्य के अंतर्गत आते हैं।

गुप्त जी की एक शैली विवरण शैली भी है। 'भारत-भारती' और 'हिन्दू' इस शैली में आते हैं। तीसरी शैली 'गीत शैली' है। इसमें गुप्त जी ने नाटकीय प्रणाली का अनुगमन किया है। 'अनघ' इसका उदाहरण है। आत्मोद्वार प्रणाली गुप्त जी की एक और शैली है, जिसमें 'द्वापर' की रचना हुई है। नाटक, गीत, प्रबन्ध, पच और गद्य सभी के मिश्रण एक 'मिश्रित शैली' है, जिसमें 'यशोधरा' की रचना हुई है।

इन सभी शैलियों में गुप्त जी को समान रूप से सफलता नहीं मिली। उनकी शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें इनका व्यक्तित्व झलकता है। पूर्ण प्रवाह है। भावों की अभिव्यक्ति में सहायक होकर उपस्थित हुई है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

**प्रश्न** - मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा कौन सी है ?

**प्रश्न** - मैथिलीशरण गुप्त ने 'मिश्रित शैली' में किस कृति की रचना की है ?

## 7.5 सारांश

उत्तर प्रदेश के झौली जिले में हुआ था, जन्म आधुनिक हिंदी काव्य के प्रतिष्ठित कवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त, 1866 ई. को उत्तर प्रदेश के झाँसी के निकट चिरगाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम 'सेठ रामचरण दास' व माता का नाम 'काशीबाई' था। माना जाता है कि उनके पिता भी एक कवि थे और 'कनकलता' उपनाम से कविता किया करते थे। मैथिलीशरण गुप्त को खड़ी बोली कविता के अग्रदूतों में से एक माना जाता है और जबकि उस समय अधिकांश हिंदी कवि प्रजभाषा बोली के उपयोग के पक्षधर थे। उनकी कला और राष्ट्र प्रेम के कारण उन्हें 'राष्ट्र गति का दर्जा प्राप्त है। उनकी कविताओं की विशेष बात ये भी थी वे खड़ी बोली में लिखने वाले पहले कवि थे। उनकी रचनाओं का मुख्य स्वर प्रेम भक्ति और राष्ट्रीयता है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सबसे बड़े कवि थे।

## 7.6 कठिन शब्दावली

**प्रतिष्ठित** - सम्मानित

**मनोनीत** - नामांकित

**पारितोषिक** - इनाम

**मूलाधार** - मुख्य आधार

**वैतालिक** - जादूगर, भाट

**स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर**

**अभ्यास प्रश्न-1**

**उत्तर**- 1886 ई. में।

**उत्तर**- 1912 ई. में।

**अभ्यास प्रश्न-2**

**उत्तर**- खड़ी बोली।

**उत्तर**- यशोधरा।

## 7.8 संदर्भित पुस्तकें

1. रेवती रमण, भारतीय साहित्य के निर्माता मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य अकादमी, दिल्ली।

2. विराग गुप्ता, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, पेंगुइन बुक्स इंडिया, नई दिल्ली।

3. बच्चन सिंह आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।

## 7.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक परिचय दीजिए।

प्रश्न. आधुनिक साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त का क्या योगदान रहा।

प्रश्न. मैथिलीशरण गुप्त के जीवन परिचय सहित भाषा शैली की विवेचना कीजिए।

*****

# इकाई-8
# मैथिलीशरण गुप्त : काव्यगत विशेषताएं

**संरचना**

8.1 भूमिका
8.2 उद्देश्य
8.3 मैथिलीशरण गुप्त : काव्यगत विशेषताएँ
स्वयं आकलन प्रश्न-1
8.4 मैथिलीशरण गुप्त : राष्ट्रीय चेतना
स्वयं आकलन प्रश्न-2
8.5 सारांश
8.6 कठिन शब्दावली
8.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
8.8 संदर्भित पुस्तकें
8.9 सात्रिक प्रश्न

## 8.1 भूमिका

पिछली कक्षा में हमने मैथिलीशरण गुप्त के जीवन एवं साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनकी राष्ट्रीय चेतना का भी अलायन करेंगे।

## 8.2 उद्देश्य

इकाई आठ का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होगे कि -

1. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ क्या है?
2. मैथिलीशरण गुप्त की नारी विषयक दृष्टि क्या है?
3. मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना का महत्त्व क्या है?
4. मैथिलीशरण गुप्त की दार्शनिकता किस प्रकार की थी?

## 8.3 मैथिलीशरण गुप्त : काव्यगत विशेषताएँ

भारतीय संस्कृति के अमर गायक कविवर श्री मैथिलीशरण गुप्त जी हिन्दी-साहित्य के युग-प्रतिनिधि कवि है, जिन्होंने युग की नाड़ी टटोल कर उसके स्पन्दन को अपनी वाणी द्वारा व्यक्त किया है। उनके काव्य में साहित्य और समाज का सुन्दर समन्वय मिलता है। जहाँ उनकी काव्य-प्रतिभा ने एक ओर अपनी सामाजिक-चेतना से जीवन-रस लिया है, वहीं दूसरी ओर भारतीय राष्ट्र और ममाज की नसों में नव-जीवन का पुनीत स्रोत प्रवाहित किया हैं। उनकी काव्य-सम्पदा का क्षेत्र बड़ा व्यापक और विशाल है। वे अपने काव्य-आंचल में अपने युग की सभी प्रवृत्तियों को सहेज कर चले हैं। भारतीय संस्कृति का भव्य आदर्श, अतीत-गौरव का गान, वर्तमान के परिष्कार की प्रेरणा और भविष्य का सुखद सन्देश यह सब गुप्त जी के काव्य की भाव-भूमि है। उनकी भाव-भूमि जितनी सशक्त एवं सुविस्तृत हैं, उसकी अभिव्यक्ति के लिये उनका कला-पक्ष उतना ही समृद्धशाली हैं। उनके भावपक्ष और कलापक्ष का यह अद्‌भुत समन्वय उनकी उत्कृष्ट काव्य-प्रतिभा का परिचायक हैं।

**मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की भाव-पक्ष विशेषताएँ**

मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य का भाव-पक्ष बड़ी सुंदर एवं समृद्ध हैं। उनके काव्य के भाव-पक्ष की विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

मानवतावादी दृष्टिकोण-गुप्त जी प्राचीन और आधुनिक काव्य-धारा के सन्धि युग के प्रतिनिधि कवि थे। उनका काव्य राष्ट्रीय विचारों से परिपूर्ण है। उनके काव्य का चरम लक्ष्य सामाजिक सेवा या भुवन सेवा ही था। मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने लिखा हैं कि-

**न तन सेवा, न मन सेवा, न जीवन और न धन सेवा,**
**मुझे है इष्ट जन सेवा सदा सच्ची भुवन सेवा।**

**राष्ट्र-प्रेम की सच्ची भावना**- गुप्त जी एक सच्चे राष्ट्र प्रेमी कवि थे। भारतेन्दु बाबू के समय से राष्ट्रीय भावना की जो भाव-धारा आरंभ हुई उसका समुचित विकास गुप्तजी की ही कविताओं में हुआ। ''साकेत'' में राम वन-गमन के समय मार्ग में लेटकर जनता कहती है कि-

**जाओ यदि जा सको, रौंद हमको यहाँ**
**यों कह पथ में लेट गये बहुजन वहाँ।**

**गाँधी जी का प्रभाव** - राष्ट्रीय भावनाओं में गुम जी गाँधी जी से पूर्ण प्रभावित थे। उनके राजनीतिक विचार पूर्ण समयानुकूल थे। राम के शब्दों में चिनत-विद्रोह की चर्चा असहयोग आन्दोलन का ही दूसरा रूप है। प्रजा के आग्रह पर राम ने कहा कि-

**उठो प्रजानन उठो, तजो यह मोह तुम।**
**हो किस आप विनत-विद्रोह तुम।**

**समाज-सुधार की भावना**- गुप्त जी की कविता में आधुनिक सामाजिक सुधार की भावना का स्वरूप पर्याप्त रूप से दृष्टिगोचर होता है। हिन्दू-मुस्लिम एकता अछूतोद्धार और विधवा विवाह आदि का समर्थन गुप्त जी के काव्य में मिलता है। अछूतों के संबंध में उनके विचार दिखिये-

**इन्हें समाज नीच कहता है पर हैं ये भी तो प्राणी**
**इनमें भी मन और भाव हैं. किन्तु नहीं वैसी वाणी।**

**राजनीतिक विचार** - गुप्त जी के प्रबंध काव्यों में उनकी राजनीति संबंधी दृष्टिकोण की दिशा दिखायी देती है, जो प्रजातन्त्रात्मक हैं। जैसे-

**राजा प्रजा का पात्र है, वह एक प्रतिनिधि मात्र हैं,**
**यदि वह प्रजा पालक नहीं तो त्याज्य हैं।**

**नारी चरित्र का महत्त्व** - प्राचीन आर्य संस्कृति के गुप्त जी महान उपासक थे। इस कारण उनके हृवदय में नारियों के प्रति अटूट श्रद्धा और सहानुभूति रही है। कवियों द्वारा उपेक्षित उर्मिला, यशोधरा और कैकयी जैसी नारियों के चरित्र का उन्होंने चित्रण किये, यह महज रूप में मानते थे कि-

**एक नहीं दो-दो मात्रा हैं, नर से भारी नारी।**

इसी प्रकार नारी के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है कि

**अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,**
**आँचल में है दूध ओर आँखों में पानी।**

**प्रकृति चित्रण**- गुप्त जी को प्रकृति का रम्यरूप बहुत ही प्रिय था और उन्होंने लिखा है कि-

**रत्ना भरण भरे अंगों में ऐसे सुन्दर लगते थे,**
**ज्यों प्रफुल्ल बल्ली पर सौ-सौ जुगनू जगमग करते थे।**

**भक्ति भावना**- गोस्वामी तुलसीदास के समान ही गुप्त जी राम के अनन्य भक्त थे। सभी धर्मों के आराध्य देवताओं का आदर करते हुए भी राम का रूप उन्हें सर्वाधिक प्रिय था. इसलिए उन्होंने कहा है-

**धनुर्वाण या वेणु लो, स्याम रूप के संग,**
**मुझ पर चढ़ने से रहा, राम! दूसरा रंग।**

**वर्णन का क्षेत्र**- गुप्त जी भारत की प्राचीन आर्य संस्कृति के उपासक थे। प्राचीन संस्कारों से ही वशीभूत होकर उन्हें अपना कोई हित अभीष्ट नहीं था। राम के अवतरित होने की बात प्रस्तुत करते हुए उन्होंने लिखा हैं कि--

**सन्देश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया,**
**इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।**

**राष्ट्रीयता तथा गांधीवाद**- मैथिलीशरण गुप्त के जीवन में राष्ट्रीयता के भाव कूट-कूट कर भर गए थे। इसी कारण उनकी सभी रचनाएँ राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत है। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त थे। परन्तु अन्धविश्वासों और थोथे आदर्शों में उनका विश्वास नहीं था। वे भारतीय संस्कृति की नवीनतम रूप की कामना करते थे।

गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता है। इसमें भारत के गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता का ओजपूर्ण प्रतिपादन है। आपने अपने काव्य में पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता प्रदान की है और नारी मात्र को विशेष महत्व प्रदान किया है। गुप्त जी ने प्रबंध काव्य तथा मुक्तक काव्य दोनों की रचना की। शब्द शक्तियों तथा अलंकारों के सक्षम प्रयोग के साथ मुहावरों का भी प्रयोग किया है।

भारत भारती में देश की वर्तमान दुर्दशा पर क्षोभ प्रकट करते हुए कवि ने देश के अतीत का अत्यंत गौरव और श्रद्धा के साथ गुणगान किया। भारत श्रेष्ठ था, है और सदैव रहेगा का भाव इन पंक्तियों में गुंजायमान है-

**भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?**
**फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहाँ?**
**संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है**
**उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन भारतवर्ष है।**

**गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता**

एक समुन्नत सुगठित और सशक्त राष्ट्रीय नैतिकता से युक्त आदर्श समाज, मर्यादित एवं स्नेहसिक्त परिवार और उदात्त चरित्र वाले नर-नारी के निर्माण की दिशा में उन्होंने प्राचीन आख्यानों को अपने काव्य का वर्ण्य विषय बनाकर उनके सभी पात्रों को एक नया अभिप्राय दिया है। जयद्रथवध, साकेत, पंचवटी, सैरन्ध्री, बक संहार, यशोधरा, द्वापर, नहुष, जयभारत, हिडिम्बा, विष्णुप्रिया एव रत्नावली आदि रचनाएँ इसके उदाहरण हैं।

**दार्शनिकता**- दर्शन की जिज्ञासा आध्यात्मिक चिन्तन से अभिन्न होकर भी भिन्न है। मननशील आर्यसुधियों की यह एक विशिष्ट चिन्तन प्रक्रिया है और उनके तर्कपूर्ण सिद्धान्त ही दर्शन है। इस प्रकार आध्यात्मिकता यदि सामान्य चिन्तन है तो षडदर्शन ब्रह्म जीव, जगत आदि का विशिष्ट चिन्तन। अत: दार्शनिक चिन्तन भी तीन मुख्य दिशाएँ हैं - ब्रह्म - जीव - जगत। गुप्त जी का दर्शन उनके कलाकार के व्यक्तित्व पक्ष का परिणाम न होकर सामाजिक पक्ष का अभिव्यक्तिकरण है। वे बहिर्जीवन के दृष्टा और व्याख्याता कलाकार हैं, अन्तर्मुखी कलाकार नहीं। कर्मशीलता उनके दर्शन की केन्द्रस्थ भावना है। साकेत में भी वे राम के द्वारा कहलाते हैं-

***सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया***
***इस भुतल को ही स्वर्ग बनाने आया । २२।***

राम अपने कर्म के द्वारा इस पृथ्वी को ही स्वर्ग जैसी सुन्दर बनाना चाहते हैं। राम के वनगमन के प्रसंग पर सबके व्याकुल होने पर भी राम शान्त रहते हैं, इससे यह ज्ञान होता है कि मनुष्य जीवन में अनन्त उपेक्षित प्रसंग निर्माण

होते हैं अत: उसके लिए खेद करना मूर्खता है। राम के जीवन में आने वाली सम तथा विषम परिस्थितियों के अनुकूल राम की मन:स्थिति का सहज स्वाभाविक दिग्दर्शन करते हुए भी एक धीरोदात्त एवं आदर्श पुरुष के रूप में राम का चरित्रांकन गुप्त जी ने किया है। लक्ष्मण भी जीवन की प्रत्येक प्रतिक्रिया में लोकोपकार पर बल देते हैं। उनकी साध ना 'शिवम्' की साधना है। अत: वे अत्यन्त उदारता से कहते हैं–

*मैं मनुष्यता को सुरत्व की*
*जननी भी कह सकता हूँ*
*किन्तु पतित को पशु कहना भी*
*कभी नहीं सह सकता हूँ।*

**रहस्यात्मकता एवं आध्यात्मिकता**– गुप्त जी के परिवार में वैष्णव भक्ति भाव प्रबल था। प्रतिदिन पूजा–पाठ भजन, गीता पढ़ना आदि सब होता था। यही कारण है कि गुप्त जी के जीवन में भी यह आध्यात्मिक संस्कार बीज के रूप में पड़े हुए थे जो धीरे–धीरे अंकुरित होकर रामभक्ति के रूप में वटवृक्ष हो गया।

'साकेत' की भूमिका में निर्गुण परब्रह्म सगुण साकार के रूप में अवतरित होता है। आत्मश्रय प्राप्त कवि के लिए जीवन में ही मुक्ति मिल जाने से मृत्यु न तो विभीषिका रह जाती है और न उसे भय या शोक ही दे सकती है।

गुप्त जी ने 'साकेत' में राम के प्रति अपनी भक्ति भावना प्रकट की है। 'साकेत' में मुख्य रूप से उनका प्रयोजन उर्मिला की व्यथा को चित्रित करना था। पर साथ में ही राम की भक्ति भावना के गुण गाने में पीछे नहीं हटे। साकेत में हम जिस रामचरित के दर्शन करते हैं उसमें आधुनिकता की छाप अवश्य है, किन्तु उसकी आत्मा में राम के आधि दैविक रूप की ही झाँकी है और 'साकेत' की मूल प्रेरणा है। जिस युग में राम के व्यक्तित्व को ऐतिहासिक महापुरुष या मर्यादा पुरुषोत्तम तक सीमित मानने का आग्रह चल रहा था गुप्त जी की वैष्णव भक्ति ने आकुल होकर पुकार की थी।

*राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या?*
*विश्व में रमे हुए नहीं सभी कही हो क्या?*
*तब मैं निरीश्वर हैं, ईश्वर क्षमा करे,*
*तुम न रमो तो मन तुम में रमा करे।*

'साकेत' पूजा का एक फूल है, जो आस्तिक कवि ने अपने इष्टदेव के चरणों पर चढ़ाया है। राम के चित्रांकन में गुप्त जी ने जीवन के रहस्य को उद्घाटित किया है। राम के जन्म हेतु उन्होंने कहा है–

*किसलिए यह खेल प्रभु ने है किया।*
*मनुज बनकर मानवी का पय पिया।।*
*भक्त वत्सलता इसी का नाम है।*
*और वह लोकेश लीला धाम है ।१६।*

**नारी मात्र की महत्ता का प्रतिपादन**

नारियों की दुरवस्था तथा दु:खियों दीनों और असहायों की पीड़ा ने उसके हृदय में करुणा के भाव भर दिये थे। यही कारण है कि उनके अनेक काव्य ग्रंथों में नारियों की पुनर्प्रतिष्ठा एवं पीड़ित के प्रति सहानुभूति झलकती है। नारियों की दशा को व्यक्त करती उनकी ये पक्तियां पाठकों के हृदय में करुणा उत्पन्न करती है–

*अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।*
*आँचल में है दूध और आँखों में पानी।*

**पतिवियुक्ता नारी का वर्णन**

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता के विमर्श ने गुप्त जी को साकेत महाकाव्य लिखने के लिए प्रेरित किया। भारत वर्ष में गूँजे हमारी भारती की प्रार्थना करने वाले कवि कालान्तर मे, विरहिणी नारियों के दुःख से द्रवित हो जाते हैं। परिवार में रहती हुई पतिवियुक्ता नारी की पीड़ा को जिस शिद्दत के साथ गुप्तजी अनुभव करते हैं और उसे जो बानगी देते हैं, वह आधुनिक साहित्य में दुर्लभ है। उनकी वियोगिनी नारी पात्रों में उर्मिला (साकेत महाकाव्य), यशोधरा (काव्य) और विष्णुप्रिया खण्डकाव्य प्रमुख है। उनका करूण विप्रलम्भ तीनों पात्रों में सर्वाधिक मर्मस्पर्शी बन पड़ा है। उनके जीवन संघर्ष, उदात्त विचार और आचरण की पवित्रता आदि मानवीय जिजीविषा और सोदेश्यता को प्रमाणित करते हैं। गुप्तजी की तीनों विरहिणी नायिकाएँ विरह ताप में तपती हुई भी अपने तन-मन को भस्म नहीं होने देती बरण कुन्दन की तरह उज्वल वर्णी हो जाती हैं।

साकेत की उर्मिला रामायण और रामचरितमानस की सर्वाधिक उपेक्षित पात्र है। इस विरहिणी नारी के जीवन वृत्त और पीड़ा की अनुभूतियों का विशद वर्णन आख्यानकारों ने नहीं किया है। उर्मिला लक्ष्मण की पत्नी है और अपनी चारों बहनों में वही एक मात्र ऐसी नारी है, जिसके हिस्से में चौदह वर्षों के लिए पतिवियुक्ता होने का दुःख मिला है। उनकी अन्य तीनों बहनों में सीता, राम के साथ, मांडवी भरत के सान्निध्य में तथा श्रुतिकीर्ति शत्रुघ्न के संग जीवन यापन करती हैं। उर्मिला का जीवन वृत्त और उसकी विरह-वेदना सर्वप्रथम मैथिलीशरण गुप्त जी की लेखनी से साकार हुई हैं।

गुप्तजी ने अपने काव्य का प्रधान पात्र राम और सीता को न बनाकर लक्ष्मण, उर्मिला और भरत को बनाया है। गुप्तजी ने साकेत में उर्मिला के चरित्र को जो विस्तार दिया है, वह अप्रतिम है। कवि ने उसे 'मूर्तिमति उषा', 'सुवर्ण की सजीव प्रतिमा', 'कनक लतिका', 'कल्पशिल्पी की कला' आदि कहकर उसके शारीरिक सौन्दर्य की अनुपम झाँकी प्रस्तुत की है। उर्मिला प्रेम एवं विनोद से परिपूर्ण हास-परिहासमयी रमणी है।

मैथिलीशरण गुप्त को आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का मार्गदर्शन प्राप्त था। आचार्य द्विवेदी उन्हें कविता लिखने के लिए प्रेरित करते थे, उनकी रचनाओं में संशोधन करके अपनी पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित करते थे। मैथिलीशरण गुप्त की पहली खड़ी बोली की कविता 'हेमन्त' शीर्षक से सरस्वती (१९०७ ई.) में छपी थी।

**प्रकृति वर्णन**

गुप्त जी द्वारा रचित खण्डकाव्य पंचवटी में सहज वन्य-जीवन के प्रति गहरा अनुराग और प्रकृति के मनोहारी चित्र हैं। उनकी निम्न पक्तियां आज भी कविताप्रेमियों के मानस पटल पर सजीव हैं-

***चारुचंद्र की चंचल किरणें, खेल रहीं हैं जल थल में,***
***स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अम्बरतल में।***
***पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से,***
***मानों झूम रहे हैं तरु भी, मन्द पवन के झोंकों से।।***

**मैथिलीशरण गुप्त के कला-पक्ष की विशेषताएँ**

भाव-पक्ष की भाँति गुप्त जी कविता में कला पक्ष का भी समुचित विकास हुआ। गुप्त जी के काव्य के कला-पक्ष की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

**वर्णन-विशद्ता** - वर्णन की विशदता गुप्त जी की काव्य कला की प्रमुख विशेषता है। भाव, वस्तु, दृश्य सभी का वर्णन गुप्त जी ने बड़े ही विशद् रूप में किया हैं। उनकी वर्णन शैली बड़ी सजीव और प्रभावोत्पादक हैं। 'साकेत' महाकाव्य के प्रथम-सर्ग में अयोध्या नगरी का बड़ा ही भव्य और विशद् चित्रण किया गया है। कवि की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

*''देख लो साकेत नगरी है यही, स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।*
*केतु-पट सदृश्य हैं उड़ रहे, कनक कलसों पर अमर दृग जुड़ रहे॥''*

**उक्ति-वैचित्र्य**- किसी बात को सीधे ढंग से कहना गुप्त जी जानते ही नहीं। उनके कथन व्यंजना और लक्षणा के सौंदर्य से सम्पन्न हैं। इसीलिए गुप्त जी के काव्य में अनोखी उक्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। 'यशोधरा' खण्डकाव्य में नारी-जीवन की दयनीयता पर कवि का यह कठोर व्यंग्य कितना भार्मिक हैं-

*''अबला जीवन हाय तुम्हारी रही कहानी।*
*आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥''*

**भाषा**- गुप्त जी की भाषा शुद्ध तथा निखरी हुई खड़ी बोली है। खड़ी बोली में सरस मधुर कविता करके गुप्तजी ने महान ख्याति प्राप्त की है। ब्रजभाषा का सा माधुर्य खड़ी बोली के माध्यम से लाने का श्रेय गुप्त जी को ही है। भाषा में शुद्धता और कोमलता के साथ-साथ छायावादी युग का पर्याप्त प्रभाव मिलता हैं।

**शैली**- गुप्त जी बहुमुखी प्रतिभा के सम्पन्न एवं धनी कलाकार थे। उनकी रचनाओं में शैली के विभिन्न रूप पाये जाते हैं, जैसे वर्णनात्मक, प्रबन्धात्मक, भावात्मक, उपदेशात्मक, गीति, नाट्य शैली, चित्रात्मक एवं छायावादी शैली।

**अलंकार योजना**-गुप्त जी ने अपनी भाषा-शैली को अलंकारों की चमक-दमक से खूब सजाया है। आपकी अलंकार योजना बड़ी सहज और आकर्षक है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिश्योक्ति, विभावना, संदेश, भ्रान्तिमान, मानवीकरण, विशेषण विपर्यय आदि गुप्त जी के प्रिय अलंकार हैं, जिनका सहज सौंदर्य आपकी काव्य-रचनाओं में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। कैकेयी के क्रोध के उपरांत राम के विनम्र वचन दशरथ के लिये ठीक वैसे ही है, जैसे तूफान के पश्चात भूमि पर मेघवृष्टि होना-

*''असन पूर्व उद्गम तारक हार, मलिन-सा सित-शून्य अम्बर-धार।*
*प्रकृति-रंजन-हीन-दीन अजस्त्र, प्रकृति 'विधवा' थी भरे हिम वस्त्र॥*

**छंद-योजना**- छंद योजना की दृष्टि से भी गुप्त जी का काव्य समृद्धशाली है। वर्तमान खड़ी बोली कविता में जितने छन्दों का प्रयोग गुप्त जी ने किया है, उतना अन्य किसी कवि ने नहीं किया है। आपने तुकान्त, अतुकान्त सभी प्रकार के छन्द लिखे है। आपकी रचनाओं में रोला, छप्पय, सवैया, कवित्त, दोहा, हरिगीतिका, आर्यापद, पादाकुलक, आदि मात्रिक छन्दों तथा शार्दूल विक्रीडित, शिखरणी, मालिनी, द्रुतविलम्बित आदि वर्णिक छन्दों का विषय और प्रसंग के अनुकूल सफल प्रयोग दृष्टिगोचर होता हैं।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के बाद कह सकते हैं कि मैथिलीशरण गुप्त अपने युग के प्रतिनिधि कवि थे। वे हिन्दी साहित्य के एक ऐसे प्रकाशित नक्षत्र थे, जिसके प्रकाश में तेज एवं शील दोनों का स्वरूप विकसित हुआ और जो अनन्त काल तक भारतीयों का मार्ग-दर्शन करता रहेगा।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-1**

**प्रश्न** - मैथिलीशरण गुप्त की तुलना किस भत्त कवि से की है ?

**प्रश्न** - रामायण और रामचरितमानस की सबसे उपेक्षित पत्र कौन है ?

### 8.4 मैथिलीशरण गुप्त : राष्ट्रीय चेतना

सामान्य रूप से राष्ट्र के प्रति प्रेम ही राष्ट्रीयता कहलाती है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने राष्ट्र की सेवा, उसे धन-धान्य से समृद्ध बनाने के लिए व्यक्ति के प्रयास व त्याग को ही राष्ट्रीयता माना है। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र से अथाह प्रेम करना व उसकी उन्नति का प्रयास करना ही राष्ट्रीयता है। परन्तु जहाँ तक राष्ट्रीय चेतना से युक्त काव्य का प्रश्न है, इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि इस काव्य में अपने देश की महिमा का यशोगान किया जाता है, उसके वैभवशाली व गौरवशाली अतीत का वर्णन किया जाता है, अपने देशवासियों में स्वाधीनता की

रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना का संचार किया जाता है तथा पुरानी व गली-सड़ी परम्पराओं को त्याग कर विकास के नए-नए मार्ग खोजने का आह्वान किया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त का काव्य राष्ट्रीय-चेतना से ओतप्रोत है। उनकी राष्ट्रीय चेतना को मुख्यत: निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है-

**1. मातृभूमि की वन्दना व प्रशंसा**- राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य में अपनी मातृध्भूमि की नाना प्रकार से वन्दना व प्रशंसा की है। उदाहरण के लिए 'मातृभूमि' शीर्षक कविता में कवि ने मातृभूमि की भगवान की मूर्ति के रूप में कल्पना की है। कवि अपनी मातृभूमि को वात्सल्यमयी माता के रूप में चित्रित करते हुए कहता है-

**जिसकी रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं**
**घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।**
**हम खेले-कूदे हर्ष-युक्त जिसकी प्यारी गोद में।**
**हे मातृभूमि तुझको निरख, मग्न क्यों न हों गोद में।**

**2. देश के गौरवशाली अतीत का योगदान** - राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत कवि अपने काव्य में अपने देश के गौरवशाली अतीत का भी योगदान करता है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपनी कविताओं में भारतवर्ष के गौरवशाली अतीत का यशोगान करके समकालीन भारतीयों में एक नई चेतना, नया विश्वास भरने का सफल प्रयास किया है। उदाहरण के लिए 'अतीत का गौरवगान' शीर्षक कविता में कवि हमारे देश के महापुरुषों की ओर संकेत करते हुए कहता है

**थे कर्मवीर कि मृत्यु का भी ध्यान कुछ थरते न थे,**
**थे युद्धवीर कि काल से भी हम कभी डरते न थे।**
**थे दानवीर कि देह का भी लोभ हम करते न थे।**
**थे धर्मवीर कि प्राण के भी मोह पर मरते न थे।**

**3. देश की समस्याओं का वर्णन**-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपने काव्य में देश की वर्तमान समस्याओं को भी उठाया है ताकि उन समस्याओं के दूर करके देश व समाज को विकास के मार्ग पर ले जाया जा सके। वे भारत की समस्याओं की ओर संकेत करते हुए कहते हैं-

**हम कौन थे क्यों हो गए हैं और क्या होंगे अभी।**
**आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी ॥**

भारतीय समाज में नारी को भोग विलास की वस्तु मानने पर नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई और इससे समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ खड़ी होने लगीं, तब गुप्त जी ने इस समस्या को इस प्रकार उठाया है-

**हाय वधू ने क्या वर-विषयक एक वासना पाई?**
**नहीं और कोई क्या उसका पिता, पुत्र या भाई?**
**नर के बॉटे क्या नारी की नग्न मूर्ति ही आई?**
**माँ, बेटी या बहन हाय! क्या संग नहीं वह लाई?**

इसी प्रकार कवि ने बाल-विवाह, छुआ-छूत की समस्या, जाति-पाति की समस्या आदि की भी अपने काव्य में उठाकर अपनी राष्ट्रीय चेतना को दर्शाया है।

**4. राष्ट्रीय एकता पर बल**-राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी राष्ट्रीय एकता के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने अपने काव्य में बार-बार राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने का आह्वान किया है। ये जानते थे कि जब तक भारत में सभी वर्ग व जातियों मिलकर अपनी प्रगति के लिए प्रगतिशील नहीं होगी, तब तक न तो हम पराधीनता के पंजे से मुक्त हो सकते हैं और न अपनी उन्नति कर सकते हैं। अत: उन्होंने राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दू-मुसलमानों को पारस्परिक संघर्ष को त्यागकर एक जुट होने का आह्वान किया गया। यथा-

**अनुदारता-दर्शक हमारे दूर सब अविवेक हों,**
**जितने अधिक हों तन भले हैं, मन हमारे एक हों**
**आचार में कुछ भेद हो पर प्रेम हो व्यवहार में।**
**देखें, हमें फिर कौन सुख मिलता नहीं संसार में।**

**5. प्रजातंत्र की स्थापना पर बल**-मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-यात्रा पराधीन भारत में आरंभ हुई और स्वतंत्र भारत में भी कुछ समय तक पल्लवित होती रही। अतः उनकी आरम्भिक कविताओं में जहाँ अंग्रेजों के शासन के प्रति विद्रोह का भाव दिखाई देता है, वहीं स्वतंत्र भारत में वे प्रजातंत्र के पक्षधर दिखाई देते हैं। उन्होंने विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए आह्वान करते हुए कहा है-

**शासन किसी परजाति का चाहे विवेक विशिष्ट हो,**
**सम्भव नहीं है, किंतु जो सर्वांश में वह इष्ट हो।**

इसी प्रकार वे गाँधी जी के द्वारा चलाए गए सत्याग्रह आंदोलन की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं-

**सत्याग्रह है कवच हमारा, कर देखो कोई भी वार।**
**हार मानकर शत्रु स्वयं ही, यहाँ करेंगे मित्राचार।**

इसी प्रकार प्रजातंत्र में आस्था दर्शाते हुए वे लिखते हैं-

**एक श्रमिक जो आज भूमि ही खन सकता है,**
**कल सुयोग्य हो वही राष्ट्रपति भी बन सकता है।**

**6. भारतीय संस्कृति में आस्था**-राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति में अपनी दृढ़ आस्था को दर्शाकर भी अपनी राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त किया है।

इस सम्बन्ध में डॉ. सत्येन्द्र ने ठीक ही लिखा है- **"राष्ट्रीयता गुप्त जी का उद्देश्य है परन्तु संस्कृति शून्य राष्ट्रीयता उन्हें ग्राहय नहीं है।"** यदि यह कहा जाए कि 'साकेत' महाकाव्य में गुप्त जी ने भारतीय संस्कृति की बार-बार स्थापना की है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

इसी प्रकार 'स्वेदशी संगीत' में परतंत्रता की समाप्ति का आह्वान किया गया है, 'हिन्दू' काव्य में जातिगत व धर्मगत रूढ़ियों, सामाजिक जड़ता आदि को त्यागने का संदेश दिया गया है, 'वन-वैभव' में राष्ट्रीय एकता पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त 'गुरुकुल', 'अर्जन और विसर्जन', 'काबा और कर्बला', 'विश्व-वेदना', 'अर्जित', 'भारत-भारत', 'जय-भारत' आदि काव्यों में भी उनकी राष्ट्रीय चेतना मुखरित हुई है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना व राष्ट्रीय जागरण की भावना विद्यमान है। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतवासियों में राष्ट्रीयता की भावना भरने का प्रशंसनीय प्रयास किया, अपने देशवासियों को अपने महापुरुषों के पराक्रम, शौर्य, वीरता आदि से परिचित करवाया, तत्कालीन समाज की समस्याओं का चित्रण करके उन्हें उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि गुप्त जी की कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

**प्रश्न** - मातृभाषा की वंदना और प्रशंसा गुप्त की किस कविता में देखने को मिलती है ?

**प्रश्न** - गुप्त जी ने परतंत्रता की समाप्ति का आहवान किसके माध्यम ने किया है ?

**8.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर**

**अभ्यास प्रश्न–1**

**उत्तर**– गोस्वामी तुलसीदास।

**उत्तर**– उर्मिला।

**स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर**

**अभ्यास प्रश्न–2**

**उत्तर**– एकान्त कविता।

**उत्तर**– स्वदेशी संगीत।

**8.5 सारांश**

मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता और गाँधीवादी की प्रधानता है। इसमें भारत के गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता का ओजपूर्ण प्रतिपादन है। आपने अपने काव्य में पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता प्रदान की है और नारी मात्र को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य–भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया। इस तरह ब्रज भाषा जैसी समृद्ध काव्य–भाषा को छोड़कर छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य–अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिंदी कविता के इतिहास में यह गुप्त जी का सबसे बड़ा योगदान है।

**8.6 कठिन शब्दावली**

**गाँधीवादी** – गांधीवाद से संबंधित

**ओजपूर्ण**– कांतिपूर्ण

**यथोचित** –जैसा चाहिए वैसा

**गौरवमय** – प्रतिष्ठित

**प्रतिपादन** – ज्ञान कराना

**8.8 संदर्भित पुस्तकें**

1. नंद किशोर पांडे, मैथिलीशरण गुप्त विशेष अध्ययन, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
2. विराग गुप्ता, हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, पेंगुइन बुक्स इंडिया, दिल्ली।
3. रेवती रमण, भारतीय साहित्य के निर्माता मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य अकादमी दिल्ली।

**8.9 सात्रिक प्रश्न**

प्रश्न. मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

प्रश्न. आधुनिक साहित्य में खड़ी बोली को विशेष स्थान प्रदान करने में गुप्त जी का क्या योगदान रहा, स्पष्ट कीजिए

प्रश्न. मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

*****

# इकाई - 9
# मैथिलीशरण गुप्त : व्याख्या भाग

**संरचना**

9.1 भूमिका
9.2 उद्देश्य
9.3 मैथिलीशरण गुप्त : व्याख्या भाग (कविता)
- भारत भारती (कविता) : व्याख्या भाग
- मातृभूमि (कविता) : व्याख्या भाग
- आशा (कविता) : व्याख्या भाग
- संदेश (कविता) : व्याख्या भाग

स्वयं आकलन प्रश्न
9.4 सारांश
9.5 कठिन शब्दावली
9.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
9.7 संदर्भित पुस्तकें
9.8 सात्रिक प्रश्न

## 9.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं की व्याख्या करेंगे। इसके अन्तर्गत हम भारत-भारती, मातृभूमि, आशा तथा सन्देश कविता की व्याख्या करेंगे।

## 9.2 उद्देश्य

इकाई नौ का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. भारत भारती कविता का मूल भाव क्या है ?
2. मातृभूमि कविता में किस भाव को प्रमुखता से उठाया गया है ?
3. आशा कविता में कवि ने भारतवासियों को क्या संदेश दिया गया है ?
4. सन्देश कविता का सार क्या है ?

## 9.3 मैथिलीशरण गुप्त : व्याख्या भाग (कविता)

● **कविता का सार**-भारत-भारती मैथिलीशरण गुप्त विरचित एक खंडकाव्य है, जिसका प्रकाशन 1912 ई. में हुआ। देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत इस ग्रंथ को पढ़कर ही महात्मा गाँधी ने गुप्त जी को राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की थी। पाठ्यक्रम में संकलित चार पद इस काव्य के प्रारंभिक पद हैं। इनका सार इस प्रकार है-

कवि कहता है कि हमें अपने, वर्तमान और भविष्य पर विचार करना चाहिए। यह ठीक है कि हमारा अतीत बहुत कुछ खो गया है। फिर भी जो कुछ हमें अत्यधिक प्राप्त हुआ है, वह भी कम गौरवशाली नहीं है। भारतवर्ष प्राकृतिक दृष्टि से अत्यधिक सुन्दर देश है। यहीं पर मनोहर हिमालय है और जीवनदायी गंगा नदी बहती है। संसार में सबसे विकसित यह देश भारतवर्ष ही है। यह ऋषियों की भूमि है और संसार का सिरमौर है। प्राचीन भारतवर्ष ही संसार

में सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र रहा है। इसके समान प्राचीन देश धरती पर कोई दूसरा नहीं है। सबसे पहले मानवता ने यहीं जन्म लिया। भारत भूमि, पुण्यभूमि के रूप में प्रसिद्ध है, यहाँ के निवासी आर्य अर्थात् श्रेष्ठ कहलाते हैं। भारतवासी ही विद्या, कला-कौशल के प्रथम आचार्य रहे हैं। हम उन्हीं महान ऋषि-मुनियों और आचार्यों की संतान हैं। यद्यपि आज हमारी दुरावस्था है, फिर भी हमारे देश के प्रतीक आज भी स्थान-स्थान पर मिल जाते हैं।

भारतवर्ष में सांसारिक बंधनों को काटने वाली, कल्याणकारी शान्ति का निवास हमेशा से रहा है। यहाँ बाहरी शान्ति भी थी और आन्तरिक शान्ति भी थी। यहाँ पर शेरनियाँ हिरणों के साथ मिल-जुल कर रह सकती थीं अर्थात् यह देश तपोवन की तरह था। जहाँ पशु भी अपना मूल हिंसा भाव त्याग कर एक-दूसरे से मिल-जुल कर रहते थे। इस धरती पर ऐसे ऋषि थे जो अलौकिक, उच्चभावों से प्रेरित होकर जीवन जीते थे, पूजा-पाठ करते थे। हवन-यज्ञ करते हुए आहुतियाँ डालते थे। ऐसे ही महान् ऋषि हमारे पूर्वज थे, उन्हीं से हमारा जन्म हुआ था।

**हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,**
**आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।**
**यद्यपि हमें इतिहास अपना प्राप्त पूरा है नहीं,**
**हम कौन थे, इस ज्ञान को, फिर भी अधूरा है नहीं॥**

**शब्दार्थ- यद्यपि** = हालांकि । **अधूरा** = आधा ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत गद्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी कविता की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त'** विरचित काव्य **'भारत-भारती'** से लिया गया है। भारत-भारती में भारत के स्वर्णिम अतीत का गुणगान है, वर्तमान में हुए पतन की निन्दा है तथा भविष्य के लिए दिशा-निर्देश और प्रभु से प्रार्थना है। अतीत खण्ड में गुप्त जी भारतीयों को अपनी दशा पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हुए लिखते हैं कि-

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है, हे भारतवासियो! आओ हम मिलकर विचार करें कि हम क्या थे अर्थात् हमारा अतीत कैसा था, हमारे पूर्वज कैसे थे और आज हमारी हालत क्या हो गई है। आने वाले समय में हमारी दशा क्या होगी या हो सकती है, आज हमें इस पर विचार करना है। आज समय आ गया है कि हम शान्त मन से अपने विगत, वर्तमान और भविष्य पर विचार करें और अपनी सारी समस्याओं का समाधान खोजें। यह ठीक है कि हमें अभी तक हमारा पूरा इतिहास ज्ञात नहीं है अर्थात् भारतीय इतिहास की अनेक बातें समय के साथ लुप्त हो गई हैं। यह बात सत्य है कि हमारे पास अपने पूर्वजों का पूरा इतिहास अभी भी मौजूद नहीं है, जिससे हमारी पहचान स्पष्ट होती है। परन्तु फिर भी इतनी सामग्री अवश्य है कि हम अपने को पहचान सकें।

**विशेष-**

1. भारतीयों को अपने गौरवमय अतीत, पतनशील वर्तमान एवं अंधकारमय भविष्य पर विचार करने की प्रेरणा दी गई है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सरल, सार्थक एवं अभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं प्रश्न अलंकारों का प्रयोग है।

**भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य-लीला स्थल कहाँ ?**
**फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।**
**संपूर्ण देशों में अधिक किस देश का उत्कर्ष है।**
**उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥**

**शब्दार्थ**- **भू-लोक** = पृथ्वी। **प्रकृति** = कुदरत। **लीला-स्थल** = क्रीड़ा स्थल, खेल का स्थान। **गिरि** = पहाड़। **उत्कर्ष** = उन्नति।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी कविता की पाठ्य-पुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विरचित काव्य **'भारत-भारती'** से अवतरित है। यहाँ कवि ने भारत की प्राकृतिक शोभा और स्वर्णिम अतीत का गुणगान किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि प्रश्न करता है कि इस धरती को गौरव दिलाने वाला, इस धरती की शोभा बढ़ाने वाला देश कौन सा है? जहाँ प्रकृति ने अपने सौन्दर्य को बिखेरा है, जहाँ प्रकृति आनन्दपूर्वक खेलती है। वह देश कौन-सा है? जिस धरती पर हिमालय जैसा मनोरम पर्वत फैला है और जहाँ गंगा जैसी नदी बहती है, वह देश कौन सा है? संसार में सभी देशों से अधिक जिस देश ने प्रगति की है वह देश कौन सा है? अंत में कवि इन सभी प्रश्नों का एक साथ उत्तर देते हुए कहता है कि वह धरती ऋषि-भूमि भारतवर्ष ही है। कवि के कहने का भाव यह है कि भारत भूमि ही संसार विश्व में सबसे सुन्दर है।

**विशेष**-

1. देश के कण-कण के प्रति अपनत्व का वर्णन हुआ है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सरल, सार्थक एवं अभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं प्रश्न अलंकारों का प्रयोग है।

**हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,**
**ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?**
**भगवान् की भव-भूतियों का यह प्रथम भंडार है,**
**विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।।**

**शब्दार्थ**- **वृद्ध** = बूढ़ा, पुराना। **सिरमौर** = सिर का मुकुट। **भव-भूतियों** = सम्पदाओं। **विधि** = ब्रह्म, ईश्वर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी कविता की पाठ्य-पुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विरचित काव्य **'भारत-भारती'** से अवतरित है। इन पंक्तियों में भारत की प्राचीन महानता का गुणगान किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि जोर देकर कहता है कि प्राचीन बूढ़ा भारत ही संसार का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र है। संसार में ऐसा अन्य कोई देश नहीं है, जिसकी सभ्यता और संस्कृति भारत के समान प्राचीन हो। भगवान ने सर्वप्रथम सारी सम्पदाएँ इसी धरती को दीं। मानव भी सबसे पहले यहीं पैदा हुआ। भगवान ने मानव सृष्टि का प्रारम्भ भारत की प्राचीन धरती से ही किया था। कहने का भाव यह है कि यह देश मानव-सृष्टि के समान प्राचीन है।

**विशेष**-

1. भारत की प्राचीनता के माध्यम से उसकी श्रेष्ठता स्थापित की गई है और भारत भूमि को सृष्टि का आदि स्थान स्वीकार किया गया है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सरल, सार्थक एवं अभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं प्रश्न अलंकारों का प्रयोग है।

**यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य है,**
**विद्या, कलाकौशल्य सबके जो प्रथम आचार्य है।**
**संतान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े**
**पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े ॥**

**शब्दार्थ-पुण्यभूमि** = पवित्र भूमि, पुनीत कार्य करने वालों को भूमि, जिस धरती पर सर्वाधिक पुण्य हुए हों। **कला-कौशल्य** = कला-कौशल। **अधोगति** = नीचे गिरना, पतन होना।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी कविता की पाठ्य-पुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि **मैथिलीशरण गुप्त** विरचित काव्य **'भारत-भारती'** से अवतरित है। इस पद्यांश में भारत का गुणगान हुआ है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि भारत भूमि संसार भर में पुण्यभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ पर हमेशा पवित्र कार्य होते आए हैं। इस धरती के निवासियों को आर्य कहा जाता है। आर्य का अर्थ ही है श्रेष्ठ। विद्याओं और कलाओं में सबसे पहले कुशलता प्राप्त कर आचार्य बनने वाले भारतीय ही रहे हैं। अर्थात् प्राचीन काल से ही भारत ज्ञान-विज्ञान में सर्वोपरि रहा है। हम ऐसे महान् विद्वान पूर्वजों की संतान हैं और आज बुरी दशा में पहुँच गए हैं। हमारा पतन हुआ है। हमारे पूर्वजों की महानता के चिह्न, खण्डहर आज भी विद्यमान हैं, आज भी हम उनसे प्रेरणा ले सकते हैं।

**विशेष-**

1. भारत को पुण्य भूमि एवं कला-कौशल की जननी कहा गया है। भारत को विश्व गुरु के रूप में भी जाना जाता है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सरल, सार्थक एवं अभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं प्रश्न अलंकारों का प्रयोग है।

**शुभ शांतिमय शोभा जहाँ भव-बंधनों को खोलती।**
**हिल-मिल मृगों से खेल करती सिंहनी थी डोलती।**
**स्वर्गीय भावों से भरे ऋषि होम करते थे जहाँ**
**उन ऋषियों से ही हमारा था हुआ उद्भव यहाँ।।**

**शब्दार्थ-भव-बंधन** = संसार के बंधन। **मृगों** = हिरणों। **होम** = यज्ञ। **उद्भव** = जन्म ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी कविता की पाठ्य-पुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विरचित काव्य **'भारत-भारती'** से अवतरित है। इन पंक्तियों में भारत के सुनहरे अतीत का चित्रण हुआ है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि भारत की प्राकृतिक सुन्दरता अद्भुत थी। यहाँ की कल्याणकारी और शान्तिदायक प्राकृतिक सुन्दरता मनुष्य को सांसारिक बंधनों से मुक्त कर देती थी। अर्थात् यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य ऐसा अलौकिक था कि इसे देखकर हृदय की सारी तुच्छता और संकीर्णता नष्ट हो जाया करती थी। यहाँ पर पशु भी अपना सहज बैर-भाव भुलाकर मिलकर तपोवनों में रहते थे। सिंहनियाँ, हिरणों के साथ शान्तिपूर्वक विचरण करती थीं। उनके साथ खेलती थीं। यहाँ पर स्वर्गीय भावों से परिपूर्ण ऋषिगण प्रतिदिन यज्ञ किया करते थे। उन्हीं महान् ऋषियों से हमारा जन्म हुआ है, वे ही हमारे पूर्वज थे।

**विशेष-**

1. भारत के स्वर्णिम अतीत और पूर्वजों का गुणगान किया गया है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सरल, सार्थक एवं अभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग है।

**● मातृभूमि ( कविता ) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार- 'मातृभूमि'** मैथिलीशरण गुप्त जी की एक प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण कविता है। इस कविता में कवि ने भारत-भूमि, जो उसकी मातृभूमि है, के प्रति अपना उत्कट प्रेम प्रकट किया है। कविता का सार इस प्रकार है-

भारत के हरे-भरे वस्त्रों पर नीला आकाश शोभा देता है। सूर्य और चन्द्रमा इसके दो मुकुट हैं और समुद्र इसकी करधनी है। नदियाँ इसके हृदय में बह रही प्रेम की धारा और सितारे इसका शृंगार हैं। चहचहाते हुए पक्षी इसका यशोगान करने वाले भाट हैं और शेषनाग का फन भारतमाता का सिंहासन है। आकाश से बादल बूँदें बरसा कर भारतमाता का अभिषेक करते हैं, पूजन करते हैं, कवि भारत के इस रूप पर मुग्ध है और इसे सचमुच प्रभु की मूर्ति मानता है।

कवि भारतमाता के एहसानों को स्वीकार करता हुआ कहता है कि भारतमाता की धूल में लोट-लोटकर हम बड़े हुए है। हमने वहीं घुटनों के बल चलना सीखा है और परमहंस के समान हमने यहाँ जन्म पाकर सभी सुखों को भोगा है। इसी के कारण हम पूल से भरे हीरे कहलाए हैं। भाव यह है कि हमारा जीवन इसी के कारण सुखी एवं श्रेष्ठ बना है। ऐसी भारत भूमि जिसकी गोद में खेलकर हम बड़े हुए, उसे देखकर हम आनन्दित क्यों न हों। कवि, भारतमाता के प्रति कृतज्ञता जताते हुए कहता है कि हमने तुमसे ही समस्त सुख प्राप्त किए और उनका भोग किया है। हे भारतमाता! हम तुम्हारे उपकारों का बदला कभी न चुका नहीं पाएँगे। यह शरीर, तुम्हारी ही मिट्टी से बना है। मर कर भी हम तुम्हीं से मिल जाएँगे।

हे भारतमाता! तुम्हारा निर्मल जल अमृत के समान उत्तम है। शीतल, मंद और सुंगधित वायु सभी का मन मोह लेती है। सभी की थकावट दूर कर देती है। भारत में क्रम से छह ऋतुएँ आती हैं। हरियाली यहाँ पर मखमल की तरह सारी धरती पर छाई रहती है। रात्रि का चन्द्रमा इस धरती पर अमृत की वर्षा करता है। है भारत माता! दिन में सूर्य तुम्हारे ऊपर से अंधकार को मिटाता है।

कवि अपने पूर्वजों को याद करता हुआ कहता है कि जिस मिट्टी ने हमारे यशस्वी पूर्वजों को जन्म दिया है, उस मिट्टी से हे प्रभो। हमें कभी भी दूर नहीं करना। जब कभी हमारा मन विचलित होगा और शरीर कष्ट में होगा तो हम अपने तन-मन की शान्ति के लिए यहीं धरती पर लोट लगाएँगे, इसी पर लेटकर शान्ति प्राप्त करेंगे। भारतमाता की मिट्टी में मिलते समय हमें मौत से भी भय नहीं लगेगा। जब हम सभी उस मातृभूमि की धूल से लिपट जाएँगे और इस प्रकार मृत्यु को पाकर हम संसार के सारे बन्धनों से मुक्त हो जाएँगे।

**नीलांबर परिधान हरित पट पर सुन्दर हैं,**
**सूर्य-चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर हैं,**
**नदियों प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं,**
**बंदीजन खग-वृंद, शेषफन सिंहासन हैं,**
**करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।**
**हे मातृभूमि, तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की ॥**

**शब्दार्थ-नीलाम्बर** = नीला आकाश। **परिधान** = पहनावा। **हरित** = हरे। **पट** = वस्त्र, अंचल। **युग** = दो। **मेखला** = करधनी, कमरपट्टा। **रत्नाकर** = समुद्र। **मंडन** = श्रृंगार। **बंदीजन** = भाट, प्रशंसा गायक। **खग वृंद** = पक्षी समूह। **अभिषेक** = पवित्र जल से सिंचन। **बलिहारी** = बलि जाता हूँ। **सर्वेश** = प्रभु, ईश्वर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'मातृभूमि'** से अवतरित है। इन कविता में कवि ने अपनी मातृभूमि की विभिन्न प्रकार से प्रशंसा करते हुए वंदना की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि भारत भूमि अत्यंत सुन्दर है। नीला आकाश भारत माता का परिध ान है। उस पर हरियाली की चुनरी भारत माता ने ओढ़ रखी है। सूर्य और चन्द्रमा भारत माता के माथे पर रखे जाने वाले दो मुकुट हैं तथा उसकी कमर में बंधी करधनी के रूप में समुद्र को देखा जा सकता है। भारत माता के हृदय में बहने वाला प्रेम का स्रोत भारत की नदियों के बहाव के रूप में देखा जा सकता है तथा धरती पर खिले फूले और आकाश में बिखरे तारे माता का श्रृंगार करते हैं। सभी पक्षी भारत माता का गुणगान करने वाले भाट हैं और शेषनाग का विशाल फन भारत माता का सिंहासन है।

बादल भारत माता का अभिसिंचन करते हैं तथा अपने जल से उसका पूजन करते हैं। कवि कहता है कि मैं भारत माता के इस सुंदर रूप पर मुग्ध हूँ, बलिहारी जाता हूँ। हे भारत माता। तू सचमुच ही ईश्वर की मूर्ति है।

**विशेष**-

1. भारत भूमि को भारत माता के रूप में चित्रित कर कवि ने सुन्दर सांगरूपक बांधा है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली की प्रधान खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. छप्पय छंद का प्रयोग है।
6. अनुप्रास, रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।

**जिसकी रज में लोट-लोटकर बड़े हुए हैं,**
**घुटनों के बल सरक-सरककर खड़े हुए हैं,**
**परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए,**
**जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए,**
**हम खेले-कूदे हर्षयुत जिसकी प्यारी गोद में।**
**हे मातृभूमि तुझको निरख मग्न क्यों न हों मोद में?**

**शब्दार्थ-रज** = धूल। **परमहंस** = श्रेष्ठतम संन्यासी। **हर्षयुक्त** = प्रसन्नता से भरपूर। **निरख** = देखकर। **मोद** = प्रसन्नता ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'मातृभूमि'** से अवतरित है। इन कविता में कवि ने अपनी मातृभूमि की विभिन्न प्रकार से प्रशंसा करते हुए वंदना की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जिस भारत भूमि की धूल में लोट-लोटकर हम बड़े हुए हैं अर्थात् जिस घरती पर हमारा बचपन बीता है, जिस धरती पर हमने घुटनों के बल चलना सीखा है, जिस धरती पर अपना बचपन बिताते हुए हमने पहुँच हुए साधुओं जैसा परमानन्द प्राप्त किया है, जिस धरती से जुड़े होने के कारण हमें ध ूल भरे हीरे कहा गया है अर्थात् हमारा जीवन मूल्यवान माना गया है, जिस धरती की गोद में हम बचपन से ही प्रसन्नतापूर्वक खेलते-कूदते रहे हैं, ऐसी पवित्र धरती को देखकर हम प्रसन्नता में कैसे न डूब जाएँ। कहने का भाव यह है कि अपनी जन्मभूमि को देखकर आनन्द में डूब जाना स्वाभाविक ही है।

**विशेष-**

1. भारत भूमि का वंदन किया गया है। धरती से बचपन की यादें जुड़ी रहती हैं जो अत्यधिक प्यारी होती हैं।
2. भाषा सरल, तत्सम शब्दावली की प्रधान खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. छप्पय छंद का प्रयोग है।
6. अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, उपमा एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।

**पाकर तुमझे सभी सुखों को हमने भोगा,**
**तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?**
**तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,**
**बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है,**
**फिर अन्त समय तू ही इसे अचल देख अपनाएगी।**
**हे मातृभूमि, यह अन्त में तुझमें ही मिल जाएगी।**

**शब्दार्थ- प्रत्युपकार** = उपकार का बदला चुकाना। **सुरस सार** = अच्छे रस का सार, सत्व, अमृत। **सनी** = लिपटी, डूबी।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियां **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'मातृभूमि'** से अवतरित है। इन कविता में कवि ने अपनी मातृभूमि की विभिन्न प्रकार से प्रशंसा करते हुए वंदना की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे भारत माता! हमने अपने समस्त सुख तुमसे ही प्राप्त किए और तुझ पर रहते हुए ही उनका उपभोग किया है। क्या हम तुम्हारे इस एहसान का बदला कभी चुका पाएँगे? अर्थात् जन्मभूमि के उपकार का बदला कोई नहीं चुका सकता। हमारा यह शरीर तुम्हारा ही है और यह तुम्हारी मिट्टी से ही बना है। हमें तो बस इतना ही

कहना है कि हमारा शरीर तेरे ही रस युक्त के सार से ही बना है। हे भारत माता! तुम्हारे बिना तो हमारी अन्तिम गति भी नहीं होगी। जब यह शरीर निर्जीव और निश्चल हो जाएगा अर्थात् हम मर जाएँगे तो यह शरीर तुम्हारी ही मिट्टी में मिल जाएगा। अर्थात् अन्तिम आश्रय में तुम्हारी मिट्टी में ही मिलेगा।

**विशेष-**

1. अपनी मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कवि ने स्पष्ट किया है कि हमारा शरीर उसी की मिट्टी से बना है और इसी में मिल जाएगा।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. छप्पय छंद का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं प्रश्न अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,**
**शीतल मंद सुंगध पवन हर लेता श्रम है,**
**षटऋतुओं का विविध दृश्य युत अद्भुत क्रम है,**

**हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है,**
**शुचि-सुधा सींचता रात में तुझे में चंद्रपकाश है।**
**हे मातृभूमि, दिन में तरणि करता तम का नाश है।**

**शब्दार्थ-निर्मल** = साफ, स्वच्छ। **नीर** = जल। **सम** = बराबर। **मन्द** = धीमा। **श्रम** = थकावट। **षट्ऋतुओं** = छह ऋतुओं। **शुचि** = पवित्र। **सुधा** = अमृत। **तरणि** = सूर्य। **तम** = अन्धकार।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'मातृभूमि'** से अवतरित है। इन कविता में कवि ने अपनी मातृभूमि की विभिन्न प्रकार से प्रशंसा करते हुए वंदना की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे भारत माता! तुम्हारा स्वच्छ जल अमृत के समान उत्तम है। तुम्हारी शीतल, मन्द और सुंगधित वायु सबकी थकावट को हर लेती है। छह ऋतुएँ क्रम से इस देश में आती हैं और अपना अद्भुत सौंदर्य बिखेर कर चली जाती हैं। इस धरती पर फैली हरी घास, हरी मखमल से किसी भी प्रकार कम नहीं है। हे भारत माता! रात को चन्द्रमा की चांदनी इस धरती को अमृत से सींचती है अर्थात् इस धरती को नवजीवन प्रदान करती है। तो दिन में सूर्य का प्रकाश तुम्हारे अन्धकार को दूर करता है।

**विशेष**-

1. कवि द्वारा भारत माता के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण करते हुए अपने देश-प्रेम एवं देशभक्ति का परिचय दिया गया है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. छप्पय छंद का प्रयोग है।
6. अनुप्रास, उपमा, मानवीकरण, स्वभावोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे,**
**उससे हे भगवान् कभी हम रहे न न्यारे,**
**लोट-लोटकर वही हृदय को शांत करेंगे,**
**उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे,**
**उस मातृभूमि की धूल में जब पूरे सो जाएँगे,**
**होकर भव-बंधन-मुक्त हम आत्म-रूप बन जाएँगे।।**

**शब्दार्थ-न्यारे** = अलग-थलग।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'मातृभूमि'** से अवतरित है। इन कविता में कवि ने अपनी मातृभूमि की विभिन्न प्रकार से प्रशंसा करते हुए वंदना की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जिस धरती ने हमें हमारे पूर्वज दिए अर्थात् जो घरती हमारे पूर्वजों की भी जन्म भूमि रही है उस धरती से भगवान हमें कभी भी अलग न करे। हम इसी धरती पर लोट-लोटकर अपनी पीड़ा को शान्त करेंगे। यदि मरकर इस धरती की मिट्टी में मिलना पड़ेगा तो भी हम प्रसन्नतापूर्वक इसमें मिलने को तैयार रहेंगे। जब हम पूरी तरह इस मिट्टी में मिल जाएँगे अर्थात् मर जाएँगे, तो संसार के सारे बन्धनों से मुक्त होकर केवल आत्मा के रूप में ही रह जाएँगे।

**विशेष**-

1. कवि द्वारा धरती का गुणगान करते हुए अपने देश-प्रेम का परिचय दिया गया है।
2. भाषा सरल, तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. छप्पय छंद का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**● आशा ( कविता ) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार**- 'आशा' मैथिलीशरण जी की एक महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है। इस कविता के माध्यम से उन्होंने निराशा से उबरकर आशामय जीवन जीने का संदेश दिया है। जिस पूर्व में हम रहते हैं, वहाँ परिश्रम का बिगुल बजना चाहिए ताकि हमारी उन्नति का जो सूर्य डूब गया था, वह पुनः उदित हो सके। सूर्य का उदित होना हमें आशा बंधाता है। जिन जातियों का विगत अंधकारमय रहा है, वे उसके गीत क्या गाएँ, हम गा सकते हैं क्योंकि हमारा अत्तीत स्वर्णिम था और आज भी हमें प्रेरणा दे सकता है। हमारा अतीत हमें जगा सकता है, रास्ता दिखा सकता है। हम यथार्थ जीवन की खोज उसी के प्रकाश में कर सकते हैं। हम अपने प्रतिमान आप बनाते हैं, अपने लिए आदर्श स्वयं निध ारित करते हैं, हमें किसी की नकल करने की आवश्यकता नहीं है। कवि अपने देशवासियों को वर्तमान से उदास न होने की बात कहता है क्योंकि हमारा भाग्य अच्छा है, हम भाग्यशाली लोग रहे हैं और भविष्य में पुनः हमारा भाग्योदय होगा। अभी भी हमारे भीतर की आग बुझी नहीं है। सूर्य अभी भी पूर्व में ही उदित होता है।

कवि के अनुसार अनेक देश पैदा हुए और नष्ट हो गए परंतु हम हजारों वर्षों से आज भी जीवित हैं। हमने यह मंत्र माना है कि गर्व से जियो और शान से मृत्यु का वरण करो। हमें अपने महान् वंश का मान बनाए रखना है, इसी से हम जीतेंगे। हमारे महान पूर्वजों की परंपरा की रक्षा का भार हमारे कन्धों पर ही है। जिन लोगों ने कला का प्रचार किया उन्हीं के यश को आज आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हमारी है। भारत चित्रकला, मूर्तिकला, कविता और संगीत आदि में अपने आदर्श स्थापित करता आया है। हमें इस देश की जाति-प्रथा और वंश-परंपराओं पर अभिमान है। कितने ही ऋषि-मुनियों ने हवन-यज्ञ करके, आहुतियाँ देकर, त्याग करके इन वंशों की स्थापना की थी। आर्य जाति की पहचान यही रही है कि आज भारतवर्ष को त्याग, तपस्या और बलिदान के लिए पहचाना जाता रहा है। कवि कहता है कि हमारा अतीत अद्वितीय रहा है। उसकी समता उस समय का कोई राष्ट्र कर नहीं सकता। आज भी अतीत की झलक हमारे जीवन और कला जगत में देखी जा सकती है। कवि देशवासियों का आह्वान करता हुआ कहता है कि हमें अपने वर्तमान को संभालना चाहिए ताकि हमारा भविष्य सुरक्षित रह सके।

**बजे आज परिश्रम का तूर्य,**
**डूबा जहाँ पूर्व का सूर्य;**
**किन्तु उदय की आशा नित्य**
**दिखला रहा हमें आदित्य।**

**शब्दार्थ-तूर्य** = बिगुल। **आदित्य** = सूर्य।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इन कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पक्तियों में कवि कहता है कि जिस पूर्व दिशा में सूर्य को उदित होना चाहिए था वहीं आज सूर्य डूबा है। कहने का भाव यह है कि पूर्व के देश अपने आलस्य के दौरान दीन-हीन हुए हैं और उनका भाग्य रूपी सूर्य

डूब गया है। कवि आशा करता है कि एक बार फिर पूर्व में परिश्रम का बिगुल बजेगा और एक बार पुनः पूर्व का भाग्योदय होगा। आज हम गले ही निर्धनता और अज्ञानता के अन्धकार में हैं परंतु हमारे क्षितिज पर पूर्व में सूर्योदय हो रहा है, इससे हमारी आशा बंधती है। सूर्य का आगमन हमें आशावान बना रहा है।

**विशेष**–

1. कवि ने परिश्रम के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग है।

**जिनका कुछ भी न था अतीत,**
**गावें क्या वे उसके गीत ?**
**भूले हम क्यों उसकी याद,**
**जिसमें है अपना आह्वाद।**

**शब्दार्थ–अतीत** = विगत, इतिहास। आह्ाद = प्रसन्नता।

**प्रसंग**–प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जिन राष्ट्रों के पास गौरवशाली इतिहास नहीं है अर्थात् जिनका इतिहास बहुत छोटा और घटिया है ये उसका गुणगान कैसे कर सकते हैं। यदि ऐसे लोग अपना इतिहास भूला देते हैं तो यह उचित ही है। कहने का भाव यह है कि यह भारतवासियों का ही सौभाग्य है कि उनका इतिहास अत्यन्त गौरवशाली और श्रेष्ठ है। हम वे गौरव के साथ उसका गुणगान कर सकते हैं। कवि कहना चाहता है कि भारतवर्ष का इतिहास बड़ा आनन्ददायी है, अतः हमें अपने इतिहास को नहीं भूलना चाहिए।

**विशेष**–

1. अतीत के गौरवगान द्वारा देशभक्ति का भाव स्पष्ट किया है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. प्रश्न अलंकार का प्रयोग है।

**वहीं करेगा हमें सचेत,**
**और वही देगा संकेत।**
**दे सकता है वही प्रबोध।**
**और हमें जीवन का शोष।**

**शब्दार्थ–सचेत** = जागृत, जगाना। **संकेत** = इशारा, दिशा बोध। **प्रबोध** = जगाना, ज्ञान देना। **शोध** = खोज।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है हमारा अतीत ही हमें सावधान करेगा अर्थात् इतिहास का चिन्तन करके ही हम पुरानी गलतियों से बच सकेंगे। हमारा इतिहास ही हमें सही मार्ग दिखाएगा, ठीक दिशा का निर्देश देगा। हमारा इतिहास ही हमें जगा सकता है, हमारे विवेक को जाग्रत कर सकता है, हमें कार्य के लिए प्रेरित कर सकता है। हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है, सार क्या है वह भी हमारा इतिहास ही हमें समझाएगा।

**विशेष**-

1. अतीत के गौरवगान के माध्यम से देशभक्ति का भाव स्पष्ट किया है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**जिनके पीछे है कुछ सार**
**उनके आगे भी विस्तार।**
**आप बना कर अपनी लीक,**
**बढ़ सकते हैं वे निर्भीक।**

**शब्दार्थ-सार** = महत्त्वपूर्ण बात, तत्त्व। **लीक** = परम्परा। **निर्भीक** = निडर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है जिन जातियों अथवा राष्ट्रों का इतिहास महत्त्वपूर्ण है अर्थात् अतीत में जिन्होंने ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल और अध्यात्म में उपलब्धियों अर्जित की हैं, नाम कमाया है उन्हीं से आशा की जा सकती है कि भविष्य में वही राष्ट्र विस्तार पाएँगे, अपने गुणों को फैलाएँगे। ऐसे राष्ट्र अपनी परपराएँ बनाते हैं, अपने लिए आदर्श अथवा लक्ष्य आप निर्धारित करते हैं। हम भी अपने इतिहास के दिशा निर्देशन में अतीत के प्रकाश में निडर होकर आगे बढ़ सकते हैं।

**विशेष**-

1. अतीत का गान किया गया है तथा आशा की गई है कि भारत को इससे दिशा-निर्देश मिलेगा।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**न हो, बंधुगण, न हो निराश,**
**शून्य नहीं निज भाग्याकाश।**
**अब भी शीतल नहीं कृशानु,**
**उदित पूर्व ही में है भानु।**

**शब्दार्थ-बन्धुगन** = बन्धुओं, भाइयों। **शून्य** = खाली। **भाग्याकाश** = भाग्य रूपी आकाश। **कृशानु** = आग। **भानु** = सूर्य।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता 'आशा' से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है हे मेरे बन्धुओं, भाइयो! आपको निराश होने की आवश्यकता नहीं। पराधीनता के इस अन्धकार में निराश होना आवश्यक नहीं है। हमारा भाग्यकाश बिल्कुल खाली नहीं है अर्थात् हम अभागे नहीं हैं। अभी भी आग ठण्डी नहीं हुई है, अभी भी हमारे दिलों में उत्साह और उमंग है। देश-प्रेम की आग हमें आज भी ताकत देती है। आज भी सूर्य पूर्व में उदित होता है। कहने का भाव यह है कि अभी भी विश्व ज्ञान के प्रकाश के लिए पूर्व की ओर ही देखता है।

**विशेष**-

1. भारतवासियों को निराश न होने की प्रेरणा दी गई है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. रूपक अलंकार का प्रयोग है।

**बहुत राष्ट्र हो बीते आज,**
**तब भी हो तुम जीते आज,**
**किन्तु जियो तो गौरवयुक्त,**
**और मरो तो होकर मुक्त।**

**शब्दार्थ-गौरवयुक्त** = अभिमान के साथ। **मुक्त** = आजाद।

**प्रसंग**- प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि आज तक इस धरती पर अनेक राष्ट्र स्थापित होकर नष्ट हो चुके हैं। अर्थात् अनेक राष्ट्र बने और मिट गए परन्तु हम आज भी बने हुए हैं, जीवित हैं। कहने का भाव यही है कि भारत एक अत्यन्त प्राचीन राष्ट्र है जो समय के थपेड़ों को सहता हुआ आज तक जीवित है। हमने अपने इतिहास से यही सीखा है कि यदि जीना है तो स्वाभिमान के साथ जीना है और यदि मरना है तो मुक्ति को प्राप्त करना है।

**विशेष**-

1. अपने देश के स्वर्णिम अतीत का चित्रण किया गया है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**रक्खो अपने कुल का मान**
**वह है कैसा मधुर-महान**
**पी लो वह पीयूष पुनीत,**
**होगी जीवन-रण में जीत।**

**शब्दार्थ-मान** = इज्जत। **मधुर** = मीठा। **पुनीत** = पवित्र।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हमें अपने खानदान का मान रखना चाहिए। उसकी इज्जत का ध्यान रखना चाहिए। हमारे खानदान का इतिहास बहुत मधुर और महान् रहा है। हमें अपने खानदान के गौरव का पवित्र अमृत पीकर अमर होना है। जब हम में वंश का अभिमान जागेगा, तभी हमारी जीत होगी।

**विशेष**-

1. भारतवासियों को अपने खानदान के गौरव उसके मान-सम्मान पर गर्व करने की प्रेरणा दी गई है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग है।

**तुम पर है उनका कुल-भार**
**किया जिन्होंने कला-प्रचार**
**चित्र, शिल्प, कविता, संगीत,**
**जिन्हें आप ही वे उपनीत।**

**शब्दार्थ-उपनीत** = निकट आए।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे मेरे देशवसियो! आज अपने पूर्वजों का मान बढ़ाने की जिम्मेदारी आप सब पर है। जिन पूर्वजों ने कलाओं का प्रचार किया था, उनकी यशोगाथा को तुम आगे बढ़ाओ। हमारे पूर्वज महान् थे, क्योंकि चित्रकला, शिल्प और कविता, संगीत आदि सभी कलाएँ स्वयं ही उनके निकट चली आती थीं। कहने का भाव यह है कि हमारे पूर्वज कला-कौशल में सहज ही सम्पन्न थे।

**विशेष**-

1. भारतवासियों को अपने पूर्वजों द्वारा कला के क्षेत्र में दिए गए योगदान को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वया उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**होने पर कितने हुत-गोत्र,**
**बने तुम्हारे हैं, कुल-गोत्र,**
**आर्य-वंश की है क्या बान?**
**त्याग, तपस्याएँ, बलिदान।**

**शब्दार्थ-हुत** = समिधा, आहुति। **होत्र** =यज्ञ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि अनगिणत यज्ञों में समिधाएँ डालने के पश्चात, मन्त्रोच्चारणों के बाद तुम्हारे गोत्र बने हैं अर्थात् तुम्हारे गोत्रों का निर्माण हुआ है। आमतौर पर वंश परंपरा किसी महान् ऋषि-मुनि से जुड़ी रहती है, जिसने बहुत जप-तप किया होता है। आर्य लोगों का स्वभाव क्या है, प्रतिज्ञा क्या है? आर्य सदा से ही त्याग, तपस्या एवं बलिदान को महत्त्व देते रहे हैं।

**विशेष**-

1. पूर्वजों का यशोगान किया गया है, और उनकी उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने के लिए उपदेश दिया गया है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं प्रश्न-अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**रहा अतीत तुम्हारा आप,**
**जिसका अब भी प्रकट प्रताप।**
**कर लो वर्तमान को साथ**
**है भविष्य तो अपने हाथ।**

**शब्दार्थ-अतीत** = विगत समय, इतिहास। **प्रताप** = प्रभाव, गौरव।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'आशा'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को निराशा का त्याग कर आशावान बनने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे मेरे देशवासियो! तुम्हारा इतिहास अनूठा रहा है। तुम्हारा इतिहास केवल तुम्हारा ही रहा है अर्थात् तुम्हारे जैसा गौरवशाली इतिहास अन्य किसी राष्ट्र का नहीं रहा है। आज भी तुम्हारे इतिहास का प्रभाव प्रकट रूप से देखा जा सकता है। समस्त संसार हमारे इतिहास की महानता को स्वीकार करता है। यदि तुम वर्तमान को अपने साथ कर लो अर्थात् वर्तमान में अपनी स्थिति सुधार लो तो भविष्य तो अपने आप तुम्हारे हाथ में आ जाएगा।

**विशेष**-

1. अपने देश के अतीत के प्रति कवि की यह दृष्टि उनके देशप्रेम की सूचक है।
2. भाषा सरल, सहज भावपूर्ण खड़ी बोली है।

3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**● संदेश ( कविता ) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार**– **'संदेश'** मैथिलीशरण गुप्त जी की एक महत्त्वपूर्ण चर्चित एवं संदेशपरक कविता है। इस कविता में कवि ने भारतीय संस्कृति में निहित संदेश पर प्रकाश डाला है। कवि भारतीय संस्कृति के सन्देश की चर्चा करता हुआ कहता है कि सारे संसार में भारतीय संस्कृति में नए प्राण फूंके हैं। समस्त संसार को इस धरती ने वेदों का अमर संगीत सुनाया है। भारतीयों ने ही तमस्त संसार में सभ्यता का प्रकाश फैलाया था और शास्त्र-पुराण का उपदेश देकर पूरे संसार का कल्याण किया था। भारत भूमि पर ही लोगों ने आत्मा में परमात्मा को देखना सीखा था और यहीं से यह आवाज विश्व में गूंजी कि **'मैं ही ब्रह्म हूँ, मेरे भीतर ही ब्रह्म का निवास है, अन्यत्र कहीं नहीं है।'** इसी से धरती पर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का विकास हुआ और यहीं से बुद्ध की करुणा का संदेश पूरे विश्व को मिला था। विश्व-बन्धुत्व और करुणा के सन्देश ने ही संसार में धर्म राज्य स्थापित किया, धर्म को बढ़ावा दिया है।

**प्राण-प्रतिष्ठा-सी सब ओर**
**की तुमने इससे उस छोर।**
**करके जगती का आह्वान**
**गाया अनुपम वैदिक गान।**

**शब्दार्थ-प्राण-प्रतिष्ठा** = प्राण डालना, जीवन देना। **छोर** = किनारा। **आह्वान** = पुकार। **अनुपम** = अद्वितीय।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'संदेश'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारत द्वारा संसार को दिए गए ज्ञान, कला, संस्कृति संबंधी योगदान की चर्चा की है।

**व्याख्या**-कवि इन पंक्तियों में अपने देशवासियों को संबोधित करते हुए कहता है, हे मेरे देशवासियो! तुमने सारे संसार में एक कोने से दूसरे कोने तक नवजीवन का संचार किया है। निर्जीव मनों में उत्साह भरकर, मुर्दो में प्राण फूँके हैं। अर्थात् भारत की भूमिका प्रेरणादायक रही है। तुमने ही सारे संसार का आह्वान किया है, संपूर्ण सृष्टि की बात सोची और अनुपम वेदों का गान किया है। अर्थात् वेदों में सारी सृष्टि के लिए मंगल-कामना की गई है जो अद्भुत है।

**विशेष**–

1. वैदिक सभ्यता के गुणगान द्वारा कवि ने अपना देश-प्रेम प्रकट किया है।
2. भाषा सरल, सहज व भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. प्रसाद गुण की सृष्टि हुई है।
4. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
5. संबोधन शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।

**देकर सबको प्रथम प्रकाश।**
**किया सभ्यता का सुविकास।**
**सुना सुना कर शास्त्र पुराण।**
**किया सदा सबका कल्याण!**

**शब्दार्थ-प्रकाश** = रोशनी। **सुविकास** = अच्छी तरह विकास। **कल्याण** = मंगल।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'संदेश'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारत द्वारा संसार को दिए गए ज्ञान, कला, संस्कृति संबंधी योगदान की चर्चा की है। **व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि विश्व में सबसे पहले वैदिक ऋषियों ने ही ज्ञान का प्रकाश फैलाया और सभ्यता का विकास किया अर्थात् प्राचीन काल से ही भारतवर्ष ज्ञान का प्रकाश फैलाकर विश्व-सभ्यता को विकसित करता रहा है। हमारे ऋषियों ने शास्त्रों और पुराणों का ज्ञान पूरी मानव जाति को सुना-सुनाकर सबका कल्याण किया है।

**विशेष**-

1. प्राचीन भारत का गुणगान और वैदिक सभ्यता का महत्त्व दर्शाया गया है।
2. भाषा सरल, सहज व भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. प्रसाद गुण की सृष्टि हुई है।
4. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
5. संबोधन शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश अलंकारों का प्रयोग है।

**उस विभु से जो सबमें व्याप्त**
**की तुमने तन्मयता प्राप्त।**
**सुना सृष्टि से सोहं नाद**
**सर्वोपरि सच्चा संवाद**

**शब्दार्थ-विभु** = ईश्वर। **व्याप्त** = वर्तमान, उपस्थित। **तन्मयता** = लग्न, किसी चीज में खो जाना। **सोहं** = मैं वही हूँ। **नाद** = आवाज, गूंज। **सर्वोपरि** = श्रेष्ठतम। **संवाद** = वार्तालाप।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'संदेश'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारत द्वारा संसार को दिए गए ज्ञान, कला, संस्कृति संबंधी योगदान की चर्चा की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि भारतवासियों को संबोधित करते हुए कहता है कि हे भारतीयो! जो ईश्वर अथवा ब्रह्म का अंश हम सबमें समाया है उसे खोजने और उसमें लीन होने का काम सबसे पहले तुम्हारे पूर्वजों ने ही किया था। सबसे पहले तुम्हारे पूर्वजों ने ही आध्यात्मिक तत्त्व की खोज, आत्मा-परमात्मा के सम्बन्धों पर विचार किया था। सृष्टि में **'मैं वही हूँ जो ब्रह्म है'** की आवाज सबसे पहले इसी धरती पर गूँजी थी। मानव को ईश्वर का अंश मानने का गौरवशाली विश्वास इसी घरा पर पनपा था। आत्मा और परमात्मा के बीच सही और सच्चा वार्तालाप इसी धरती पर वैदिक ज्ञान के रूप में आरम्भ हुआ था।

**विशेष**-

1. भारत की आध्यात्मिक क्षेत्र में उपलब्धियों पर विचार किया गया है।
2. भाषा सरल, सहज व भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. प्रसाद गुण की सृष्टि हुई है।
4. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
5. संबोधन शैली का प्रयोग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**विश्व-बन्धुता का बर्ताव,**
**और परम करुणा का भाव,**
**फैलाया तुमने सब ओर**
**बढ़ा विश्व धन-धर्म बटोर।**

**शब्दार्थ-विश्व-बन्धुता** = सारा विश्व हमारा अपना है, विश्व के सभी लोग भाई-भाई हैं। **करुणा** = दया। **परम** = सर्वोपरि, सर्वोच्च। **बटोर** = इकट्ठा करके।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विरचित कविता **'संदेश'** से अवतरित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने भारत द्वारा संसार को दिए गए ज्ञान, कला, संस्कृति संबंधी योगदान की चर्चा की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि भारतवासियों को संबोधित करता हुआ कहता है कि भारत के लोगों ने ही सबसे पहले सारी मानवता को ईश्वर की संतान माना और इस संबंध से सारे विश्व के प्राणियों को सहोदर या सगा-सम्बन्धी स्वीकार किया। भारत ने ही सबसे पहले बौद्ध धर्म की करुणा के रूप में अहिंसा और करुणा का सर्वोच्च रूप संसार के सामने रखा। सारा संसार धर्म-रूपी धन को संचित कर निरन्तर आगे बढ़ा है। विश्व में धार्मिक स्वभाव और 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भाव सबसे पहले भारत के ऋषियों ने ही संसार में फैलाया था।

**व्याख्या**-

1. भारत ने विश्व को करुणा, अहिंसा तथा विश्व बन्धुत्व महान् आदर्श दिए।
2. भाषा सरल, सहज व भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. प्रसाद गुण की सृष्टि हुई है।
4. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
5. संबोधन शैली का प्रयोग है।
6. रूपक अलंकार का प्रयोग है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न**

**प्रश्न**- भारत भारती ग्रंथ कितने भागों में विभक्त है?

**प्रश्न**- मातृभूमि कविता में किस तरह के भावों का चित्रण किया गया है ?

**प्रश्न**- गुप्त जी किस कविता में भारतवासियों को उनके गौरवशाली अतीत, महान पूर्वजों, उनकी कुल परंपराओं की याद दिलाते हैं ?

**प्रश्न** - संदेश कविता में किस प्रकार का संदेश गुप्त जी ने दिया है?

## 9.4 सारांश

'भारत-भारती' मैथिलीशरण गुप्त जी की एक प्रसिद्ध काव्य कृति है, जिसकी रचना 1912 ई. में हुई थी। यह कृति स्वदेश प्रेम को दर्शाते हुए भारतवर्ष की वर्तमान एवं भावी दुर्दशा से उबरने के लिए समाधान खोजने का एक सफल प्रयोग है। इसी कृति के कारण मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि कहलाए। यह ग्रंथ तीन-भागों में विभक्त है- अतीत खंड, वर्तमान खंड एवं भविष्यत् खंड। 'मातृभूमि' कविता देश-प्रेम के भावों से परिपूर्ण है। कविता में कवि ने भारतवर्ष के प्राकृतिक सौंदर्य का अद्‌भुत चित्रण किया गया है। भारतवर्ष की मिट्टी के महत्त्व एवं गरिमा पर प्रकाश डाला है। भारत भूमि को अन्न उपजा कर जीवनदान देने वाली तथा इसके जल को अमृत के समान उत्तम बनाया है। 'आशा' कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को पराधीनता के कारण उपजी निराशा को त्यागकर आशामय जीवन जीने

और अपने वर्तमान को अपने साथ करते हुए अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा दी है। 'संदेश' कविता में उन्होंने भारतवासियों की प्रशंसा करते हुए उन्हें संसार में ज्ञान की प्रतिष्ठा करने वाला बनाया है। कवि के अनुसार भारतवासियों ने ही सबको अपना शास्त्र ज्ञान देकर उनकी कल्याण की कामना की है। भारतवासियों ने ही सबसे पहले ईश्वर में तन्मयता प्राप्त की है। यही नहीं भारतवासियों ने ही सर्वप्रथम संचार में भाईचारे एवं करुणा के भावों का प्रसार किया है।

## 9.5 कठिन शब्दावली

**दुर्दशा** - दुर्गति

**जीवनदान** - माफी देना

**पराधीनता** - पराधीन होने की अवस्था

**तन्मयता** - तल्लीनता

**प्रतिष्ठा** - मान-मर्यादा

## 9.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न**

**उत्तर**- तीन भागों में।

**उत्तर**- देश-प्रेम के भावों का चित्रण।

**उत्तर**- आशा कविता में।

**उत्तर**- विश्व बंधुन्व एवं करुणा के भाव।

## 9.7. संदर्भित पुस्तकें

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
2. मैथिलीशरण गुप्त, भारत-भारती, लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. नंदकिशोर पांडे, मैथिलीशरण गुप्त विशेष अध्ययन, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

## 9.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. 'भारत-भारती' कविता में कवि द्वारा भारत के गौरवशाली इतिहास के अतीत, वर्तमान और भविष्यत का वर्णन किया है, स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न. 'मातृभूमि' कविता में कवि कैसे अपनी मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है? स्पष्ट कीजिए ?

प्रश्न. 'आशा' कविता में कवि ने भारतवासियों को उनके गौरवशाली अतीत, महान पूर्वजों की याद दिलाते हुए प्रेरित करता है कैसे? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न. 'संदेश' कविता में कवि समस्त देशवासियों को संदेश देना चाहता है कि कैसे सर्वप्रथम संसार में भाईचारे एवं करूणा के भावों का प्रसार किया है? स्पष्ट कीजिए।

*****

# इकाई-10
# जयशंकर प्रसाद : जीवन एवं साहित्य

**संरचना**


10.1 भूमिका

10.2 उद्देश्य

10.3 जयशंकर प्रसाद का जीवन और साहित्य

10.3.1 जीवन परिचय

10.3 2 साहित्यिक परिचय

स्वयं आकलन प्रश्न-1

10.4 भाषा शैली

स्वयं आकलन प्रश्न-2

105 सारांश

10.6 कठिन शब्दावली

10.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

10.8 संदर्भित पुस्तकें

10.9 सात्रिक प्रश्न


## 10.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं की व्याख्या की। प्रस्तुत इकाई में हम जयशंकर प्रसाद के जीवन और साहित्य का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनके जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय तथा भाषा शैली का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

## 10.2 उद्देश्य

इकाई दस का अध्ययन करने के पश्च्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ ?

2 जयशंकर प्रसाद की पारिवारिक पृष्ठभूमि कैसी थी ?

3. प्रसाद के प्रमुख नाटक कौन-कौन से है ?

4. प्रसाद की भाषा शैली किस प्रकार की थे ?

## 10.3 जयशंकर प्रसाद : जीवन एवं साहित्य

प्रत्येक साहित्यकार का कृतित्व उसके व्यक्तित्व से प्रभावित रहता है और उसका व्यक्तित्व अंश रूप में उसके द्वारा अभिव्यक्त होने वाली क्रियाओं प्रतिक्रियाओं में आभास पाता है। यद्यपि व्यक्ति का अधिकांश भाग अव्यक्त रहते हुए भी साहित्यकार को प्रेरित करता है। तथापि उसका अभिव्यक्त किया गया व्यक्तित्व उस रचनाकार की रचनाओं को समझने और उनका सर्वागीण अध्ययन करने में सहायक होता है। वस्तुतः व्यक्तित्व और कृतित्व का गहरा संबंध होता है। लेखक का व्यक्तित्व उसकी रचनाओं मे सर्वत्र व्याप्त रहता है।

## 10.3 जीवन परिचय

**व्यक्तित्व :** लेखक का व्यक्तित्व उसके साहित्य में नजर आता है और व्यक्तित्व का निर्माण उसके सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक और धार्मिक परिवेश में ही होता है। जिसके बीच रहकर वह बड़ा हुआ है। जीवन में घटित घटनाएँ साहित्य सृजन लिए प्रेरक होती है। इसके लिए जन्म, माता-पिता, परिवार, शिक्षा, विवाह, संतान, साहित्य सृजनारंभ, कृतित्व का परिचय आदि को विस्तार से जानना आवश्यक है। अंत प्रसाद जी के समग्र व्यक्तित्व की जानकारी प्रस्तुत है।

**जन्म :** हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म माघ शुक्ल दशमी विक्रमीय संवत् १९४६ में काशी के माहेश्वर कुल में बहुप्रतिष्ठित एवं सुसंपन्न परिवार में हुआ था। प्रसाद जी के पिताजी का नाम शिव रतन साहु और माताजी का नाम देवी प्रसाद साहु था। उनके भ्राता का नाम श्री शंभुराम था।

**परिवार :** प्रसाद जी सुंधनी साहु नाम से विख्यात समृद्ध परिवार में जन्मे थे। वह ऐश्वर्यवान पिता की प्रिय संतान होने के कारण परिवार में सब के आँखों के तारे थे। उनके पिताजी काशी के लब्ध प्रतिष्ठ नागरीक थे। पिताजी की उदारता और कलाप्रेम विख्यात था। प्रसादजी के पिता परम शैव भक्त थे। पुत्र प्राप्ति के लिए उन्होंने शिवजी की कठोर आराधना की थी। शंकर के प्रसाद से कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म हुआ था।

**शिक्षा :** प्रसाद को बचपन से ही लेखनी से खेलना अच्छा लगता था। उनकी साहित्यिक अभिरूचि में नजर आता है। प्रसाद का बचपन वैभव पूर्ण वातावरण में व्यतीत हुआ। प्रसाद के पिता उदार दानी थे। प्रसाद ने बचपन में विभिन्न रमणीय धार्मिक स्थलों की यात्रा की, जिसका प्रभाव उनके काव्य में नजर आता है। प्रसाद नौ वर्ष की आयु मे समस्या पूर्ति करने लगे थे।

**शिक्षा :** प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। विधिवत् शिक्षाभ्यास हेतू दस वर्ष की आयु में उन्हें काशी के स्थानीय क्वींस कालेज में भेजा गया। प्रसाद ने हिन्दी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं का अध्ययन घर पर ही किया। 'रस सिद्ध' उनके प्रधान गुरू थे। क्वींस कालेज में शिक्षा प्राप्त करके भी दीन बन्धु ब्रम्हचारी से इन्होने संस्कृत का अध्ययन किया। परिवारिक समस्या के कारण नियमित शिक्षा पाने में असमर्थ है। मोता-पिता और भाई के देहावसान से परिवार की जिम्मेदारी प्रसाद पर पड़ जाती है। सम्पत्ति कर्ज में चली जाती है।

कालेज की पढ़ाई छोड़ कर प्रसाद ने घर पर ही शिक्षा प्रारंभ की सगे-संबंधियों से भी उन्हे अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़ते है।

**विवाह :** प्रसाद जी का विवाह बीस वर्ष की आयु में होता है। दस वर्ष बाद इनकी पत्नी का देहांत हो जाता है। भाभी के आग्रह के कारण प्रसाद को दूसरा विवाह करना पड़ता है। किन्तु किस्मत उनका साथ नहीं देती विवाह के एक वर्ष बाद उनकी दूसरी पत्नी दिवंगता हो जाती है। पुन: भाभी के आग्रह के कारण पाँच वर्ष के बाद उनका तीसरा विवाह हो जाता है।

**संतान :** प्रसाद जी को उनकी तीसरी पत्नी से एक पुत्र की प्राप्ति हो जाती है। उनके पुत्र का नाम रत्नशंकर था। प्रसाद ने अपने पुत्र का नाम अग्रज की स्मृति में उनके नाम को परिवार्तित कर रखा था।

**साहित्यिक प्रेरणा :** प्रसाद के पिता साहित्यिक रूचि के व्यक्ति थे। उनके घर पर कवि गोष्टियों का आयोजन होता और प्रसाद बचपन से ही उनमें भाग लिया करते थे। भारत के अतीत का गहराई से अध्ययन किया था। भारतीय संस्कृति पर उन्हें गर्व था।

**पाठ-पाठन:** प्रसाद जी में छोटी उम्र में ही पठन-पाठन की प्रवृत्ति आ गई थी। दीन बन्धु ब्रम्हचारी से संस्कृत का अध्ययन किया। वैदिक वाड्मय तथा भारतीय दर्शन का स्वाध्याय कर ज्ञानार्जन किया।

**साहित्य सृजनारंभ :** नौ वर्ष की आयु में प्रसाद समस्या पूर्ति करने लगे थे। प्रसाद ने नौ वर्ष की अल्प आयु में ही 'अमरकोश' तथा 'लघु सिद्धांत कौमुदी' कंठस्थ कर ली थी। उन्होंने गजलें भी लिखी थीं। १५-१६ वर्ष की आयु से वह कहानी, नाटक और कविता लिखने लगे थे।

''जीवन के इन उतार-चढ़ावों को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए प्रसाद साहित्य साधना में रत रहे। वे अपने स्वास्थ के प्रति यद्यपि पूर्णत: सजग रहते थे, परतु जीवन के अंतिम प्रहर में वे रोगग्रस्त हो गये। संवत् १९३३ में वे सर्व प्रथम बुखार से पीड़ित रहे और उन्हें उदरशूल हो गया। जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि वे राजयक्ष्मा से पीड़ित है। इसी रोग से उनकी पत्नी चल बसी थी। अत: प्रसाद इस रोग के भयंकर परिणामों से परिचित थे। शुभचिंतकों ने उन्हें पर्वतीय स्थान पर जाने का परामर्श दिया। किन्तु काशी छोड़ना उनके लिए असहय था। संवत् १९९४ में चर्मरोग ने भी उन पर आक्रमण

कर दिया और उनका शरीर जर्जर होने लगा। अंतिम दिनों में वह पलंग पर ही पड़े रहते थे। अत कार्तिक शुक्ल एकादशी वि. स. १९४७ नवम्बर सन् १९३७ को अड़तालीस वर्ष की आयु में हिन्दी साहित्य का यह अमर कवि दिवंगत हो गया।''

### 10.3.2 साहित्यिक परिचय

हिंदी साहित्य के प्रख्यात साहित्यकार जयशंकर प्रसाद जी का रचना संसार विस्तृत है। उन्होंने काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, आलोचना, निबंध, आदि विविध विधाओं में लेखन कार्य किया है। उनका साहित्य सामाजिक और सांस्कृत परिवेश से जुड़ा है।

''प्रसाद जन्मजात कवि थे। उनकी साहित्यिक जीवन यात्रा का आरंभ ब्रजभाषा की समस्या-पूर्तियों से हुआ। उनके प्रारंभिक जीवन की कविताओं मे अतीत की दु:खद स्मृतियां, हल्के विषाद का आवरण तथा श्रृंगार की अतृप्त भावनाओं का आभास मिलता है।''

''बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न जयशंकर प्रसाद ने साहित्य सर्जन की एक लंबी यात्रा तय की है और हिन्दी साहित्य को उत्कृष्ट कोटि की रचनाओं से गौरवन्वित किया है। उनकी उन्मेषशालिनी प्रतिभा ने नौ वर्ष की अल्पवय में ही सुंदर छंद की रचना कर डाली थी। घर में होने वाली साहित्यिक गोष्टियों ने प्रसाद के कोमल हृदय में साहित्य रचना का बीज वपन कर दिया था। समस्या पूर्ति से प्रभावित हो उन्होंने एक छंद की रचना कर गुरू और प्रसाद को महाकवि बनने का आशीर्वाद दिया। यहीं से उनके साहित्य जीवन का शुभारंभ हुआ और उन्होंने पद्य के साथ-साथ गद्य के क्षेत्र में भी साहित्य की रचना की। वे कवि एवं नाटककार पहले थे, गद्यकार बाद में अत सर्वप्रथम उनकी काव्य (रचनाओं का परिचय अपेक्षित है। उनकी प्रमुख कृतियां हैं - चित्राधार (सन १९१८ ई) कानन कुसुम (सन १९३१ ई) द्वारना (सन १९८१ ई.), आँसू (सन १९२३ ई.) एवं 'कामायनी'।

''प्रसाद के 'कानन कुसुम', 'चित्राधार' 'झरना' में इन्हीं दबी हुई भावनाओं का रूप प्राप्त होता है। 'आँसू' में यह पक्ष उभर कर आया है लेकिन दार्शनिक समाधान के साथ इसमें शृंगार की असाधारण मार्मिकता तो है हो, किन्तु दार्शनिक चिन्तन के सुन्दर संयोग ने कृति को महत्वपूर्ण बना दिया है। 'आंसू' काव्य के बाद श्रृंगार का उव्देग उनके काव्य में नहीं मिलता। पश्चात की कृतियों में पष्कृित सौंदर्य की भावधारा त्रिवेणी के रूप में प्रवाहित होती दिखाई पड़ती है। वह 'कामायनों' में काव्य, दर्शन और आनन्द के महोदधि में समाहित होती है।

''प्रारंभिक (रचनाएँ) प्रसाद ने ब्रजभाषा में लिखी किन्तु बाद में खड़ीबोली को उन्होंने अपनी काव्य रचना का माध्यम बनाया। 'आँसू' उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है। इस श्रेष्ठ विरहकाव्य में कवि की आत्माभिव्यक्ति है जिसमें मानव हृदय की आकांक्षाओं का चित्रण हुआ है। असीम वेदना से आप्लावित यह कृक्ति विरह जन्य पीड़ा, दु:ख टीस एवं कसक को साकार करती हुई प्रेमानुभूति की तीव्रता को अभिव्यक्त करती है। 'कामायनी' प्रसाद जी की प्रौढ़तम कृति है जिसमें हृदय तथा बुद्धि इतिहास तथा कल्पना एवं साहित्य तथा दर्शन का अपूर्व समन्वय हुआ है। पौराणिक ग्रंथों का आधार लेकर कवि ने मानवीय चेतना के विकास की दस कथा में प्रतीकात्मक पात्रयोजना द्वारा मानव जीवन की समस्त वृत्तियों का प्रकाशन करते हुए अंत में आनंदवाद की प्रतिष्ठा की है। प्रकृति का सजीव चित्रण, सौंदर्यानुभूति, नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोण, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक सूत्रों का संयोजन आदि प्रसाद के काव्या संसार की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं।

गद्य साहित्य के क्षेत्र में प्रसाद ने नाटकों, कहानियों एवं उपन्यासों की रचना की है।

**कहानीकार के रूप में प्रसाद :-**

कहानीकार के रूप में प्रसाद एक श्रेष्ठ कहानीकार है। प्रसाद की कहानियाँ श्रेष्ठ और उच्चकोटि की कहानियाँ मानी जाती है। प्रसाद ने कुल पाँच कहानी संग्रह लिखे है। सभी कहानियां उद्देश्य पूर्ण है।

''हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कहानीकारों में प्रसाद का अपना विशिष्ट स्थान है। उनकी कहानी कला का विकास सर्वधा निजी रचना तंत्र के आधार पर प्राय: मौलिक शैली में हुआ है। इस नए रचना-विधान का भावसौष्ठव अपना

विशिष्ट मूल्य रखता है। इतिहास के सदंर्भ में समाज की वस्तु-स्थिति का सतर्क अवलोकन तथा काव्य सुलभ भावुकता के साथ कवि का निगूढ़ जीवन दर्शन इन कहानियों में सरल, स्वाभाविक तथा प्रेषणीय रूप से प्रस्फुटित हुआ है। 'प्रसाद' की कहानियों का उद्गम परिष्कृत भावनाओं के स्रोत से हुआ है। काव्यात्मक भाव पक्ष ने इस रचनातंत्र को महत्त्व दिया है। इसका रूपात्मक भाव रहस्यवादी धारणा से प्रेरित है। प्रस्तुत कहानियाँ प्राय: विचार बिन्दु से अंकुरित हुई है और रहस्य दर्शन को जीवन के विविध आयामों की परिधि में समेटकर उन्हें जीवन्त करती रही हैं। ऐतिहासिक कहानियों के भीतर लेखक की नाट्य प्रेरणा विद्यमान है, जो सामूहिक प्रभाव के कारण अधिक संवेदनीय बन गई है। 'प्रसाद' की कहानियों की सृष्टि और उसका उद्गम काव्य और नाटक की परिष्कृत भावनाओं में हुआ है।

'कल्पना-वृत्ति' 'प्रसाद' के समस्त रूपों का मूल स्त्रोत है। इसी स्तर पर भावपक्ष तथा शैली पक्ष का संगम हुआ है। कल्पना के आधार पर अनेक आदर्श तत्व, साथ ही दर्शन एवं अतीत का संयोग लेखक को अभीष्ट है। 'प्रसाद' की कला समन्वयात्मक धरातल पर स्थित है। प्रस्तुत कहानियाँ यद्यपि भावुकत की अतिशयता के कारण सामान्य शिल्पविधि से कुछ दूर हैं, फिर भी कल्पना वैदग्ध्य के सहारे वे काव्य बिन्दु पर केन्द्रित हैं। यथार्थपूर्ण भौतिक समस्याएँ यहाँ न्यून हैं, क्योंकि प्राय: इन कहानियों का विषय है भावुक उत्तेजना, सौदर्य की प्रेरणा, काव्योद्गारों की अन्तस्चेतना तथा प्रकृति का रमणीय चित्रण अतीत संस्कृति के आधार पर लेखक पुनरूत्थान का संकल्प भी प्रकट करता है और साथ ही रेखा-चित्र की कला का आभास देता हुआ गद्यगीत का स्वरूप भी अंकित करता है। पात्रों के कवित्वपूर्ण संवाद, आलंकारिता और काव्यात्मकता के प्रत्यक्ष प्रमाण यहाँ सुरक्षित हैं। प्रेम-सौंदर्य एवं करूणा का रहस्य, साथ ही सामाजिक कुरूपता पर निर्मम व्यंग्य, उसकी उत्कृष्ट कला का साक्ष्य प्रस्तुत करता है, 'प्रसाद' के कलात्मक स्तर पर जागरूक भावत्मकता से युक्त नया दृष्टिकोण प्राप्त होता है, जो उत्कृष्टता का परिचायक है और जीवन की परिपूर्णता का बोधक भी इस प्रकार हिंदी कहानी के विकास में 'प्रसाद' और 'प्रेमचंद' का विशेष योग रहा है।''

''प्रसाद की कहानियों का सबसे प्रधान लक्ष्य है- आदर्श की प्रतिष्ठा जो समाज, दर्शन और व्यक्ति तीनों क्षेत्रों में व्यंजित हुई है। उन्होंने यथार्थ और आदर्श का अन्तर्समन्वय किया है। पुरातन मर्यादा का समर्थन करता हुआ भी लेखक नवीन युग का जागरण सन्देश प्रसारित करता है। वर्तमान की सामाजिक मान्यताओं के प्रति क्रांति और अन्तत: एक उदार प्रगतिशील दृष्टिकोण प्रकट करके 'प्रसाद' ने जहाँ पुरातन प्रेम का स्वीकार किया है. वही वर्तमान के लिए महान, चिरंतन आदर्श स्थापित करके युग का शुभ सकल्प व्यक्त किया है।''

''प्रसाद'' राग, रसपूर्ण एक महान सौन्दर्योपजीवी कथाकार हैं। उनका रागतत्व स्वस्थ प्राक्तिक प्रेरणा पर केन्द्रित है, जो स्वत: एक स्वर्गिक आकर्षण है. वासना, विकास एवं ऐहिक स्थूल स्वरूपों के साधार पर प्रणय और परिणय के ये चित्र लेखक की प्रशांत मधुबर्या और तत्वचिंतन के साक्ष्य हैं। वे प्रेम एवं सौन्दर्य के क्षेत्र में सशक्त सामाजिक आन्दोलन प्रस्तुत करते हैं। समाज के क्षेत्र में 'प्रसाद' का आदर्शवाद प्रेम और विवाह के दोन केन्द्र बिन्दुओं में प्रतिष्ठित है। वैदिक शैव एवं बौद्ध दर्शन उनके आदर्शवाद की चिन्तन-धारा में प्रेरणा के बिन्दु हैं। उनकी नारियाँ आदर्श की प्रतिमाएँ हैं, जो सक्रिय जीवन में नैसर्गिक भावनाओं की अनुभूति लेकर आती हैं।''

''संवेदना की सृष्टी 'प्रसाद' की कहानियों में सफल रूप से हुई है। आरंभिक वर्णनों पात्रों के कथोपकथनों और प्रतिपादय वस्तु-विषय द्वारा लेखक करूणा और घनीभूत वेदना का वातावरण उपस्थित कर देने में सक्षम हुआ है। वातावरण के निर्माण में 'प्रसाद' ने विशेष रूप से वर्णन प्रणाली, दृश्य-विधान एवं भावचित्रों का माध्यम ग्रहण किया है। स्पष्ट है कि भाव और कला दोनों पक्षों में वे अभिनव है ''प्रसाद की मौलिकता कहानी के भाव पक्ष में ही सीमित न रहकर कहानी के कलापक्ष में विशेष रूप से अपनी प्रेरणा दे रही थी।''

'प्रसाद' की अधिकांश कहानियों की यही विशेषता है कि उनमें वातावरण की यही विशेषता है कि उनमें वातारण की साक्षात सृष्टि हुई है और अतीत का अंश मूर्तिमान हो उठा है। व्यक्तिगत चरित्र के सारे राग विराग, घात प्रतिघात एवं अन्तर्दद्व की अभिव्यक्ति लेखक की समर्थ चित्रण शक्ति के द्वारा अत्यंत भाव प्रवणता के साथ हुई है। इस वर्ण्य विषय का चित्रण अत्यधिक सांकेतिक है और सम्पूर्ण रूप से उसमें गद्य काव्य का आनन्द प्राप्त होता है।

लेखक ने संकलनत्रय का सफल निर्वाह करके उसे और भी कलावंत बना दिया है। इस प्रयोजन के लिए 'प्रसाद' की भाषा बहुत सहायक है। वे भाषा के क्षेत्र में शुद्धतावादी हैं। उनकी व्यवहृत भाषा संस्कृतनिष्ठ तथा आलंकारिक है, जिसमें पर्याप्त व्यावहारिकता भी है और कवित्व का उन्मेष भी। यथा प्रसंग देशज और ग्रामीण शब्दों से भी इनकी कहानियाँ सुसज्जित हैं।''

प्रसाद का कहानी साहित्य पाँच संग्रहों के रूप में उपलब्ध है। जिनमे कुल सत्तर कहानियाँ हैं। प्रसाद जी के कहानी संग्रह निम्मलिखित है -

१) छाया (१९१२ ई.)

२) प्रतिध्वनि (1926 ई.)

३) आकाशदीप (१९२६ ई.)

४) आँधी (१९२९ ई.)

५) इंद्रजाल (१९३६ ई.)

**उपन्यासकार के रूप में प्रसाद :-**

प्रसाद ने कहानी के साथ-साथ उपन्यास में भी अपना योगदान दिया है। प्रसाद के उपन्यास हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण है। 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती'। प्रसाद के तीन उपन्यास है-

'हिन्दी उपन्यासों के क्षेत्र में 'प्रसाद' के कृतित्व का अपना निजी वैशिष्ट्य है। इस विधा में सौन्दर्यौंपजीवी एवं स्वच्छन्दतावादी कवि का सामाजिक रूप प्रकट हुआ है। 'प्रसाद' की समस्त औपन्यासिक कृतियाँ उनकी जीवन दृष्टि, उसकी लोक-संग्रही वृत्ति और उनकी युग-विश्लेषण शक्ति का परिचय देती हैं। इनमें वैयक्तिक जीवन के चित्रण की प्रमुखता है, अतः इन्हें हम व्यक्तिवादी उनन्यास कह सकते हैं। पर ये व्यक्ति किसी समुदाय विशेष के प्रतिनिधि हैं, जिनके सहज विश्वास और जिनकी गतिविधि उस समूह का दिग्दर्शन कराने में समर्थ है। व्यक्तिवाद के साथ ही प्रस्तुत कृतियों में लेखक की सामाजिक चेतना भी प्रचुर मात्रा में परिलक्षित हुई है। उस वास्तविक स्थिति का उद्‌घाटन करके उसने व्यक्तिवादी चिन्तन की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। यहाँ वैयक्तिक जीवन का चित्रण बढ़ाई भी मनोवैज्ञानिक आधार पर हुआ है। यह वैयक्तिक चेतना की अभिव्यक्ति अन्तर्मुखी एवं आत्म केन्द्रित है, किन्तु सामाजिक चेतना, मध्यवर्गीय सामाजिक चेतना और सर्वांगीण व्यक्ति के भाव दोनों पूर्णतः मुखरित हुए हैं। पात्र वर्गवत प्रतिनिधि भी हैं, पर अपने व्यक्तिगत विचार भी रखते हैं। उन पात्रों का चरित्रांकन अधिक विशद रूप में किया गया है, जिनके मनोबल में वैयक्तिक स्वातंत्र है। सामाजिक बन्धन के बीच व्यक्ति की प्रबल आकांक्षाओं की परीक्षा प्रस्तुत करके 'प्रसाद' ने यहाँ समग्र द्वन्द्वात्मक दृष्टि का परिचय दिया है। यहाँ वे रोमैन्टिक आदर्शवादी कोटी से परे घोर यथार्थवादी है।

उपन्यास तथ्यपूर्ण सामाजिकता का सहज एवं सजीव माध्यम है। लेखक धार्मिक और सामान्य व्यवहारिक विषमताओं की स्थिति से पलायन नहीं कर सका है। उन गुत्थियों में उसे सुलझना पड़ा है और अन्तर्मुखी समाधान भी प्रस्तुत करना पड़ा है। बहिर्जीवन सम्बन्धी उनकी अनुभूती कुछ कटु और तीखी हो गई है। उन्होंने निर्भय हाकर अनेक सामाजिक संस्थाओं का खोखलापन दिखाया है। उस वास्तविक स्थिति के उद्‌घाटन में सामाजिक विषमता का नग्न स्वरूप प्रकट किया गया है। प्रेम-सौन्दर्य के स्वच्छन्द प्रवाह और दो मानवीय हृदयों के मधुर मिलन की रसमय गाथा भी इन कृतियों में विद्यमान है। 'प्रसाद' का दृष्टिकोण सामाजिक परिष्कार में सहायक हुआ है। 'प्रसाद' का उपन्यास साहित्य रचना तंत्र की दृष्टि से पूर्ण है। काव्य और नाटकों की भांति 'प्रसाद' उपन्यास रचनाओं में अधिक तल्लीन नहीं हुए हैं, क्योंकि गद्य की यह विधा आयास की दृष्टि से सरल होते हुए भी अधिक ललित नहीं है। वे अपनी विचार वेदना से व्यथित होकर ही इस विधा में प्रवृत्त हुए हैं। जिस समस्या में रसमय कवित्व की सम्भावना कम थी अथवा जिसमें नाटकीयता या प्रबन्धात्मकत न्यून थी और औपन्यासकिता के लक्षण अधिक थे, उसका ही 'प्रसाद' ने कथा कृक्तियों में सन्निवेश किया है। 'प्रसाद' के उपन्यास 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' इस कथन का प्रमाण हैं''

**1) कंकाल :** ''प्रसाद की औपन्यासिक कृतियों में 'कंकाल' उनका प्रथम उपन्यास है। जो उनकी परिवर्तित सामाजिक दृष्टि और युग दर्शन का आभास देता है। इसे प्रथम बार आचार्य वाजपेयी जी ने 'यथार्थवादी'. उपन्यास कहा है। कृति में समाज की निर्बलता और सार्वजनिक हेयता का पर्दाफाश हुआ है। 'कंकाल' में आदयन्त किसी भी पात्र की नैतिकता का निर्वाह नहीं हो सका है। प्रत्येक चरित्र अपने अन्तरम में शिथिल है। प्रत्येक पात्र वर्ण संकर और पाप-सन्तान है, प्रत्येक सुधारक विपथगामी है। समाज का ऐसा जीवित कंकाल साहित्य में अब तक उपलब्ध नहीं था। यह ऐसी विचार प्रधान कृति है, जहाँ सर्वत्र अभिजात्य पर शंका प्रकट की गई है। प्रत्येक आदर्श की अग्निपरीक्षा ली गई है। ऐसी त्रस्त मानवता का दर्शन व्यथित को आपाद-मस्तक झकझोर देता है और मन में इस प्रकार की आक्रोश उत्पन्न करता है कि समस्त सामाजिक रूप-रचना के प्रति तीव्र अनास्था उत्पन्न हो जाती है। कंकाल 'प्रसाद' की तीव्र अनुभूति और सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का प्रतीक है।''

''कंकाल'' यह प्रसाद की बुद्धिवादी प्रेरणा है। बुद्धिवादी विजय का 'कंकाल' समाज की रूढ़ और निस्सार मान्यताओं के भार से दबे हुए व्यक्त चेतना के अनेक शवों का प्रतीत हैं। इस कारण ही इसमें प्रथम बार यथार्थवादी प्रवृत्ति मिलती है। हिन्दू समाज का यह नग्न खोखलापन प्रस्तुत करने और उसका दिग्दर्शन कराने का साहस अभी तक किसी को इस दिशा में प्रेरित नहीं कर सका था। इस दृष्टि से 'प्रसाद' का साहस सराहनीय है। 'कंकाल' में समाज की यथार्थवादी तथा निर्मम विकृति द्रष्टव्य है। बाल-वैधव्य, संतान लालसा, धर्म के दुश्चरित्र ठेकेदार, वेश्यावृत्ति और स्त्री-पुरूष सम्बन्ध की मूल प्रेरणाएँ यहाँ उभरी गई हैं। 'कंकाल' में 'प्रसाद' का शिव-पक्ष अन्तस में परिष्कार और विशुद्धीकरण की क्रांतिकारी भावना है।''

**2) तितली :** 'तितली' 'प्रसाद' की औपन्यासिक कलाकारिता, का दूसरा सोपान है। जिसमें मूर्तिमान नारित्व, आदर्श भारतीय पत्नित्व या सतित्व जागृत हुआ है। कथा संयोजन में अतिशय भावूकत है और उसी के आधार पर ही स्निग्ध और मधुर दाम्पत्य संबंध का निर्देशन हुआ है। 'तितली' लेखक के विधेयात्मक दृष्टिकोण की देन है। यह उनकी निर्माण शक्ति का साक्ष्य है। जीवन के सामान्य धरातल पर इस कृति का संगठन हुआ है। यद्यपि इन दोनों कृतियों में यथार्थवादी प्रवृत्ति है, किन्तु 'तितली' का यथार्थ आदशोन्मुख है, क्योंकि उसका निष्कर्ष ध्वंस की ओर न जाकर सृजन की राह पर मुड़ गया है। सामाजिक व्यंग्य की यहाँ वक्र दृष्टि नहीं है। समाज के प्रति यहाँ सहानुभूति है। 'तितली' में साधारण शक्ति सम्पन्न लौकिक पात्र हैं, जिनकी गतिविधि सामान्य है। सामन्तवादी पद्धति का समर्थ विरोध, कृषक जीवन के प्रति सहानुभूति और श्रम की महत्ता, इस गरिमामयी कृति में मुखरित है।''

''जीवन की कटु अनुभूतियाँ, सौहार्द और स्नेह की छिन्नता, वैयक्तिक चेतना का वैषम्य नारी की अनिश्चित आर्थिक पराधीनता, उनकी सच्ची आत्म-प्रतीति है। 'प्रसाद' के अनुसार सामाजिक दुर्दशा के कारणों में मुख्य है-संग्रह की भीषण प्रवृत्ति। इसके कारण ही क्षुद्र स्वार्थों की होड़ निरन्तर लगी रहती है। इन समस्याओं से सम्बन्धित समाधान प्रस्तुत करने में 'प्रसाद' का सर्जनात्मक रूप अत्यन्त सजग दिखाई पड़ता है। वस्तुतः इस अपरिमित और असाध्य समस्या को उन्होंने उपन्यासों के परिमित आकार में नाटकीय ढंग से रखने का प्रयास किया है।''

**3) इरावती :** 'इरावती' प्रसाद का आखरी उपन्यास है। प्रसाद ने कुल मिलाकर तीन उपन्यास लिखे जिसमें पहला है। 'कंकाल', दूसरा है 'तितली' और तीसरा उपन्यास है 'इरावती'। 'इरावती' इस उपन्यास में प्रसाद ने दिखाया है की, 'प्रतिभा की सहज क्रीड़ा-भूमि तो भारत का स्वर्णिम इतिहास था। वर्तमान सामाजिक गुत्थियों को सुलझाते हुए वे कुछ अनमने हुए कि अतीत ने उनका पुनः आह्वान किया ''इरावती'' 'प्रसाद' की ऐतिहासिक कृति है। जिसमें दर्शन और कल्पना के संश्लिष्ट चित्र भास्वर हुए हैं। अनात्मवादी बौद्ध दर्शन पर प्रवृत्ति - मूलक आनन्दवाद की विजय - घोषणा इस कृति का प्रतिपाद्य है। अपुर्णता के कारण इस अनन्य कृति का अन्तिम निष्कर्ष असंदिग्ध रूप से नहीं घोषित किया जा सकता, किन्तु 'प्रसाद' की वैचारिक गतिविधि और कथा-प्रवाह के सम्भावित कथा सूत्रों के आधार पर इसका निष्कर्ष सिद्ध किया जा सकता है। अपने सीमित कलेवर में ''इरावती'' निःसन्देह एक गौरव ग्रन्थ के बीज विद्यमान है।''

**निबंधकार के रूप में प्रसाद :** प्रसाद ने कहानी, उपन्यास, नाटक के साथ-साथ निबंध साहित्य में भी अपना योगदान दिया है। हिंदी साहित्य में प्रसाद के निबंध महत्त्वपूर्ण माने जाते है। ''प्रसाद'' के निबन्ध यद्यपि साहित्य और समाज की विविध समस्याओं को लक्ष्य करके लिखे गए हैं तथापि विषय वस्तु की दृष्टि से उनमें एकनिष्ठता है। 'प्रसाद' के कुछ आरम्भिक निबन्ध स्फुट रूप से 'चित्राधार' में संकलित हैं, किन्तु उनमें लेखक की निबन्ध लेखन की प्रतिभा अपने प्रौढ़ रूप से अभिव्यक्त नहीं हुई है। निबन्ध कला का उत्कृष्ट उदाहरण है उनका निबन्ध संग्रह 'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध' इसमें संकलित शीर्षकों को लेखक ने निबन्धों की कोटि में रखा है पर विशुद्ध निबन्ध की सीमा में इन्हे स्वीकृत करना उचित प्रतीत नहीं होता। साधारणत: इन्हें शास्त्रीय या समीक्षात्मक निबन्ध कहा जा सकता है। इन साहित्यिक निबंध के गंभीर चिन्तन और शास्त्रीय विवेचन की प्रचुरता के कारण इन्हें पृथक रूप से काव्यशास्त्रीय निबन्धों की कोटि में रखना पड़ता है। विषय समालोचनाशास्त्र के अधिक निकट हैं।''

प्रसाद के प्रमुख निबन्ध है -

1) आरम्भिक निबंध (चित्राधार)

2) विभिन्न स्फुट निबन्ध

3) प्राक्कथन एवं सम्पादकीय

4) काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध

**1) आरम्भिक निबन्ध (चित्राधार):** प्रस्तुत निबन्धों को हम ललित निबन्धों की श्रेणी में रख सकते हैं। 'प्रसाद' की कुछ ऐसी आरम्भिक निबन्ध रचनाएँ भी हैं जो स्फुट रूप अवलोकनीय हैं। इनमें 'इन्दु' की सम्पादकीय टिप्पणियों, पुस्तकों की भूमिकाएँ और अपनी वे सम्मतियाँ जो उनके दृष्टिकोण को न्यूनाधिक मात्रा में स्पष्ट कर सकने में सक्षम हैं। प्रारम्भिक प्रयास के रूप में उनकी कुछ रचनाएँ 'चित्रधार' में संकलित हैं, जो लेखक की अभ्युदयकालीन कृति-शक्ति का आभास देती हैं। 'चित्राधार' के निबंध प्रक्ति सौन्दर्य, 'सरोज' और 'भक्ति' शीर्षक निबन्ध क्रमश: विचारणीय हैं।''

**2) विभिन्न स्फुट निबंध :** ''स्फुट निबन्धों में 'प्रसाद' का निबन्ध 'आर्यावर्त और उसका प्रथम सम्राट विशेष ध्यातव्य है। इसमें लेखक ने देवाधिराज इन्द्र के स्वरूप का वैदिक साहित्य के साक्ष्य पर जनश्रुतियों में प्रचलित इन्द्र का स्वरूप यहाँ तात्विक मीमांसा के आधार पर निर्धारित किया गया है, अस्तु वह अपने में स्वत: प्रामाणिक इतिहास बन गया है। लेखक की बौद्धिकता एवं उसका बहु अधीत अन्तर्मन्थन यहाँ अति पर है, जो प्रतिपादय की दृष्टि से तो पूर्ण है पर निबन्ध के लालित्यपूर्ण शिल्प के विचार से अधिक समीचीन नहीं है।''

**3) प्राक्कथन एवं सम्पादकीय :** पुस्तकों के प्राक्कथनों के रूप में 'प्रसाद' ने जो कुछ लिखा है, उनमें भी निबन्ध कला के अनेक तत्व खोजे जा सकते हैं, यद्यपि उन्हें पूर्ण निबन्ध नहीं कहा जा सकता है। ये प्राक्कथन अत्यन्त परिचयात्मक, व्याख्यात्मक और आत्मालोचन की प्रणाली से परिपूर्ण है। ऐतिहासिक नाटकों की कथावस्तु का प्रतिपादन करते हुए 'प्रसाद' ने यहाँ मुलभूत प्रेरक तत्वों एवं सूत्रों को इंगित किया है।''

**4) काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध :** 'प्रसाद' की अन्तिम और अन्यतम निबंध रचना के रूप में 'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध' कृति विचारणीय है। निबंध की संज्ञा पाकर भी ये रचनाएँ शास्त्र और सिद्धान्त की कोटि में चली जाती हैं। शास्त्रीय वस्तु को 'प्रसाद' ने यहाँ इतिहास, दर्शन और मानव मनोविज्ञान में संकलित करके अधिक प्रस्फूर्त कर दिया है।''

**10.2.4 प्रसाद का आलोचना साहित्य :**

प्रसाद ने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध के साथ-साथ आलोचना साहित्य में भी अपना योगदान दिया है। प्रसाद का आलोचना साहित्य हिदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ''प्रसाद'' ने काव्यशास्त्र के अनेक परंपरागत सिद्धांतों की मुलभूत अन्तर्दृष्टि का मौलिक विवेचन किया है। काव्य सिद्धांतों के प्रति सहृदयतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाकर उसे प्रामाणिक स्तर पर उपस्थित करने का श्रेय छायावादी कवियों में 'प्रसाद' को सर्वाधिक है।

आचार्य वाजपेयी की घोषणा के अनुसार ''शास्त्रीय वस्तु को इन्होने इतिहास और मानव मनोविज्ञान के दोहरे छन्नों से छानकर संग्रह किया है। इस छनी हुई वस्तु को अशुद्ध या अप्रमाणिक कहने के लिए साहस चाहिए।'' ''प्रस्तुत निबन्धो के कुछ विशिष्ट विषय है, जहाँ 'प्रसाद' अपनी अभिनव मान्यताएं स्थापित करते हैं और तर्कसिद्ध प्रणाली से उन्हें प्रतिपादित करते हैं। वस्तुतः काव्यकला और नाटक के सम्बन्ध में प्रसाद के कुछ मौलिक विचार थे. जिनका विकास भारतीय परम्परा के अनुकूल हुआ था। समालोचना का यह मापदण्ड लेकर उन्होंने साहित्यशास्त्र को व्यापक दृष्टि दी है और द्विवेदी- युग से कहीं अधिक संयत तथा संतुलित विचार पक्ष प्रस्तुत किया है।''

**10.2.5 नाटककार के रूप में प्रसाद :-**

हिंदी साहित्य में प्रसाद के नाटक महत्त्वपूर्ण है। साहित्य में इस विधा प्रसाद ने कुल मिलाकर ग्यारह नाटक लिखे हैं। प्रसाद के सभी नाटक हिंदी साहित्य में उच्चकोटि के माने जाते हैं। आचार्य वाजपेयी जी के शब्दों में ''उन्होंने नाट्य क्षेत्र में प्रवेशकर नाटक को नए चरित्र, नई घटनाएँ, नया ऐतिहासिक देशकाल, नया आलाप-संलाप, संक्षेप में सम्पूर्ण नया समारंम्भ दिया।'' ३ 'प्रसाद' की सांस्कृतिक चेतना एवं रोमांटिक कल्पना हिन्दी की महान उपलब्धि है। उनमें आर्य संस्कृति के प्रति अटुट श्रद्धा है। अतः भारतीय पुराख्यान और वैदिक वाग्विभूति आदयान्त उनका कष्ठहार बनी रही। इस संस्कृति का सौन्दर्य गृढ़चिन्तन और रंगीन कल्पना के माध्यम से प्रकट हुआ है। अतीत उनकी कर्मभूमि है जिस पर पुनरूत्थानवादी दृष्टि पड़ी है। उन्होंने अपनी गम्भीर जिज्ञासा और पुरातत्व ज्ञान के सहारे, उसकी विश्वस्त व्याख्या प्रस्तुत की और साथ ही उसमें एक मूतन प्राण-शक्ति का भी संचार किया। नाटकों के सम्पूर्ण वातावरण में आर्य संस्कृति की छाया है और उस पर ऐतिहासिक राष्ट्रभक्ति का रूप आंका गया है। सीमित प्रान्तीयता अथवा संकुचित राष्ट्रीयता के स्तर से उठकर समस्त आर्यावर्त का गौरव गान 'प्रसाद्' का उद्दिष्ट रहा है। इस राष्ट्रीय आन्दोलन से उज्ज्वल अतीत पुनर्जीवित हो उठा है। नाटकों के सूद से जीवन व्यापी समस्याओं का अवगाहन 'प्रसाद' का ध्येय रहा है।''

''धार्मिक एवं जातीय दम्भ, साम्प्रदायिक संघर्ष, वैचारिक असामंजस्य, पारिवारिक कलह, दाम्पत्य जीवन, राजनैतिक अव्यसस्था, शासकीय प्रमाद, व्यक्ति चेतना में आनन्द एवं करूणा का समन्वय आदि प्रश्नों का उपस्थापन करके उन्होंने अपनी सर्वांगीण प्रतिभा और वैचारिक उदारता का परिचय दिया है। इन नाटकों में शृंगार और शौर्य की प्रगाढ़ भावना से रूप यौवन के चटकीले रंग भली भांति उभरे हैं। उनके चरित्र प्रधान नाटक प्राय अन्तर्द्धद्व और आत्मगौरव की भावना से प्रणोदित हैं। प्रत्येक पात्र का व्यक्तित्व गतिशील है, साथ ही उसके चित्रण पर 'प्रसाद' के दर्शन एवं कवित्व की अमिट छाप है। काव्य की बहुरंगी छाया सर्वत्र स्पन्दित होती है, जिससे प्रत्येक घटना स्वयं ही एक मूक व्यथा बना जाती है। इसके साथ ही काव्य ग्रह से सरस भाषा, वेदना की अव्यक्त कसक समेटे हुए सुसंवेदय तथा भावुकताजन्य गदयगीत की सृष्टि हुई है। इन्हीं विशेषताओं के कारण वे इस क्षेत्र में विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। निश्चय ही उनकी सांस्कृतिक पुनरूत्थान की चेतना, उनके महान कोमल चरित्र, उनके विराट मधुर दृश्य और अनका काव्यस्पर्श हिन्दी में अद्वितीय है। हिन्दी नाटकों की अपरिपक्व स्थिती में प्रसाद जो का प्रौढ़ शिल्प एवं विशिष्ट रचनातंत्र ऐतिहासिक महत्व रखता है।''

उनके प्रमुख नाटकों में -

| | |
|---|---|
| 1) सज्जन | (1910 ई.) |
| 2) करूणालय | (1913 ई.) |
| 3) प्रायश्चित | (1915 ई.) |
| 4) राजश्री | (1918 ई.) |
| 5) विशाखा | (1921 ई.) |
| 6) अजातशत्रु | (1922 ई.) |

7) जनमेजय का नागयज्ञ (1923 ई.)

8) कामना (1927 ई.)

9) स्कंदगुप्त (1928 ई.)

10) चंद्रगुप्त (1931 ई.)

11) ध्रुवस्वामिनी (1934 ई.)

के नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त प्रसाद जी का एकमात्र एकांकी

1) एक घूँट

2) चंपूकाव्य

3) उर्वशी

4) कतिपय

निबंध भी मिलते हैं।

इस प्रकार प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों में आभिजात्य मनोवृत्ति में पर्याप्त पार्थक्य है और वे अपने क्षेत्र में अजेय और अमर है।

**प्रसाद के नाटकों का संक्षिप्त परिचय है-**

**1) 'सज्जन' (1910 ई.)** - ''सज्जन'' में प्रख्यात महाभारत की अज्ञातवास सम्बन्धी घटना है। इसे जून १९११ के 'इन्दु' में प्रकाशित किया गया था और अब यह 'चित्राधार' में संकलित है। कौरवों की शत्रुता के प्रतिरूप पाण्डवों द्वारा शत्रु-संकट पड़ने पर भ्रातृप्रेम का प्रदर्शन इस लघुरूपक का वर्ण्य विषय है। प्रारम्भ में सूत्रधार, नटी, मंगलाचरण और प्रस्तावना आदि परम्परा के प्रभाव से प्रयुक्त हैं। सूत्रधार को 'सज्जनता सूझती' है अत: 'सज्जन' नाटक का अभिनय होता है। इस प्रकार की उक्तियाँ अधिक आई है।''

**2) ''करूणालय'' (1913 ई.)** - 'करूणालय' प्रसाद का एकमात्र गीति नाट्य है, जिसकी रचना सम्भवत: १९१२ ई. में हई थी। यह खड़ीबोली का प्रथम गीतिनाट्य माना जाता है, जिसे इक्कीस मात्राओं के अरिल्ल छंद की अतुकान्त कविता में प्रस्तुत किया गया है। रचना सन्तोषजनक और सुखान्त है। हिंदी गीति नाट्य् प्रसाद कृत 'करूणालय' से आरम्भ होकर, पंत कृत 'ज्योत्स्ना' से होता हुआ सियारामशरण गुप्त कृत 'उन्मुक्त' में प्रौढ़ता और दिनकर कृत 'ऊर्वशी' में चरमोत्कर्ष प्राप्त करता है।''

**3) ''प्रायश्चित'' (1915 ई.)** - 'प्रायश्चित' में देशद्रोही जयचन्द्र की आत्मग्लानी और आत्महनन की कहानी है। इसमें अतिप्राकृतिक तत्वों का प्रयोग कुछ कम है, और प्रथम बार जातीय आधार पर पात्रानुकूल भाषा का व्यवहार हुआ है। मुसलमान पात्र विशुद्ध उर्दू बोलते हैं ''दरअसल खुदा-ए-पाक को जीनत देना मंजूर है, नहीं तो भला इन फौलादी देव जादे हिन्दुओं पर फतह पाना क्या मुमकिन था। हिन्दी कुछ स्थलों पर संस्कृत मिश्रित है, जैसे ''हिन्दू साम्राज्य सूर्य इसी रणभूमि अस्ताचल में।'' कुछ अशुद्ध एवं आपत्तिजनक, विशिष्ट आंचलिक प्रयोग तथा 'हुजिए' और कुछ हास्यात्मक उक्तियाँ हैं जैसे 'मंत्री महाशय'। रूपक में पात्रानुकूलता प्रशंसनीय है और केन्द्रीय समस्या का निष्कर्ष -अर्थात जामातृवध के लिए शत्रुवध और देशद्रोह के लिए आत्मवध सर्वथा समीचीन है।''

**4) राजश्री (1918 ई.)** - ''राजश्री' में लेखक का ध्येय है ऐतिहासिक तथ्यान्वेषण। हर्षचरित्र और ह्युनसांग के वर्णित वृत्तांत में यह कथा संकलित है। इसके दोनो संस्करण परस्पर भिन्न हैं। पहले में नान्दी, भारत - वाक्य व पद्यात्मक - संवाद प्रयुक्त है। क्रमश: परिष्कार आता रहा है। दूसरे संस्करण में अंक दृश्यों का नया विभाजन करके नाटककार ने नए पात्रों की अवधारणा भी की है। वस्तु - संगठन व चरित्र अपेक्षाकृत नए संस्करण में सुन्दर है। यह 'प्रसाद' का प्रथम सफल ऐतिहासिक नाटक है, जिसमें उन्मुक्त कल्पना की उड़ान, कवित्व का संस्पर्श और अन्तश्चेतना का अखण्ड प्रवाह है।''

**5 ) 'विशाख' ( 1921 ई. )** – 'विशाख' में बौद्धों के पतन का इतिहास है। चन्द्रलेखा के प्रति राजा नरदेव का कामुक व्यवहार, अत्याचार और प्रतिकार इसमें वर्णित है। प्रारंभिक कृतियों की अपेक्षा इसमें परिपक्वता है, किन्तु इसका वस्तु–विन्यास कुल भ्रामक और शिल्प शिथिल है। इस कथानक को दो अविच्छिन भागों में विभाजित कर दिया गया है। १) नायक–नायिका का विरह और २ प्रतिशोध।''

**6 ) ''अजातशत्रु'' ( 1922 ई. )** – 'अजातशत्रु' प्रसाद के उन उत्कृष्ट नाटकों में गिना जाता है. जिनमें सबसे पहले प्राच्य–पाश्चात्य नाट्य कलाओं अथवा सुखांत – दुखांत भावनाओं का समन्वय किया गया है, तथ्य और कल्पना के समन्वय को अधिक संगत रूप प्रदान करने का यत्न किया गया है तथा परम्परागत नाट्य काण्ड इत्यादि के दृश्य दिखलाए है''।

**7 ) ''जनमेजय का नागयज्ञ'' ( 1923 ई. )**– ''जनमेजय का नागयज्ञ'' पुराख्यान पर आधारित पौराणिक नाटक है. जिसकी विषय वस्तु प्राचीन ग्रन्थों के मन्थन से प्राप्त हुई है। कल्पना का प्रयोग भी यत्रतत्र हुआ है। कथानक में आर्य जाति और नागों का संघर्ष वर्णित है। ब्राम्हण हत्या के प्रायश्चितस्वरूप पितृवध का प्रतिशोध लेने के संकल्प से सम्राट जनमेजय यज्ञ करते हैं और नागों की आहुति देते हैं। अन्त में ऋषियों के प्रयत्न से शांति और संधि स्थापित होती है।

**8 ) ''कामना'' ( 1927 ई. )** – 'कामना' 'प्रसाद' जी का प्रतीकवादी रूपक है। फूलों के द्वीप में तारा की सन्तानों द्वारा इस नाटक की रंगभूमि रची गई है। इसमें आदयन्त एक रोमांसपूर्ण और सकरूण वातावरण है। द्वीपवासी जब जीवन संघर्ष, महत्त्वाकांक्षा और यांत्रिक युग की अन्य असत् प्रवृत्तियों से मुक्त थे, तभी स्वर्ण और मदिरा का सन्देशवाहक, पाश्चात्य सभ्यता का प्रतिनिधि, विदेशी युवक 'विलास' वहाँ प्रवेश करके उस पवित्र जाति को दिग्भ्रान्त एवं पतित करता है। रानी 'कामना' शासन की आकांक्षा से वशीभूत होकर सन्मार्ग से विचलित हो जाती है। अनाचार और अपराधों की बाढ़ आ जाती है, पर अनन्तर 'विवेक' के नेतृत्व में उनका बहिष्कार होता है।''

**9 ) ''स्कंदगुप्त'' ( 1928 ई. )**– प्रसाद का 'स्कंदगुप्त' सर्वश्रेष्ठ नाटक के रूप में प्रतिष्ठित है। गुप्त साम्राज्य के पुनर्गठन की घटना ही इसका केन्द्रीय कार्य पदाक्रान्त राष्ट्र का पुनरूद्धार एवं सुख–शांति की नयी व्यवस्था कराई है। नाट्यकला की दृष्टि से यह कृति विशेष सफल है। वस्तु–संगठन वैज्ञानिक, चरित्र–चित्रण स्वाभाविक, कथोपकथन रोचक, वातावरण–प्रभावकारी और निष्कर्ष लोक संग्रहिक है।''

**10 ) ''चंद्रगुप्त'' ( 1931 ई. )**– 'चन्द्रगुप्त' 'प्रसाद' जी का बृहत्तम नाटक है। इसका कथानक अति–विस्तृत है, जिसमें घटनाओं की भरमार है। अधिकांशत: ऐतिहासिक तथ्यों का समावेश है। यत्रतत्र कल्पना की अतिरंजना भी है। नंद वंश का विध्वंस, सिकन्दर का अभियान, सिल्यूकस पर विजय, कानौलिया से परिणय, मौयौं का शासन और भारतीय राष्ट्रीयता के संगठन की समस्या इसमें केन्द्रस्थ है।''

**11 ) ''ध्रुवस्वमिनी'' ( 1934 ई. )** – ''ध्रुवस्वामिनी' 'प्रसाद' जी का अन्तिम पूर्ण नाटक है। इसकी रचना द्वारा लेखक ने हिंदी साहित्य में 'समस्या नाटकों' का प्रवर्तन किया है। इसका वस्तु–विन्यास (विशाखकृत) देवी बन्द्रगुप्तम् के आधार पर हुआ है। समुद्रगुप्त के अयोग्य उत्तराधिकारी रामगुप्त को शास्त्रमुख से 'क्लीव का पुरूष' की उपाधि देकर लेखक ध्रुवदेवी को उसके पतित्व से मुक्त करता है। नारी–विवाह की चिरन्तन समस्या का व्यवहारिक समाधिक इस कृति में विद्यमान है।''

**''एक घूँट''** :–

'एक घूँट' सम्भवत: १९२९ ई. में लिखी गई प्रसाद की वह प्रसिद्ध प्रतीकात्मक नाट्य कृति है, जिसे नगेन्द्र इत्यादी छायावादी आलोचक हिन्दी का प्रथम एकांकी बताते हैं, और जिनकी यह स्थापना सर्वथा विवादास्पद होते हुए भी, इसे ऐतिहासिक महत्त्व से सम्पन्न कर देती है।''

जयशंकर प्रसाद के अंतर्बाहय व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विवेचन और विश्लेषण के पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे इस प्रकार है–

हिंदी साहित्य के प्रख्यात साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म संवत् १९४६ में काशी के माहेश्वर कूल में हुआ प्रसाद के माता-पिता उनसे बहुत प्यार करते थे। प्रसाद का परिवार समृद्ध होने के कारण उनकी शिक्षा घर पर ही हुई। प्रसाद ने बारह वर्ष की आयु में पिता को खोया और उसके तीन वर्ष पश्चात् माता को खोया। प्रसाद के बड़े भाई का भी देहांत हो जाता है। परिवार की सारी जिम्मेदारी प्रसाद पर पड़ती है। वैवाहिक जीवन में उनकी पहली पत्नी का देहांत हो जाता है। बाद में दुसरा विवाह करना पड़ता है लेकिन एक साल बाद उनकी दूसरी पत्नी का देहांत हो जाता है। प्रसाद तीसरा विवाह करते हैं जिससे एक पुत्र प्राप्ति हो जाती है।

प्रसाद जन्मजात कवि थें। प्रसाद ने साहित्य के क्षेत्र में नाटक, काव्य, उपन्यास, निबंध, कहानी क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। प्रसाद ने कहानियों में सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है। भारतीय संस्कृति और आदर्श को हमारे सामने रखा है। भारत की शिल्पकला को भी हमारे सामने रखा है। प्रेम का महत्त्व बताया हैं। प्रसाद की कहानियों में सफल प्रेम कम नजर आता है और असफल प्रेम ज्यादा नजर आता है। प्रसाद की कहानियों में प्रकृति चित्रण, सौदर्य भी नजर आता है।

प्रसाद ने हिंदी साहित्य को अपनी अनमोल देन दी है। प्रसाद हिंदी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं।

**स्वयं अभ्यास के लिए प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-1**

प्रश्न. प्रसाद का जन्म किस विख्यात परिवार में हुआ?

प्रश्न.2 प्रसाद के कहानी संग्रहों की संख्या कितनी हैं?

**10.4 भाषा शैली**

प्रसाद जी ने पहले ब्रजभाषा में लिखना आरम्भ किया था किन्तु बाद में ये खड़ी बोली में लिखने लगे। इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ तथा गम्भीर है। बोलचाल की चुलबुलाहट और मुहावरों की कलाबाजियाँ उसमें नहीं हैं। वास्तव में प्रसाद जी ने गम्भीर विषयों पर काव्य रचना की है। भावों को व्यक्त करने के लिए गम्भीर भाषा की ही आवश्यकता होती है। प्रसाद जी का शब्द चयन बड़ा अनूठा है। उनके शब्द भावों की अभिव्यंजना करने में पूर्ण रूप से समर्थ है। मधुपता, कोमलता और संगीतमयता प्रसाद की भाषा की निजी विशेषताएँ हैं। भाषा की लाक्षणिक शक्ति का भी इन्होंने प्रयोग किया है। इनके साथ ही साथ इनकी भाषा में चित्रात्मकता, प्रवाहशीलता और पात्रानुकूलता के भी गुण विद्यमान हैं। उनकी भाषा प्रसाद गुण से युक्त है।

**अलंकार योजना-**

प्रसाद जी के अलंकार अत्यन्त स्वाभाविक और मनोरम हैं। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि प्रचलित अलंकारों के साथ उनके काव्य में विश्लेषण, विपर्यय तथा मानवीकरण आदि नवीन अलंकारों का भी सुन्दर प्रयोग हुआ है। प्रसाद जी के उपमान सर्वथा नवीन तथा चमत्कारपूर्ण हैं। उपमा की शोभा देखिए-

**''नील परिधान बीच सुकुमार,**
**खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,**
**खिला हो ज्यों बिजली का फूल,**
**मेघ वन बीच गुलाबी रंग''।।**

**मानवीकरण प्रसाद जी का प्रिय अलंकार है-**

**''बीती विभावरी जागरी।**
**अम्बर पनघट पर डुबो रही तारा घट ऊषा नागरी''।।**

**छन्द योजना**- प्रसाद जी की छन्द योजना भी अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक है। प्रसाद जी ने विविध छन्दों में काव्य रचना की है। संस्कृत छन्दों का भी इन्होंने प्रयोग किया है। इनके गीत तो बहुत ही सुन्दर और मनोज्ञ हैं। निःसन्देह प्रसाद जी एक महान कवि, श्रेष्ठ नाटककार, सफल कहानीकार तथा उच्च कोटि के उपन्यासकार थे। आधुनिक काल के साहित्यकारों में उनका स्थान बहुत ऊँचा है।

**स्वयं आकलन के लिए प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

प्रश्न. जयशंकर प्रसाद ने कुल कितने नाटक लिखे हैं?

प्रश्न. चंद्रगुप्त नाटक का प्रकाशन वर्ष क्या है?

## 10.5 सारांश

जयशंकर प्रसाद हमारे देश के छायावादी प्रमुख कवियों में से एक, जिन्होंने अपनी काव्यरचनाओं की शुरुआत ब्रजभाषा में की थी। उन्होंने स्थानीय भाषा के अलावा खड़ी बोली को भी अपनाया और लोगों की उनकी यह भाषा शैली पसंद आई। उनकी रचनाओं में प्रायः भावनात्मक, विचारात्मक, इतिवृत्तात्मक और चित्रात्मक भाषा शैली देखने को मिलती है। वे कवि, कथाकार, नाटकार, उपन्याकार आदि रहे। इनके आने से ही हिंदी काव्य में खड़ी बोली के माधुर्य का विकास हुआ। यह आनंदवाद के समर्थक थे। इनके पिता बाबू देवीप्रसाद विद्यानुरागी थे, जिन्हें लोग सुँघनी साहु कहकर बुलाते थे। आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रवर्तक महाकवि के रूप में उन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम से संपूर्ण राष्ट्र को नई चेतना दी।

## 10.6 कठिन शब्दावली

**विद्यानुरागी** - अध्ययन और शिक्षा के प्रति आसक्त

**इतिवृत्तात्मक** - व्याख्यात्मक

**विचारात्मक** - विचारयुक्त

**आपूर्ति** - संतुष्टि

**अवतरित** - अवतार के रूप में उत्पन्न

## 10.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न-1**

उत्तर - संधुनी साहू

उत्तर - पाँच

**अभ्यास प्रश्न-2**

उत्तर - ग्यारह

उत्तर - सन् 1931 में

## 10.8 संदर्भित पुस्तकें

1. रमेशचंद्र शाह, भारतीय साहित्य के निर्माता जयशंकर प्रसाद, साहित्य अकादमी, दिल्ली।
2. डॉ. हरेन्द्र कुमार सिन्हा, जयशंकर प्रसाद के काव्य में सांस्कृतिक और राष्ट्रीय परिवेश, कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी।
3. डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय, जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

## 10.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व देवं कृतित्व पर प्रकाश डालें ?

प्रश्न. जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय दीजिए ?

प्रश्न. हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद का क्या योगदान रहा, स्पष्ट कीजिए ?

*****

# इकाई–11
# जयशंकर प्रसाद : काव्यगत विशेषताएँ

**संरचना**


11.1 भूमिका

11.2 उद्देश्य

11.3 जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ

स्वयं आकलन प्रश्न–1

11.4 जयशंकर प्रसाद के काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष

स्वयं आकलन प्रश्न–2

11.5 सारांश

11.6 शब्दार्थ

11.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

11.8 संदर्भित पुस्तकें

11.9 सात्रिक प्रश्न


## 11.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने जयशंकर प्रसाद के जीवन एवं साहित्य का गहन अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनके अभिव्यक्ति यहाँ का भी अध्ययन करेंगे।

## 11.2 उद्देश्य

इकाई ग्यारह का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि –

1. प्रसाद के काव्य की प्रमुख विशेषता क्या है ?
2. प्रसाद के काव्य में किस प्रकार की कल्पना की प्रधानता है ?
3. प्रसाद के काव्य का भाव पक्ष वया है ?
4. प्रसाद के काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष क्या है ?

## 11.3 जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ

प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में हिन्दी को कुछ न कुछ दिया– कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना। कविता के क्षेत्र में उन्हें अत्यधिक प्रसिद्धि मिली। इस प्रसिद्धि का आधार दो ग्रंथ बने– आँसू और कामायनी। इनमें भी कामायनी की महत्ता सर्वाधिक है। इसे पृथ्वीराज रासो तथा पद्मावत की कोटि की रचना माना जाता है। आधुनिक काल के संबंधों में वही ऐसा ग्रंथ है, जो सच्चे अर्थों में गिना जाता है। 'कामायनी' की इस सफलता का रहस्य है, उसके भाव तथा कला। पक्ष को उच्चकोटि का होना। कामायनी ही क्या, प्रसाद की बाद की लगभग सभी रचनाओं का भाव तथा कला–पक्ष इसी स्तर का हैं।

### जयशंकर प्रसाद के काव्य की भाव-पक्ष की विशेषताएँ

प्रसाद जी के भाव–पक्ष की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

**1. भावयमताः** भाव तो प्रसाद जी के काव्य का प्राण है। उनकी कविताओं में कोमल भावनाओं का ऐसा भण्डार है जो कभी रिक्त नहीं हो सकता। कामायनी, आँसू, झरना आदि के गीतों में भावों का सागर लहरा रहा है। करूणा, हर्ष, विषाद, आशा–निराशा आदि अमूर्त भावों के बड़े ही मर्मस्पर्शी शब्द–चित्र उतारना प्रसाद जी की काव्य–प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता हैं।

'चिन्ता' का यह मूर्त रूप देखिये-

**हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल रेखा।**
**हरी-भरी दौड़-धूप हो, जलमाया की चल-रेखा॥'**

**2. कल्पना की प्रधानता:** भावों की तीव्रता, अनुभूतियों की अधिकता और विचारों की गतिशीलता की त्रिवेणी को प्रवाहित करने वाली कल्पना की पैठ प्रसाद जी के काव्य की सर्वप्रधान विशेषता है। प्रसाद जी का भावमय संसार किसी प्रकार के बन्धन को स्वीकारने वाला नहीं है। संसार और जीवन की वास्तविकता को ठोकर मारकर प्रसाद जी ने कल्पना का स्वागत किया था-

**'आह कल्पना का सुन्दर वह, जगत-मधुर कितना होता हैं।'**

**3. रूपकात्मकता**- प्रसाद के काव्य के भाव-पक्ष की तीसरी विशेषता-रूपकात्मकता हैं। कामायनी में उनकी यह विशेषता सर्वोत्तम रूप में प्रकट हुई हैं। संपूर्ण काव्य एक विराट रूपक पर आधारित है। मनु प्रतीक हैं मानव-मन के। श्रद्धा प्रतीक है राग की। इड़ा प्रतीक है बुद्धि की। ग्रंथ पढ़ते ही पता लग जाता है कि प्रसाद जी मनु-श्रद्धा इड़ा की कथा के माध्यम से मानव-मन की कहानी कहना चाहते हैं। वे दिखाना चाहते हैं कि सामंजस्य में जीवन की सफलता का रहस्य है। व्यक्ति श्रद्धा तथा इड़ा अर्थात् राग तथा वृद्धि में सामंजस्य बनाए रखे, तो उसे कभी भी प्रलय (उद्विग्रता) का सामना नहीं करना पड़ता। इस अर्थ से कामायनी का गौरव कई गुना बढ़ जाता है। इसी के आधार पर वह पद्मावत तथा रामचरितमानस जैसे ग्रंथों से होड़ ले पाती हैं।

**4. वेदना और निराशा का स्वर**- प्रसाद जी के छायावादी-काव्य में वेदना और निराशा स्वर सुनाई देते हैं। 'आँसू' उनके असफल प्रेम की गाथा है। उसमें विरह-वेदना के कारूणिक-चित्र अंकित है। उसका प्रत्येक छन्द वेदना की गहरी अनुभूति से भरा हुआ है। ऐसा लगता है कि मानो कवि का जीवन पीड़ा का साकार रूप बन गया है। अन्त में कवि व्यथित होकर निराशा-पूर्वक कहता हैं-

**'विकल वेदना फिर आई, मेरे चौदह, भुवन में।**
**सुख कभी न दिया दिखाई, विश्राम कहाँ जीवन में॥'**

**5. मानवतावाद**-प्रसाद जी मानवतावाद के हिमायती हैं। वे 'जिओ और जीने दो' के सिद्धांत के पक्षपाती हैं। उन्हें विश्व-मानव के कल्याण की चिन्ता है। इसीलिए वे विश्वव्यापी मानवता का चित्रण करते हुये लिखते हैं कि-

**'चेतना का सुन्दर इतिहास, अखिल मानव भावों का सत्य।**
**विश्व हृदय-पटल पर दिव्य, अक्षरों से अंकित हो नित्य ॥'**

**6. प्रकृति वर्णन**- भाव-पक्ष के क्षेत्र में प्रसाद का दूसरा प्रिय विषय प्रकृति-वर्णन है। उनकी कोई भी रचना ऐसी नही मिलेगी। जिसमें प्रकृति का भरपूर वर्णन न किया गया हो। यह वर्णन प्रभावशाली भी खूब है। यह दोनों प्रकार का हैं- प्रकृति के कोमल रूप का वर्णन और प्रकृति के भयंकर रूप का वर्णन। उदाहरण देखिए-,

**(अ) कोमल रूप का वर्णन**
**धीरे-धीरे हिम-आच्छादन**
**हटने लगा धरातल से,**
**जगी वनस्पतियाँ अलसाइं**
**मुख धोतीं शीतल जल से।**

**(ब) भयंकर रूप का वर्णन**
**किसका था भ्रू-भंग प्रलय-सा**
**जिसमें ये सब विकल रहे,**
**अरे! प्रकृति के शक्ति-चिन्ह ये**
**फिर भी कितने निबल रहे।**

**7. रहस्यवाद**- प्रसाद ने कहीं-कहीं रहस्यवाद की भी अभिव्यक्त की है। उनकी कई रचनाएँ इसी प्रकार की है। कामायनी में भी कई स्थल पर ऐसा ही मिलेगा।

उदाहरण देखिए-- **हे अनंत रमणीय! कौन तुम,**
**यह मैं कैसे कह सकता?**
**कैसे है! क्या हो! इसका तो**
**भार विचार न सह सकता।**

**जयशंकर प्रसाद के काव्य की कला पक्ष विशेषताएँ**

प्रसाद जी के कला-पक्ष की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

**1. भाषा**

खड़ी बोली को अधिकाधिक अभिव्यंजनशील बनाने वालों में प्रसाद का नाम भी विशेष आदर के साथ लिया जाता है। प्रसाद से पूर्व खड़ी बोली में मृदुलता तथा गंभीर अभिवंदना-शक्ति का अभाव था। प्रसाद ने उसे ये दोनों गुण दिये। उन्होंने खड़ी बोली को गंभीरतम भावों को अभिव्यक्ति देने योग्य सिद्ध कर दिखाया। 'कामायनी' और 'आँसू' दोनों ही इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। दोनों में खड़ी बोली के उच्चतम रूप का प्रयोग हुआ हैं।

कविवर प्रसाद की भाषा न केवल मंजुल, अर्थवान और सरस है, अपितु चित्रमयी, अलंकृत और भाववर्द्धक भी है। प्रसाद की भाषा में संस्कृत शब्दावली की प्रधानता है। अन्य काव्य रचनाओं के समान कामायनी में लक्षणापूर्ण भाषा के प्रयोग हुए है। इस प्रकार प्रयोग सुबोध और सुन्दर हैं। जैसे--

**पगली हा सम्भाल ले कैसे छूट पड़ा तेरा अंचल।**
**देख बिखरती है मणिराजी, अरी उठा बेसुध चंचला।।**

कविवर प्रसाद की भाषा की एक अन्य विशेषता है- मुहावरों और कहावतों के समुचित प्रयोग। इससे भाषा और भाव दोनों ही प्रभावोत्पादक हुए हैं।

प्रसादजी की भाषा संबंधी यह भी महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह शब्द निर्माण की उस प्रक्रिया को अपनाने वाली है, जो संक्षिप्तीकरण नाम वैशिष्ट्य रूप को लेकर आगे बढ़ती है। प्रसाद काव्य में शब्द संक्षिप्तीकरण पद्धति पर जोर देते है। जैसे- गुलाली। (गुलाल-से रंगों वाली) विकास चली (विकसित हुई), दीपती (दीप्त होती) आदि। इनकी भाषा की यह भी पहचान है कि यह ब्रजभाषा होती हुई क्रमशः खड़ी बोली में ढल गयी हैं।

**2. शैली**-

गीतात्मक एवं चित्रात्मकता उनकी शैलीगत प्रमुख विशेषता हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में विषय-वस्तु को प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इनके द्वारा कवि ने अन्तःकरण की गहनता, विदग्धता, भावुकता और मर्मिकता को सार्थक और सफल रूप में अभिचित्रित किया हैं।

**3. रस**-

प्रमाद जी के काव्य में मुख्य रूप से शृंगार (संयोग वियोग, करूण, शांत, वीर रस) के प्रवाह अपेक्षित और हृदयस्पर्शी रूप में है। इससे भावाभिव्यक्ति सोद्देश्यमयी हुई हैं।

**4. अलंकार योजना**

प्रसाद जी की कविता में अलंकारों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। उनका प्रयोग इतना सहज है कि वे सर्वत्र काव्य के सौंदर्य को पुष्ट करते है और उसकी श्रीवृद्धि करते हैं। कविता-कामिनी पर बोझ नहीं बनते हैं। छायावादी कवि होने के कारण उन्होंने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, द्वेष आदि भारतीय काव्यशास्त्र में विहित अलंकारों के माथ-साथ, मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय और ध्वन्यार्थ-व्यंजना आदि पाश्चात्य अलंकारों को भी मूल हृदय से अपनाया है और उनका सशक्त व सुन्दर प्रयोग किया है।

**5. छंद**

प्रसाद ने छंदों के प्रयोग में भी बड़ी सतर्कता से काम लिया है, जो छंद जिस भाव के अनुकूल पड़ता है, उसी का प्रयोग किया है। 'आँसू' में उन्होंने 28 मात्रा के आनंद छंद का प्रयोग किया है। आशा सर्ग में तोटक छंद का प्रयोग किया है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -1**

1. प्रसाद की प्रसिद्धि के प्रमुख आधार ग्रन्थों के नाम बताओं।

2. ध्रुवस्वामिनी नाटक किसकी रचना है?

## 11.4 जयशंकर प्रसाद के काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष

**उत्तर**-काव्य के दो पक्ष होते हैं-प्रथम भाव पक्ष तथा दूसरा कला पक्ष। इन्हें अनुभूति एवं अभिव्यक्ति के नामों से भी जाना जाता है। भाव पक्ष को यदि काव्य की आत्मा कहा जाता है तो कला पक्ष को काव्य का शरीर। काव्य का कला पक्ष या अभिव्यक्ति पक्ष भी उतना ही महत्त्वपूर्ण होता है जितना अनुभूति या भाव पक्ष। जिस प्रकार शरीर के बिना आत्मा की प्रतिष्ठा संभव नहीं है, ठीक उसी प्रकार कला या अभिव्यक्ति पक्ष के बिना अनुभूति या भाव पक्ष की प्रतिष्ठा संभव नहीं है।

महाकवि जयशंकर प्रसाद के काव्य का अनुभूति पक्ष जितना विशद एवं गंभीर है, उनके काव्य का कला पक्ष भी उतना ही समृद्ध एवं सक्षम है। प्रसाद जी के काव्य के कला पक्ष की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

**1. भाषा**-प्रयोग-पाषा अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। श्री जयशंकर प्रसाद भाषा के मर्मज्ञ विद्वान कवि थे। उन्होंने अपने काव्य में शुद्ध साहित्यिक एवं संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया है। उनके काव्य की भाषा में चित्रात्मकता और संगीतात्मकता की प्रमुख विशेषता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित पक्तियां देखिए जिनमें तीव्र विरह वेदना की अनुभूति व्यक्त हुई है-

**इस करुणा कलित हृदय में**
**अब विकल रागिनी बजती**
**क्यों हाहाकार स्वरों में**
**वेदना असीम गरजती?**

**2. कोमलकान्त पदावली का प्रयोग** - प्रसाद जी छायावादी कवि थे। उन्होंने अपने काव्य में माधुर्य गुण प्रधान भाषा का प्रयोग किया है। इसलिए उन्होंने व्यर्थ कर्कश शब्दों की अपेक्षा कोमलकान्त शब्दावली का प्रयोग किया है, जिससे उनके काव्य की भाषा में सरसता, संगीतात्मक आदि गुणों का समावेश हुआ है। उदाहरण के लिए निम्न पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

**सब भेद-भाव भुलवा कर दु:ख-सुख को दृश्य बनाता;**
**मानव कह रे! 'यह मैं हूँ' वह विश्व नीड़ बन जाता।'**
**श्रद्धा के मधु अधरों की छोटी-छोटी रेखाएँ;**
**रागारुण किरण कला-सीं विकसी बन स्मिति लेखाएँ।**

कामायनी के 'आनन्द सर्ग' में अनेक स्थलों पर कैलाश पर्वत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते समय कोमलकान्त पदावली का ही प्रयोग किया है।

**वह अगला समतल जिस पर है देवदारु का कानन;**
**घन अपनी प्याली भरते ते जिसके दल से हिमकन?**
**हां इसी ढलवे को जब बस सहज उत्तर जावें हम**
**फिर सम्मुख तीर्थ मिलेगा वह अति उज्ज्वल पावनतम।**

**3. चित्रात्मकता**–जयशंकर प्रसाद के काव्य की भाषा की अन्य प्रमुख विशेषता उसकी चित्रात्मकता है। कवि शब्दों के माध्यम से चित्र अंकित करने की कला में बेजोड़ है। 'कामायनी' महाकाव्य के श्रद्धा सर्ग में श्रद्धा के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कवि ने उसका अत्यन्त सजीव चित्र इन पंक्तियों में अंकित किया है।

**''नीले परिधान बीच सकुमार।**
**खिल रहा मृदुल अधखिला अंग।**
**खिला हो ज्यों बिजली का फूल**
**मेघ–घन बीच गुलाबी रंग।।''**

**4. शब्द योजना**–अन्य छायावादी कवियों की भाँति जयशंकर प्रसाद ने भी अपने काव्य में तत्सम शब्दावली का अधिक प्रयोग किया है। उनकी काव्य–भाषा में प्रयुक्त तत्सम शब्दों की बहुलता भावाभिव्यक्ति में प्रभावी भूमिका निभाती है। उनके काव्य में अरुण, तामरस, गर्भ, शिखा, सुरधनु, हेम, मंदिर, कुंभ, किसलय, मलयज, विहाग, निर्धार, रजनी, मारुत, शिशिर, व्योम–तम पुंज, संसृति, इरागत आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। यद्यपि उनके काव्य में तद्भव शब्दों यथा हाथ, आँख, पाँव आदि तथा देशज शब्दों यथा–झझा, क्यारी, बौने आदि तथा विदेशज शब्दों यथा–प्याली, आदमी आदि का भी प्रयोग हुआ परन्तु उसमें तत्सम शब्दों ही बाहुल्य है।

**5. अलंकार योजना**–जयशंकर प्रसाद ने अपने काव्य में शब्दालंकारों व अर्थालंकारों दोनों का ही सुंदर प्रयोग किया है। उन्होंने अलंकारों को केवल साधन माना है, साध्य नहीं। इसीलिए उनके काव्य में अलंकारों का सहज रूप में प्रयोग हुआ है। उनके काव्य में अलंकारों के प्रयोग के द्वारा चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयास नहीं किया गया है। उनके काव्य में मुख्यतः अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, सांगरूपक, मानवीकरण, वीप्सा, व्यतिरेक, विरोधाभास, असंगति आदि अलंकारों का सहज एवं सुंदर प्रयोग हुआ है। यहाँ पर उनकी अलंकार योजना को दर्शाने वाली कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

**(i) उपमा** – **मादकता से आए तुम,**
**संज्ञा–से चले गए थे।**
**(i) रूपक** – **नभ की खाली प्याली।**
**(i) वीप्सा** – **रो–रोकर, सिसक–सिसक कर।**
**(iv) मानवीकरण**– **लो यह लतिका भर लाई।**
**मधु मुकुल नवल रस गागरी।**

**6. बिम्ब योजना**–काव्य में चार प्रकार के बिम्ब प्रयुक्त होते हैं–ऐन्द्रिय विम्ब, वस्तुपरक बिम्ब, भाव बिम्ब तथा आध्यात्मिक बिम्ब। इनमें से ऐन्द्रिय बिम्ब, वस्तुपरक बिम्ब व भाव बिम्ब के अनेक भेद होते हैं। जयशंकर प्रसाद के काव्य में इन अधिकांश बिम्बों का प्रयोग हुआ है। उनके काव्य में ऐन्द्रिय बिम्ब के अन्तर्गत दृश्य बिम्ब, श्रव्य बिम्ब, स्पृश्य बिम्ब आदि, वस्तुपरक बिम्ब के अन्तर्गत रूप–सौन्दर्य बिम्ब, प्रकृति बिम्ब आदि का अधिक प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

**(i) स्पृश्य बिम्ब** – **अरुण किरण सम, कर से छू लो, खोलो प्रियतम! खोलो द्वार।**
**(ii) रूप–सौंदर्य बिम्ब** – **नील परिधान बीच सुकुमार, खिल रहा मृदुल अधखुला अंग।**
**खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग।**

**7. प्रतीक योजना**–जयशंकर प्रसाद ने अपने काव्य में प्रतीकों का भी सुंदर प्रयोग किया है। उन्होंने अधि कांशतः प्रतीक प्रकृति के सुंदर उपकरणों से संकलित किए हैं। ये प्रतीक भावोद्रेक को सजीवता, भावाभिव्यंजना को संरचना तथा काव्य को सौंदर्य प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए निम्न पंक्ति देखिए–

**बाँधा या विंधु को किसने इन काली जंजीरों से,**
**मणि वाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ है हीरों से।**

यहाँ पर मुख के लिए 'विधु', काले केशों के लिए 'काली जंजीरों', वेणी अथवा चोटी के लिए 'फणि' आदि प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार निम्न पंक्तियों में प्रतीक योजना देखिए जिसमें होंठों के लिए 'विदुम सीपी', दाँतों के लिए 'मोती के दाने' व नासिका के लिए 'शुक्र' प्रतीकों का प्रयोग हुआ है-

**''विदुम सीपी सम्पुट में मोती के दाने कैसे**
**है हंस न शुक यह है फिर क्यों चुनने को मुक्ता ऐसे।''**

**8. छंद-योजना**-कविवर प्रसाद जी ने अपनी सभी काव्य रचनाओं को छंद-बद्ध भाषा में लिखा है। उन्होंने सभी प्रचलित छंदों का प्रयोग किया है। उन्होंने अपनी आरंभिक रचनाओं में घनाक्षरी छंद का प्रयोग किया है। 'कामायनी' महाकाव्य में ताटक, रोला, सार, रूपमाला आदि छंदों का सफल प्रयोग किया है। 'कामायनी' के 'आनन्द सर्ग' की निम्नलिखित छंदबद्ध पक्तियां द्रष्टव्य है-

**गिरि निर्भर चले उछलते, छाया फिर से हरियाली;**
**सूखे तरु कुछ मुसकावे, फूटी पल्लव में लाली।**
**वे युगल वहीं अब बैठे, संसृति की सेवा करते,**
**तोष और देकर सब, की दु:ख ज्याला हरते।**

**9. शब्द-शक्ति**-प्रसाद जी के काव्य में यद्यपि तीनों शब्द-शक्तियों अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना का प्रयोग हुआ है, किन्तु लाक्षणिक प्रधान काव्य होने के कारण उसमें लक्षणा शब्द-शक्ति का अत्यधिक प्रयोग किया है। अनेक स्थलों पर अभिधा एवं व्यंजना शब्द-शक्ति के उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। कवि ने अपनी सुप्रसिद्ध काव्य-रचना 'आँसू' में हृदय के सूक्ष्म उद्‌गारों को अभिव्यक्त करते समय यत्र-तत्र लक्षणा शब्द-शक्ति का प्रयोग किया जाता है, यथा-

**''इस करुणा कलित हृदय में**
**अब विकल रागिनी बजती है**
**क्यों हाहाकार स्वरों में**
**वेदना असीम गरजती है?''**

**10. गुण एवं रस**-प्रसाद जी के काव्य में ओज, प्रसाद व माधुर्य तीनों गुणों का समावेश हुआ है। उन्होंने अपने काव्य में रस की सुन्दर योजना की है। उनके काव्य में भयानक, अद्‌भुत, वीर, रौद्र, वात्सल्य, करुण शृंगार आदि रसों का सफल व सुन्दर परिपाक हुआ है। उदाहरण के लिए निम्न पक्तियों में शृंगार रत योजना द्रष्टव्य है

**(क) स्थायी भाव - मादक थी मोहमयी थी मन बहलाने की क्रीड़ा।**
**अब हृदय हिला देती है, वह मधुर प्रेम की पीड़ा ॥**
**(ख) उद्दीपन - जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति-सी छाई।**
**दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई।**

अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रसाद जी के काव्य का भाव पक्ष जितना समृद्ध है, कला पक्ष भी उतना ही भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। भाषा प्रयोग, शब्द चयन, अलंकार एवं छंद योजना आदि की दृष्टि से प्रसाद जी का काव्य छायावादी भाषा-शैली का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। अत: प्रसाद जी का काव्यकला की दृष्टि से उत्तम काव्य है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -2**

1. हिन्दी की प्रथम एकांकी का नाम क्या है?
2. एक घूंट का प्रकाशन वर्ष क्या है?

## 11.5 सारांश

कवि प्रसाद ने अपनी रचनाओं में नारी के विविध, गौरवमय स्वरूपों के अभिनव चित उपस्थित किया है। 'प्रसाद के काव्य का कलापक्ष भी पूर्ण सशक्त और संतुलित है। उनकी भाषा, शैली, अलंकरण, छन्द-योजना, सभी कुछ एक महाकवि के स्तरानुकूल हैं। प्रसाद जी की भाषा शैली में परम्परागत तथा नव्य अभिव्यक्ति कौशल का सुन्दर समन्वय है। उनकी रचनाओं में जीवन का विशाल क्षेत्र समाहित हुआ है। प्रेम, सौन्दर्य, देश-प्रेम, रहस्यानुभूति, दर्शन, प्रकृति चित्रण और धर्म आदि विविध विषयों के अभिनव और आकर्षक भंगिमा के साथ अपने काव्यप्रेमियों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। ये सभी विषय कति की शैली और भाषा की असाधारणता के कारण अछूते रूप में सामने आते हैं। जयशंकर प्रसाद ने हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई और वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई।

## 11.6 कठिन शब्दावली

**स्तरोन्नत**- स्तर ऊपर उठाना

**समाहित** - संगृहीत

**कमनीय** - आकर्षक

**भंगिमा** - वक्रता

**रहस्योद्घाटन** - रहस्य प्रकट करने की क्रिया या भाव

## 11.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. आँसू और कामायनी
2. जयशंकर प्रसाद

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. एक घुँट
2. 1929 ई.

## 11.8 संदर्भित पुस्तकें


1. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. रमेशचंद्र शाह, भारतीय साहित्य के निर्माता जयशंकर प्रसाद, साहित्य अकादमी, दिल्ली।
3. करूणाशंकर उपाध्याय, जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।


## 11.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए ?

प्रश्न. जयशंकर प्रसाद की भाषा शैली कैसी है, स्पष्ट कीजिए ?

प्रश्न. आधुनिक हिंदी साहित्य में जयशंकर प्रसाद का क्या योगदान है, स्पष्ट कीजिए ?

*****

# इकाई–12
# जयशंकर प्रसाद : व्याख्या भाग

**संरचना**

12.1 भूमिका

12.2 उद्देश्य

12.3 जयशंकर प्रसाद: व्याख्या भाग

- 'ले चल वहाँ भुलावा देकर' (कविता) : व्याख्या भाग
- 'बीती विभावरी जाग री' (कविता) : व्याख्या भाग
- 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' (कविता) : व्याख्या भाग
- 'हृदय का सौंदर्य (कविता) : व्याख्या भाग

स्वयं आकलन प्रश्न

12.4 सारांश

12.5 कठिन शब्दावली

12.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

12.7 संदर्भित पुस्तकें

12.8 सात्रिक प्रश्न

## 12.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का गहनता से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम जयशंकर प्रसाद की कविताओं की व्याख्या करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनकी ले चल वहाँ भुलवा देकर, बीती विभावरी जाग री, अरुण यह मधुमय देश हमारा तथा हृदय का सौन्दर्य कविता की व्याख्या करेंगे।

## 12.2 उद्देश्य

इकाई बारह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि –

1. ले चल वहाँ भुलावा देकर कविता का मूल भाव क्या है?
2. बीती विभावरी जागरी में किसके सौन्दर्य का वर्णन है?
3. अरुण यह मधुमय देश हमारा कविता का सार क्या है?
4. हृदय का सौन्दर्य कविता का सन्देश क्या है?

## 12.3 जयशंकर प्रसाद : व्याख्या भाग (कविता)

### ● ले चल वहाँ भुलावा देकर (कविता) : व्याख्या भाग

**कविता का सार–'ले चल वहाँ भुलावा देकर'** जयशंकर प्रसाद जी की एक महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है। इस कविता में कवि अपने मन को एक नाविक के रूप में सम्बोधित करता हुआ कहता है कि वह उसकी जीवन नौका को संसार की भीड़-भाड़ से दूर, प्रकृति के शान्त, सुखद आँगन में ले जाए। कवि कहता है कि, 'हे मेरे मन! मुझे तू भुलावा देकर यहाँ से दूर ले चल। हे नाविक! मुझे उस एकान्त में ले चल जहाँ पर विशाल समुद्र, आकाश के कानों में अपने मन की बात सुना रहा हो अर्थात् अपनी प्रेमकथा सुना रहा हो। हे मेरे मन! इस शोर भरी दुनिया को छोड़कर मुझे शान्त क्षेत्र में ले चल। कवि कहता है हे मेरे मन! तू मुझे उस स्थान पर ले चल जहाँ संध्या की तरह जीवन अपनी थकी काया को विश्राम दे रहा हो। तू मुझे उस स्थान पर ले चल जहाँ नीले आकाश पर से तारों की पंक्ति अपना प्यार बरसा रही हो। तू मुझे ऐसी घनी शान्तिपूर्ण छाया में ले चल जहाँ इस पर संसार में स्वयं ईश्वर सांसारिक

क्रियाकलापों का हिस्सा बनता हो। सृष्टि प्रभुमय कल्याणकारी दिखाई पड़े। कवि अपने मन को वहाँ ले चलने के लिए कहता है जो श्रम और आराम क्षितिज की तरह मिलते दिखती हो अर्थात् श्रम की समाप्ति हो जाती हो और वह विश्राम करने लगता हो। हे मेरे मन! तू मुझे वहाँ ले चल, जहाँ प्रात:कालीन उषा की अमर ज्योति से नए जीवन का जागरण हो रहा हो।

**ले चल यहाँ भुलावा देकर**
**मेरे नाविक! धीरे-धीरे**
**जिस निर्जन में सागर लहरी**
**अम्बर के कानों में गहरी**
**निश्छल प्रेम-कथा कहती हो**
**तज कोलाहल की अवनि रे।**

**शब्दार्थ-नाविक** = मल्लाह, खवैया। **निर्जन** = सुनसान। **अम्बर** = आकाश। **निश्छल** = सरल, छल रहित। **कोलाहल** = शोर। **अवनि** =पृथ्वी।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक में सकलितै हिन्दी के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि **'जयशंकर प्रसाद'** विरचित कविता **'ले चल वहां भुलावा देकर'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने मन से आग्रह किया है कि यह उसे इस शोर भरी जिन्दगी से, भीड़ भरी दुनिया से दूर ले जाए।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि अपने मन को संबोधित करता हुआ कहता है कि है मेरे मन! तू मुझे भुलावा देकर इस कोलाहल भरी दुनिया से कहीं दूर ले चल। मेरा यह मन संसार से बंधा है, इसे छोड़ना ही नहीं चाहता। परन्तु इससे परेशान भी रहता है इसलिए कवि अपने मन रूपी नाविक से कहता है वह उसे बहला फुसलाकर किसी सुनसान स्थान में ले चल। कवि कहता है कि हे मेरे नाविक, तू मुझे ऐसे सुनसान सागर तट पर ले चल जहाँ पर समुद्र आकाश के कानों में अपनी सीधी-सच्ची प्रेमकथा सुना रहा हो। हे मेरे नाविक तू मुझे इस भीड़ भरी दुनिया से कहीं दूर ले चल। कहने का भाव यह है कि मनुष्य संसार में उलझा रहता है और दु:ख भी सहता है। कवि अपने मन से कहता है कि उसे सुनसान एकान्त में, प्रकृति की गोद में ले जाए।

**विशेष**

1. छायावादी कवि सांसारिक संघर्ष से दूर भाग कर प्रकृति की गोद में शरण लेने को तैयार रहता है। एक प्रकार से यह कविता पलायनवादी है। हालांकि प्रसाद जी मूलत: आनन्दवादी थे और संसार को भोग भूमि मानते थे।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग हुआ है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. पुनरुक्तिप्रकाश एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**जहाँ सांझ-सी जीवन छाया**
**ढीले अपनी कोमल काया**
**नील नयन से ढुलकाती हो**
**ताराओं की पाँत घनी रे।**

**शब्दार्थ-नयन** = आँखें। **ढुलकाती** = बहाती। **पांत** = पंक्ति।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **'जयशंकर प्रसाद'** विरचित कविता **'ले चल वहां भुलावा देकर'** से अवतरित किया गया है। इस कविता में कवि ने अपने मन रूपी नाविक से उसे संसार के शोर और भीड़ से परे ले जाने का आग्रह किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि अपने मन से कहता है कि हे मेरे मन! मुझे ऐसे स्थान पर ले चल जहाँ पर थकी हारी शाम की तरह जिन्दगी अपनी थकी काया को आराम दे रही हो। कवि ढलती साँझ के एकान्त में चला जाना चाहता है। वह ऐसी शाम का आनन्द लेना चाहता है जिसमें आकाश अपनी नीली आँखों से ताराओं की घनी पंक्तियां बिखेर रहा हो। मानो संध्या रूपी जिदगी रो रही हो। अर्थात् कवि किसी ऐसी संध्या का इन्तजार कर रहा है? जहाँ पर वह पूरी तरह विश्राम कर सके। वास्तव में कवि वह प्रकृति के सायंकालीन सौन्दर्य में खो जाना चाहता है।

**विशेष**
1. कवि का प्रकृति-प्रेम स्पष्ट है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग हुआ है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास, उपमा, रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**जिस गंभीर मधुर छाया में**
**विश्व चित्र-पट चल माया में**
**विभुता विभु-सी पड़े दिखाई**
**दुख-सुख वाली सत्य बनी रे।**

**शब्दार्थ-मधुर** = प्रिय। **चित्रपट** = पर्दा। **चल** = चंचल, नाशवान। **विभुता** = प्रभु की माया। **विभु** = प्रभु

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **'जयशंकर प्रसाद'** विरचित कविता **'ते चल वहां भुलावा देकर'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने प्रकृति के सौन्दर्य में प्रभु को रूप देखना चाहता है, सृष्टि में स्रष्टा का रूप निहारना चाहता है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे मेरे मन। तू मुझे ऐसे स्थान पर ले चल जहाँ पर घनी और मन को लुभाने वाली छाया फैली हुई हो। सारा संसार उस चंचल छाया में झलक रहा हो। प्रभु की प्रभुत्ता संसार के सौंदर्य में साकार हो उठी हो। ईश्वर भी सांसारिक सुख-दुःख में प्रतिबिम्बित होता दिखाई दे। तू मुझे उस स्थान पर ले चल। अर्थात् कवि एकान्त स्थल पर प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द लेना चाहता है, उसमें खो जाना चाहता है। प्रकृति में ही प्रभु के दर्शन करना छायावादी प्रवृत्ति है।

**विशेष**
1. प्रकृति में ईश्वर का प्रतिबिम्ब देखना छायावादी-रहस्यवादी प्रवृत्ति है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग हुआ है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. पदमैत्री, रूपक एवं उपमा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**श्रम विश्राम क्षितिज बेला से**
**जहाँ सृजन करते मेला से**
**अमर जागरण उषा नयन से**
**बिखराती हो ज्योति घनी रे।**

**शब्दार्थ-क्षितिज** = वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हों। **बेला** = समय । **सृजन** = निर्माण ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित। हिंदी के सुप्रसिद्ध छायावादी रहस्यवादी कवि जयशंकर प्रसाद विरचित कविता **'ले चल वहां भुलावा देकर'** से अवतरित है। कवि ऐसे आनन्दलोक में पहुँचना चाहता है जहाँ समरसता हो, संतुलन हो।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे मेरे मन तू मुझे भुलावा देकर ऐसे स्थान पर ले चल जहाँ पर श्रम और विश्राम क्षितिज की तरह आपस में मिलते दिखते हों। शाम के समय। दन और रात का मिलन होता है। श्रम और विश्राम के मिलन से ही सृष्टि निर्मित है, बनी है और इसी से बह चल रही है। समस्त विश्व इन्हीं दो तत्त्वों का मेला है। कवि उस उषा को देखना चाहता है जिसकी सुनहली रश्मियों से जागरण का संदेश मिलता है। कवि उस घने ज्ञान के प्रकाश को पाना चाहता है, जिससे अज्ञानता और मोह का अन्धकार पूरी तरह मिट जाता है।

**विशेष**
1. कवि संतुलन और समरसता में ही सृष्टि का विकास मानता है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग हुआ है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**● बीती विभावरी जाग री (कविता) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार-'बीती विभावरी जाग री'** जयशंकर प्रसाद जी की एक महत्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है जो मूल रूप से प्रसाद जी के काव्य **'लहर'** में संकलित है। इस कविता में कवि ने प्रात:कालीन सौंदर्य का अद्‌भुत चित्रण किया है। एक सुन्दर युवती, श्रृंगार किए, अपने प्रिय की प्रतीक्षा करते-करते सो गई है। उसकी सखी उसे जगाते हुए कहती है कि हे प्रिय सखी, उठो! अब तो रात बीत चुकी है। अर्थात् तुम्हारे दु:ख का समय समाप्त हो चुका है। अब तो सितारों रूपी घड़ों को उषा, आकाश रूपी पनघट में डुबा रही है। अर्थात् प्रात:काल होने वाला है। जागरण का समय हो गया है। प्रात: हो रही है इसलिए पक्षियों की चहचहाट सुनाई पड़ रही है। नए उगे लाल पत्ते पवन में हिल रहे हैं और बेलें भी रस और फूल की अजुलियाँ भर कर प्रात: की देवी का स्वागत कर रही है। सखी अपनी सहेली से कहती है कि तू अभी भी अपने प्रिय की याद में खोई है, तुम्हारी अलकों से अभी भी सुगन्ध आ रही है। हे सखी तू सोलह शृंगार किए अभी भी पति के आने की प्रतीक्षा में सोई हुई है। तुम्हारी आँखों में अभी भी विरह का भाव है जबकि अब तो मिलन की बेला आ पहुँची है, तुम्हारा प्रियतम आने वाला है।

**बीती विभावरी जाग री**
**अंबर पनघट में डूबो रही**
**ताराघट उषा नागरी।**

**शब्दार्थ-विभावरी** = रात्रि। **नागारी** = चतुर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिंदी के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद विरचित कविता **'बीती विभावरी जाग री'** से अवतरित है। यहाँ कवि ने प्रात: के आगमन का सुन्दर चित्र अंकित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी! अब तो रात व्यतीत वाली है, तुझे जाग जाना चाहिए। अब आलस करके सोते रहने का समय नहीं, क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि जाग रही है। उधर पूर्वी आकाश में उषा की कोमल किरणें फैल रही हैं और तारों की चमक मंद पड़ रही हैं। ऐसा लगता है जैसे उषा रूपी सुन्दरी, तारों

रूपी घड़ों को, आकाश रूपी समुद्र में डुबो कर पानी भर रही है। कहने का भाव यह है कि आकाश में तारे धुंधले पड़ रहे हैं, छुप रहे हैं।

**विशेष**

1. प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पनघट से पानी भरने का दृश्य अंकित कर कवि ने भारतीय ग्रामीण परिवेश का चित्र अंकित किया है।
2. भाषा भावपूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।

**खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा**
**किसलय का अंचल डोल रहा**
**लो यह लतिका भी भर लाई**
**मधु मुकुल नवल रस गागरी।**

**शब्दार्थ-खग** = पक्षी । **कुल** = समूह। **कुल-कुल** = मधुर स्वर। **लतिका** = नन्हीं सी बेल। **नवल** = नयी। **रसगागरी** = रस का गागर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश 'आधुनिक हिन्दी कविता' नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिंदी के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद विरचित कविता **'बीती विभावरी जाग री'** से अवतरित है। कवि ने यहाँ प्रात: के सौन्दर्य का चित्रण किया है और उसे अपनी प्रिया के सौन्दर्य के रूप में देखा है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में सखी अपनी सखी को जगाते हुए कहती है कि पक्षियों के समूह ने भी प्रात: होते ही अपने मधुर कण्ठों से गाना आरम्भ कर दिया है। उनकी मधुर चहचहाट वातावरण में व्याप्त हो रही है। कोमल, नवविकसित पत्तियों का आचल भी पवन के झकोरों में हिल रहा है। कवि कहता है कि उधर देखो, वह छोटी-सी बेल पर खिली कली भी अपने रस की गगरी भर कर ले आई है। इस रस का पान अभी तक किसी ने नहीं किया है। ऐसा लगता है कि कलियाँ, पक्षियों को रस-पान का निमंत्रण दे रही हैं।

**विशेष** 1. प्रकृति का मानवीकरण हुआ है।
2. भाषा भावपूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. यमक, रूपक, मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**अधरों में राग अमंद पिये**
**अलकों में मलयज बन्द किये**
**तू अब तक सोई है आली।**
**आँखों में भरे विहाग री!**

**शब्दार्थ-अधर** = ओंठ। **अमंद** = जो धीमा न पड़े। **अलकों** = लटों वाली। **आली** = सखी। **विहाग** = वियोग में गाया जाने वाला गीत।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिंदी के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद विरचित कविता **'बीती विभावरी जाग री'** से अवतरित है। कवि ने प्रात: के सौन्दर्य में अपनी प्रेयसी का सौन्दर्य देखा है। यहाँ कवि ने आनन्ददायी जागरण बेला में अपनी प्रिया को भी सचेत होने और शोक त्यागने का सलाह दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में सखी अपनी सखी से कहती है कि हे सखी। तुम्हारे अधरों पर अभी भी प्यार का कभी न पड़ने वाला, कम न पड़ने वाला राग है। अभी भी तुम्हारें ओठों पर प्रेम गीत सोया है। तुम्हारी सुगन्धित अलकों में मानों सुगंधित पवन सोया है अर्थात् तुम्हारे बाल अत्यन्त सुगन्धित हैं। हे सखी! तू अभी तक सोई हुई है, तुम्हारी आँखों में अभी भी विरह गीत समाया है, तू अभी भी खिन्न है जबकि सारी प्रकृति भोर के आनन्द में डूबी है? हे प्रिय! तुम्हें भी स्वस्थ मन से प्रात: के सौन्दर्य का आनन्द लेना चाहिए।

**विशेष**-

1. कवि कहता है कि ऐसी नायिका का चित्र अंकित हुआ है जो अपने चारों ओर के वातावरण से अपरिचित, श्रृंगार किए अपने प्रिया की प्रतीक्षा कर रही है। उसे प्रिय के आगमन का पता ही नहीं चला।
2. भाषा भावपूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. अंत्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

**● अरुण यह मधुमय देश हमारा ( कविता ) व्याख्या भाग**

**कविता का सार-'अरुण यह मधुमय देश हमारा'** जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित एक प्रसिद्ध गीत है, जो उनके नाटक चंद्रगुप्त में संकलित है। सेल्यूकस की बेटी भारत आने पर भारत के सौंदर्य पर मुग्ध होकर यह गीत गाती है। कार्नेलिया कहती है कि प्यार के लाल रंग में रंगा यह देश सचमुच बहुत ही सुन्दर है। यह इतना बड़ा और करुणा भरा देश है कि यहाँ तो क्षितिज को भी मानो सहारा मिल जाता है। वह भी धरती पर बैठा प्रतीत होता है। वह भारत के प्रात:कालीन सौन्दर्य का वर्णन करती हुई कहती है कि रस से भरे कमलों के पराग पर, तट पर उगे वृक्षों की डालियाँ मानो नृत्य करती हैं। चारों ओर हरियाली पर नया जीवन बिखरा है अर्थात् ताजी हरी घास नाच रही है। चारों तरफ प्रात: की लालिमा सौभाग्यशाली कुंकुम (रोली) की तरह बिखरी है। कार्नेलिया आकाश की ओर देखते हुए कहती है कि इन्द्रधनुष जैसे अपने छोटे-छोटे रंग-बिरंगे पंखों के सहारे उड़ते हुए असंख्य पक्षी, यहाँ सुदूर देशों से आते हैं। उन्हें भी लगता है कि भारत ही उनकी असली शरण-स्थली है। यह यह देश है जहाँ आँखें दूसरों के दु:ख में अश्रु बहाने लगती हैं। यहाँ पर विशाल समुद्र की बेचैन लहरों को भी शान्ति मिल जाती है। प्रात: के समय उषा सूर्य रूपी सुनहला घड़ा लेकर आती है जिसमें सुखों का भण्डार है और इस धरती पर उड़ेल देती है। सुनहली धूप से भारत की धरती भर जाती है। ऐसे समय में जब अभी आकाश के तारे ऊँघ रहे होते हैं, उषा यहाँ सुख बरसा जाती है।

**अरुण यह मधुमय देश हमारा।**
**जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।**
**सरसतामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरु शिखा मनोहर,**
**छिटका जीवन-हरियाली पर मंगल-कुमकुम सारा।**

**शब्दार्थ-अरुण** = लाल, प्यार का रंग, उषा की लाली। मधुमय = मधु से भरा हुआ। **अनजान** = असीम, जिसे जाना नहीं जाना जाता। **क्षितिज** = जहाँ धरती आकाश मिलते हैं वह काल्पनिक जगह। **सरस** = रस भरे। **तामरस** = कमल । **गर्भ** = भीतर। **विभा** = दौलत, धन। **गर्भ विभा** = फूलों के भीतर छुपी दौलत अर्थात् पराग। **शिखा** = चोटी। **मनोहर** = सुन्दर। **छिटका** = बिखरा। **मंगल** = कल्याणकारी। **कुमकुम** = लाली।

**प्रसंग**–प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित गीत **'अरुण यह मधुमय देश हमारा'** से अवतरित है। यह गीत **'चन्द्रगुप्त'** नाटक में सेल्यूकस की बेटी द्वारा गाया गया है। इस गीत में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत वर्णन है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कार्नेलिया कहती हैं कि प्रात: काल की लाल किरणों में नहाया हुआ हमारा यह देश भारतवर्ष अत्यधिक मनमोहक है, सुन्दर है। यह देश इतना बड़ा अथवा विशाल है कि यहाँ पहुंचकर मानो आकाश को भी विश्राम का स्थान मिल जाता है। दूर क्षितिज तक भारत की धरती फैली है और आकाश उस पर विश्राम करता प्रतीत होता है। इस असीम, अनजान आकाश को भी भारत सहारा देता है। रस से भरे कमलों पर वृक्षों की सुन्दर डालियाँ झूम रही हैं, कमलों का पराग उड़ रहा है। हरियाली में नया जीवन आ गया है। घास पर फैली बाल–सूर्य की किरणें घास को लाल चमक प्रदान कर रही हैं। चारों ओर घास का कुमकुम बिखरा हुआ प्रतीत होता है। अर्थात् भारत का प्रात:कालीन सौंदर्य अद्भुत होता है।

**विशेष** 1. प्रकृति के सौंदर्य का सुन्दर चित्रण हुआ है। देश–प्रेम की अभिव्यक्ति भी इन पंक्तियों में हुई है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. पूरा पद तत्सम शब्दावली प्रधान है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है
5. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मयलय समीर सहारे,**
**उड़ते खगे जिस ओर मुंह किये, समझ नीड़ निज प्यारा।**
**बरसाती आंखों के बादल बनते जहाँ भरे करुणाजल,**
**लहरें टकराती अनन्त को पाकर जहाँ किनारा।**

**शब्दार्थ–लघु सुरघनु** = छोटे–छोटे इन्द्रधनुष। **खग** = पक्षी। **नीड़** = घोंसला। **निज** = अपना। **करुणा जल** = दया से भरकर आँसू बहाना। **अनन्त** = असीम, समृद्ध।

**प्रसंग**–प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित गीत **'अरुण यह मधुमय देश हमारा'** से अवतरित है। यह गीत **'चन्द्रगुप्त'** नाटक में सेल्यूकस की बेटी द्वारा गाया गया है। इस गीत में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत वर्णन है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कार्नेलिया कहती है कि यहाँ पक्षी भी प्रकृति के सौंदर्य का आनन्द लेते हैं। दूर देशों के पक्षी अपने रंग–बिरंगे पंखों को फड़फड़ाते हुए भारत की ओर उड़े चले आते हैं। पक्षियों को भी लगता है कि उदार भारत उनका घोंसला है, यहाँ उन्हें प्यार और सुरक्षा मिलेगी। कार्नेलिया कहती है कि भारत में वर्षा ऋतु के बादल साधारण वर्षा नहीं करते, अपनी करुणा का जल बरसाते हैं। वर्षा ऋतु भारत में सुख का संचार करती है। अनन्त समुद्र की बेचैन लहरों को भी भारत के तटों पर ही सहारा मिलता है, यहाँ आकर वे भी शान्त हो जाती हैं। कवि कहना यह चाहता है कि भारत सभी के लिए असीम शक्ति और सुरक्षा का स्थान रहा है।

**विशेष** 1. सभी जीव–जन्तुओं को भारत में शरण मिलती है, यह बात स्पष्ट की गई है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. पूरा पद तत्सम शब्दावली प्रधान है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
5. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**हेमकुम्भ ले उथा सवेरे भरती दुलकाती सुख मेरे,**
**मदिर ऊँघते रहते जब जग कर रजनी भर तारा॥**

**शब्दार्थ-हेमकुम्भ** = सोने का पड़ा, सूर्य। **मदिर** = नशे में, अलसाए हुए। **रजनी** = रात।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित गीत **'अरुण यह मधुमय देश हमारा'** से अवतरित है। यह गीत **'चन्द्रगुप्त'** नाटक में सेल्यूकस की बेटी द्वारा गाया गया है। इस गीत में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का अद्‌भुत वर्णन है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कार्नेलिया कहती है कि इस देश में उषा रूपी सुन्दरी सवेरे अपने हाथों में सोने का सुनहरा घड़ा अर्थात् बाल सूर्य को उठा कर लाती है। उषा इस बड़े में मानों असंख्य सुख भर कर लाती है और उसे भारत की धरती पर उड़ेल देती है। इसी से भारत की प्रात: सुन्दर और सुखद होती है। ऐसे समय में आकाश में सितारे रात भर जाग कर ऊँघते रहते हैं, अलसाए रहते हैं, उनकी आँख भी अभी ठीक से नहीं खुली होती।

**विशेष** 1. भारत की प्रात: सुनहली एवं सुन्दर होती है। भारत में सूर्योदय भी जल्दी होता है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. पूरा पद तत्सम शब्दावली प्रधान है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
5. अनुप्रास, रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**● हृदय का सौंदर्य ( कविता ): व्याख्या भाग**

**कविता का सार-'हृदय का सौंदर्य'** जयशंकर प्रसाद जी की एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध कविता है। इस कविता के माध्यम से कवि ने हृदय के सच्चे सौंदर्य को प्रकट किया है। कवि सारे संसार की सुख समृद्धि की कामना करता है। वैदिक ऋषि की तरह वह सब के मन में प्रेम, करुणा, सदाशयता का भाव देखना चाहता है। प्रकृति में सर्वत्र सौन्दर्य बिखरा है। नदी का तट शान्तिपूर्ण है, सुनहले सूर्य की किरणें सारी धरती को ढक लेती है। रात्रि को चाँदनी चुपचाप आनन्द मनाती है और प्रात:काल फूल हँसते हुए आनन्दित होते हैं। प्रकृति में चारों ओर एक से एक सुन्दर दृश्य देखे जा सकते हैं, ये सब प्रकृति के खिलवाड़ का हिस्सा हैं। संसार में सब कुछ सुन्दर है। कुछ विकसित हो रहे हैं। कुछ समाप्त हो रहे हैं। जीवन-मरण प्रकृति का अटल नियम है। कवि उपदेश देता है कि प्रकृति के सौंदर्य से हमें भी अपना हृदय उदार बनाना सीखना चाहिए। जब शुद्ध मन से प्रकृति के इस सौन्दर्य को देखोगे तभी तुम्हें चाँदनी की मधुर चमक और मल्लिका के फूल की मुस्कुराहट का पता चलेगा। कवि चाहता है कि हमारे हृदय के प्रेम में सारा संसार सिमट आए और जिन लोगों का हृदय कठोर है वह भी इस सुन्दर वातावरण में करुणा से भर जाए। हमारे मन में भी प्यार की लहरें उठें और उसके किनारे सुगन्ध का वास हो अर्थात् हमारा मन मिठास और सुगंध से भरा हो।

**नदी का विस्तृत विवरण बेला शांत,**
**अरुण मंडल का स्वर्ण विलास**
**निशा का नीरव चंद्र-विनोद,**
**कुसुम का हंसते हुए विकास।**

**शब्दार्थ-वेला** = तट। **विस्तृत** = फैला हुआ। **अरुण** = सूर्य। **विलास** = मनोहर चेष्टाएँ। **निशा** = रात। **नीरव** = शान्त, चुप। **विनोद** = मनोरंजन।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक में संकलित हिन्दी के प्रसिद्ध छावावादी कवि जयशंकर प्रसाद विरचित्त कविता **'हृदय का सौन्दर्य'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने हृदय के सच्चे सौंदर्य को प्राकृतिक उपमानों के माध्यम से प्रकट किया गया है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हृदय का सच्चा सौंदर्य नदी के विशाल फैले हुए शान्त सुन्दर तट की भाँति होता है। वह सूर्य और उसके परिवार द्वारा प्रस्तुत सुन्दर दृश्य की भाँति आनन्ददायी होता है। हृदय का सच्चा सौंदर्य रात को शान्त चाँदनी की भाँति बिखर कर हृदय को प्रसन्न करता है और फूलों की भाँति हँसते हुए विकसित होता रहता है।

**विशेष** 1 हृदय के सच्चे सौंदर्य को प्रकृति के माध्यम से प्रकट किया गया है।

2. भाषा प्रवाहयुक्त साहित्यिक खड़ी बोली है।

3. शब्द चयन उचित एवं सार्थक है।

4 प्रसाद गुण का प्रयोग है।

5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।

6. अनुप्रास, मानवीकरण एवं उल्लेख अलंकारों का प्रयोग है।

**एक-से एक मनोहर दृश्य,**
**प्रकृति की क्रीड़ा के सब छन्द,**
**सृष्टि में सब कुछ है अभिराम,**
**सभी में है उन्नति का ह्रास।**

**शब्दार्थ**–**मनोहर** = मन को भाने वाला, मन को हरने वाला। **क्रीड़ा** = खेल। **छन्द** = रंग–ढंग। **अभिराम** = सुन्दर। **ह्रास** = पतन।

**प्रसंग**–प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित हिन्दी के प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद विरचित कविता **'हृदय का सौन्दर्य'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने हृदय के सच्चे सौंदर्य को प्राकृतिक उपमानों के माध्यम से प्रकट किया गया है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि प्रकृति की शोभा अद्‌भुत है। एक से बढ़कर एक सुन्दर दृश्य यहाँ उपस्थित हैं। ये सब प्रकृति के खेल हैं, प्रकृति के अपने ही रंग–ढंग के परिणाम हैं। सृष्टि में सब कुछ सुन्दर है। यहाँ पर विकास और पतन एक साथ दिखाई पड़ते हैं। अर्थात् प्रकृति अत्यधिक सुन्दर है और उसका प्रत्येक कार्य–व्यापार आनन्ददायी है।

**विशेष** 1. संसार में जो कुछ भी दिखता है वह प्रकृति अथवा माया का ही खेल है।

2. भाषा प्रवाहयुक्त साहित्यिक खड़ी बोली है।

3. शब्द चयन उचित एवं सार्थक है।

4 प्रसाद गुण का प्रयोग है।

5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।

6. अनुप्रास, मानवीकरण एवं उल्लेख अलंकारों का प्रयोग है।

**बना लो अपना हृदय प्रशान्त**
**तनिक तब देखो वह सौंदर्य**
**चंद्रिका से उज्ज्वल आलोक,**
**मल्लिका-सा मोहन मृदुहास।**

**शब्दार्थ**–**प्रशान्त** = अत्यधिक शान्त। **तनिक** = थोड़ा–सा। **उज्ज्वल** = चमकदार । मृदुहास = कोमल हँसी।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक में संकलित हिन्दी के प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद विरचित कविता **'हृदय का सौन्दर्य'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने हृदय के सच्चे सौंदर्य को प्राकृतिक उपमानों के माध्यम से प्रकट किया गया है।

**व्याख्या** इन पंक्तियों में कवि मनुष्य को संबोधित करते हुए कहता है कि हे मनुष्य। तुम भी प्रकृति की तरह अपने मन को शान्त बना लो। तभी तुम प्रकृति के इस सौंदर्य को देख पाओगे। शान्त मन को ही चांदनी अधिक सुन्दर दिखाई पड़ती है। यही नहीं शान्त मन वाले व्यक्ति के मुख पर मल्लिका के फूल सी मुस्कान बिखरी दिखाई पड़ती है। कवि हृदय के सौन्दर्य का प्रभाव बताते हुए कहता है कि शान्त मन के व्यक्ति को प्रकृति में अपूर्व एवं अद्‌भुत सौन्दर्य दिखाई पड़ता है।

**विशेष** 1. स्पष्ट किया गया है कि शुद्ध हृदय और शान्त मन हमारे चेहरे को मुस्कान और उज्जवलता से भर देता है।
2. भाषा प्रवाहयुक्त साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. उपमा अलंकार का प्रयोग है।

**अरुण हो सकल विश्व अनुराग**
**करुण हो निर्दय मानव चित्त**
**उठे मधु लहरी मानस में,**
**कूल पर मलयज का हो वास।**

**शब्दार्थ-अरुण** = संध्या की लालिमा। **सकल** = सारा। **विश्व** = संसार। **अनुराग** = प्रेम। **निर्दय** = कठोर। **चित्त** = हृदय। **मधु** = मधुर । **मानस** = हृदय। **कूल** = किनारा। **मलयज** = सुगन्धित पवन। **वास** = निवास।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक में संकलित हिन्दी के प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद विरचित कविता **'हृदय का सौन्दर्य'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने हृदय के सच्चे सौंदर्य को प्राकृतिक उपमानों के माध्यम से प्रकट किया गया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कामना करता है कि सायंकालीन सूर्य की लालिमा की तरह हमारा मन भी संसार के प्यार से भर जाए। मनुष्य का कठोर हृदय करुणा से भर जाए। मनुष्य के प्रेम में प्रेम की लहरें उठें और उसके मन के तटों पर सुगन्धित हवा का निवास हो। कहने का भाव यह है कि शुद्ध और सुन्दर हृदय वाले व्यक्ति को प्रकृति की हर वस्तु में अद्‌भुत सौन्दर्य दिखाई पड़ता है।

**विशेष**

1. कवि ने स्पष्ट किया है कि शुद्ध मन वाले व्यक्ति के हृदय में प्यार संध्या की लालिमा की तरह अपने आप फैल जाता है।
2. भाषा प्रवाहयुक्त साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयांग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न**

1. नील परिधान बीच सुकुमार ........ पंक्तियाँ किसके द्वारा रचित हैं?
2. ले चल यहाँ भुलावा देकर ........ पंक्तियाँ किस कविता से ली हैं?
3. अधरों में राम अमंद पिये ..... पंक्तियाँ किस कविता से ली हैं?
4. सज्जन नाटक का प्रकाशन वर्ष क्या है?

## 12.4 सारांश

'ले चल वहाँ भुलावा देकर' जयशंकर प्रसाद जी की एक प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में उन्होंने नाविक को संबोधित कर सागर के ऐसे निर्जन कोने में ले चलने का आग्रह किया है। जहाँ समुद्र की लहरें अपनी प्रेम कथाएँ कहती हों। जहाँ साँझ-सी जीवन छाया अपने नीले नयनों से तारों की पंक्तियां ढुलकाती हो। जहाँ विभुता विभू सी दिखाई पड़ती हो और जहाँ उषा अपने नयनों से धनी ज्योति बिखराती हो। 'बीती विभावरी जाग री' प्रसाद जी की 'लहर' नामक काव्य रचना में अवतरित एक प्रसिद्ध गीत है। उसमें कवि ने प्रातः कालीन सुन्दरता का मार्मिक चित्रण किया है। एक सखा नायिका सम्बोधित करते हुछ कहती है कि रात्रि अब व्यतीत हो चुकी है और सवेरा होने जा रहा है। ठीक उसी प्रकार पराधीनता की रात्रि समाप्त हो रही है। दूसरे देश स्वाधीन होकर जाग चुके हैं। किन्तु भारत भूमि अभी तक अतीत के स्वप्नों में लीन है। यह भूमि कब स्वतंत्रता का प्रभात देखेगी। प्रस्तुत गीत में कवि ने छायावादी प्रवृत्तियों का आश्रय देते हुए प्रकृति के उद्दीपन का रूप का सुंदर वर्णन किया है। 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' गीत जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' से अवतरित है। सेल्यूकस की बेटी कार्नेलिया भारत की प्राकृतिक संपदा तथा सौंदर्य का वर्णन करती है। यह देश प्रेम की भावना का गीत है। 'हृदय का सौंदर्य' का वर्णन करती है। यह देश प्रेम की भावना का गीत है। 'हृदय का सौंदर्य' जयशंकर प्रसाद विरचित एक प्रसिद्ध एवं चर्चित कविता है। इस कविता में उन्होंने हृदय के सच्चे सौंदर्य को परिभाषित किया है। कवि के अनुसार हृदय का सौंदर्य उदार, अनुरागपूर्ण एवं सहज स्थिर मुस्कान में निहित होता है। कवि ने कविता में सभी से अपना हृदय इन्हीं गुणों से परिपूर्ण कर लेने का संदेश दिया है।

## 12.5 कठिन शब्दावली

**अवतरित** – पार पहुंचा हुआ

**पराधीनता** – पराधीन होने की अवस्था

**उद्दीपन** – विभाव का एक भेद

**विरचित** – निर्मित

**विभूति** – महिमा युक्त

## स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

उत्तर – जयशंकर प्रसाद।

उत्तर – ले चल भुलावा देकर।

उत्तर – बीती वि भावरी जग री।

उत्तर – सन् 1910 में।

## 12.7 संदर्भित पुस्तकें

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. जयशंकर प्रसाद, लहर, ओरिजनल ब्लैक क्लासिक, नई दिल्ली।
3. डॉ. हरेन्द्र कुमार सिन्हा, जयशंकर प्रसाद के काव्य में सांस्कृतिक और राष्ट्रीय परिवेश, कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी।

## 12.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. 'ले चल वहाँ भुलावा देकर' कविता में कवि नाविक को संबोधित कर सागर के निर्जन कोने में ले चलने का आग्रह करता है, इस कथा को माध्यम से कवि के मूल उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न. 'बीती विभावरी जाग री' कविता में कवि के मूल मंतव्य को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता के मूल कथ्य को व्यक्त कीजिए।

प्रश्न. 'हदय का सौन्दर्य' कविता में कवि का क्या मत है, स्पष्ट कीजिए।

*****

# इकाई–13
# सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : जीवन एवं साहित्य

**संरचना**


13.1 भूमिका

13.2 उद्‌देश्य

13.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : जीवन एवं साहित्य

13.3.3 जीवन परिचय

13.2.1 साहित्यिक परिचय

स्वयं आकलन प्रश्न–1

13.4 भाषा शैली

स्वयं आकलन प्रश्न–2

13.5 सारांश

13.6 कठिन शब्दावली

13.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

13.8 संदर्भित पुस्तकें

13.9 सात्रिक प्रश्न


## 13.1 भूमिका

पिछली कक्षा में हमने जयशंकर प्रसाद की कविताओं की गहनता से व्याख्या की। प्रस्तुत इकाई में हम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन और साहित्य का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनके जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय तथा उनकी भाषा शैली का गहनता से अध्ययन करेंगे।

## 13.2 उद्देश्य

इकाई तेरह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि–

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या थी?
3. निराला ने साहित्य की किन–किन विधाओं में कार्य किया है।?
4. निराला की भाषा शैली किस प्रकार की थी?

## 13.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : जीवन और साहित्य

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का कवित्व जितना वैविध्यपूर्ण, रोचक एवं तत्वमय है, उतना ही उनका व्यक्तित्व भी दृढ़, आकर्षक, एवं तेजोमय था। निराला का व्यक्तित्व उनके शरीर के लंबे चौड़े डील–डौल से उभरता है। गौरवर्ण सुगठित शरीर, उन्नत भाल, अजान बाहू, सुकुमार नेत्र, लंबी नासिका, परिपुष्ठ वक्षस्थल, काले लंबे बाल इतना सुरूप व्यक्तित्व हजार लोगों के बीच अलग चमकता था। जब वे कवि सम्मेलनों में जाते थे तब वे प्राय: उत्तरिय ओढे, दृढ़ मुद्रा में बैठे निराला कैलाश पर्वत पर बैठे दृढ़ मुद्रा में शंकर भगवान लगते थे। ये जितने उदात्त थे, उतने ही सहृदय और करुणापूर्ण हिमालय के समान व्यक्तित्व की विशालता उनमें थी।

भीड़ में अलग से पहचाने जानेवाला यह व्यक्तित्व घुटनों से नीचे तक का कुर्ता, पहलवानों जैसी लुंगी, फटी चप्पल, कभी वह भी नहीं, लखनऊ और प्रयाग के रास्तों पर अलमस्त देखा जा सकता था। सरोजनी नायडू ने उन्हें प्राचीन आर्य परंपरा का प्रतिनिधि माना था और वह स्वाभाविक था। वह तो बचपन से ही जिस धरती में जन्मे और

पले–बढ़े, उनके मन में उस धरती के प्रति सहज मोह निरंतर बना रहा। वे सामान्य और साधारण और साधारण रुप में ही असामान्य और असाधारण शिखर पर पहुँच गए। निरालाजी अत्यंत प्रचंड, निर्मम, कोमल, सुंदर, निर्भीक और साहसी के साथ–साथ उनमें आत्मभीरु और विनम्र, उग्र और सौम्य प्रवृत्तियों एकसाथ विद्यमान थी। उन्होंने अपनी अनुभूति के सिरों को ज्ञान के उच्च से उच्च और निम्न से निम्न स्तर तक फैला रखा था।

निरालाजी के पिताजी मेदिनीपुर जिले के महिषादल राज्य में नौकरी करते थे। वे ''राज्यकोष के संरक्षक'' पद पर थे। इनका स्वभाव अत्यंत उग्र था और पुत्र की गलती को, यह भूलकर कि वह अपनी एकमात्र संतान है, वे बड़ी कठोरता से उनकी पिटाई करते थे। निरालाजी काफी उम्र तक इस ढंग की पिटाई को नम्रतापूर्वक सहते रहें । बचपन से ही उन्हें खेलकूद, कुश्ती और पंजा लड़ाने का शौक रहा। कुश्ती के अलावा उन्हें खाने और खिलाने का बहुत शौक था। माँस पकाने में वे सिद्ध हस्त थे। कभी–कभी माँस के साथ मदिरा भी पीते थे, लेकिन आदत से नहीं। पान–सुरती, तंबाकू के साथ साथ इत्र, सुगंधित तेल आदि प्रसाधनों की ओर भी उनका विचित्र झुकाव था। फक्कड़पन और अभिजात्य की अद्‌भूत मिसाल थे निराला।

कवि सम्मेलनों में जाने के लिए कपड़े सिलवाने, जूते खरीदते लेकिन कोई गरीब जरुरतमंद मिल जाता तो उसे अपने पहनने के कपड़े तक दे देते।

किसी शायर ने कहा है–

**अमीरी की तो ऐसी की कि अपना घर लुटा बैठे।**
**फकीरी की तो ऐसी की कि तेरे दर आ बैठे।**

गाँव और शहर दोनों ही वातावरण उन्हें प्रिय थे। उनका नगरबोध भी गाँव के समान ही सूक्ष्म था। उन्होंने प्रारंभ से ही काव्य के सौंदर्य विधायक उपकरण के रुप में प्रकृति को महत्त्व दिया है।

भाषा के असामान्य अधिकार का ही यह प्रमाण है कि यदि वह सरल और व्यवहारिक भाषा लिखने पर आए तो उर्दू की गजल तक उसे पहुँचा दिया और यदि प्रौढ़ता की ओर झुके तो ''बाण''भी सहम उठे। निराला की भाषा के अतिरिक्त संगीत में भी गहरी पैठ थी। वह अपने गीतों को सस्वर पढा करते थे। निराला की प्रतिभा ने सदैव रुढ़ियों को तोड़ते हुए उनका मार्ग प्रशस्त किया है। बाल्यकाल में पिता से नहीं बनी तो किशोरावस्था में अपने साथियों से दब्बू स्वभाव से अलग रहे।

सन 1916 में जब उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'जूही की कली' लिखी तभी उन्होंने अपनी प्रतिभा का धूमकेतु हिंदी कविता के शिखरपर फहरा दिया। निराला के विद्रोही व्यक्तित्व का दूसरा रूप हम उनके अक्खड़ व्यवहार में देख सकते हैं। निराला अक्खड़ थे नहीं, हो गए या परिस्थिति के कारण होते गए। बचपन में ही माँ चल बसी। 23 वर्ष की अल्पायु में ही पत्नी का स्वर्गवास हुआ और पुत्री सरोज को दूर काल ने प्रौढ़ता के दरवाज़े पर पैर रखते–रखते छीन लिया। कितना पीड़ादायी संदर्भ है। निराला के जीवन का यह कटु अनुभव उनकी ''सरोज स्मृति'' की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है।

**ये कान्यकुब्ज कुल कुलांगार**
**खाकर पत्तल में करे छेद**
**इनके कर कन्या, अर्थ वेद,**
**इस विषम बेली में विषही फल**
**है दुग्ध मरुस्थल नहीं सुजल।**

इस तरह से देखा जाए तो माँ की मृत्यु के बाद से निराला के जीवन में जिस प्रकार स्थितियाँ –परिस्थितियाँ कठोर–से–कठोर तम होती चली गई और कालचक्र उनकी परीक्षा लेता रहा, इसी हालात में भी उनके व्यक्तित्व की चट्टान नुकीली होती गई और उनका विद्रोह और अधिक क्रूर होता गया । निराला के व्यवहार के स्तरपर अकुशल नहीं

रहे। वे गृहस्थ के रूप में भी व्यवहार कुशल ही रहे। यदि पारिवारिक चिंताओं का इतना अधिक भार उन पर होता, तो शायद ये साहित्य को और अधिक मूल्यप्रद रचनाएँ दे पाते। उनमें नये और पुराने का अद्‌भूत समन्यय दिखलाई पड़ता है। एक ओर तो भारतीय संस्कृति की दृष्टि से थे रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, उपनिषद ग्रंथ तथा वैष्णव संप्रदायों की विचारधारा से प्रभावित थे। महादेवी वर्मा ने उनके बारे में कहा है – ''निराला ने अपने सहज विश्वास से मेरे कच्चे सूत के बंधन को जो दृढ़ता दी यह अन्यत्र दुर्लभ रहेगी। उनकी वीरता राजनीतिक कुशलता का नहीं साहित्य की निष्यता का पर्याय है।

सुमित्रानंदन पत ''निराला का आविर्भाव तो नई काव्य चेतना के आकाश में एक तेजोमय धूमकेतु के समान हुआ है। जिसका सिर अद्वैत दृष्टि की मणि के आलोक से दैदीप्यमान रहा।

निराला की जीवन शक्ति कितनी प्रबल थी, पराजय का तो कोई चिह्न ही नहीं था उनके व्यक्तित्व में। सचमुच निराला महाप्राण थे। उनका व्यक्तित्व ही उनके काव्य में प्रतिबिंबित होता है। आधुनिक हिंदी काव्यधारा की छायावादी परंपरा में सुर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'' अपने उद्‌भट व्यक्तित्व के लिए सर्वप्रसिद्ध है। कलाकार, कलाकृति और परिवेश के त्रिकोणपर उनकी सृजन चेतना एक ऐसा प्रकाश विकीर्ण करती है, जिसका वस्तुपरक विश्लेषण साहित्य के विद्यार्थी के लिए ही नहीं, सामान्य पाठक के लिए भी ज्ञानवर्धक होगा। युग यथार्थ उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ ऐसी अभूतपूर्व त्रिवेणी बनाता है जिसका संगम ''निराला'' में देखने को मिलता है। उनका साहित्य जिन स्थितियों परिस्थितियों के घातों-संघातों से निर्मित हुआ है, उनका निदर्शन ही उनके वस्तुपरक जीवनवृत्त का प्रमुख लक्ष्य है।

### 13.3.1 जीवन परिचय

**जन्म** – महाकवि निराला का जन्म उत्तरप्रदेश में उन्नाव जिले के ''गढ़ाकोला'' नामक गाँव में एक अत्यंत कर्मठ और अनुशासनप्रिय कान्यकुब्ज ब्राम्हण पंडित रामसहाय त्रिपाठी के घर सन 1896 में माघमास की बसंत पंचमी के दिन हुआ। निराला के पिता पंडित रामस्हाय त्रिपाठी गढ़ाकोला के शिवधारी त्रिपाठी के पुत्र थे। महिषादल राज्य में एक प्रतिष्ठित ''पद'' पर कार्य करने के कारण सहपरिवार वही बस गए थे। निराला की बाल्यशिक्षा राज्य की ओर से ही हुई। इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी बंगाल में ही हुई।

**शिक्षा-दीक्षा** – निराला जब केवल तीन वर्ष के थे तब उनकी माँ का देहांत हो चुका। पाँच वर्ष के सुर्यकांत ने स्कूल में प्रवेश लिया। यहाँ अंग्रेजी और बंगला तथा संस्कृत की पढ़ाई तो होती किन्तु हिंदी अध्यापन की कोई व्यवस्था नहीं थी। निराला बंगाली परिवेश में पाल-पोसकर विकसित होने के कारण उनमें वंशीय संस्कार पनपने लगे। निराला का हिंदी के प्रति स्वाभाविक रूझान बचपन से ही रहा। उसका मूल कारण यह था कि भाषा संस्कार में हिंदी उन्हें पिता के साथ रहते हुए मिली। निरालाजी स्वभाव से खिलाड़ी, नटखट और हठी थे। इन्हीं स्वभाव गुणों के प्रभाव से उनका जीवन बीता है।

**काव्य संस्कार**- रामचरित मानस और ब्रजविलास जैसी हिंदी की कृतियों का सस्वर पारायण वह अपने पिता के साथियों द्वारा गायन रुपमें सुना करते थे। उन्हीं के अनुकरण और प्रेरणा स्वरूप निराला ने स्वयं भी हिंदी कविता का संगीतात्मक पाठ करना सीख लिया। परिणाम स्वरूप आगे चलकर निराला स्वयं भी अपनी रचनाएँ लयबद्ध स्वर में पढ़ने-सुनाने लगे । धीरे-धीरे निराला में कविता के प्रति सम्मोहन बढ़ने लगा। वे इसी क्रम में स्वयं भी हिंदी कविताएँ लिखने लगे। निराला की कल्पनात्मक उड़ान का परिणाम यह निकला की काव्य के प्रति आकर्षित होते चले गए, पर साथ ही गणित जैसे जटिल विषय में कमजोर होते चले गए। वे जीवन के खुले पाठयक्रम में दीक्षित होना अधिक पसंद करते थे। इस प्रकार वे बाल्यजीवन से ही कविता के प्रति आकर्षि होते चले गये।

**विवाह** – स्कूली शिक्षा के बाद जीवन की उध्दतता को व्यवस्था देने के लिए उनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी ने इनका विवाह एक सुंदर सुशील कन्या मनोहरा से कर दिया। मनोहरा स्वभाव से सौम्य, रूचियों में संस्कारवाली प्रवृत्ति से धर्मपरायण और साहित्य के प्रति अनुरागवाली थी। निराला के व्यक्तिगत जीवन में बचपन में माता के देहांत के बाद प्रेम, वात्सल्य और ममता की जो कमी महसूस हुई थी वह मनोहरा के आने के बाद काफी हद तक पूरी हो गई।

स्कूली शिक्षा को पूरी तरह त्यागने के बाद पत्नी के सानिध्य ने उनमें स्वाध्याय और हिंदी काव्य के प्रति साई हुई आसक्ति को फिर से जगाया। जिस प्रकार माता स्नेह की छाया अत्यल्प समय में ही छूट गई उसी प्रकार उनकी पत्नी, सहचारिणी का स्नेह भी उन्हें अधिक समय नहीं मिल सका। कुछ वर्षों के बाद ही दांपत्य जीवन के मधुर साहचर्य को ठेस लगी और मनोहरा देवी पुत्र रामकृष्ण और पुत्री सरोज को जन्म देकर इन्फ्ल्युएंझ बीमारी के प्रकोप से ग्रस्त होकर अपना हराभरा संसार छोड़कर सदा-सदा के लिए निराला का साथ छोड़कर इस संसार से विदा हो गई।

निराला के कोमल मन पर माता का देहांत होने से कुठाराघात हो गया था और उनमें एक खालीपन उभर आया था। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् यह दरार अधिक चौड़ी हो गई। इसके बाद उनके मन पर आघात पर आघात होते चले गये। पिता, चाचा आदि के गुजर जाने से निरालाजी अकेले अकेले होते गए। फिर एक दिन क्रूर काल ने निराला पर एक भयानक विकराल आघात कर दिया, उनकी लाडली पुत्री सरोज इस दुनिया से चल बसी। इस प्रकार यह कभी न मिट सकने वाली दरार, खालीपन को बढ़ाती हुई, उनके जीवन को नीरस करती चली गई। पत्नी की मृत्यु को भी निराला सह गए थे। लेकिन अपनी स्नेहपुष्प पुत्री को, उसकी मधुर हँसी को उन्होंने अपना एकमात्र आधार बना लिया था। उसकी नटखट चंचल मुद्राओं ने निराला को सप्राण बनाए रखा। विवाह के बाद पुत्री का रोगग्रस्त होना और अपने पिता के पास चले आकर यह संसार छोड़कर चला जाना ये घटनाएँ निराला के लिए एक प्रकार से ईश्वरीय आघात ही था।

माता, पत्नी, पुत्री सभी के एक के बाद एक जीवन में आकर चला जाना, प्रिय पत्नी के इस अल्प साहचर्य की खिलवाड़ ने निराला के पौरूष को केवल झकझोरा ही नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व में कठोरता, कटुता और विचित्रता आ गई। पुत्री के मृत्यु के बाद निराला बहुत विचलित, विक्षिप्त हो उठे। पत्नी की मृत्यु के बाद निराला ने धैर्य बंधाया। उनके दो बच्चे तथा चार भतीजों का भी भार उनके कंधों पर ही था। इसलिए बसी बसायी गृहस्थी टूटने से बचाने के लिए उन्होंने स्टेट में नौकरी करनी स्वीकार की। यहीं से उनके अंदर सोई हुई प्रतिभा को खुलकर अभिव्यक्त होने का अवसर प्राप्त हुआ। उनका व्यक्तित्व भले ही कठोर था लेकिन अपनी अलग पहचान के रूप में उभरकर सामने आया।

**कवि जीवन का प्रारंभ :**

उन पर रविंद्रनाथ ठाकुर का प्रभाव पड़ा था और अपनी काव्य रचनाओं का अभ्यास बंगला से ही किया। लेकिन अभिव्यक्ति के सही माध्यम के रूप में उन्होंने हिंदी को ही मान्यता दी। 1914 में लिखी ''जुही की कली'' उनके साहित्यिक जीवन का प्रारंभिक चरण है। यह कविता पहले 'सरस्वती' में प्रकाशनार्थ भेजी लेकिन ''सरस्वती'' के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने उसे वापिस कर दिया और बाद में यही कविता ''अनामिका'' काव्य संग्रह में प्रकाशित हो गई। आगे चलकर ''समन्वय'' पत्र में निराला की संपादक पद पर नियुक्ति आचार्य द्विवेदी के कारण ही हुई।

यहाँ आकर ही उनका परिचय माइकेल मधुसूदन दत्त, रविंद्रनाथ और स्वामी विवेकानंद से हो गया। उनकी रचना 'पंचवटी प्रसंग' इसी काल की है। निराला की स्वच्छंद प्रकृति उनके संपादकत्व के सामने आई तो 1923 में उन्होंने ''समन्वय'' छोड़कर महादेव प्रसाद के पत्र ''मतवाला'' में बतौर संपादक पदभार ग्रहण कर लिया। ''मतवाला'' की तुक पर ही उन्होंने अपना उपनाम 'निराला' रख लिया । 'जूही की कली', 'पंचवटी प्रसंग' आदि रचनाओं को निराला ने अपने दूसरे काव्य संकलन ''परिमल'' में भी स्थान दिया जिसका प्रकाशन सन् 1930 में हुआ। सन् 1928 में वे कलकत्ता से लखनऊ आ गये और ''सुधा'' नामक मासिक पत्रिका से अपना संपर्क स्थापित किया। इसमें उनकी रचनाएँ भी प्रकाशित होने लगी। सन् 1929 में उन्होंने ''गंगा पुस्तक माला'' का भार अपने ऊपर ले लिया। इसी दौरान उन्होंने ''अप्सरा'' और ''अलका'' नामक उपन्यास भी लिखे। ''लिली'' कहानी संग्रह की रचना भी इसी दौरान हुई।

इन पाँच-छः वर्षों में निराला की रचनात्मकता जिस प्रकार कविता, कहानी, उपन्यास और संपादक के क्षेत्र में आगे बढ़ती हुई एक साथ उभरकर सामने आई। वह हिंदी के आलोचकों की चर्चा के केंद्र बिंदु बन गये। उनकी आलोचनाओं और मुक्तछंद की कविताओं की बड़ी चर्चा होती थी । हिंदी जगत् में वे एक नया युग, एक नई शैली लेकर आ गये। निरालाजी ने हर विरोध का फिर चाहे वह अंध हो, चाहे तार्किक, अपने ढंग से उचित और बेजोड़ उत्तर दिया था।

निराला जी जब कलकत्ता में थे, तब उनका प्रथम संग्रह ''अनामिका'' सन् 1923 में निकला था । निराला उन दिनों फुले नहीं समाते थे। कलकत्ता छोड़ने के बाद चार पाँच वर्ष निराला जी के बड़े कठिन अवस्था में बीते। शारीरिक, मानसिक और आर्थिक चिंताएँ सदा घेरे रहती। इसी अवस्था में उन्होंने ''रामकृष्ण वचनामृत'', ''रविंद्र कविता-कानन'', ''राणाप्रताप'', ''ध्रुव'' ''हिंदी-बंगला शिक्षा'' आदि पुस्तकें लिखीं । साहित्य और संगीत में निरालाजी की अकुंठित गति देखकर प्रसादजी तब बहुत ही प्रभावित हुए थे। उस अवसर पर उन्होंने कहा था ''हिंदी को ईश्वर की देन है निराला''। सन् 1928 में निराला लखनऊ आ गये । सन् 1929 से ''गंगा पुस्तक माला'' के लिए काम करना शुरू कर दिया। सन् 1929 में ही निरालाजी का दूसरा काव्य संग्रह ''परिमल'' प्रकाशित हुआ। ''अप्सरा'', ''अलका'' आदि उपन्यास तथा ''लीली की कहानियाँ'' भी इसी समय लिखी गयी। इसी साल उन्होंने अपना पुत्री सरोज का विवाह श्री. साहित्य क्षेत्र में निराला जी की धाक जम चुकी थी। उनके समर्थकों की संख्या भी बढ़ रही थी। हिमालय के समान अपनी विशालता लिए हुए उनकी सहज द्रवणशीलता, करूणा की गंगा बन जाती थी। निरालाजी ने मानव मानव की भिन्नता का तिरस्कार करके समता का प्रपिपादन किया है।

निराला जी की एक लंबी कविता ''देवी सरस्वती'' में उनका उल्लास, मस्ती, सजगता इस प्रकार दिखाई देती हैं -

**''रबी कटी आम के तले**
**खलिहान लगाया,**
**चना, मटर, जौ, गेहूँ, सरसों**
**कट कर आया।**
**पड़ी चारपाई, जिस पर**
**बैठा तकवाहा**
**चूल्हा वहीं कहीं लगवाया**
**जिसने चाहा**
**जरा दूर मेड़ के किनारे**
**जैस बस्ती**
**बसी, लगे खलिहान**
**सुवेशा जैसे मस्ती''।**

निरालाजी का जीवन का एक क्षण भी वैयक्तिक स्वार्थ पूर्ति के लिए नहीं बीता, वरन् जनहीत के लिए ही सब कुछ समर्पित रहा। तुलसी के समान निराला भी रामभक्त थे। यद्यपि वे दार्शनिक दृष्टि से अद्वैतवादी थे।

### 13.3.2 साहित्यिक परिचय

निरालाजी ने अध्यात्मिकता, प्रेम और श्रृंगार, व्यंग्य और विनोद, राष्ट्रीयता, प्रकृति चित्रण, मानवतावाद इस प्रकारी की प्रवृत्तियों को अपने काव्यद्वारा दर्शाकर हिंदी साहित्य में अपनी काव्य प्रतिभा को सबसे ऊँचाकर दिखाया है। शैली की विविधता में देखा जाता है। निरालाजी की काव्यप्रतिभा का बड़ा व्यापक रुप उनकी स्वच्छंद रचना के उबड़-खाबड़ पहाडी मार्ग को ठीक और सुगम्य बनाने में सबसे बड़ा श्रेय निरालाजी को ही प्राप्त है। इस भारतीय सुपुत्र ने अपना सब कुछ लुटा दिया, परंतु मरते दम तक उस स्वाभिमानी निर्भीक कवि ने हार नहीं मानी थी और साहित्यकार के सम्मान को सबसे ऊँचा रखा। उसने दूसरों को भीख दी पर ली नहीं। अपनी मृत्यु के पूर्व एक बार किसी को उन्होंने खुद के बारे में राय दी थी-

**पसे गर्गन समझ में आयेंगे ये कौन हमदम थे,**
**समर औ गुल खिजा में गरमियो में अबि - जमजम थे।**

अर्थात मृत्यु के बाद ही लोग याद करेंगे कि क्या थे? तब उन्हें वे ऐसे ही याद आ जाएँगे जैसे पतझड़ में फल-फूल और गर्मियों में पवित्र सुस्वादुशीतल जल। आज उनका हर शब्द सत्य लगता है, और उसमें उस व्यक्तित्व को साक्षात कराने की विशेषता विद्यमान है।

**निराला की काव्यकृतियों का विश्लेषण -**

निरालाजी ने छायावाद और परवर्ती काव्यधाराओं को अकेले अर्थवत्ता, उदात्तता, व्यापकता और युगदृष्टि दी। छायावादी काव्य को उन्होंने श्रृंगार के नये एक ओर उदात्त संदर्भ दिए।

मानवतावादी लोकदृष्टि दी, सुविन्यस्त प्रगीत शिल्प दिया, ओजमयी परिनिष्ठिता भाषा दी, और मुक्तछंद दिया। प्रगति की धारा को यथार्थपरक नवीन वस्तु-दृष्टि दी, नवगीत दिए, मनोवेगात्मक अभिव्यंजना - पद्धतियाँ दी, जीवन शब्द बिंब दिए। प्रकृति आख्यान, आत्मव्यंजना के क्षेत्र में भी उनका योगदान बहुत बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। भक्तिकाव्य को भी उन्होंने लोक भूमि तथा युगबोध से जोड़ने का महान कार्य भी इस युग में किया।

''परिमल से लेकर सांध्यकाकली'' तक उनके बहुरुप काव्य कृतियों का परिविस्तार दिखाई देता है।

निराला के कुछ चुने हुए काव्यसंग्रह तथा काव्यकृतियों का परिचय देने का एक प्रयत्न किया हैं।

**परिमल** - ''परिमल'' निरालाजी का प्रथम एवं प्रतिनिधिक काव्यसंग्रह है। इसका प्रकाशन 1930 में हुआ। इसमें छायावाद को संदर्भित कवि के नीजी तेवर की उद्दामता यथावत् विद्यमान है। छायावादक अरिभक्षण (1917-18) से लेकर प्रकर्ष प्रहर तक (1929) तक की सभी प्रमुख रचनाएँ इसमें संकलित हैं। इस संग्रह को तीन खंडों में बाँटा गया है।

**प्रथम खंड** - प्रथम खंड में तीस कविताएँ है, जिनमें ''गौन'' ''निवेदन'' ''प्रार्थना'' ''प्रभाती'' ''शेष'', ''यमुना के प्रति'', ''गीत'' विशेष उल्लेखनीय है। इनका रूप तथा शिल्प सधन और गरिमामय है। कवि ह्रदय की उमंग और ताजगी से भरी यह रचनाएँ हैं। कवित्व की व्यजंना का एक उदाहरण -

**''अलि घिर आए घन पावस के।**
**द्रुम समीर - कम्पित थर थर थर,**
**झरती धाराएँ झर झर झर,**
**जगती के प्राणों में स्मर - शर**
**बेध गये, कसके**

**दूसरे खंड**- दूसरे खंड में इक्तिस कविताएँ है, स्वच्छंद छंद में होने के कारण इन रचनाओं में प्रवाह और अभिव्यक्ति की सक्षमता अधिक है। ''''ध्वनि'', ''अधिवास'', ''संध्यासुंदरी'', ''स्वप्नस्मृति'', ''भिक्षुक'', ''विधवा'', ''धारा'' आदि कविताएँ सुंदर हैं। किंतु कवि ने अभिजात और उदात्त विषय ही चुने हैं। निरालाजी की ''विधवा'' कविता का यह उदाहरण देखिए, जिसमें कितनी उदात्तता है -

**यह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सी,**
**वह दीप-शिखा सीशान्त, भाव में लीन,**
**वह कूरकाल-तान्डव की स्मृति-रेखा-सी,**
**वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन**
**दलित भारत की ही विधवा है।**
**षड्-ऋतुओं का श्रृंगार,**
**कुसुमित कानन में नीख-पद संचार,**
**अमर कल्पना में स्वछन्द विहार**

**तीसरे खंड** - तीसरे खंड में चौदह कविताएँ है, जिसमें ''जुही की कली'', ''शेफालिका'', ''कवि'' तथा ''पंचवटी प्रसंग'' सर्वश्रेष्ठ हैं।

'पंचवटी प्रसंग' कविता में कवि ने राम के मनोरम सौंदर्य की झाँकी इस प्रकार प्रस्तुत की है-

''कोमलांग योग्य नहीं कठिन तपस्या है

**निश्चय हैं राजपुत्र**
**अथवा नर रुप घर वन में हैं विचरते सुर।**
**श्यामल-सरोज-क्रांति**
**छीन लेती सहज ही**
**संचित हृदय का प्रेम**
**नारियों का गुप्त धन''।**

इस खंड की रचनाएँ कथ्यप्रधान है। अत: उनमें ओज और विस्तार की विशिष्ठता है। छायावादी काव्य विध ा की दृष्टि से ''परिमल'' का बहुत बड़ा योगदान है।

**गीतिका** - यह प्रगीतों का संकलन हिंदी की श्रेष्ठतम प्रगीत-कृति कहा जाएगा। इसका प्रकाशन 1936 में हुआ। वस्तुविषय की दृष्टि से ''गीतिका में वैविध्य और व्यापकता देखने को मिलती है। ''मौन रही हार'' ''लिखती सब कहते'', ''सखी बसत आया'' आदि प्रगीतों में अनुरजनकारी वैचित्र्य मिलेगा। भावान्वित का जैसा सुविन्यस्त और सधन रूप इसकी रचनाओं में देखने को मिलता है।

**अनामिका** - सन् 1992 में ''अनामिका'' का एक लघुसंग्रह छपा था मगर वह अस्तित्व में न होने के कारण ''अनामिका'' का दूसरा संकलन (1938) में निकाला। राम की शक्तिपूजा नामक एक लंबी कविता निराला के महान काव्य शिल्प का सुंदर उदाहरण है। ''प्रेयसी'', ''वनबेला''. ''प्रगल्भप्रेम'', ''सरोज स्मृति'' आदि कविताएँ सशक्त है। ''रेखा'', ''वनबेला'' ''तोड़ती पत्थर'' ''विनय'', ''हताश'', ''उक्ति'', ''अपराजिता'', ''खुला आसमान आदि कविताएँ चित्रण प्रधान, भाव-वैभव तथा अभिव्यक्ति से परिपूर्ण है। ''सहज'' कविता का एक उदाहरण -

**''वह जो सिर बोझ लिए आ रहा,**
**वह जो बछड़े को नहला रहा,**
**वह जो इस उससे बतला रहा''।**

यह रचनाएँ निराला को प्रयोगवाद के पुरस्कर्ता के रूप में स्थापित करती है। ''अनामिका'' की कविताओं में कथ्य और शिल्प का यथेष्ट वैविध्य परिलक्षित होता है। कल्पना, प्रकृतिपरक आदि छवियों इन रचनाओं में अधिकतर मिलती है। शृंगार रोमानी गीतिकाव्य के विविध आयाम इसकी रचनाओं में देखने को मिलेंगे। संबोधित गीतों का इसमें बाहुल्य है। प्रवाह विशिष्ट चित्रण प्रधान छंदबद्ध गेयता अनेक रचनाओं में है। ''अनामिका'' में तत्समप्रधान परिनिष्ठित भाषा और आम बोलचाल की भाषा ऐसे दो रूप भाषा के मिलते हैं।

**तुलसीदास** - यह रचना एक लंबी महत्त्वपूर्ण आख्यानक रचना है। इसका प्रकाशन सन् 1938 में हुआ। यह रचना तुलसी की जीवन-यात्रा के एक विशिष्ट प्रसंग से जुड़ी होने पर भी अपने कथ्य में विचार प्रधान है। निरालाजी ने तुलसी के प्रतिभ व्यक्तित्व को सामाजिक इतिहास से संदर्भित करके उनकी महत्ता का आकलन करना चाहा है। प्रकृति रूपों में व्यक्ति के मनोभाव की छाया दिखाने में भी कवि की दृष्टि मन: शास्त्रीय रही है। -

**''यह वही प्रकृति, पर रुप अन्य,**
**जनमग जगमग सब वेश वन्य;**
**सुरभित दिशि दिशि, कवि हुआं धन्य, मायाशद**
**यह स्त्री पावन, गृहणी उदार;**

**गिरि-बर उरोज, सरि पयोधर,**

**कर वन तरु, फैला फल निहारती देती**

भाषा सर्वत्र तत्समप्रधान है, रचना छंदबद्ध है, ओजपूर्ण गतिवाली है। कथ्य, रस और भाषिक संरचना, व्यापकता और असाधारणता को देखते हुए महाव्योचित औदात्य से संपन्न रचना कहा जा सकता है।

**कुकुरमुत्ता** – ''इसका पहला संस्करण 1942 में प्रकाशित हुआ था''। ''कुकुरमुत्ता'' निराला की एक लंबी कविता है। दूसरा संस्करण 1952 में छपा था। ''कुकुरमुत्ता'' के जरिये वे एक युगांतर को सूचित और घटित कर सके थे। उनकी सहानुभूति सर्वहारा, अभावग्रस्त और दलितवर्ग के साथ अवश्य है और कुकुरमत्ता अधिकतर उसी का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें सामाजिक यथार्थ को नजर अंदाज न करते हुए मानव और समाज के व्यापक कंगालपन को उभारने और उस पर व्यंग्यप्रहार करने का प्रयत्न किया है। पूरी रचना बहक और प्रलाप जैसी लगती है। भाषिक स्तर पर कवि ने उर्दू की व्यंजकता को आधार बनाकर अनगढ़ और ''भदेस'' की भूमि रखी है। यह रचना यथार्थपरक है और कवि की काव्ययात्रा के एक विशिष्ट मोड़ की उद्घोषणा है। पुराने रईसों से लेकर निम्न स्तर तक के भोंडेपन पर फब्तियाँ कसने वाली यह रचना अपने आप में एक विशिष्ट धारा की प्रतिनिधि एवं उपलब्धि है।
''कुकुरमुत्ता'' का यह उदाहरण इसके लिए दृष्टव्य है –

**''बाग के बाहर पड़े थे झोपड़े**

**दूर से जो दिख थे अधगड़े**

**जगह गन्दी, रूका, सड़ता हुआ पानी**

**मोरियों में, जिन्दगी की लन्त रानी'' ।**

**अणिमा** – अणिमा को प्रकाशन 1943 में हुआ। इसमें 1938 से 1943 के बीच की कुछ चुनी हुई कविताएँ रख दी गई हैं। इन संग्रहों की रचनाओं में भावात्मक उदात्तता कल्पना और विषाद के स्वर की प्रधानता है। हिंदी का टकसाली रूप निराला ने यहीं से उभारना आरंभ किया है। प्रवाह और सहजता, सहज अभिव्यक्ति इनकी रचनाओं में स्पष्ट अभिप्रेत होती है।

''अणिमा'' की वस्तुमुखी रचनाओं में कथ्य और दृष्टि से अनुरंजनकारी वैविध्य लक्षित होता है। इस संग्रह में अनेक रचनाएँ प्रशस्तिपरक और संबोधन शैली की हैं।

**''अणिमा'' काव्यसंग्रह का एक उदाहरण**

**देखिए जिसमें निराशा का स्वर मुखरित हुआ है –**

**''मैं अकेला, देखता हूँ, आ रही है,**

**मेरे दिवस की सान्ध्य बेला'' ।**

सांस्कृतिक भावधारा निराला के व्यंग्य काव्य में बीच-बीच में उभारती हैं। प्रगीतों का स्वर कल्पनाप्रधान, भावात्मक एवं औदात्यसंपन्न है। भाषा के स्तर पर भी यह दुहरापन बहुत स्पष्ट लक्षित होता है।

**बेला** – प्रयोगशील काव्यधाराओं के अंतर्गत ''बेला'' का महत्त्व बड़ा है। इस संग्रह का प्रकाशन 1946 में हुआ। सरल मुहावरेदार भाषा इसमें है, तथा सभी तरह के गेय गीत इसमें है। देशभक्ति पर गीत, गजले भी है इसमें जिनमें फार्सी के छंदशास्त्र का निर्वाह किया गया है।

निराला के परीक्षित जीवन भूमियों प्रकृति, प्रणय, सौंदर्य, यथार्थ, क्रांति, प्रगति, आध्यात्म, देशभक्ति आदि का परिचय एवं संचरण ''बेला'' में हुआ है। ''गजल'' का एक उदाहरण इस प्रकार से है –

**''उतरती धूप से खुलकर, कली की ओस से चमके,**

**न चूमे बिम्ब विहगों के, सुकेशा के अधर देखे।**

**जिन्होंने ठोकरे खाई, गरीबी में पड़े उनके**

**हजारों – हजारों हाथ के उठते समर देखे।**

अध्यात्म और प्रगतिपरक गजलें भी इस संग्रह में संक्रमित है। ''रूप की धारा के उस पार'', ''आँखें वे देखी हैं जबसे'' ''कैसे गाते हो'', ''सबसे तुम छुटे'', ''बीन की झंकार कैसी'' आदि प्रगीतों में रहस्यमाधुर्य का न्यूनाधिक रंग दिखाई देता है। लोकधुनों तथा मुक्तछंद का भी यत्र-तत्र आश्रय लिया गया है।

**नये पत्ते** - इसका प्रकाशन 1946 में ही हुआ है। नये पत्ते में वास्तविक निखार और पैनापन देखने को मिलता है। आधुनिक पद्य के अंतर्गत छंदबद्ध, हास्य की प्रचुरता इसमें मिलती हैं। भाषा बोलचालवाली सहज दिखाई देती हैं। कवि ने सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा वैयक्तिक स्तरों के विडंबनापूर्वक यथार्थ को यहाँ प्रस्तुत करके उस पर तीखे प्रहार किए है। भाषिक आयाम के प्रति सभी कृतियों में सजगता और सचेष्टता दिखाई पड़ती हैं।

''नये पत्ते'' में हिंदी-उर्दू की मिली-जुली और बोलचाल की भाषा रखकर काव्य लक्ष्यों का निर्वाह किया है। हिंदी में ''नये पत्ते'' के द्वारा ही प्रयोगवादी काव्यधारा का आरंभ हुआ है, ये सर्वथा संगत है। ''पांचक'', ''डिप्टी साहब आए'' ''मँहगू मँहगा रहा'' में राजनीतिक पर व्यंग्य किए हैं।

**''जब भी अफीम भांग, गांजा, परस चन्डू चाय**
**देशी और विलायती तरह तरह की शराब**
**चलती है मुल्क में,**
**फिर भी आजादी की हांक का नशा बड़ा**
**लोगों पर चढ़ता है।**

जनात्मक प्रवाह पर निराला की दृष्टि विशेषकर रही हैं। व्यंग्य की दृष्टि से ''नये पत्ते'' काव्यसंग्रह में समक्ष शब्दों का चयन में उनकी प्रतिभा विशेष रूप से देखी जा सकती है।

**अर्चना** - ''अर्चना'' का प्रकाशन 1950 में हुआ और इसके साथ ही निराला की काव्यसर्जना के अंतिम दौर का प्रथम चरण शुरु हुआ। ''अर्चना'' के अधिकांश प्रगीत प्रार्थनापरक है, उसमें जनात्मक औदात्य का एक सुनियत और मोहक रुपाकार दिखाई पड़ता है। पराशक्ति में कवि की आस्था प्रबल हो उठी हैं। संसार कवि को पहले भी पाशव, हिंस्र और निर्मन लगता था और यहां भी अवांछनीय और अप्रिय लगता है।

**शिशिर की शर्वरी**
**हिंस्त्र पशुओं भरी।**
**निविड विपिन, पथ अराल,**
**भरे हिंस्त्र जन्तु व्याल।**

निराला मुक्ति चाहते हुए भी विश्वोद्धार की मंगलकामना से भावित रहा करते हैं। मुक्ति के लिए उसे पराशक्ति में अटूट आस्था है।-

**''काटे कटी नहीं जो कारा**
**उसकी हुई मुक्ति की धारा''।**

प्रकृति निराला का अतिशय प्रिय काव्य-विषय रही हैं और प्रकृति भी उनकी उर्ध्वमुखी चेतना का सहयोगी उपकरण बन गयी हैं। श्रृंगार की भूमियाँ भी कुछेक कविताओं में मिलती है। माधुर्य-भाव से समन्वित कुछ अन्य रचनाओं में मुखर हुआ है। ''अर्चना'' लघु आकार के भावगीतों का संकलन है जो भाषिक संक्रांति के स्तर की कृति है। हस्वीकरण, विभक्ति-विलोप सामाजिक तत्समता का रुप भी इसमें दिखाई पड़ता है।

**आराधना** - ''आराधना'' करने में समर्थ हुए हैं। ''आराधना'' के स्वर दीपक राग की भाँति संगीत और आलोक की सृष्टि ''आराधना'' के लघु भावगीत अपनी सहजता और अर्थव्याप्ति में अप्रतिम है। इसमें सौंदर्य और सात्विकता का मिश्रण बहुत सुंदर हुआ है। यहाँ कवि ने सहजतर लोकदृष्टि और व्यापकतर लोकभावना प्रस्तुत की है। ''आराधना'' के अधिकांश गीत कवि की उच्चतम मनोभावना को अभिव्यक्त करते हैं। ''प्रणाम'' से ''प्रमाण'' तक की अंतर्यात्रा ''आराधना'' की आंतरिक काव्यभूमि कहीं जा सकती है।

कवि अपने लिए कुछ माँगता नहीं वरन् यह संपूर्ण लोक के साथ अपने को जोड़कर देखता है –

**''खग को ज्योतिः पुंज प्रात दो,**
**जग ठग को प्रेयसी रात दो,**
**मुझको कविता का प्रपात दो,**
**अविरत मारण मरण हाथ दो,**
**बँधे परों के उड़ते पर दो।''**

''धाये धाराध धाराधर घावण है'', ''यह गाढतन आषाढ आया'', ''खेत जोतकर घर आया है'' ''बान कूटुता है'', ''खिरनी के पेड़ केतले'', ''भरीतन की भरन'' आदि रचनाएँ गाम्य जीवन का गत्यात्मक चित्रण करते हुए सुंदर बन पड़ी हैं। ''आराधना'' की भाषिक सजगता अपनी व्याप्ति में अत्याधिक उदार और अपनी सहजता में सुंदर बन पड़ी हैं।

''आराधना'' काव्य संग्रह में प्रसाद गुण की प्रतीति ही सरल एवं सुबोध शब्द-योजना के आधार पर होती है। कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार से दृष्टव्य है-

**''आज नदी जल बल घटता है**
**पौरुष का पुरुष पलटता है**
**ज्ञानमान मानों बटता है**
**बिसरे गुण बिना बिसारे।**

**गीत कुंज** – इस संग्रह में तीन संस्करण छपे गये हैं। पहला 1954 में छपा जिसमें 26 कविताएँ हैं। द्वितीय 1959 में छपा और तीसरा अंतिम संस्करण कहा जाएगा जो 1970 में छपा। निराला के प्रगीतों का यह संकलना अर्चना और ''आराधना'' की भाव परंपरा से जुड़ा होने पर भी एक ताजगी और नयेपन का वातावरण रखता है। प्रकृति चेतना से अनुप्राणित ''गीतिका'' के शब्दबंध का यह इंद्रजाल

**''स्तब्ध अन्धकार सघन**
**मन्द मन्द भार पवन**
**ध्यान लग्न नैश असन**
**मूँदे पल नीलोत्पल'' ।**

वर्षा ऋतु जो निराला का प्रिय ऋतु और उसका मनभावन प्राकृतिक चित्रण यहाँ मिलता है। चित्रणात्मक लघुभाव गीतों की ही इस संग्रह में विशेषता है। ''गीतगुंज'' कवि के अन्य संकलनों की तुलना में जितना लघुकाय है उतना ही सघन तथा मोहक भी है।

निराला जी के ''गीतगुंज'' काव्यसंग्रह का एक उदाहरण देखिए जो बहुत कल्याणकारी प्रतीत हुआ दिखाई देता है –

**''प्राण तुम पावन-सावन गात**
**जलज जीवन-यौवन अवदात**
**मृदु बूँदों चितवन की लड़ियाँ,**
**केश, मेघ, मुख पलक अंखडियों,**
**प्रमन चारु चिन्तन की घड़ियाँ**
**जलभर भूमि सुआत''।**

**सांध्य का कली** – निराला का यह ओतम संकलन है। जिसका प्रकाशन 1969 में कवि के देहावसान के बाद हुआ। ''सांध्यकाकली'' नाम अंग्रेजी के ''स्वानसांग'' के समानांतर शायद संपादक के द्वारा रखा गया है। प्रकृति, शृंगार,

यथार्थ, अध्यात्म और कवि की अपनी निजता के सारे पहलू इसमें उभार आये हैं। ''सांध्यकाकली'' में बादल और वर्षा से संबंधित रचनाओं की बहुलता मिलती है। आत्मसमीक्षा के नाटस्थ में भी उनका यह कन्फेशन कितना आत्मीय और प्रीतिकर लगता है

**''यह जीन भरा तुमसे मेरा।**
**वह कौन प्यास बुझकर न रही,**
**वह कौन सांस जो चली सही,**
**वह किस फँसने की रही कली,**
**खुलकर न रही मधु ने टेरा'' ।**

''सांध्यकाकली'' का कल्पना-फलक विराट और बहुरंगी है। निराला की काव्यकृतियों का सर्वेक्षण उनकी बहुमुखी विकासात्मक प्रयोगशीलता और गन्वर जीवन-दृष्टि का खुला परिचय देता है। यह निराला के समग्र कवि जीवन की एक तटस्थ आत्मसमीक्षा।

**स्वयं आकलन के लिए प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न 1**

1. निराला के पिता का क्या नाम था?
2. 'हिन्दी को ईश्वर की देन है निराला' यह किसने कहा था?

## 13.4 भाषा शैली

निराला जी काव्य भाष में शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। खड़ी बोली पर उनका पूर्ण अधि कार था। उनका विश्वास था कि कवि को अपने भावों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने इस संबंध में स्पष्ट लिखा है कि हम ''किसी भाव को जल्दी और आसानी से तभी व्यक्त कर सकेंगे, जब भाषा पूर्ण स्वतंत्र और भावों की सच्ची अनुगामिनी होगी। निराला की भाषा के संबंध में श्री दामोदर ठाकुर अपने अंग्रेजी निबंध में लिखा है जिसका अनुवाद प्रो. फूलचंद जैन 'सारंग' हिंदी में करते हुए कहा है-प्रत्येक कवि अपनी भाषा के स्तर का निर्माता होता है। इस दृष्टि से निराला ने अपनी भाषा के संबंध में जो किया है, सभवता हिंदी का कोई कवि उसकी तुलना नहीं कर सकता। निराला की काव्य रचना (कवितायें) अपने देश और उनकी भाषा का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसका कारण निराला की वह तेजस्विता है, जिसने हिंदी के पौरूष को उसकी अभिव्यंजना शक्ति को अमूल्य पूर्णता प्रदान की है। उन्होंने अपनी कविताओं में हिंदी जन की पूर्णता को उस समय अक्षुण्ण बनाये रखा है जबकि इनके सामायिक कवियों की भाषा अंग्रेजी शैली में डूबी रही। निराला की दृष्टि में काव्य भाषा का विशेष स्थान है। विशेष भावों की अभिव्यक्ति के लिए उनको वे सहस्रों शब्द गढ़ने पड़े जो संगीत ताल एवं लय के साथ खड़ी बोली में खप सके। निराला जी ने अपनी काव्य भाषा में भावों के अनुरूप ही शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी काव्य भाषा में खड़ी बोली के साथ-साथ अंग्रेजी तथा उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है।

**स्वयं आकलन के लिए प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न 2**

1. सूर्यकांत त्रिपाठी का नाम 'निराला' किस पत्रिका के संपादन करने पर पड़ा?
2. निराला के पहल काव्य संग्रह का नाम क्या था?

## 13.5 सारांश

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का हिंदी साहित्य में बहुत योगदान रहा है। निराली जी छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों के कवि एक माने जाते है। निराला जी रहस्यवाद और चिन्तनशील कवि थे। निराला जी को छन्द काव्य ने मुक्तक छंद का प्रयोग करने वाले प्रथम कवि हैं। छायावादी कवियों की भाँति निराला ने भी प्रकृतिगत प्रतीकों का अपनी भाषा

में प्रचुरता में प्रयोग किया है। भाषा का लाक्षणिक प्रयोग छायावाद की विशेषता है। निराला को भाषा में भी लाक्षणिक प्रयोगों का प्राचुर्य है। कविता भी सच्ची भाव सृष्टि का परिणाम है, जिसमें शब्द और अर्थ का उपमान और प्रतीक के समान मधुर लय से योग रहता है। निराला जी की काव्य भाषा में शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। खड़ी बोली पर उनका पूर्ण अधिकार था। उनका विश्वास था कि कवि को अपने भावों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

## 13.6 कठिन शब्दावली

**प्रचुरता** - अधिकतता
**लाक्षणिक** - लक्षण संबंधी
**प्राचुर्य** - बहुतायत
**मुक्तक** - स्वतंत्र छंद
**चिन्तनशील** - विचारशील

## 13.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. पंडित रामसहाय त्रिपाठी।
2. जयशंकर प्रसाद ने।

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. मतवाला ।
2. अनामिका ।

## 13.8 संदर्भित पुस्तकें

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. निराला, निराला रचनावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. रामविलास शर्मा, निराला, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

## 13.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए?

प्रश्न. निराला के साहित्यिक परिचय का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

प्रश्न. 'छायावादी काव्य' में निराला जी का क्या योगदान है, स्पष्ट कीजिए।

*****

# इकाई-14
# सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : काव्यगत विशेषताएँ

**संरचना**


14.1 भूमिका

14.2 उद्देश्य

14.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : काव्यगत विशेषताएँ

स्वयं आकलन प्रश्न-1

14.4 छायावादी काव्य परंपरा में निराला का स्थान

स्वयं आकलन प्रश्न-2

14.5 निराला की सामाजिक सामाजिक चेतना

स्वयं आकलन प्रश्न-3

14.6 सारांश

14.7 कठिन शब्दावली

14.8 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

14.9 संदर्भित पुस्तकें

14.10 सात्रिक प्रश्न


## 14.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने सुर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन और साहित्य का गहनता से अध्ययन किया है। प्रस्तुत पाठ में हम सुर्यकांत निराला त्रिपाठी निराला की काव्यगत विशेषताओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे। इसके अंतर्गत हम निराला छायावादी काव्य परंपरा में निराला का स्थान तथा निराला की सामाजिक चेतना का भी अध्ययन करेंगे।

## 14.2 उद्देश्य

इकाई चौदह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. निराला के काव्य की मुख्य विशेषताएँ क्या है?
2. छायावादी काव्य परंपरा में निराला का स्थान क्या है?
3. निराला की सामाजिक चेतना किस प्रकार की थी?

4 निराला के काव्य का भाव पक्ष कैसा है?

## 14.3 सुर्यकांत त्रिपाठी निराला : काव्यगत विशेषताएँ

निराला जी छायावाद के चार आधार स्तम्भों में से एक हैं। इनके काव्य में छायावाद के साथ-साथ प्रगतिवादी, प्रयोगवादी तथा रहस्यवादी विशेषताएँ भी देखी जा सकती हैं। विद्वानों ने इनके काव्य को तीन सोपानों में व्यक्त किया है। इनके काव्य की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार से हैं-

**(1) वैयक्तिक सुख-दु:ख की अभिव्यक्ति** - छायावादी कवियों में निराला एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में वैयक्तिक सुख-दु:ख की अनुभूतियों को व्यक्त किया है। 'अपरा' की असंख्य कविताओं में उन्होंने वैयक्तिक भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। 'जूही की कली', 'मैं अकेला', 'राम की शक्ति पूजा', 'स्नेह निर्झर बह गया है', 'सरोज स्मृत्ति' आदि उनकी असंख्य कविताओं में वैयक्तिक अनुभूतियों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। 'स्नेह निर्झर बह गया है।' से एक उदाहरण देखिए-

**"स्नेह निर्झर बह गया है।**
**रेत ज्यों तन रह गया है।**
**आम की यह डाल जो सूखी दिखी,**
**कह रही है-"अब यहाँ पिक या शिखी**
**नहीं आते, पंक्ति में वह हूँ लिखी**
**नहीं जिसका अर्थ-**
**जीवन ढह गया है।"**

**( 2 ) प्रेम और सौन्दर्य का निरूपण**-निराला जी की आरम्भिक काव्य रचनाओं में प्रेम और सौन्दर्य का भी प्रभावशाली वर्णन हुआ है, लेकिन इन कविताओं में कवि ने शारीरिक और स्थूल सौन्दर्य का अधिक चित्रण किया है जिसके फलस्वरूप कुछ स्थलों पर अश्लीलता भी उत्पन्न हो गई है। लेकिन निराला की कुछ ऐसी कविताएँ भी हैं, जिनमें कवि के द्वारा वर्णित शृंगार और प्रेम बड़ा ही उदात्त और पावन बन पड़ा है। ऐसे स्थलों पर उनका प्रेम निरूपण लौकिक होने के साथ-साथ अलौकिक भी बन गया है। 'जूही की कली' नामक कविता से प्रेम और सौन्दर्य के वर्णन का एक उदाहरण देखिए-

**"निर्दय उस नायक ने**
**निपट निठुराई की**
**कि झोंकों की झाड़ियों से**
**सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली**
**मसल दिए गोरे कपोल गाल**
**चौक पड़ी युवती"**

**( 3 ) प्रकृति वर्णन**-अन्य छायावादी कवियों के समान निराला ने भी अपनी काव्य रचनाओं में प्रकृति का बड़ा सुन्दर एवं मनोहारी वर्णन किया है। उनकी काव्य रचनाओं में प्रकृति के अलंकृत, मानवीकृत आदि विभिन्न रूप देखे जा सकते हैं। 'बादल राग' शीर्षक से कवि की छः कविताएँ पढ़ने को प्राप्त होती हैं। इनमें उन्होंने छायावादी शैली के अनुसार प्रकृति के असंख्य चित्र प्रस्तुत किए हैं। 'बादल राग' से ही प्रकृति के आलम्बन रूप का एक उदाहरण देखिए-

**"बार-बार गर्जन**
**वर्षण है मूसलधार**
**हृदय थाम लेता संसार**
**सुन-सुन घोर वज्र हुंकार"**

इसी प्रकार से कवि ने 'जूही की कली' में भी प्रकृति का आलम्बनगत वर्णन किया है। उदाहरण देखिए-

**"मृग में पिक-कुहरित डाल-डाल।**
**हे हरित विटप सुन सुमन-माल।**
**हिलती लतिकाएँ ताल-ताल पर सस्मित,**
**पड़ता है उन पर ज्योति प्रपात।"**

**( 4 ) रहस्यानुभूति**-निराला जी वेदान्त दर्शन से अत्यधिक प्रभावित थे और वे भक्ति को सर्वोपरि मानते थे। 'पंचवटी' में उन्होंने मुक्ति और भक्ति पर गंभीर विचार किया है। एक स्थल पर वे कहते भी हैं-

**"मुक्ति नहीं चाहता मैं, भक्ति रहे, काफी है।"**

इसी 'पंचवटी प्रसंग' में कवि ने भक्ति, योग, कर्म, ज्ञान आदि का समन्वय करने का प्रयास किया है। कवि

लिखता है–

**''भक्ति-योग-कर्म-ज्ञान एक ही है,**
**यद्यपि अधिकारियों के निकट मित्र दिखते हैं।**
**एक ही है दूसरा नहीं है कुछ-**
**द्वैत भाव ही है भ्रम।''**

इसी प्रकार उस विराट् भ्रम के प्रति क्षुद्र जीव की आसक्ति को कवि ने स्थान-स्थान पर चित्रित किया है। 'जूही की कली', 'तुम और मैं' आदि कविताओं में कवि की रहस्यवादी भावना देखी जा सकती है।

**( 5 ) निराशा-वेदना और दु:खवाद की अभिव्यक्ति**- छायावादी कवि होने के कारण निराला की कविता में वेदना, दु:खवाद तथा करुणा की विवृत्ति भी देखी जा सकती है। अन्य छायावादी कवियों ने भी वेदना और दु:ख को जीवन का अनिवार्य अंग स्वीकार किया है। फिर निराला तो आजीवन दु:खों को भोगते रहे। 'स्नेह निर्झर बह गया' नामक कविता में कवि ने बार-बार वेदना और पीड़ा की चर्चा की है। कवि कहता है–

**''दिए हैं मैंने जगत् को फूल-फल,**
**किया है अपनी प्रभा से चकित-चल,**
**पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल**
**ठाठ जीवन का वही जो ढह गया है।''**

सामाजिक विषमताओं को देखकर कवि काफी निराश प्रतीत होता है। उसके मन में वेदना और निराशा के भाव उत्पन्न होने लगते हैं। 'राग-विराग' में संकलित उनकी कविताओं में 'मैं अकेला', 'मरण को जिसने वरा है', 'स्नेह निर्झर बह गया है' आदि में हमें वेदना और पीड़ा का स्वर सुनाई पड़ता है। 'मैं अकेला' में कवि कहता भी है–

**''मैं अकेला**
**आ रही मेरे जीवन की सांध्य बेला**
**पके आधे बाल मेरे**
**हुए निष्प्रभ गाल मेरे''**

**( 6 ) मानवतावादी भावना और प्रगतिवादी स्वर**-निराला केवल छायावादी कवि ही नहीं थे, बल्कि वे प्रगतिवादी कवि भी थे। उन्होंने अपनी कविताओं में उपेक्षित और पद-दलित मानव को स्थान दिया है। वे मानव में एक उज्ज्वल आत्मा का दर्शन करते हैं। अत: वे अपनी ओजपूर्ण वाणी में उपेक्षितों का बड़ी सशक्तता के साथ वर्णन करते हैं। 'तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक', 'किसान की नई बहू की आँखें', 'रास्ते के फूल', 'कुकुरमुत्ता', 'विधवा' आदि कविताओं में निराला का प्रगतिवादी स्वर सुनाई देता है। इन सभी कविताओं में कवि का मानवतावादी दृष्टिकोण भी उपस्थित है।

'भिक्षुक' नामक कविता में वे यथार्थवादी चित्र अंकित करते हुए लिखते हैं –

**''वह आता**
**दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर जाता।**
**पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक**
**चल रहा लकुटिया टेक**
**मुट्ठी भर दाने को अपनी भूख मिटाने को**
**मुँह फटी-पुरानी झोली का फैलाता।।''**

**( 7 ) नारी के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण**- यद्यपि निराला ने अपनी कविताओं में नारी के शारीरिक और मानसिक सौन्दर्य का चित्रण किया है। लेकिन आगे चलकर उनकी कविता में क्रमिक सुधार एवं विकास होता चला

गया। 'जूही की कली' जैसी स्थूलता अब लगभग समाप्त हो गई थी। कवि अपनी कविताओं में नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाता हुआ प्रतीत होता है। 'विधवा' नामक कविता में कवि ने नारी की कारुणिक दशा का जो वर्णन किया है, वह बेमिसाल बन पड़ा है। कवि लिखता है-

**''वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सी**
**वह दीप-शिखा-सी शान्त, भाव में लीन,**
**वह क्रूर-काल-ताण्डव की स्मृति रेखा सी,**
**वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन**
**दलित भारत की विधवा है।''**

**(8) राष्ट्रीय भावना**-निराला जी ने अपनी कविताओं में राष्ट्रीय भावना का भी पर्याप्त चित्रण किया है। 'खून की होली जो खेली', 'जागो फिर एक बार', 'भारती वन्दन', 'वीणा वादिनी वर दे' आदि कविताओं में कवि ने बार-बार देश-प्रेम की भावना को भी व्यक्त किया है। एक सच्चे राष्ट्रवादी कवि होने के कारण निराला ने तत्कालीन युवकों को देश के सम्मान और स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों को बलिदान करने की प्रेरणा दी है। कवि माँ सरस्वती की वन्दना करता हुआ उससे प्रार्थना करता है कि वे भारतवासियों में स्वतन्त्रता का प्रिय स्वर अनश्वर मंत्र भर दे। स्रोत शैली में भारत की वन्दना करते हुए कवि लिखता है-

**''बनू पद सुन्दर तब,**
**छन्द नवल स्वर-गौरव,**
**जननि, जनक-जननि-जननि,**
**जन्मभूमि भाषे!''**
**''दु:ख-भार भारत तम केवल,**
**वीर्य-सूर्य के ढके सकल दल,**
**खोलो उषा-पटल निज कर मयि**
**छविमयि, दिन-मणि के।''**

**(9) सामाजिक चेतना और विद्रोह का स्वर**-अधिकांश विद्वानों का मत है कि छायावादी कवि पलायनवादी थे। लेकिन यह दृष्टिकोण पूर्णत: एकांगी है। निराला जी के काव्य में सामाजिक चेतना से सम्बन्धित अनेक स्थल देखे जा सकते हैं। 'वीणा वादिनी वर दे' नामक कविता में कवि समाज में नवीन शक्ति का प्रादुर्भाव देखना चाहता है। वह समाज के शोषितों और उपेक्षितों की कथा को व्यक्त करता है। आगे चलकर कवि प्राचीन परम्परा के प्रति विद्रोह करता हुआ दिखाई देता है। अन्य छायावादी कवियों की अपेक्षा निराला अधिक विरोधी और स्वच्छन्दतावादी दिखाई देते हैं। अपनी संस्कृति की प्रशंसा करने वालों को ललकारते हुए एक स्थल पर वे कहते हैं- **''हजार वर्ष से सलाम ठोंकते-ठोंकते नाक में दम हो गया, अपनी संस्कृति लिए फिरते हैं। ऐसे लोग संसार की तरफ से आँखें बन्द कर अपने ही विवर को घाघ्र बन बैठे रहते हैं। अपनी ही दिशा में ऊँट बन कर चलते हैं।''** निराला जी पुरानी रूढ़ियों और जड़-परम्पराओं को नष्ट करना चाहते थे। काव्य-जगत् में भी उन्होंने मुक्त छन्द का प्रवर्त्तन करते हुए तत्कालीन साहित्यकारों और सम्पादकों का विरोध किया। अपनी बेटी सरोज के लिए वे सामाजिक नियमों को तोड़ने के लिए आमादा दिखाई पड़ते हैं। वे लिखते हैं-

**''तुम करो ब्याह, तोड़ता नियम**
**मैं सामाजिक योग के प्रथम**
**लग्न में पढ़ूंगा स्वयं मन्त्र**
**यदि पंडित जी होंगे स्वतन्त्र।''**

**( 10 ) कला पक्ष**-निराला ने भाव और छन्द के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। उनके गेय पदों की भाषा माधुर्य गुण से पूर्ण है। लेकिन अतुकान्त पदों की भाषा ओज गुण से युक्त है। 'राम की शक्ति पूजा' की भाषा यदि संस्कृतगर्भित है तो 'कुकुरमुत्ता' की भाषा नित्य प्रति की व्यवहार में आने वाले उर्दू मिश्रित व्यंग्य प्रधान भाषा है। कहीं-कहीं तो वे अपनी काव्य भाषा में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग करने लगते हैं। 'राम की शक्ति पूजा' से संस्कृतगर्भित पदावली देखिए -

**''अनिमेष राम-विश्व जीत दिव्य शरभंग भाव।**
**विद्धांग बद्ध कोदंड-पुष्टि स्वर-रुधिर स्राव।**
**रावण प्रहार-दुर्बार-विकल वानर दल-बल**
**मूर्छित सुग्रीवांगद-भीषण-गवाक्ष-गय-नल।''**

'**कुकुरमुत्ता**' नामक कविता में कवि ने उर्दू शब्दों का प्रयोग बड़ी सहजता के साथ किया है। इससे स्पष्ट है कि भाषा पर कविवर निराला का असाधारण अधिकार था। एक उदाहरण देखिए-

**''अबे सुन वे गुलाब**
**भूल मत गर पाई, खुशबू रंगोआब।**
**खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट**
**डाल पर इतरा रहा कैपीटिलिस्ट॥''**

निराला ने अपनी कविताओं में अलंकारों का बड़ा ही स्वाभाविक प्रयोग किया है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास उदाहरण, अन्योक्ति, मानवीकरण आदि कवि के प्रिय अलंकार हैं। कुछ उदाहरण देखिए-

**उपमा-** **'वह टूटे तरु की छूटी लता-सी हीन।'**
**''तुम आशा के मधुमास और में पिक कल कूजन तान**
**रूपक-** **तुम मदन पंच शर-हस्त और मैं हूँ मुग्धा अनजान''**
**मानवीकरण-** **''बन्द कंचुकी के सब खोल दिये प्यार से**
**यौवन उभार ने**
**पल्लव पर्यक पर सोती शैफाली के''**

जहाँ तक छन्द विधान का प्रश्न है निराला ने प्रमुखतः मुक्त छन्द को ही चुना है। काव्य के कला पक्ष की दृष्टि से मुक्त छन्द निराला की सबसे बड़ी देन है जिसका प्रयोग उन्होंने बड़ी निर्भयता के साथ किया। उनका विचार था कि मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग होना है। 'जूही की कली', 'पंचवटी प्रसंग', 'छत्रपति शिवाजी का पत्र', 'जागो फिर एक बार', 'शेफालीका' आदि मुक्तक छन्द में लिखी हुई कुछ उल्लेखनीय कविताएँ हैं। यही नहीं, कवि ने अपनी काव्य भाषा में लाक्षणिक, चित्रात्मक, संगीतात्मक तथा प्रतीकात्मक शब्दावली का भी खुलकर प्रयोग किया है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -2**

1. 'अबे सुन के गुलाब' किस कविता से ली गई पंक्तियाँ हैं?
2. 'जूही की कली' कविता कब लिखी गई?

## 14.4 छायावादी काव्य परंपरा में आप निराला का स्थान

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी छायावाद के चार प्रमुख आधार स्तंभों श्री जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत तथा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' में से एक हैं। निस्संदेह छायावादी काव्य परंपरा में उनका स्थान अति विशिष्ट है। एक भी महाकाव्य के प्रणेता न होते हुए भी ये महाकवि कहलाते हैं। छायावाद की समय सीमा, जो 1920 से 1938 तक मानी जाती है, इसमें निराला जी ने अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936) व तुलसीदास (1938) आदि काव्य ग्रंथों की रचना की। उपयुक्त चारों ही रचनाओं में तमाम छायावादी प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं।

छायावादी काव्य के इतिहास में पंत के पल्लव के समान निराला के परिमल का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसे छायावाद का प्रतिनिधि काव्य कहा जाता है। इस रचना में 'जागृति' में सुप्ति थी', 'जुही की कली', 'जागो फिर एक बार', 'प्रिया के प्रति', 'अध्यात्म फल', 'अधिवास', 'ध्वनि', 'विस्मृत भोर', 'पंचवटी', 'विधवा' आदि कविताएँ संकलित हैं। रचनाओं में प्रेम, सौंदर्य, करूणा व रहस्य भावना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। राष्ट्रीय चेतना की सूक्ष्म अनुभूतियों की व्यंजना जितनी गभीर और प्रौढ़ स्वरों में **परिमल** में हुई है, उतनी उस समय तक छायावाद के किसी अन्य कवि की वाणी में नहीं हो पाई। परिमल की कविताओं में सचमुच समूची जाति के मुक्ति का प्रयास का पता चलता है। परिमल की कविताओं में विषय की विविधता को देखते हुए जहाँ शुक्ल जी ने कहा है- **''निराला में बहु वस्तु स्पर्शिनी प्रतिमा है।''** वहीं डॉ. नगेन्द्र का इस विषय में कथन है- **''निराला की एक ही समय की रचनाओं में दिखाई देने वाली यह अनेक रूपता संभवतः उनके अध्ययन के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण संकेत है। अन्य कवियों की जैसे पन्त की, अनेकरूपता काल में विस्तृत साधना की विशेषता है-जैसे-जैसे युग बदलता है, कवि यथार्थ के लिए स्तरों और आयामों के प्रति सजग होता चलता है। किंतु निराला अद्वैत दर्शन से भिखारी के जीवन तक फैले युग सत्य के विविध स्तरों और आयामों को मानो एक साथ ही अपनी साधना में समेट लेना चाहते हैं। यह सूक्ष्म गवेषणा का विषय है कि उसके जीवन में जो बिखराव आया, उसे चेतना और शिल्प के उनके आरंभिक बिखराव या विस्तार से कहाँ तक संबद्ध किया जा सकता है।''**

परिमल के साथ ही निराला जी की अनामिका और गीतिका भी बड़ी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। अनामिका में संकलित महत्त्वपूर्ण कविताएँ हैं- 'हताश', 'हिंदी के सुमनों के प्रति पत्र', 'सच है', 'सरोज-स्मृति' व 'राम की शक्ति पूजा'। इसी प्रकार गीतिका में संकलित महत्त्वपूर्ण कविताएँ हैं- 'रंग गई पग-पग धन्य धरा', 'अमरण भर वरण-गान', 'सखि, वसंत आया' महत्त्वपूर्ण कविताएँ है- 'हताश', 'हिंदी के सुमनों के प्रति पत्र', 'सच है', 'सरोज-स्मृति' व 'राम की शक्ति पूजा'। इसी प्रकार गीतिका में संकलित महत्त्वपूर्ण कविताएँ हैं- 'रंग गई पग-पग धन्य धरा', 'अमरण भर वरण-गान', 'सखि, वसंत आया', '(प्रिय) यामिनी जागी', 'मौन रही हार', 'नयनों के लाल डोरे', 'गर्जन से भर दो वन', 'वर दे, वीणा वादिनी वर दे!', 'पावन करो नयन!', 'भारति, जय-विजय करे!', 'प्रात तव द्वार पर', आदि।

अनामिका में संकलित दो कविताएँ- 'सरोज-स्मृति' व 'राम की शक्ति पूजा' जो दोनों ही लंबी कविताएँ हैं, छायावाद की उपलब्धियाँ मानी जाती हैं। सरोज-स्मृति हिंदी का श्रेष्ठ शोक गीत है, जो निराला जी की अपनी असामयिक दिवंगता पुत्री सरोज को श्रद्धांजलि है। पुत्री को श्रद्धांजलि देने के साथ ही निराला जी ने इस कृविता में अपने व्यक्तिगत कष्टों और अपने जीवन की संघर्ष की सफलता असफलता को मुखरित किया है-

**कन्ये मैं पिता निरर्थक था**
**कुछ भी तेरे हित कर न सका।**

इसी प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' में निराला जी ने एक ऐतिहासिक प्रसंग द्वारा धर्म और अधर्म के शाश्वत संघर्ष का चित्रण किया है। राम धर्म के प्रतीक हैं और रावण अधर्म का। इस कविता में अधर्म का चित्रण एक प्रचंड शक्ति के रूप में हुआ है, जिसके सामने एक बार तो राम का साहस भी कुंठित होने लगता है। यह स्थिति एक ओर तो कवि के व्यक्तिगत जीवन के भयानक संघर्ष से संबद्ध हो जाती है तो दूसरी ओर युगीन यथार्थ की विकरालता को भी प्रकट करती है। अंत में राम शक्ति की मौलिक कल्पना करते हैं। उसकी आराधना करते हैं और अधर्म के विनाश के लिए सक्षम होते हैं। शक्ति की उपासना में एक ओर तो परंपरागत सत्य की स्वीकृति का संकेत निहित है और दूसरी ओर मौलिक कल्पना इस बात पर बल देती है कि प्राचीन सास्कृतिक आदर्शों का युगानुरूप संशोधन अनिवार्य है।

'अनामिका', 'परिमल' व 'गीतिका' के अतिरिक्त इस दौर में निराला जी ने तुलसीदास नामक खंडकाव्य की रचना की है। इस खंड काव्य में उन्होंने लोक में प्रचलित उस कथा को आधार बनाया है, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जब तुलसीदास बिना बुलाए अपनी पत्नी रत्नावली से मिलने के लिए उसके नैहर पहुँचे, तब उसने उन्हें फटकारा, जिसका प्रभाव यह हुआ कि तुलसीदास गृहस्थ जीवन त्याग कर रामोपासना में लीन हो गए। इस रचना में

निराला जी ने व्यक्तिगत सुख और जीवन के महान एवं व्यापक मूल्यों के बीच संघर्ष दिखाकर अंत में उदात्त मूल्यों की विजय दिखाई है।

अत: छायावादी युग में रचित निराला जी की उपयुक्त चारों रचनाओं का संक्षिप्त परिचय पा जाने के उपरांत जब हम छायावाद की प्रमुख विशेषताओं को इन रचनाओं में खोजते हैं तो स्वत: ही हम छायावादी काव्य परंपरा में निराला जी का स्थान निर्धारित करने में समर्थ हो जाते हैं। छायावाद की सामान्य विशेषताएँ हैं–

**1. व्यक्तिगत सुख-दुखों की प्रधानता**– व्यक्तिगत सुख-दुखों की प्रधानता से अभिप्राय है अपनी कविताओं में प्रधान रूप से अपने सुख-दुखों की अभिव्यक्ति करना। अन्य छायावादी कवियों की भाँति निराला जी की इन रचनाओं में भी उनके व्यक्तिगत सुख-दुखों की मार्मिक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। यथा सरोज स्मृति में निराला जी लिखते हैं–

**''दु:ख जी जीवन की कया रही**
**क्या कहूँ आज जो नहीं कही।**
**हो इसी कर्म पर वज्रपात।**
**यदि धर्म, रहे नत सदा साथ।''**

**2. प्रकृति-चित्रण**–प्रकृति चित्रण छायावादी काव्य परंपरा की महत्त्पूर्ण प्रवृत्ति है। प्राय: सभी छायावादी कवियों ने अपने अपने काव्य में प्रकृति का आलंबन, उद्दीपन, मानवीकरण व अन्याय रूपों में चित्रण किया है। कवियों ने प्रकृति चित्रण के द्वारा प्राय: अपनी निजी अनुभूतियों का व्यक्तिकरण भी किया है। सुमित्रानंदन पंत जी तो इस क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ होने के कारण प्रकृति के सुकुमार कवि ही कहलाते हैं। निराला जी ने भी अपने साथी कवियों का साथ देते हुए अपनी इन रचनाओं में प्रकृति के होने के कारण प्रकृति के सुकुमार कवि ही कहलाते हैं। निराला जी ने भी अपने साथी कवियों का साथ देते हुए अपनी इन रचनाओं में प्रकृति के उद्धाम चित्र खींचे हैं। यथा– 'जुही की कली' में मानवीकरण रूप में प्रकृति का चित्रण करते हुए वे लिखते हैं–

**''विजन वन बल्लरी पर**
**सोती थी सुहाग भरी-स्नेह स्वप्न मग्न-**
**अमल-कोमल-तनु तरुणी-जुही की कली,**
**दृग बंद किए, शिथल-पत्रांक में,**
**वासंती निशा थी;**
**विरह-विधुर-प्रिया-संग छोड़**
**किसी दूर देश में था पवन**
**जिसे कहते हैं मलयानिल।''**

निराला जी प्रतीकात्मक रूप में भी प्रकृति चित्रण में सिद्धहस्त हैं, बादल राग कवितों में व बादल की क्रांति के रूप में इस तरह प्रस्तुत करते हैं–

**''बार-बार गर्जन**
**वर्षण है मूसलधार,**
**हृदय थाम लेता है संसार,**
**सुन-सुन घोर बज हुंकार।''**

यही नहीं उन्होंने अपने काव्य में समस्त् विश्व मानवता के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यंजना की है। उनक लिए भारतीय और अभारतीय में कोई अंतर नहीं सर्वत्र एक ही आत्मा व्याप्त है। विश्व मानवता की प्रतिष्ठता उनका आदर्श है। यही कारण है कि वे भिक्षुक कविता में भिखारी के प्रति दयार्द्र होकर लिखते हैं–

**''वह आता**
**दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।**
**पेट-पीठ दोनों है मिलकर एक**
**चल रहा लकुटिया टेक।''**

निराला जी का काव्य समस्त् विश्व के शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति करता है।

**9. भाषा-शैली**-निराला जी की काव्य भाषा अन्य छायावादी कवियों की भांति पूर्ण रूपेण छायावादी काव्य परंपरा का प्रतिनिधित्व करने वाली साहित्यिक खड़ी बोली है। हालाकि निराला जी की मातृ-भाषा बंगाली रही है, परन्तु उन्होंने हिंदी और संस्कृत भाषा का भी गहन अध्ययन किया था, उस अध्ययन की स्पष्ट परिणति उनकी काव्य भाषा में दिखाई देती है। उनकी भाषा में भी विषयों के वैविध्य के अनुरूप वैविध्य दिखाई देता है। कहीं पर इन्होंने घोर तत्सम् प्रधान भाषा का प्रयोग किया है तो कहीं पर जनसाधारण द्वारा प्रयुक्त सरल, सहज भाषा का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं इनकी भाषा में विदेशी शब्दों का बाहुल्य भी देखने को मिलता है। इनकी भाषा यथा प्रसंग-प्रसाद, माधुर्य व ओज गुणों से युक्त है। इनकी छायावादी कविताओं में माधुर्य गुण की अधिकता है, जो छायावादी कवियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। छंद की दृष्टि से निराला जी युगान्तकारी कवि हैं तथा मनुष्य की स्वतंत्रता की भांति कविता की भी स्वतंत्रता चाहते हैं। अत: मुक्त कविता के प्रवर्तक ही नहीं घोर समर्थक भी हैं। इनका विधान और प्रतीक योजना भी समकालीन कवियों के साथ साम्य रखती है। इन्होंने कुछ नए प्रतीकों को भी अपने काव्य में स्थान दिया है। अलंकारों की दृष्टि से इनकी भाषा अनायास रूप से समृद्ध है। इन्होंने प्रचलित अलंकारों के साथ-साथ मानवीकरण व विशेषण-विपर्यय आदि अलंकारों का भी बहुतायात में प्रयोग किया है। ये लाक्षणिक रूप में अपनी बात कहने में समर्थ हैं तथा लाक्षणिक शब्दावली का भी बहुतायत किया है। लाक्षणिक रूप में अपनी बात कहने में समर्थ है तथा लाक्षणिक शब्दावली का भी अपनी भाषा में प्रचुर मात्रा में प्रयोग करते हैं। इनकी काव्य भाषा में इसके अतिरिक्त संगीतात्मकता का गुण सर्वत्र विद्यमान है। उन्होंने ध्वन्यात्मकता व नाद सौंदर्य को बनाए रखने के लिए उचित व समान ध्वनि वाले वर्णो का अधिक प्रयोग किया है। इनकी तुकांत योजना भी संगीतात्मकता की पुष्टि करती है। इन्होंने छायावादी कवियों के अनुरूप अपनी अभिव्यक्ति हेतु मुख्यत: आत्मकथात्मक, संबोधन, प्रतीकात्मक, चित्रात्मक व भावनात्मक शैलियों को अपनाया है।

इस प्रकार छायावादी काल में निराला जी द्वारा रचे गए काव्य एवं उस काव्य में मौजूद विशेषताओं का विवेचन करने के उपरांत हम कह सकते हैं कि छायावादी काव्य परंपरा में निराला जी का स्थान अति महत्त्वपूर्ण है। वे छायावाद के चार आधार स्तंभों में से एक ही नहीं है, अपितु अपनी रचनाओं से उसका पोषण करने वाले हैं। उनकी रचनाओं में अपने समकालीन कवियों की तुलना में यदि प्रकृति-चित्रण (पंत से) व रहस्य भावना (महादेवी से) जैसी कुछ विशेषताएँ अपेक्षाकृत कम तीव्रता के साथ अभिव्यक्त हुई हैं तो व्यक्तिगत सुख-दुख की भावना, नारी सौंदर्य व प्रेम चित्रण, राष्ट्रीय भावना, दार्शनिक चेतना, स्वच्छंता व मानवतावाद कुछ अधिक तीव्रता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। इनकी भाषा शैली भी अपने समकालीन कवियों के समकक्ष स्थान रखती है। अत: कहा जा सकता है कि छायावाद का जनक होने के कारण यदि छायावादी काव्य में जयशंकर प्रसाद जी का स्थान ब्रह्मा के समान है तो छायावादी काव्य का पोषण करने के कारण छायावादी काव्य परंपरा में निराला जी का स्थान विष्णु के समान है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -2**

1. 'राम की शक्ति पूजा' कैसी कविता है?
2. 'हिन्दी का शोक' निराला की किस कविता को कहा गया है?

### 14.5 निराला की सामाजिक चेतना-

निराला की सामाजिक चेतना- 'समाज' व्यक्तियों समूह है और उनकी चेतना समाज की चेतना होती है। किन्तु यहाँ कवि की सामाजिक चेतना की जानकारी पूछी गई है। इसका तात्पर्य है कवि की तमाज व उसके व्यक्तियों के

जीवन और उसमें होने वाली गतिविधियों की जानकारी। समाज के सुख-दुःख को समझना एवं अनुभव करना तथा उसे अपने काव्य में अभिव्यक्त करना किसी भी साहित्यकार की सामाजिक चेतना कही जा सकती है। 'निराला' अपने युग के सजग साहित्यकार थे। समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों के प्रति निराला जी के काव्य में विद्यमान चेतना ही उनके काव्य का प्राण तत्त्व है। पाठ्यक्रम में संकलित उनकी कविताओं में उनकी महान सामाजिक चेतना को सहज ही देखा जा सकता है। पठित कविताओं में निराला जी की सामाजिक चेतना विविध रूपों में व्यक्त हुई है।

**1. नारी-जीवन के प्रति सहानुभूति**-नारी-जीवन के प्रति निराला जी की भावना को व्यक्त करने वाली प्रमुख रचना 'विद्यवा' है। निराला जी के काव्य में भी नारी के प्रति उनके उदार विचारों का उल्लेख हुआ है। उन्होंने अपने काव्य में नारी के मान-सम्मान की बात ही नहीं कहीं, अपितु नारी के प्रति अपने उदार दृष्टिकोण के कारण उसके जीवन की विभिन्न समस्याओं को जोरदार शब्दों में उठाया है। अनमेल विवाह, नारी शोषण, विधवा विवाह आदि समस्याओं का अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण उल्लेख किया है। नारी-जीवन-चित्रण की दृष्टि से 'विधवा' एक महत्त्वपूर्ण रचना है। इस कविता में कवि ने विधवा-समस्या को ही नहीं उठाया, अपितु नारी सम्मान के पक्षघर के रूप में निराला जी सामने आए हैं। भारत में विधवा का जीवन कितना दयनीय होता है, उसका उल्लेख निराला जी ने निम्नांकित पंक्तियों में किया है-

**उस करुणा की सरिता के मलिन पुलिन पर,**
**लघु टूटी हुई, कुटी का, मौन बढ़ाकर**
**अति छिन्न हुये भीगे अंचल में मन को-**
**दुःख रूखे-सुखे अधर-त्रस्त चितवन को**
**वह दुनिया की नजरों से दूर बचाकर**
**रोती है अस्फुट स्वर में**
**दुःख सुनता है आकाश धीर,-**
**निश्चल समीर,**
**सरिता की वे लहरें भी ठहर-ठहर कर।**

भारत जैसे देश में विधवा होना किसी अभिशाप से कम नहीं है। उस पर किसी दैवीय अत्याचार का प्रकोप हो जाने के समान है। ऐसे दुख के समय में उसको कोई सहायता नहीं करता, न ही उसे कोई धीरज बंधाने के लिए सामने आता है।

**कौन उसको धीरज दे सके,**
**दुःख का भार कौन ले सके ?**
**यह दुःख वह जिसका नहीं कुछ छोर है,**
**दैव, अत्याचार कैसा घोर और कठोर है?**

**2. कृषक वर्ग के प्रति चेतना**-निराला जी ने अपनी विभिन्न काव्य-रचनाओं में तत्कालीन भारतीय किसान के जीवन की विभिन्न समस्याओं का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। उस युग में जब भारत गुलाम था, किसान जमींदारों, अमीरों, शासकों के शोषण का शिकार था। वह अत्यन्त दीन-हीन दशा में जीवन व्यतीत कर रहा था। वह दिन-रात परिश्रम करने के बावजूद भी अभावमय जीवन जीने के लिए विवश था। उसकी दशा अत्यन्त जीर्ण-क्षीर्ण हो चुकी थी। उसकी ऐसी दयनीय दशा को देखकर निराला जी का हृदय चीत्कार कर उठता है। 'बादल राग' कविता में उनकी यह चीत्कार क्रांति का रूप धारण कर लेता है। किसान के जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए निराला जी ने लिखा है-

**जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,**
**तुझे बुलाता कृषक अधीर,**
**ऐ विप्लव के वीर**
**चूस लिया है उसका सार,**
**हाड़ मात्र ही हैं आधार,**
**ऐ जीवन के पारावार!**

**3. मजदूर वर्ग के लिए प्रति सहानुभूति**-किसी समाज के विकास में मजदूर वर्ग का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। वे सदैव अंधेरे में रहकर दूसरों के लिए प्रकाश उत्पन्न करते हैं। स्वयं सर्दी-गर्मी सहकर दूसरों के जीवन की सुरक्षा के लिए आलीशान भवन खड़े करते हैं। निराला जी के युग में मजदूरों की दशा चिंताजनक थी। कृषकों की भांति ही मजदूर वर्ग का भी भरपूर शोषण हो रहा था। निराला जी ने अपनी सुप्रसिद्ध कविता 'वह तोड़ती पत्थर' में दोपहर के समय तेज धूप में इलाहाबाद के राजमार्ग पर एक मजदूरिन को पत्थर तोड़ते हुए देखा। उसके पास शरीर ढाँपने के लिए अच्छे वस्त्र नहीं थे। कवि मजदूर वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करता कहता है-

**"देखते देखा, मुझे तो एक बार**
**उस भवन की ओर देखा, छिन्न तार,**
**देख कर कोई नहीं।**
**देखा मुझे उस दृष्टि से**
**जो मार खा रोयी नहीं,**
**सजा सहज सितार।**
**एक क्षण के बाद वह कॉपी सुधर**
**ढुलक माथे से गिरे सीकर,**
**लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-**
**मैं तोड़ती पत्थर।"**

**4. सामाजिक यथार्थ का वर्णन** -सामाजिक यथार्थ के जितने पहलू निराला जी के काव्य में चित्रित हुए हैं, उतने अन्यत्र नहीं। उन्होंने भिखारियों के जीवन की हीन-दशा का करुणाजनक वर्णन किया है-

**वह आता**
**दो टूक कलेजे के करता पछताता पर आता।**
**पेट पीठ दोनों हैं मिलकर एक,**
**चल रहा लकुटिया टेक,**
**मुट्ठी भर दाने को-भूख मिटाने को**
**मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता-**
**दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पच पर आता।**

निराला जी ने अपनी कविता 'राजे' ने अपनी रखवाला की में सामन्ती व्यवस्था में राजाजों की खुशामद करने वाले चापलूसों का भी यथार्थ चित्रण किया है-

**राजे ने अपनी रखवाली की**
**किला बना कर रहा**
**बड़ी-बड़ी फौजें रखी-चापलूस कितने सामंत आये।**
**मतलब की लकड़ी पकड़े हुए-कितने ब्राह्मण आये**

**पोथियों में जनता को बाँधे हुए**
**कवियों ने उनकी बहादुरी के गीत गाए**
**लेखकों ने लेख लिखे।**

इसी प्रकार 'जागो फिर एक बार' कविता में भी निराला जी ने पराधीन भारत की जनता के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की कठिनाइयों का न केवल उल्लेख किया, अपितु उन कठिनाइयों से संघर्ष करने की प्रेरणा भी दी है। 'जागो फिर एक बार' कविता में लिखा है-

**तुम हो महान्, तुम सदा हो महान्**
**है नश्वर यह दीनभाव,**
**कायरता, कामपरता**
**ब्रह्म हो तुम,**
**पद-रज-भर भी है नहीं**
**पूरा यह विश्व-भार''**
**जागो फिर एक बार।**

अत: सार रूप में कहा जा सकता है कि निराला जी के काव्य में चित्रित समाज के विभिन्न रूपों के आध ार पर कहा जा सकता है कि निराला जी अपने युग के समाज के जीवन के प्रति अत्यन्त सतर्क रहे थे। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन की कठिनाइयों को अत्यन्त गहराई से अनुभव किया है तथा उसे यथार्थ रूप में अपने काव्य में स्थान दिया।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -2**

1. 'तुलसीदास' कृति का प्रकाशन वर्ष क्या है?
2. 'तुम हो महान्, तुम सदा हो महान्' पंक्ति किस कविता से ली गई हैं?

## 14.6 सारांश

निराला का छायावाद भाषा के समस्त गुणों से सम्पन्न हो। छायावादी भाषा की प्रमुख विशेषताएं हैं-कोमलता नव शब्दों की मधुर योजना, प्रकृतिगत प्रतीकों की प्रचुरता भाषा का लाक्षणिक प्रयोग, संगीतात्मकता, चित्रात्मकता और प्राचीन भाषागत रूढ़ियों के प्रति विद्रोह। निराला की भाषा का विश्लेषण भी इसी आधार पर ही किया गया है। निराला हिंदी में मुक्त छंद के लिए प्रसिद्ध है। वे स्थितियों के संश्लेश से कम से कम शब्दों द्वारा अधिक से अधिक भाव पक्ष प्रकट करते हैं। नाद-योजना का उनकी काव्यात्मकता में विशिष्ट स्थान है। यही कारण है कि उनकी कविता में कभी कभी दुखहता आ जाती है। यद्यपि निराला मुक्त छंद में प्रर्वतक माने जाते हैं तथापित उन्होंने विभिन्न छदों में कविताएँ लिखी हैं।

## 14.7 शब्दार्थ

प्रचुरता - आधिक्य
दुखहता - दर्बोधता
संश्लेषण - एक में मिलाना
संलग्नता - लिप्तता
अपकर्ष - अवनति

## 14.8 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न–1**

1. कुकुरमुत्ता।
2. 1916 ई. में।

**अभ्यास प्रश्न–2**

1. लम्बी कविता ।
2. सरोजस्मृति ।

**अभ्यास प्रश्न–3**

1. 1938 ई. ।
2. 'जागों फिर एक बार' से ।

## 14.9 संदर्भित पुस्तकें


1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
2. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. रामविलास शर्मा, निराला, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।


## 14.10 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न. निराला की भाषा शैली पर विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की काव्यात्मक संवेदना पर प्रकाश डालिए।

*****

# इकाई–15
# सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : व्याख्या भाग

**संरचना**

15.1 भूमिका

15.2 उद्देश्य

15.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : व्याख्या भाग

- 'वर दे–वीणा वादिनी वर दे' (कविता) : व्याख्या भाग
- 'तोड़ती पत्थर' (कविता) : व्याख्या भाग
- 'स्नेह निर्झर बह गया है (कविता) : व्याख्या भाग
- 'विधवा' (कविता) : व्याख्या भाग

स्वयं आकलन प्रश्न

15.4 सारांश

15.5 कठिन शब्दावली

15.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

15.7 संदर्भित पुस्तकें

15.8 सात्रिक प्रश्न

## 15.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की काव्यगत विशेषताओं का गहनता से अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई में हम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविताओं की व्याख्या करेंगे। इसके अंतर्गत हम उनकी वर दे, वीणा वादिनी वर दे', 'तोड़ती पत्थर, स्नेह, निर्झर बह गया तथा विधवा कविता की विस्तार से व्याख्या करेंगे।

## 15.2 उद्देश्य

इकाई सोलह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि –

1. 'वर दे, वीणा वादिनी वर दे' कविता में किसकी वंदना की गई है?
2. 'तोड़ती पत्थर' कविता में किसके संघर्ष को चित्रित किया गया है?
3. 'स्नेह निर्झर बह गया' कविता का मूल भाव क्या है?
4. 'विधवा' कविता में किसकी पीड़ा को व्यक्त किया गया है?

## 15.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : व्याख्या भाग

**कविता का सार–'वर दे वीणा वादिनी वर दे'** निराला जी की एक महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है। यह एक प्रार्थना गीत है, जिसमें उन्होंने सरस्वती देवी की आराधना की है। कवि माँ सरस्वती से वरदान माँगते हुए कहता है कि हे माँ। मुझे वरदान दो कि मेरी कविता में मुक्त ध्वनि हो, नया अमृत गान हो। पूरे भारत में मुक्ति और अमरता का गान गूंजे। हे माँ। तुम सभी के हृदयों के अंधकार को दूर कर दो। हे माँ। तुम प्रकाश का, ज्ञान का झरना भारत में बहा दो। पूरा विश्व भारत के प्रकाश से जगमगा उठे। कवि बार–बार माँ से प्रार्थना करता है कि भारत में सभी कुछ नया हो जाए। भारत की गति नई हो, भारतीयों के गीत की लय नई हो, ताल और छन्द नया हो, कंठ का स्वर नया हो, नए जल से भरे बादलों की तरह गम्भीर स्वर में यह गान गूँजता रहे। भारत का आकाश नया हो। इसमें उड़ान भरने वाले पक्षी नए हों, उनके पँख नए और सशक्त हों, उनकी आवाज में भी नयापन होना चाहिए।

**वर दे, वीणा वादिनी वर दे**
**वर दे, वीणा वादिनी वर दे!**
**प्रिय स्वतन्त्र व अमृत-मन्त्र नव**
**भारत में भर दे!**

**शब्दार्थ-वर** = वरदान। **वीणा वादिनी** वीणा बजाने वाली। **स्वतन्त्र-रव** = स्वतन्त्रता की आवाज। **नव** = नया।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक में संकलित महाप्राण **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'वर दे, वीणा वादिनी वर दे'** से अवतरित हैं। इस कविता में उन्होंने सरस्वती माता से स्वाधीनता एवं अज्ञान से मुक्ति हेतु प्रार्थना की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे वीणा को धारण करने वाली, वीणा-वादन करने वाली माँ सरस्वती। मैं तुम्हारी शरण में हूँ, तुमसे वरदान माँगता हूँ। तू मुझे वरदान दे। मैं स्वतंत्रता की प्रिय आवाज सुनना चाहता हूँ, अमरता का नया मन्त्र सुनना चाहता हूँ। पूरे भारत में तुम्हारी वीणा से निकला स्वतंत्रता का गान और आत्मा की अमरता का अमर सन्देश भर जाए। हे माँ सरस्वती। तू हम भारतीयों को यह वरदान दे।

**विशेष**-

1. यह आराधना गीत है जिसमें कवि का भक्तिभाव और देश प्रेम एक साथ व्यंजित हो रहा है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. ओज गुण की प्रधानता है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. सबोधन शैली का प्रयोग है।
6. कविता में गेयता और संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है।

**काट अन्ध-उर के बन्धन, स्वर**
**बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,**
**कलुष-भेद तम-हर प्रकाश भर**
**जगमग जग करे दे!**

**शब्दार्थ-अन्ध-उर** = अन्धेरे हृदय, जड़-हृदय। **ज्योतिर्मय** = ज्योति से युक्त। **निर्झर** = झरना। **कलुष** = कालिख। **तम-हर** = अंधकार को हरना।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक में संकलित महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' विरचित कविता **'वर दे, वीणा वादिनी वर दे'** से अवतरित हैं। इस कविता में उन्होंने सरस्वती माता से स्वाधीनता एवं अज्ञान से मुक्ति हेतु प्रार्थना की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है, है माँ! तुम्हारी वाणी भारत के कण-कण में बहे ताकि अन्धेरे हृदय के, अज्ञानी और जड़ हृदय के सारे बन्धन कट जाएँ। सारी सीमाएँ टूट जाएँ। प्रकाश का झरना और ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैल जाए। हेमा! दोषों की कालिमा को हरने वाली तुम्हारी रोशनी फैले अर्थात् हम दोष मुक्त हो जाएँ। सारा भारत ज्ञान की ज्योति से जगमगा उठे।

**विशेष**

1. माता सरस्वती से प्रार्थना की गई है कि वह भारतीयों की अज्ञानता और जड़ता को दूर करके भारत में नए युग का प्रारम्भ करें।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।

3. ओज गुण की प्रधानता है।
4. अनुप्रास, रूपकातिश्योक्ति एवं यमक अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
5. संबोधन शैली का प्रयोग है।
6. कविता में गेयता और संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है।

**नवगति, नव लय, ताल छन्द नव**
**नवल कंठ, नव जलद-मन्द्र रव**
**नव नभ के नव विहग-वृन्द को**
**नव पर नव स्वर दे!**

**शब्दार्थ-नवल** = नया। **नव जलद** = नया बादल। **मंद्र** = गंभीर। **रव** = आवाज, शोर। **विहग-वृंद** = पक्षियों का समूह।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'**आधुनिक हिन्दी कविता**'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक में चमेली महाप्राण **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'वर दे, वीणा वादिनी वर दे'** से अवतरित हैं। इस कविता में वे सरस्वती माता से स्वाधीनता एवं अज्ञान से मुक्ति हेतु प्रार्थना की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हे माँ। भारतवासियों की आवाज में नया जोश उत्पन्न हो, तू उनको नई आवाज दे। सारे भारतवासी मिलकर स्वतंत्रता का घोष इस प्रकार करें जैसे वर्षा ऋतु के नए उड़े बादलों का घोर गर्जन होता है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत का आकाश नया होगा और उस आकाश में उड़ने वाले पक्षियों का गान भी नया होगा उनके पंख भी नए होंगे। अर्थात् स्वतंत्र भारत की सन्तानें मुक्त आकाश में नई ताकत और नए उत्साह के साथ उड़ानें भरेंगी और राष्ट्र के निर्माण का कार्य करेंगी।

**विशेष-**

1. सरस्वती देवी से संपूर्ण भारत में नव चेतना का संचार करने की प्रार्थना की गई है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. ओज गुण की प्रधानता है।
4. अनुप्रास व रूपकातिश्योक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
5. संबोधन शैली का प्रयोग है।
6. कविता में गेयता और संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है।

**● तोड़ती पत्थर (कविता) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार**-'तोड़ती पत्थर' कविता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के प्रगतिवादी काव्य का अन्यतम उदाहरण है। इस कविता में कवि ने सड़क के किनारे पत्थर तोड़ने वाली मजदूर स्त्री का करुण चित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। कवि कहता है कि उसने इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोड़ने वाली एक युवती को देखा था। वह चिलचिलाती धूप में अपने भाग्य को स्वीकारती हुई बैठी पत्थर तोड़ रही थी। उसके हाथ का भारी हथौड़ा बार-बार पत्थर पर चोट करके उसे तोड़ कर मिट्टी में बदल रहा था। उसके सामने बड़े आलीशान घर, वृक्षों के झुण्ड से ढके बंगले और उनकी चारदीवारी थी। वह चारदीवारी के भीतर के वृक्ष के नीचे बैठकर काम नहीं कर सकती थी। वह पूर्ण युवती थी। उसका श्याम वर्ण धूप में चमक रहा था। धूप चढ़ आई थी, गर्मियों के दिन थे। दोपहर का तमतमाता सूर्य धरती को लू से जला रहा था। पूरी धरती रूई की तरह जल रही थी और लू के चलने से पूल चिंगारियों की तरह छाई थी। उसे पत्थर तोड़ते-तोड़ते सुबह से दोपहर हो चुकी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने उसे प्रातः और पुनः दोपहर को पत्थर तोड़ते हुए देखा था। उस युवती ने कवि को कातर दृष्टि से देखा और फिर सामने के भवन की ओर देखा कि कहीं कोई दोनों को इस समय देख तो नहीं रहा। उसके वस्त्र फटे थे इसलिए संकुचा कर उसने इधर-उधर देखा।

जब उसे विश्वास हो गया कि सामने के घर से कोई नहीं देख रहा तो वह कातरता से कवि की ओर देखने लगी। उसका देखना उस बच्चे की नजर जैसा था जिसे मार खाकर रोने का हक नहीं होता। कवि कहता है कि इसके हृदय की पीड़ा चेहरे पर आ गई थी और उसने उस मजदूरिन की अदृश्य पीड़ा को सुन लिया था। एक क्षण के लिए वह सचेत हुई और फिर पसीने की बूँदे उसके माथे से आ गिरीं। अपने काम में लीन होते हुए उसने कहा कि वह पत्थर तोड़ रही है।

**वह तोड़ती पत्थर**
**देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर–**
**वह तोड़ती पत्थर**
**नहीं छायादार**
**पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार**

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक में संकलित **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'तोड़ती पत्थर'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने एक पत्थर तोड़ने वाली गरीब मजदूरिन का शब्द चित्र मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

**सरलार्थ**–कवि इलाहाबाद की एक सड़क के निर्माण के दौरान एक गरीब मजदूरिन को वहाँ पत्थर तोड़ते देखता है और उसका शब्द चित्र प्रस्तुत करता हुआ इस पंक्तियों में कहता है कि मैंने उस निर्धन, लाचार मजदूरिन को सड़क के किनारे पत्थर तोड़ते हुए इलाहाबाद के मार्ग पर देखा था। वह पत्थर तोड़ रही थी परन्तु उस भरी दोपहर में भी उसके सिर पर छाया करने के लिए कोई पेड़ नहीं था। वह अपने भाग्य को स्वीकार कर धूप में ही बैठी पत्थर तोड़ रही थी। अर्थात् मजदूरी करने वाली वह युवती पूरी तरह से असहाय और विवशता को ही अपना भाग्य स्वीकार कर चुकी थी।

**विशेष**

1. कवि की प्रगतिशील चेतना स्पष्ट है। एक पत्थर तोड़ने वाली मजदूरिन का ऐसा मार्मिक, भावमय चित्र पहली बार हिन्दी में आया था।
2. भाषा सरल साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वधा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्त छंद का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**श्याम तन भर-बंया यौवन**
**नत नयन प्रिय-कर्म-रत मन**
**गुरु हथौड़ा हाथ**
**करती बार-बार प्रहार**
**सामने तरु-मालिका अट्टाट्टिका का प्रकार**

**शब्दार्थ**-**श्याम** = साँवला । **नत** = झुके हुए। **रत** = लीन। **गुरु** = भारी। **प्रहार** = चोट करना। **तरु-मालिका** = वृक्षों की पांत। **अट्टालिका** = ऊँचे भवन। **प्रकार** = चारदीवारी।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक में संकलित **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'तोड़ती पत्थर'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने एक पत्वर तोड़ने वाली गरीब मजदूरिन का शब्द चित्र मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि गरीब मजदूरिन का शब्द चित्र प्रस्तुत करता हुआ कहता है कि उस मजदूरिन का रंग सांवला वा तथा शरीफ स्वस्थ और यौवन का उभार लिए था। अर्थात् भरी जवानी में वह बेचारी दोपहर में पत्थर तोड़कर पेट भरने के लिए मजबूर थी। वह सिर झुकाए अपने स्वयं स्वीकारे हुए काम को निष्ठा के साथ कर रही थी। वह बार-बार अपना भारी हथौड़ा उठाकर पत्थरों पर चोट कर उन्हें तोड़ती जाती थी। उसके सामने वृक्षों की पंक्तियों से घिरी ऊँची हवेलियाँ थीं जिनकी चारदीवारी से भी उसे दूर रखा गया था। यह बात और है कि उसके कूटे हुए पत्थरों से ही सड़कें और हवेलियाँ बनी थीं।

**विशेष**

1. कवि ने कुछ ही शब्दों में असहाय मजदूरिन का शब्द-चित्र प्रस्तुत कर दिया है। 'स्याम तन भर-बंधा यौवन' की एक पंक्ति में उसके सुन्दर, स्वस्थ और यौवन-युक्त शरीर का बिम्ब उभरता है।
2. भाषा सरल साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का प्रयोग है।

**चढ़ रही थी धूप**
**गर्मियों के दिन**
**दिवा का तमतमाता रूप**
**उठी झुलसाती हुई रुई ज्यों जलती हुई भू लू**
**गर्द चिनगी छा गयी**
**प्रायः हुई दोपहर**
**वह तोड़ती पत्थर**

**शब्दार्थ-दिवा** = दोपहर । **लू** = गर्म तपती हवा। **झुलसाती** = जलाती। **भू** = पृथ्वी। **चिनगी** = चिन्गारी।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियों **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक में संकलित **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'तोड़ती पत्थर'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने एक पत्थर तोड़ने वाली गरीब मजदूरिन का शब्द चित्र मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

**व्याख्या**- इन पंक्तियों में कवि गरीब मजदूरिन का शब्द चित्र प्रस्तुत करता हुआ कहता है कि गर्मियों का मौसम था और वह एक बहुत ही गर्म दिन था, जब उन्होंने उस मजदूरिन को रास्ते पर पत्थर तोड़ते हुए देखा था। दोपहर की गर्मी इतनी भयंकर थी मानो दोपहर क्रोध के मारे तमतमा रही हो। चारों तरफ झुलसाने वाली गर्म लू चल रही थी। सारी धरती ऐसे जल रही थी मानों रूई हो। चारों ओर धूल छायी हुई थी और चिन्गारियाँ बिखर रही थीं। अर्थात् उस दोपहर की गर्मी का आतंक अपने यौवन पर था। उसे पत्थर तोड़ते-तोड़ते दोपहर हो चुकी थी और वह अपने चारों ओर क्या हो रहा है इसकी चिन्ता किए बिना निरन्तर अपना काम कर रही थी।

**विशेष**-

1. गर्मी की दोपहरी का सजीव चित्रण हुआ है।
2. भाषा सरल साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्त छंद का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग है।

**देखते देखा मुझे तो एक बार**
**उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार**
**देखकर कोई नहीं**
**देखा मुझे उस दृष्टि ने**
**जो मार खा रोई नहीं**

**शब्दार्थ-छिन्नतार** = पूरी तरह फटे, तार-तार हुए। **दृष्टि** = नजर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक में संकलित **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'तोड़ती पत्थर'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने एक पत्थर तोड़ने वाली गरीब मजदूरिन का शब्द चित्र मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि गरीब मजदूरिन का शब्द चित्र प्रस्तुत करता हुआ कहता है कि जब उसने देखा कि में पास बड़ा उसे देखे जा रहा हूँ तो उसने अपने फटे कपड़ों को देखा और फिर सहम कर सामने वाले ऊँचे भवन की ओर देखा। शायद यह जानने के लिए कि कोई और तो उन दोनों को इस तरह नहीं देख रहा। संभवतः उसे संकोच हो रहा था, शर्म आ रही थी कि अन्य लोग इस दृश्य को देखकर न जानें क्या सोचें। जब उसे विश्वास हो गया कि आसपास अन्य कोई उन दोनों को नहीं देख रहा तो उत्सने मुझे अत्यन्त विवश नजरों से देखा। उसकी वह नजर उस बालक की नजरों की तरह विवशता भरी थी जिसे पीटा गया हो परन्तु जिसे रोने की छूट न हो।

**विशेष**-

1. समाज में मजदूरों की दशा कितनी दयनीय थी यह स्पष्ट किया गया है।
2. भाषा सरल साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्त छंद का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**सजा सहज सितार**
**सुनी मैंने वह नहीं जो वी सुनी झंकार**
**एक क्षण के बाद वह कांपी सुघर**
**ढुलक माये से गिरे सीकर**
**लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा**
**'मैं तोड़ती पत्थर'।**

**शब्दार्थ-झंकार** = संगीत की आवाज। **सुधर** = सुन्दरी। **सीकर** = पीसने की बूँदें। **लीन** = जुटी, लगी।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक में संकलित **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'तोड़ती पत्थर'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने एक पत्थर तोड़ने वाली गरीब मजदूरिन का शब्द चित्र मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि मैंने उस मजदूरिन की विवशता को देखा। मानों वह एक सितार की तरह थी जो छूने मात्र से बज उठेगा। वह मजबूरी के कारण, पीड़ा और दु:ख के कारण भरी बैठी थी और मुझे रुका देखकर अपने को रोक नहीं पाई। मैंने उस सितार से यह आवाजें सुनीं जो पहले कभी नहीं सुनी थीं। अर्थात् कवि उसके मौन का अर्थ समझकर भीतर तक करुणा से भर गया। उसकी विवश आँखों ने बिना शब्दों के बहुत कुछ कवि को कह दिया। गर्मी के मारे उसके माथे से पसीने की बूंदें ढुलक कर नीचे गिरीं तो अचानक यह सचेत हुई। यह फिर से पत्थर तोड़ने में लग गई मानों कह रही हो मैं तो पत्थर तोड़ रही हूँ।

**विशेष** 1. मजदूरिन की विवशता का मार्मिक चित्रण हुआ है।

2. भाषा सरल साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्त छंद का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**'स्नेह निर्झर बह गया है' कविता : व्याख्या भाग**

**स्नेह निर्झर बह गया है**
**रेत ज्यों तन रह गया है।**
**आम की यह डाल जो सूखी दिखी,**
**कह रही है- ''अब यहाँ पिक या शिखी**
**नहीं आते; पंक्ति मैं वह हूँ, लिखी**
**नहीं जिसका अर्थ''**
**जीवन दह गया है।**

**शब्दार्थ-स्नेह-निर्झर** = प्यार का झरना। **पिक** = कोयल। **शिखी** = = मोर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'स्नेह निर्झर बह गया है'** से अवतरित है। इस काव्य गीत के माध्यम से कवि ने अपनी निराशा, पीड़ा, साहित्यिक समाज में अपनी उपेक्षा को अभिव्यक्त किया है।

**सरलार्थ**-इन पंक्तियों में कवि अपनी व्यक्तिगत निराशा एवं पीड़ा को अभिव्यक्त करता हुआ कहता है कि मेरे जीवन में प्यार का झरना सूख गया है तथा झरने के सूख जाने पर जैसे उसके चारों ओर रेल ही रेत रह जाती है, वैसे ही मेरा जीवन भी रेत की तरह नीरस और निरर्थक हो गया है। कवि अपने जीवन की तुलना सूखी हुई आम की डाली और निरर्थक पंक्ति से करता हुआ कहता है कि उस आम की सूखी डाली को देखो वह कितनी निराश हताश है। आम की सूखी डाली मानो कह रही है कि अब उसके पास पुराने मित्र कोयल और मोर नहीं आते। कवि कहता मेरी हालत उस पंक्ति के समान है जिसका कोई अर्थ नहीं है। यह सूखी डाल कह रही है कि मेरा जीवन पूरी तरह जल गया है, नष्ट हो गया है। कवि कहना चाहता है कि उसने सदा ही संसार को अपना प्यार दिया, निरन्तर प्यार लुटाया परन्तु बदले में उसे प्यार नहीं मिला इसलिए उसके हृदय से प्रेम का स्त्रोत सूख गया है। कवि अपने को सूखी डाली के समान समझता है। उसे लगता है कि निरर्थक पंक्ति की तरह उसका जीवन पूरी तरह नष्ट हो गया है।

**विशेष-**

1. कवि ने अनेक उपमाएँ देकर जीवन की व्यर्थता को स्पष्ट किया है।
2. भाषा सरल साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. तत्सम प्रधान शब्दावली का प्रयोग है।
4. रूपक, उपमा एवं उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग है।
5. आत्मकथात्मक शैली एवं मुक्त छंद का प्रयोग है।
6. माधुर्य गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**दिए हैं मैंने जगत् को फूल-फल,**
**किया है अपनी प्रभा से चकित-चल**

**पर अनश्वर या सकल पल्लवित पल**
**ठाट जीवन का वही**
**जो ढह गया है।**

**शब्दार्थ-प्रभा** = चमक। **चकित** = हैरान। **चल** = चंचल। **अनश्वर** = नाश न होने वाला। **पल्लवित** = पत्तों से ढका, हरा भरा। **पल** = क्षण।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'स्नेह निर्झर बह गया है'** से अवतरित है। इस काव्य गीत के माध्यम से कवि ने अपनी निराशा, पीड़ा, साहित्यिक समाज में अपनी उपेक्षा को अभिव्यक्त किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि अपनी व्यक्तिगत निराशा एवं पीड़ा को अभिव्यक्त करता हुआ कहता है कि यह सूखी डाली अपनी उपेक्षा से परेशान है, परन्तु अपने अतीत वैभव का गौरव अभी भी उसमें शेष है। वह कहती है कि जब मैं फल और फूलों से लदी हुई थी तब मैंने अपने सौन्दर्य से संसार के लोगों को आनन्दित और आश्चर्यचकित किया था। मेरे यौवन की वे स्मृतियाँ अमर हैं फिर भी यह सच है कि जीवन का वह सुखद समय शेष नहीं रह गया है। मेरे जीवन का सारा ठाट समाप्त हो चुका है। वस्तुत: कवि आम की सूखी डाली के माध्यम से अपने जीवन की कहानी कहता है। कवि यह कहना चाहता है कि उत्तने भी संसार को एक से एक सुन्दर साहित्य-रचनाएँ देकर आनन्दित किया है, चकित किया है। कवि का यह गौरवमय समय अमर रहेगा, उसकी रचनाएँ अमर रहेंगी।

**विशेष**-

1. कवि ने स्पष्ट किया है कि उसने हिन्दी साहित्य जगत को उच्चकोटि का साहित्य प्रदान किया है।
2. भाषा सरल साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. तत्सम प्रधान शब्दावली का प्रयोग है।
4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
5. आत्मकथात्मक शैली एवं मुक्त छंद का प्रयोग है।
6. माधुर्य गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा,**
**श्याम तृण पर बैठने को निरुपमा,**
**बह रही है हृदय पर केवल अमा,**
**मैं अलक्षित है, यही**
**कवि कह गया है।**

**शब्दार्थ-पुलिन** = नदी का किनारा। **श्याम तृण** = घना हरा अथवा श्यामल घास। **तृण** = घास। **अमा** = अमावस का अन्धेरा। **अतक्षित** = उपेक्षित।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'स्नेह निर्झर बह गया है'** से अवतरित है। इस काव्य गीत के माध्यम से कवि ने अपनी निराशा, पीड़ा, साहित्यिक समाज में अपनी उपेक्षा को अभिव्यक्त किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि सूखी हुई आम की डाली कहती है कि आज मेरे नीचे बहने वाली नदी के किनारे कोई प्रेयसी घास पर आकर नहीं बैठती और न ही किसी का इंतजार करती है। डाल कह रही है कि अब मैं किसी प्रेमी-प्रेमिका के प्रेम व्यापार की गवाह नहीं बन सकती, क्योंकि कोई उसकी छाया में आकार ही नहीं बैठता। यहाँ कवि कहना यह चाहता है कि आज उसकी दशा इतनी दयनीय हो गई है कि वह प्रेम प्रसंगों की कल्पना

भी नहीं कर सकता। आज कोई अद्वितीय सुन्दरी उनकी कल्पना में भी नदी तट पर, हरी घास पर बैठी नहीं दिख पड़ती। कवि कहता है कि अब तो उसके हृदय पर केवल अमावस्या का घना अन्धेरा बह रहा है। कवि अत्यधिक निराशा के साथ कहता है कि वह पूरी तरह उपेक्षित है। यही उसका सबसे बड़ा दु:ख है।

**विशेष**–

1. कवि ने इस कटु सत्य को स्वीकार किया है कि उनका जीवन उपेक्षित एवं निराशामय हैं। उसके जीवन का आनंद एवं उल्लास सब समाप्त हो चुका है।

2. भाषा सरल साहित्यिक खड़ी बोली है।

3. तत्सम प्रधान शब्दावली का प्रयोग है।

4. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

5. आत्मकथात्मक शैली एवं मुक्त छंद का प्रयोग है।

6. माधुर्य गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**● विधवा ( कविता ): व्याख्या भाग**

**कविता का सार**–**'विधवा'** कविता **'निराला'** जी की प्रगतिशीलता का अनुपम उदाहरण है। इस कविता के माध्यम से कवि ने अपनी सामाजिक चेतना को प्रकट करते हुए हिन्दू समाज में विधवा की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला है। इस कविता में कवि विधवा को अनेक तरह से उपमित करता हुआ उसके जीवन की पवित्रता को स्पष्ट करता है। कवि के अनुसार विधवा पूज्य देवता के मंदिर की तरह पवित्र है। आरती के दीपक की लौ की तरह शांत है। वह भयंकर विनाश की यादगार की तरह दीनहीन है। वह वृक्ष से छूटी बेल की तरह धरती पर गिरी है। वह पिछड़े हुए भारत की विधवा है।

कवि कहता है कि विधवा का जीवन शुष्क और नीरस है। छह ऋतुओं का आना उसके लिए निरर्थक है। बसंत में बाग का चुपचाप खिल उठना, अमर कल्पना में उड़ना उसके भाग्य में नहीं है। वह तो भूली हुई दु:ख की कहानी है, उपेक्षित है। उसके जीवन में भी एक सपना फलित हुआ था। अपने सुहाग के रूप में उसने सुख का स्वप्न देखा था जो उसके कमजोर हाथों का अकेला सहारा था। उसका पति ही उसका मार्गदर्शक और उसका चरम लक्ष्य था। अब वह कब का मिट चुका है, शायद वह आकाश में तारा बनकर चमक रहा है और वहाँ से अपनी प्रिया को करुण नेत्रों से देख रहा है।

विधवा के प्रिय की आँखें करुणा से भरी हैं। जब विधवा ने उसे देखा तो उसके मनरूपी भंवरे के पंख प्रेम रस में भीग गए। उस प्रेम के आवेश में विधवा के मन में गीत की अपेक्षा हाहाकार ही निकला था। उसके प्रिय की करुणा रूपी नदी के मैले किनारे पर एक टूटी–फूटी कुटिया मानों बह रह रही है। वस्तुत: वह अपने मृत पति की करुण याद में ही जीवन काट रही है। वह दुनिया की नजरों से बचकर मन ही मन रोती है। भारत की विधवा के लिए खुलकर रोना भी निषिद्ध है। उसकी पीड़ा को धैर्यवान आकाश सुनता है या स्थिर खड़ी पवन सुनती है, और कोई उसकी ओर ध्यान नहीं देता। करुणा की नदी की लहरें भी ठहर–ठहर कर उसका दु:ख सुनती है।

अंत में कवि निराश होकर कहता है कि भारतीय समाज ही ऐसा है कि कोई उसे धैर्य नहीं बंधा सकता। उसकी पीड़ा को कोई भी बांट नहीं सकता। उस विधवा का दु:ख असीम है, उसका कोई किनारा नहीं है। कोई उस दुखिया के आँसू नहीं पोंछ सकता। कचि ईश्वर से ही पूछता है कि उसने इस विधवा पर ऐसा अन्याय क्यों किया है। वह पूछता है कि क्या भगवान ने कभी किसी दु:खी व्यक्ति के आँसू पोंछे भी हैं अथवा बेकार में ही वह दीनदयाल कहलाता है। कवि कहता है कि ओस कणों के रूप में शायद उस ईश्वर के आँसू इस विधवा की सहानुभूति में पत्तों से झरते हैं।

1. **वह इष्टदेव के मंन्दिर की पूजा-सी**
**वह दीपाशिखा-सी शान्त, भाव में लीन,**
**वह-क्रूर-काल-तांडव की स्मृति-रेखा-सी**
**वह टूटे तरु की छूटी लता-सी दीन**
**दलित भारत की विधवा है।**

**शब्दार्थ- इष्टदेव** = अराध्य देवता। **दीपशिखा** = दिए की लौ। **क्रूर** = जालिम। **काल-तांडव** = मृत्यु का विनाशक नृत्य। **स्मृति रेखा** = हल्की सी यादगार। **लता** = बेल। **दीन** = निर्धन। **दलित** = पिछड़े, कुचले।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'विधवा'** से लिया गया है। इस कविता में कवि ने तत्कालीन भारतीय समाज में विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया है।

**व्याख्या**-कवि इन पंक्तियों में कहता है कि भारत की विधवा सब कुछ देवता की पूजा की तरह पवित्र और निश्छल है, यह आरती के दीपक की तरह शान्तभाव से जलती है और अपने बिछुड़े पति के ध्यान में मग्न रहती है। भारत की विधवा क्रूर मृत्यु के विनाशकारी नृत्य की याद दिलाती है जिसमें उसका सब कुछ लुट गया। विधवा किसी वृक्ष से अलग कर दी गई बेल की तरह दीन-हीन और निरुपाय धरती पर पड़ी है। सचमुच इस दलित भारत की विध वा की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। अर्थात् भारत की विधवाएँ अत्यंत सादा, साधनामय और नीरस जीवन जीने को मजबूर की जाती हैं।

**विशेष**

1. कवि ने भारत की विधवाओं के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की है, जो उनकी प्रगतिशीलता का प्रमाण है। विध वा का चित्रण संवदेना के स्तर पर मार्मिकता से हुआ है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग है।
4. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है
6. आलोचना अलंकार का प्रयोग है।

**षड्ऋतुओं का श्रृंगार**
**कुसुमित कानन में नीरव-पद-संचार,**
**अमर कल्पना में स्वच्छन्द** विहार-
**व्यथा की भूली हुई कथा है,**
**उसका एक स्वप्न अथवा है।**

**शब्दार्थ-षड्ऋतुओं** = छह ऋतुओं। **कुसुमित** = फूलों से भरे। **कानन** = बाग। **नीरव-पद** = चुपके से । **संचार** = आना । **स्वच्छन्द** = मुक्तभाव से, मस्ती में भरकर। **व्यथा** = पीड़ा।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'विधवा'** से लिया गया है। इस कविता में कवि ने तत्कालीन भारतीय समाज में विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि भारतीय समाज में विधवाओं का घोर दमन एवं शोषण किया जाता है। उनकी सामान्य इच्छाएँ भी पूरी नहीं की जाती। क्रम से छह ऋतुएँ सज-धज कर कैसे आती हैं, इसे वे भूल चुकी हैं, क्योंकि उनके जीवन में तो अब पतझड़ की वीरानी ही लिखी है। बसन्त में फूलों से लदे बागों में धीरे-धीरे दबे पाँव

घूमना और अमर कल्पनाओं में खो जाना आज उसके लिए नहीं है। यह तो केवल अपने पति की यादों को लेकर व्यथित या दु:खी हो सकती है। अब तो उसे अपने जीवन का वसन्त एक सपना सा लगता है, मानों ऐसा कुछ उसके जीवन में घटित ही न हुआ हो। अर्थात् विधवा को ऋतुओं के सौन्दर्य का आनन्द लेने का भी अधिकार नहीं है और न ही वे ऋतुओं के अनुसार श्रृंगार कर सकती हैं। भारत की विधवा अपने जीवन के बसन्त, अपने जीवन की सुखमय स्मृतियों तक को भूल चुकी है।

**विशेष-**

1. कवि ने प्रकृति के बदलते रूपों के सम्मुख विधवा का नीरस जीवन प्रस्तुत करके उसकी पीड़ा स्पष्ट किया है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग है।
4 दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है।
6. अनुप्रास एवं संदेह अलंकारों का प्रयोग है।

**उसके मधु-सुहाग का दर्पण**
**जिसमें देखा या उसने**
**बस एक बार बिम्बित अपना जीवन-धन,**
**अबल हाथों का एक सहारा-**
**लक्ष्य जीवन का प्यारा वह ध्रुवतारा।**

**शब्दार्थ-मधु सुहाग** = प्यारी सुहाग, पति। **दर्पण** = आइना। **बिम्बित** = परछाई। **ध्रुवतारा** = एकमात्र मार्गदर्शक, आस्था का केंद्र।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'विधवा'** से लिया गया है। इस कविता में कवि ने तत्कालीन भारतीय समाज में विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि विधवा ने अपने पति को संभवत: एक बार ही देखा था। उसे वह अपने सुहाग का प्यारा आइना सा लगा था। उसने अपने जीवन की सारी खुशियाँ उसी में खोजने की सोची थी। उस अबला का एकमात्र सहारा वही पति था जो असमय में चला गया। उसने अपने पति को ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य माना था, एकमात्र मार्गदर्शक स्वीकार किया था। कवि के कहने का भाव यह है कि उसने सच्चे मन से पतिव्रता धर्म को स्वीकारा और निभाया था परन्तु पति नहीं रहा तो उसका क्या दोष, परंतु समाज उसके प्रति किसी प्रकार की सहानुभूति नहीं रखता है।

**विशेष-**

1. कवि ने स्पष्ट किया है कि भारतीय नारी पतिव्रता धर्म का सच्चे मन से पालन करती है परंतु पति के न रहने पर नारी को यातनामय जीवन जीना पड़ता है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग है।
4. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है
6. अनुप्रास एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग है।

**दूर हुआ वह बहा रहा है**
**उस अनन्तपथ से करुणा की धारा**
**हैं करुण-रस से पुलकित उसकी आँखें**
**देखा तो भीगी मन-मधुकर की पाँखें**
**मृदु रसावेग में निकाला जो गुँजार**
**वह और न या कुछ, या बस हाकाकर !**

**शब्दार्थ-अनन्तपय** = आकाश, स्वर्ग। **पुलकित** = प्रसन्न, आनन्दित। **मधुकर** = भंवरा। **मृदु** = कोमल। रसावेग = का प्रवाह।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध क श्री **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'विधवा'** से लिया गया है। इस कविता में कवि ने तत्कालीन भारतीय समाज विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि विधवा हुई इस युवती का पति कहीं दूर स्वर्ग में बैठा उसकी दुर्दशा देखकर होगा और चुपचाप आँसू बहा रहा होगा। उसकी आँखें अपनी पत्नी की दुर्दशा देखकर करुणा के भर आई होंगी। इसकी दशा देखकर उसका मन रूपी भँवरा आँसूओं में डूब गया होगा। उस बिछुड़े पति के मन में विरह का जो आवेग हुआ होगा उस केवल हाहाकार ही निकला होगा।

**विशेष**-

1. कवि ने विधवा की दुर्दशा पर अपनी संवेदना व्यक्त की है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग है।
4. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है
6. अनुप्रास एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग है।
7. करुण रस का परिपाक हुआ है।

**उस करुणा की सरिता के मलिन पुलिन पर**
**लघु टूटी हुई कुटी का, मौन बढ़ाकर**
**अति छिन्न हुए भीगे अंचल में मन को-**
**दु:ख रूखे-सूखे अधर त्रस्त चितवन को**
**वह दुनिया की नजरों से दूर बचाकर**
**रोती है अस्फुट स्वर में।**

**शब्दार्थ-सरिता** = नदी। **मलिन** = मैले। **पुलिन** = किनारा। **अति छिन्न** = अत्यधिक टूटी फूटी। **मौन** = चुप्पी। **अधर** = होंठ। **चितवन** = नजरें।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध करि श्री **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'विधवा'** से लिया गया है। इस कविता में कवि ने तत्कालीन भारतीय समाज विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि विधवा का स्वर्गीय पति आकाश से करुणा की धारा बहा रहा है। कवि कल्पना करता है कि करुणा की उस धारा अथवा नदी के मैले से किनारे पर यह विधवा टूटी-फूटी कुटिया

बनाकर रहती है। अर्थात् वर अपने पति की धुंधली सी यादों के सहारे ही जीवित है। इस विधवा की टूटी हुई छोटी-सी कुटिया में सन्नाटा और भी गहरा होता जाता है, वह संसार में नितांत अकेली हो गई है। वह अपने टूटे हुए हृदय को अपने आँसूओं से भीगे आंचल से संभाले है। उसके होंठ दु:ख के कारण सूख गए हैं, रूखे पड़ गए हैं। उसकी नजरों में एक विचित्र सा भय भरा रहता है। वह बिना आवाज किए रोती रहती है, चुपचाप रोती है।

यहाँ कवि कहना चाहता है कि विधवा को संसार की करुणा भी नहीं मिल पाती। वह अपने टूटे-फूटे सुनसान जीवन को अपने मृत पति की करुण यादों के सहारे काटती है। वह अपने आँसूओं को फटे दामन में समेटती है और भयभीत नजरों से देखती है कि किसी ने उसे आँसू बहाते तो नहीं देखा। उसे खुलकर रोने का भी हक नहीं है। वह एकान्त में चुपचाप रोती है जहाँ पर उसे कोई देख न सके।

**विशेष-**

1. कवि ने भारत की विधवा के दयनीय जीवन का मार्मिक चित्र अंकित किया है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग है।
4. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है
6. अनुप्रास, रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।
7. करुण रस का परिपाक हुआ है।

**रोती है अस्फुट स्वर में,**
**दु:ख सुनता है आकाश धीर-**
**निश्चल समीर,**
**सरिता की वे लहरें भी ठहर-ठहरकर।**

**शब्दार्थ-धीर** = धैर्यवान। **निश्चल** = स्थिर। **समीर** = वायु, पवन।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'विधवा'** से लिया गया है। इस कविता में कवि ने तत्कालीन भारतीय समाज में विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि भारत की विधवा चुपचाप दुनिया की नजरों में छुपकर रोती है क्योंकि उसे सबके सामने रोने का अधिकार नहीं है। विधवा के आँसुओं को कोई नहीं देखता, उसके दु:ख में कोई भी भाग नहीं लेता। उसका दु:ख कंवल धैर्यवान आकाश ही सुनता है। अर्थात् आकाश का हृदय विशाल है और वही इस विधवा के दु:ख को अपने हृदय में समेट सकता है। वायु भी रुककर, स्थिर होकर, थामकर इस विधवा के दु:ख को सुनती है। समीप ही में बहने वाली नदी की लहरें भी रुक-रुककर इत्त विधवा के रुदन को सुनती हैं। यहाँ कवि कहना चाहता है कि विधवा के दुख में केवल आकाश, नदी और वायु ही शामिल है, संसार का कोई प्राणी उसके दु:ख में हिस्सा नहीं बाँटता। प्रकृति संसार के आम लोगों की तरह कठोर नहीं इसलिए वह विधवा के दु:ख में सम्मिलित होती है।

**विशेष-**

1. विधवा के दु:ख का मार्मिक चित्रण हुआ है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग है।

4. दृश्य बिंब का प्रयोग है।

5. कविता छंद मुक्त है।

6 अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

7. करुण रस का परिपाक हुआ है।

**कौन उसको धीरज दे सके**
**दु:ख का भार कौन ले सके?**
**यह दु:ख वह जिसका नहीं कुछ छोर है**
**दैव, अत्याचार कैसा घोर और कठोर है।**

**शब्दार्थ-धीरज** = सांत्वना। **छोर** = किनारा। **घोर** = भयंकर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्याश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'विधवा'** से लिया गया है। इस कविता में कवि ने तत्कालीन भारतीय समाज में विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि विधवा के दु:ख का बोझ इतना अधिक है कि कोई भी उसे उठा नहीं सकता, अर्थात् कोई सह नहीं सकता। यह भारत की विधवा ही है जो इस दु:ख के साथ जी रही है। इस दु:ख के भार को कौन ले सकता है अर्थात् कोई नहीं ले सकता। उसका यह दु:ख असीम है, इसका कोई किनारा या सीमा नहीं है। यह दु:ख आजीवन चलने वाला है। हे प्रभो! भारत की विधवा पर किया जाने वाला यह भयंकर अत्याचार क्यों किया जा रहा है। इस विधवा का क्या दोष है। अर्थात् निर्दोष विधवा को आकरण ही ईश्वर कठोर दण्ड दे रहा है।

**विशेष**-

1. कवि ने विधवा के भाग्य की कठोरता पर अपना क्षोभ व्यक्त किया है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग है।
4. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है
6. अनुप्रास, प्रश्न एवं पदमैत्री अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**क्या कभी पोंछे किसी के अश्रु-जल ?**
**या किया करते रहे सबको विकल?**
**ओस-कण-सा पल्लवों से झर गया**
**जो अश्रु, भारत का उसी से सर गया।**

**शब्दार्थ-अनुजल** = आँसू। **विकल** = बेचैन। **पल्लव** = पत्ता।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** विरचित कविता **'विधवा'** से लिया गया है। इस कविता में कवि ने तत्कालीन भारतीय समाज में विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति को सजीवता के साथ चित्रित किया है।

**सरलार्थ**- इन पंक्तियों में कवि ईश्वर से पूछता है कि हे प्रभु। इस विधवा को इतना क्यों सताते हो। क्या तुमने कभी उसके आँसुओं को पोंछने का प्रयास किया है? अर्थात् नहीं क्या आप सबको परेशान करना ही अपना अधिकार समझते हो। कहने का भाव यह है कि कवि ईश्वर से भी नाराज है। विधवा के भाग्य में दु:ख क्यों लिखा है यह उनकी समझ में नहीं आता । जो विधवाओं के आँसुओं की ओर कोई ध्यान नहीं देता। वह आँसू बहाकर जीती है।

**विशेष**

1. कवि ने विपत्तिग्रस्त विधवा की सहायता न करने के लिए ईश्वर के प्रति भी क्षोभ व्यक्त किया है।
2. भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान खड़ी बोली है।
3. प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग है।
4. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है
6. अनुप्रास, उपमा व प्रश्न अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
7. करुण रस का परिपाक हुआ है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न**

1. 'वर दे, वीणा वादिनी वर दे' कविता किस संग्रह में संकलित है?
2. निराला के किस काव्य को छायावाद का प्रतिनिधि काव्य कहा है?
3. 'तोड़ती पत्थर' कविता किस संग्रह में संकलित हैं?
4. 'नवगति, नव लय, ताल छन्द नव' पंक्ति किस कविता से ली गई है?

## 15.4 सारांश

'वर दे वीणावादिनी वर दे' कविता निराला जी द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण कविता है, जो उनके काव्य-संग्रह 'गीतिका में संकलित है। इस कविता में, जो एक प्रार्थना है, उन्होंने विद्या की देवी सरस्वती से भारतवासियों के लिए ज्ञान एवं स्वाधीनता की याचना की है। कवि सरस्वती माँ से बार-बार प्रार्थना करता है कि वह देश में अमृत के समान मधुर स्वतंत्रता भर दे और देशवासियों के हृदयों में शान और कला के प्रकाशमान झरने प्रवाहित कर दे। 'तोड़ती पत्थर' कविता में कवि की प्रगतिचेतना का मूर्त रूप मानी जाती है। यह उनके काव्य संग्रह 'अनामिका' में संकलित है। इस कविता में गर्मियों की भरी दुपहर में पत्थर तोड़ने में तल्लीन युवती की संपूर्णता में चित्र प्रस्तुत किया गया है। एक और छायादार वृक्षों की पंक्तियां और भव्य भवन हैं, तो दूसरी और झुलसाती हुई लू में हथौड़ा चलाती, पसीना बहाती अकेली युवती है। पत्थर तोड़ती युवती शोषित वर्ग की प्रतीक है, तो शोषक वर्ग को प्रतीक रूप में भव्य भवन के रूप में दिखाया गया है। 'स्नेह निर्झर बह गया है' कविता में कवि ने अपने जीवन का प्रेम रूपी झरना वह जाने और रेत के समान शरीर के नीरस हो जाने पर निराशा के भाव प्रकट किए हैं। कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कर इसे और भी रंगों से भर दिया है। कवि सदा ही संसार को हरा-भरा रखना चाहता था और प्रगतिशील दौर की एक महत्वपूर्ण कविता है, जो उनके काव्य संग्रह 'परिमल' में संकलित है। इस कविता में उन्होंने एक भारतीय विधवा की दीन-हीन दशा का मार्मिक चित्रण किया है।

## 15.5 शब्दार्थ

**प्रकाशमान** - ज्योतिर्मान

**झुलसाती** - अधजला कर देना

**मानवीकरण** - मनुष्य बनाना

**संकलित** - संगृहीत

**तल्लीन** - डूबा हुआ

## 15.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1. गितिका
2. परिमल (1930)

3. अनामिका

4. 'वर दे, वीणा वादिनी वर दे'

## 15.7 संदर्भित पुस्तकें

1. सूर्यकांत त्रिपाठी, निराला', अनामिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', परिमल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', गीतिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

## 15.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. 'वर दे वीना वादिनी वर दे' कविता में दिये पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

प्रश्न. 'तोड़ती पत्थर' कविता के पद्यांशों की विशेष सहित सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

प्रश्न. 'विधवा' कविता में उद्धृत पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

*****

# इकाई-16
# सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय : जीवन और साहित्य

**संरचना**

16.1 भूमिका
16.2 उद्देश्य
16.3 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : जीवन और साहित्य
16.3.1 जीवन परिचय
16.3.2 साहित्यिक परिचय
अभ्यास प्रश्न-1
16.4 भाषा शैली
अभ्यास प्रश्न-2
16.5 सारांश
16.6 कठिन शब्दावली
16.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
16.8 संदर्भित पुस्तकें
16.9 सात्रिक प्रश्न

## 16.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविताओं की व्याख्या की है। पिछली इन प्रस्तुत ईकाई में हम सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन अज्ञेय के जीवन और साहित्य का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनके जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय तथा उनकी भाषा शैली पर गहनता से अध्ययन करेंगे।

## 16.2 उद्देश्य

इकाई सोलह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. अज्ञेय का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
2. अज्ञेय ने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की थी ?
3. अज्ञेय की प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ कौन-कौन सी है ?
4. अज्ञेय ने किस प्रकार की भाषा शैली का प्रयोग किया है?

## 16.3 सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन अज्ञेय : जीवन और साहित्य

'अज्ञेय' विविधमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है और गद्य एवं पद्य दोनों में समान रूप से उनकी गति रही है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, निबंध एवं यात्रा वर्णन आदि विविध साहित्य विधाओं को सफलतापूर्वक अपनाया है तथा सभी में उन्हें ख्याति भी प्राप्त हुई है। हिंदी साहित्य में अज्ञेय का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है।

### 16.3.1 जीवन परिचय

**जन्म और बचपन:**

अज्ञेय जी का जन्म सात मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद के कलिया पुरातत्व शिविर में हुआ था। उनका वास्तविक नाम सच्चिदानन्द वात्स्यायन और उनके पिताजी का नाम हीरानन्द वात्स्यायन था। 'अज्ञेय' इस नाम को बहुत से लोग उपनाम न समझकर इसे पूरा नाम ही समझते हैं। अपने उपन्यास 'शेखर एक जीवनी भाग - 1'

की भूमिका में अज्ञेय ने स्वयं में और शेखर में अंतर किया है तथापि बाल्यकालीन अंश के विषय में उनका कथन है कि ''शिशु मानस के चित्रण की सच्चाई के लिए मैंने 'शेखर' के आरंभ के खंडों में घटनास्थल अपने ही जीवन से चुने हैं। पिताजी की नौकरी के कारणवश अज्ञेय को बचपन से ही श्रीनगर, नालन्दा, पेटेनौ, लाहौर, लखनऊ, बड़ौदा, ऊटकमंड और मद्रास आदि स्थानों पर घूमने का अवसर मिला।

**माता-पिता :**

'अज्ञेय' का परिवार मूलतः करतापूर निवासी सारस्वत ब्राह्मण परिवार से संबंधित है। इनके पिता हीरानन्द वात्स्यायन संस्कृत के विद्वान थे। धार्मिक ग्रंथों में उनकी अभिरुचि कुछ अधिक ही थी, घर पर एक घरेलू पुस्तकालय भी विकसित कर रखा था। ब्राह्मण परिवार का होने के नाते अज्ञेय जी का यज्ञोपवीत संस्कार (जनेऊ संस्कार) सन 1921 में लगभग दस वर्ष की आयु में उडपी के पंडित श्री. मध्वाचार्य द्वारा संपन्न हुआ था। अज्ञेय जी के पिताजी डॉ. हीरानंद वात्स्यायन पुरातत्व विभाग में एक उच्च अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। अज्ञेय के पिता का नाम तो पुस्तकों में मिल भी जाता है, लेकिन उनकी माता का नाम कहीं दिखाई नहीं देता। एक बात की ओर ध्यान अवश्य जाता है कि उनकी माँ का नियंत्रण पिता की अपेक्षा उन पर कुछ अधिक ही रहा, जबकि बालक सच्चिदानंद के मन में माँ की अपेक्षा पिता के प्रति आकर्षण अधिक दिखाई देता है। अज्ञेय जी के परिवार में उनके भाई और बहनें भी थी। भाई और माँ के आकस्मिक निधन से उनको गहरी ठेस पहुँची थी। माँ के देहावसान के समय अज्ञेय जी नजरबंद थे।

**शिक्षा :**

अज्ञेय जी की आरंभिक शिक्षा संस्कृत में घर पर हुई और संस्कृत के अलावा उन्हें फारसी और अँग्रेजी का ज्ञान घर पर ही कराया गया। 'शेखर एक जीवनी' में अज्ञेय ने स्कूली शिक्षा संबंधी अपने विचार प्रकट किए हैं... ''शिक्षा देना संसार अपना सबसे बड़ा कर्तव्य समझता है, किंतु शिक्षा अपने मन की, शिष्य के मन की नहीं।'' जब वे आठ वर्ष के हुए, तब उन्हें अपने पिता जी के साथ नालन्दा और पटना जाने का सुअवसर मिला। यहीं पर वे स्व. श्री. काशी प्रसाद जायसवाल और स्व. श्री. राखालदास वन्धोपाध्याय के संपर्क में आए। इन्हीं दोनों विद्वानों की महती कृपा से अज्ञेय जी ने बंगला भाषा सीखी। सन् 1925 में पंजाब से प्राइवेट विद्यार्थी के रूप में मैट्रिक की परीक्षा में सम्मिलित हुए और परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। सन् 1920 में बी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। एम.ए. की पढ़ाई के लिए उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, लेकिन स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लेने के कारण उनकी एम.ए. की पढ़ाई अधूरी रह गई। अज्ञेय जी प्रोफेसर हेण्डरसन की प्रेरणा से साहित्य के अध्ययन की ओर आकर्षित हुए और साहित्य के प्रति निष्ठा, लगन और समर्पण की वजह से वे हिंदी साहित्य के एक अमूल्य निधि हो गए। उनका अधिकांश समय अध्ययन में व्यतीत होता था। धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ उन्होंने अँग्रेजी साहित्य का भी खूब अध्ययन किया। यही कारण है कि अज्ञेय जी के साहित्य में टेनिसन की स्पष्ट छाप झलकती है। उनके उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' में तो अँग्रेजी शब्दों की भरमार है। उन्होंने हिंदी के महान कवियों मैथिलीशरण गुप्त, हजारी प्रसाद द्विवेदी, निराला, जय शंकर प्रसाद आदि की कृतियों का भी अध्ययन किया।

**नौकरी :**

सन् 1936 में अज्ञेय कार्य क्षेत्र में उतरे और कुछ समय तक आगरा से 'सैनिक' का संपादन किया परंतु कुछ ही दिनों में संपादन कार्य छोड़कर मेरठ में किसान आंदोलन में काम किया। सन् 1937 में विशाल भारत (कलकत्ता) के संपादकीय विभाग में रहे लेकिन वहाँ भी लगभग डेढ़ वर्ष ही रह सके। कुछ समय तक वे पिता के पास बडौदा रहे और उनकी इच्छानुसार विदेश जाकर अध्ययन पूरा करने का कार्यक्रम बनाने लगे, पर युद्ध छिड़ जाने से उनकी अभिलाषा पूर्ण न हो सकी। अत: रेडिओ में कुछ समय तक नौकरी करने लगे। अज्ञेय जी ने सन् 1961 के सितंबर में अमरिका के कॅलिफोर्निया में 'भारतीय संस्कृति और साहित्य' के अध्यापक की नौकरी की। इसके साथ-साथ वे अविरत साहित्य सृजन करते रहे। साथ ही सन् 1942 में अज्ञेय जी ने दिल्ली में अखिल भारतीय फासिस्ट विरोधी सम्मेलन का आयोजन किया तथा सन् 1943 में वे सेना में दाखिल हुए। वे कैप्टन के रूप में आसाम बर्मा फ्रंट पर नियुक्त हुए और सन् 1946 में उन्हें सेना से सेवा मुक्ति मिली।

**विवाह :**

अज्ञेय जी का पहला विवाह सन् 1940 में संतोष मल्लिक से हुआ। दुर्भाग्यवश यह विवाह सफल नहीं हुआ और विवाह के अल्प समय पश्चात् ही विवाह-विच्छेद की नौबत आ गई। यह वही वर्ष था, जब अज्ञेय जी का पहला उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' ने हिंदी उपन्यास जगत् में अपना नाम अंकित कराया। अज्ञेय जी ने दुबारा विवाह के लिए मन बनाया और जुलाई 1956 में कपिला मल्लिक के साथ अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे लिए। इस विवाह के बाद वे इलाहाबाद में आकर रहने लगे थे। डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र लिखते हैं- ''जुलाई, 1964 में अज्ञेय स्वदेश लौटते ही अस्वस्थ हो गये तथा कई महिनों उन्हें अस्पताल में दुखद कष्ट झेलने पड़े लेकिन कपिला जी की सेवा और उनके अपने निजी विश्वास ने स्वास्थ्य लौटाया, पर सतर्कता की एक बंदिश बाँध दी।'' कपिला के साथ का उनका वैवाहिक जीवन भी लम्बे समय तक नहीं चल पाया। सन् 1966 के बाद यह दाम्पत्य-जीवन भी टूट गया। इसके बाद इनके जीवन में इला डालमिया आ गई और संभवतः इन्होंने अंत तक अज्ञेय जी का साथ निभाया। इससे स्पष्ट होता है कि उनका वैवाहिक जीवन, सफल तो नहीं कहा जा सकता।

**स्वभाव :**

बचपन से ही अज्ञेय जी के मन में क्रांति एवं देश-प्रेम की भावना ने जन्म ले लिया था। उनके भीतर प्रकृति के प्रति अटूट प्रेम, यायावरी और एकांतप्रियता कूट-कूट कर भर उठी है। अज्ञेय जी स्पष्टवादी स्वभाव के थे। वह सच्ची बात किसी को भी कहने में नहीं चूकते थे। वे हँसी-मजाक भी करते थे।

**मौत :**

मृत्यु तो आखिर मृत्यु ही है जीवन का एक कटु सत्य, जीवन का एक अंतिम पड़ाव, जीवन की एक अंतिम यात्रा और दुनिया का सबसे बड़ा सच, जिसे चाहकर भी कोई नकार नहीं सकता। इसका आना तो निश्चित ही होता है और यह आती भी अवश्य है। अज्ञेय जी ने अपने जीवन में कड़ा संघर्ष किया है। वे अपनी अनुभूतियों की वजह से तपकर निखर गए थे। क्रांतिकारी जीवन में एक बार चंबा में रावी के पुल पर से छलांग लगाने से घुटने की टोपी उतर गयी, जिसका दर्द उन्हें जीवन के अंत तक सताता रहा। ऐसे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार का देहांत 4 अप्रैल, 1987 ई. में हुआ।

**व्यक्तित्व**

'अज्ञेय' विविधमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। वे सशक्त क्रांतिकारी, घुमक्कड़, संपादक थे। अनेकविध पहेलू अज्ञेय जी के व्यक्तित्व में परिलक्षित होते हैं।

**क्रांतिकारी :**

विद्यार्थी जीवन में अज्ञेय जी क्राँतिकारियों के संपर्क में आए और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उनका क्रांतिकारी जीवन लाहौर से प्रारंभ हुआ। हिंदुस्थान सोशालिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य बनने पर आजाद, सुखदेव, भगवतीचरण बोहरा आदि से परिचय हुआ। लगभग पाँच वर्षो तक अज्ञेय ने क्राँतिकारक जीवन बिताया। क्राँतिकारक अज्ञेय के संदर्भ में श्री. श्रीनिवास मिश्र कहते हैं ''हिमालयन टॉयलेट्स फॅक्ट्री में वैज्ञानिक सलाहकार के पद पर रहते हुए उन्होंने छिपकर बम बनाना आरंभ किया। इसी कारण 15 नवंबर सन् 1930 को उन्हें मुहम्मद बख्श के रूप में बन्दी बना लिया गया और लगातार तीन वर्ष तक दिल्ली की काल-कोठरी में पड़े रहे। 1931 में दिल्ली में भी मुकदमा चला जो 1933 तक चला। 1934 में नजरबंदी कानून के अंतर्गत नजरबंद। नजरबंदी हटने तक इन्हें डलहौजी और लाहौर में ही रहना पड़ा।'' सात साल उन्हें इस तरह से क्राँतिकारक के रूप में काटना पड़ा। इस प्रकार अज्ञेय जी का क्राँतिकारी रूप हमारे सामने आता है।

**यायावरी :**

अज्ञेय जी ने अपने जीवनकाल में देश विदेश की अनेक यात्राएँ की। अप्रैल, 1955 में अज्ञेय पहली बार युनेस्को के निमंत्रण पर पश्चिमी युरोप की यात्रा पर गए और इस यात्रा ने उन्हें कई बार रचनाओं के सृजन की प्रेरणा

दी। अगस्त, 1957 में वे जापान और फिलीपीन की यात्रा पर रवाना हुए तथा अप्रैल, 1957 में स्वदेश लौटने पर सन् 1960 तक दिल्ली में निवास करते रहे। अप्रैल, 1960 में वे दूसरी बार युरोप यात्रा पर निकले और 1961 सितंबर में अमरिका के कॅलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति और साहित्य के अध्यापक होकर गए। सन् 1966 में वह रूमानिया, युगोस्लाविया, रूस तथा मंगोलिया की यात्रा पर गए। इसी वर्ष उन्होंने बीकानेर, अजमेर, शिमला, दिल्ली और एर्नाकुलम के आयोजनों में भाग लिया। जनवरी, 1967 में ऑस्ट्रेलिया में जो एशियाई देशों में साहित्य विनिमय विषय के लिए एक सेमिनार आयोजित किया गया उसमें भारत से अज्ञेय ही सम्मिलित हुए।

**संपादकीय - व्यक्तित्व**

सन् 1943 के आस-पास ही अज्ञेय जी ने हिंदी साहित्य-परिवाद की स्थापना की। 'प्रतीक' प्रत्रिका का प्रकाशन किया। ऑल इंडिया रेडियो में नौकरी की। सन् 1965 में 'दिनमान' पत्रिका के संपादन की जिम्मेदारी उठाई सन् 1977 में दैनिक 'नवभारत टाइम्स' के भी वे संपादक बने। सन् 1978 तक 'नया प्रतीक' का भी संपादन किया। इस प्रकार अज्ञेय विविध रूपों के साथ-साथ संपादक के रूप में भी हमारे सामने आते हैं।

**16.3.2 साहित्यिक परिचय**

'अज्ञेय' ने उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, निबंध, एवं यात्रा वर्णन आदि विविध साहित्य विधाओं को सफलतापूर्वक अपनाया है तथा सभी में उन्हें ख्याति भी प्राप्त हुई है। आपकी प्रमुख रचना निम्नलिखित हैं-

**काव्य संग्रह :**

1) भग्नदूत (1933)
2) चिंता (1941)
3) इत्यलम् (1946)
4) हरी घास पर क्षण भर (1949)
5) बावरा अहेरी (1954)
6) इंद्रधनुष रौंदे हुए थे (1957)
7) अरी ओ करूणा प्रभामय (1959)
8) आँगन के पार द्वार (1961)
9) पूर्वा (1965)
10) सुनहले शैवाल (1966)
11) कितनी नावों में कितनी बार (1967)
12) क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1970)
13) सागर मुद्रा (1970)
14) पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1974)
15) महावृक्ष के नीचे (1977)

**संपादित काव्य संकलन :**

1) तारसप्तक (1943)
2) दूसरा सप्तक (1951)
3) पुष्करिणी (1959)
4) तीसरा सप्तक (1959)
5) रूपम्बरा (1960)
6) चौथा सप्तक (1979)

**उपन्यास :**

1) शेखर : एक जीवनी भाग-1 (1941)

2) शेखर : एक जीवनी भाग-2 (1944

3) नदी के द्वीप (1951)

4) अपने-अपने अजनबी (1961)

**कथा संकलन :**

1) विपथगा (1937)

2) परंपरा (1944)

3) कोठरी की बात (1945)

4) शरणार्थी (1947)

5) जयदोल (1951)

6) अमरवल्ली और अन्य कहानियाँ (1954)

7) कडियाँ और अन्य कहानियाँ (1957)

8) अज्ञेय की कहानियाँ भाग-3 (1961)

9) अज्ञेय की कहानियाँ भाग-4 (1961)

10) ये तेरे प्रतिरूप (1961)

11) लौटती पगडंडियाँ (1975)

12) छोड़ा हुआ रास्ता (1975)

**नाटक :**

1) नए एकांकी (सम्पादित, 1952)

2) उत्तर प्रियदर्शी (नाट्य् काव्य, 1967)

**निबंध एवं विचारात्मक गद्य**

1) त्रिशंकु (1945)

2) सबरंग (1956)

3)आत्मनेपद (1960)

4) आधुनिक हिंदी साहित्य (1965)

5) सबरंग और कुछ राग (1966)

6) हिंदी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य (1967)

7) आलवाल (1971)

8) लिखि कागद कोरे (1972)

9)भवन्ती (1972)

10) अन्तरा (1975)

11) जोगलिखी (1977)

12) अद्यतन (1977)

13) संवत्सर (1978)

14) स्त्रोत और सेतु (1978)

**यात्रा संस्मरण**

1) अरे यायावर रहेगा याद (1953)

2) एक बूँद सहसा उछली (1961)

**पत्रकारिता**

1. सैनिक (साप्ताहिक, 1936-37)
2. विशाल भारत (मासिक, 1937-39)
3. भारती (मासिक, 1941)
4. प्रतीक (मासिक, 1947-52)
5. वाक् (त्रैमासिक, 1950)
6. दिनमान (साप्ताहिक, 1965)
7. नया प्रतीक (मासिक, 1974)
8. नवभारत टाइम्स (दैनिक, 1977)

**अंग्रेजी में लेखन**

1. श्रीकांत (शरतचंद्र के मूल बंगला उपन्यास का अनुवाद, 1944)
2. द रेजिग्नेशन (जैनेन्द्र कुमार के उपन्यास 'त्यागपत्र' का अनुवाद, 1946)
3. प्रिजन डेज एण्ड पोयम्स (काव्य संकलन, 1946)

**विशेष पुरस्कार**

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार 'आँगन के पार द्वार' (कविता संकलन, 1964)
2. ज्ञानपीठ पुरस्कार :- 'कितनी नावों में कितनी बार' (कविता संकलन, 1978)
3. सन् 1983 में युगोस्लाविया का अंतराष्ट्रीय काव्य पुरस्कार - 'स्वर्णमान' भी अज्ञेय जी को दिया गया।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -1**

1. अज्ञेय के यात्रा संस्मरण 'अरे यायावर रहेगा याद' का प्रकाशन वर्ष क्या है?
2. 'कितनी नावों में कितनी बार' संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार कब मिला?

## 16.4 भाषा शैली

अज्ञेय भावुक कवि होने के साथ-साथ एक गहन चिंतक और विचारक के रूप में भी हमारे समक्ष आते हैं। अज्ञेय ने समय-समय पर सामान्य भाषा और काव्य भाषा: इन दोनों पक्षों से सम्बंधित अपना तलस्पर्शी चिंतन अपने विभिन्न निबंधों, व्याख्यानों, भूमिकाओं के साथ-साथ अपनी कुछ कविताओं में अभिव्यक्त किया है। सामान्य भाषा और काव्य भाषा के सम्बंध में उनके जो विचार हैं, वे भाषा के बारे में सोचने-समझने का नवीन मार्ग प्रशस्त करते हैं और अज्ञेय के भाषा चिंतन को हमारे समक्ष लाते हैं। हम जानते हैं कि भाषा मानवीय आविष्कार है। जितना अर्थ भरने का हम प्रयास करते हैं, उतना ही वह अर्थ होता है। एक समय में जो अर्थ मान लिया गया, प्रतिष्ठित हो गया। दूसरा मान लेते, दूसरा अर्थ हो जाता। इसलिए शब्द में अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। इसी बात को ध्यान में रखकर अज्ञेय आधुनिक समय में भाषा की समस्या को देखते हैं, 'आधुनिक जीवन में कवि एक बहुत बड़ी समस्या का सामना कर रहा है। भाषा की क्रमश: संकुचित होती हुई सार्थकता की केंचुल फाड़कर उसमें नया व्यापक अर्थ भरना चाहते हैं और अहंकार के कारण नहीं, इसमें युग की गहरी व भीतरी माँग स्पन्दित है।' ये पंक्तियाँ यह बात प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त लगती हैं कि अज्ञेय ने न केवल 'भाषा में लिखा है अपितु 'भाषा पर भी लिखा है। अज्ञेय के अनेक

निबंध संग्रहों, लेखों और यहाँ तक कि काव्यकृतियों की भूमिकाओं में भी भाषा विषयक अनेक विचार दिखाई देते हैं। ये विचार अज्ञेय का न केवल भाषा विषयक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं अपितु विभिन्न समस्याओं का निराकरण करते हुए भी दिखाई देते हैं। 'आत्मनेपद', 'भवन्ती', 'अंतरा', 'जोग लिखी', 'लिखी कागद कोरे' आदि निबन्ध संग्रहों में अनेक स्थानों पर अज्ञेय भाषा सम्बंधी दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए दिखाई देते हैं। भाषा की समस्या को अज्ञेय कवि कर्म की मुख्य समस्या मानते हैं। अज्ञेय ने जब अपना काव्य सृजन आरंभ किया था, छायावादी काव्य अपने अंतिम चरण में था। उनकी दृष्टि में छायावादी काल की काव्य भाषा अपने कलेवर में पुरानी पड़ चुकी थी और आधुनिक जीवन से सामंजस्य नहीं बिठा पा रही थी। 'अगर वह यह कहते हैं कि उसमें युग की गहरी माँग स्पंदित है तो यह सोचना पड़ता है कि उस युग की भाषा अर्थात् छायावादी भाषा आधुनिक जीवन की जटिलता को व्यक्त नहीं कर पा रही थी जिसके कारण वे भाषा में नया अर्थ भरना चाहते थे और इस बात में अत्यधिक सफल भी हुए लगते हैं। अज्ञेय ने भाषा के सम्बंध में ऐतिहासिक दृष्टि से भी विचार किया है। द्विवेदी युग और छायावादी युग की काव्यभाषा पर उनका चिंतन महत्त्वपूर्ण है। वे कहते हैं, 'द्विवेदी युग में भाषा के बारे में जो सजगता व आग्रहशीलता थी, वह आज नहीं है। यह ठीक है कि उस युग में जो आग्रह था वह आज की स्थिति में पर्याप्त न होता, क्योंकि उस समय व्याकरण शुद्धि और भाषा के प्रतिमानीकरण पर ही अधिक बल दिया जाता था और भाषा अथवा शब्द का संस्कार व्याकरण शुद्धि में अधिक बड़ी व गहरी बात है। छायावादी युग का चिंतन करते हुए अज्ञेय लिखते हैं, छायावादी युग के कुछ कवियों को छोड़कर, भाषा के सम्बंध में जितनी चेतना कवि या साहित्यकार में होनी चाहिए, उतनी कम लेखकों में रही। मैं समझता हूँ कि हिन्दी की यह बहुत बड़ी कमी या समस्या रही। अज्ञेय को नवीन भाषा प्रयोगों की आवश्यकता इसलिए महसूस होती है क्योंकि उनका कवि महसूस करता है कि भाषा का व्यापकत्व अब उसमें नहीं है। आधुनिक युग में संवेदना का विकास हो रहा है, उसका परिवेश लगातार विस्तृत होता जा रहा है। अज्ञेय ने कवि कर्म की इस समस्या पर विचार करते हुए लिखा है, 'यह आज के कवि की सबसे बड़ी समस्या है। यों समस्याएँ अनेक हैं- काव्य विषय की, सामाजिक उत्तरदायित्व की, संवेदना के पुनः संस्कार की, किंतु इन सबका स्थान पीछे है क्योंकि यह कवि कर्म की ही मौलिक समस्या है, साधारणीकरण व सम्प्रेषण की समस्या है और कवि को प्रयोगशीलता की ओर प्रेरित करने वाली सबसे बड़ी शक्ति यही है। कवि अनुभव करता है कि भाषा का पुराना व्यापकत्व अब उसमें नहीं है। शब्दों के साधारण अर्थ से बड़ा अर्थ हम उनमें भरना चाहते हैं पर उस बड़े अर्थ को पाठक के मन में उतार देने के साधन अपर्याप्त हैं। वह या तो अर्थ कम पाता है या कुछ भिन्न पाता है।'

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -2**

1. जापान की हाइकु पद्धति में किस कवि ने लिखा?
2. तारसप्तक का प्रकाशन अज्ञेय जी ने कब किया?

## 16.5 सारांश

अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनूदित किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी और प्रखर कवि होने के साथ ही साथ अज्ञेय की फोटोग्राफी भी उम्दा हुआ करती थी और यायावरी तो शायद उनको दैव-प्रदत ही थी। वह भारत के स्वाधीनता संग्राम से भी जुड़े रहे, उन्हें संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला भाषाओं का अच्छा खासा ज्ञान था। हिंदी साहित्य में उनकी रुचि आरंभ से ही थी और वह हिंदी साहित्य से निरंतर जुड़े रहे। उन्होंने अनेक पत्रिकाओं, पत्रों का संपादन किया। जिसमें दिनमान, साप्ताहित, नवभारत टाइम्स आदि के नाम प्रमुख हैं।

## 16.6 कठिन शब्दावली

**बहुआयामी** - अनेक पक्षों वाला

**यायावरी** - यायावर संबंधी

**राजाश्रित** - राजा पर आश्रित

**विख्यात** - प्रसिद्ध

**वात्सारिक** - प्रतिवर्ष होने वाला

## 16.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

### अभ्यास प्रश्न-1

1. 1953 ई.
2. सन् 1978 में

### अभ्यास प्रश्न-2

1. अज्ञेन ने
2. सन् 1943 ई में

## 16.8 संदर्भित पुस्तकें


1. कृष्णदत्त पालीवाल, अज्ञेय कवि-कर्म का संकट, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. रमेश चन्द्र शाह, अज्ञेय का कवि कर्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली। दिल्ली।

3 बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृघ्ष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।


## 16.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न. अज्ञेय के साहित्यिक परिचय का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

प्रश्न. आधुनिक हिन्दी साहित्य में अज्ञेय के योगदान पर प्रकाश डालिए।

*****

# इकाई-17
# सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय : काव्यगत विशेषताएँ

**संरचना**


17.1 भूमिका
17.2 उद्देश्य
17.3 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय : काव्यगत विशेषताएँ
 स्वयं आकलन प्रश्न-1
17.4 अज्ञेय का काव्य शिल्प
 स्वयं आकलन प्रश्न-2
17.5 सारांश
17.6 कठिन शब्दावली
17.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
17.8 संदर्भित पुस्तकें
17.9 सात्रिक प्रश्न


## 17.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने सच्चिदानंद हीरानंद वात्सपायन अज्ञेय के जीवन और साहित्य का गहनता से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम अज्ञेय के काव्य एवं शिल्प का भी अध्ययन करेंगे।

## 17.2 उद्देश्य

इकाई सत्रह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. अज्ञेय के काव्य की मुख्य विशेषताएँ क्या है?

2 अज्ञेय का काव्य एवं शिल्प किस प्रकार का है?

3 अज्ञेय के काव्य में किस प्रकार की व्यक्तिनिष्ठा है?

4 क्या अज्ञेय के काव्य में क्रांति का स्वर है?

**17.3 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : काव्यगत विशेषताएँ** - अज्ञेय जी के साहित्य का फलक विशाल है। उन्होंने गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है।

अज्ञेय के काव्य में प्रेम-भावना का प्रधान स्वर है। उनके काव्य में व्यक्तिगत निष्ठा का अधिक निर्वाह हुआ परन्तु उनकी व्यष्टि भी समष्टि से युक्त है। उनके काव्य में 'क्षण; को विशेष महत्त्व दिया गया है। कवि अजर, अमर नहीं होना चाहता बल्कि सच्चे सुख के एक क्षण में ही पना सारा जीवन सार्थक मान लेता है। उन्होंने अपने काव्य में सामाजिक विषमताओं को भी चित्रित किया है और इन विशेषताओं को समाप्त करने के लिए कवि क्रौंति का भी आह्वान करता है। इसके अतिरिक्त उनके काव्य में प्रकृति-वर्णन, आध्यात्मिकता व राष्ट्र-प्रेम की भी अभिव्यक्ति हुई है।

उनकी साहित्यिक/काव्यागत विशेषताओं का अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत किया जा सकता है-

**(क) भाव-पक्ष**-अज्ञेय जी के काव्य के भावपक्ष की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

**1. प्रेम-भावना**-अज्ञेय की काव्य-यात्रा ही प्रेम की टीस, वेदना आदि से आरम्भ होती है। कवि ने अपनी कविताओं में संयोग अथवा मिलन के क्षणों की उन्माद-स्थिति का उतना ही प्रभावशाली चित्रण किया है जितना कि उसने वियोग अवस्था में वेदना का किया है। यहाँ पर उनके काव्य की संयोग व वियोग दशा में अनुभूतियों को दर्शानें वाली पंक्तियाँ उद्धृत हैं-

**(1) संयोग** **तुम्हारी देह**
**मुझको कनक-चम्पे की कली है**
**दूर ही से**
**स्मरण में भी गंध देती है।**

**(2) विरह** **पा न सकने पर तुझे संसार सूना हो गया है-**
**विरह के आघात से प्रिय! प्यार दूना हो गया है।**

यहाँ पर यह भी स्पष्ट कर देना उचित प्रतीत होता है कि अज्ञेय ने प्रेम को दैवी या दानवी न मानकर केवल मानवी रूप में ही स्वीकार किया है। उनके अनुसार प्रेम का जीवित रूप विरह की पीड़ा में विद्यमान रहता है-

**प्रेम को चिर ऐक्य कोई मूढ़ होगा तो कहेगा**
**विरह की पीड़ा न हो तो प्रेम क्या जीता रहेगा?**

**2. व्यक्तिनिष्ठा**-कवि अज्ञेय के काव्य एक प्रमुख प्रवृत्ति उसकी व्यक्तिनिष्ठा भी है। उनके काव्य में व्यक्त व्यक्तिनिष्ठ-कवि का रूप विद्रोहधर्मिता, क्राँतिकारिता आदि गुणों से युक्त न होकर सांसारिक आकर्षणों में बँधा हुआ एक साधारण व्यक्ति के समान है। उनकी व्यक्तिनिष्ठा समाज-साक्षेप और उदात्त है। कहीं-कहीं उनकी व्यक्तिनिष्ठा का आत्म-केन्द्रित रूप भी देखने को मिलता है। यथा-

**मैं मरूँगा सूखा**
**क्यों तुमने जो जीवन दिया था**
**(पिता कहलाते हो तो**
**जीवन के तत्त्व पाँच**
**चाहे जैसे पुंज-बद्ध हुए हों**
**श्रेय तो तुम्हीं को होगा-)**
**उससे मैं निर्विकल्प खेला हूँ-**
**खुले हाथों उसे मैंने पाया है**
**धज्जियाँ उड़ायी हैं।**

**3. क्षणानुभूति**-एक प्रयोगवादी कवि के रूप में अज्ञेय 'क्षण-वाद' पर अधिक बल देते हैं। उनका कथन है-क्षण का आग्रह क्षणिकता का आग्रह नहीं है, अनुभूति की प्राथमिकता का आग्रह है।'' वे अजर होने के मोह में नहीं पड़ते, बल्कि क्षण में ही पूरी तरह जीना चाहते हैं-

**हमें किसी कल्पित अजरता का मोह नहीं**
**आज के विविक्त अद्वितीय इस क्षण को**
**पूरा हम जी लें, पी लें, आत्मसात् कर लें।**

कवि एक क्षण की अनुभूति को पाने में ही जीवन को सार्थक मान लेता है। वह उस क्षण की अनुभूति को शब्दों के घेरे में बाँधकर रखना चाहता है। वह इस क्षणानुभूति के बाद जीने की भी कामना नहीं करता है-

**सत्य का सुरभिपूत स्पर्श हमें मिल जाए-**
**क्षण-भर:**
**एक क्षण उसके आलोक से संयुक्त हो**
**विभोर हम हो सकें**
**और हम जीना नहीं चाहते।**

वस्तुत: अज्ञेय का क्षणवाद अस्तित्ववाद की धारणा पर आधारित है।

**4. सामाजिक व आर्थिक विषमताओं का चित्रण**-अज्ञेय के काव्य में आधुनिक युग के मानव-समाज में व्याप्त सामाजिक व आर्थिक विषमताओं का चित्रण हुआ है। ये विषमताएँ मनुष्य को अनाचार व भ्रष्टाचार की ओर ध केल रही हैं। वह कुण्ठा व पीड़ा का शिकार बनता जा रहा है। फलत: कवि इन विषमताओं को अपने काव्य में चित्रित करते हुए कहता है कि ये विषमताएँ समाज रूपी भट्ठी में मनुष्य रूपी घातु को तप्त करके गला रही हैं-

**भीतर जलते लाल धातु के साथ**
**कामकरों की दुस्साध्य विषमताएँ भी तप्त उबलती जाती हैं।**

**5. क्राँति का स्वर**-अज्ञेय के काव्य में जहाँ सामाजिक, आर्थिक, विषमताओं का चित्रण हुआ है, वहीं कवि इन्हें समाप्त करने के लिए रक्तिम क्राँति का भी आह्वान करता है। कवि ने शोषितों, दमितों, उपेक्षितों को सामाजिक क्राँति, रक्तिम क्राँति आदि को 'अग्निधर्म' के समान धारण करने के लिए कहा है-

**हमने न्याय नहीं पाया है, हम ज्वाला से न्याय करेंगे-**
**धर्म हमारा नष्ट हो गया, अग्निधर्म हम हृदय धरेंगे।**

कवि इन विषमताओं का मूल कारण पूँजीपतियों, उच्च व धनाढ्य वर्ग की संकुचित मनोवृत्ति को मानता है। कवि इस विषमता रूपी अंधकार को मिटाकर सारे समाज को समानता के प्रकाश में लाकर खड़ा करना चाहता है। यथा-

**कवि एक बार फिर गा दो,**
**एक बार इस अंधकार में फिर आलोक दिखा दो।**

**6. आध्यात्मिकता**-अज्ञेय ने अपने काव्य में आत्मा, परमात्मा के बारे में भी चिन्तन-मनन किया है। उन्होंने संत कवि कबीर दास की भाँति आत्मा को परिणीता तथा परमात्मा को महाशून्य के रूप में चित्रित किया है और इन दोनों के बन्धन को पति-पत्नी के गठबंधन के समान माना है-

**ओ आत्मा री**
**तू गयी बही**
**ओ सम्पृक्ता**
**ओ परिणीता**
**महाशून्य के साथ भाँवरे तेरी रची गयीं।**

**7. प्रकृति-चित्रण**-प्रकृति ने प्राय: कवियों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। अज्ञेय ने भी अपने काव्य में प्रकृति का विविध रूपों में चित्रण किया है। कवि ने प्रकृति का आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण आदि रूपों में चित्रण करके उसके भव्य-दृश्य अपनी कविताओं में सजाए हैं। उदाहरण के लिए निम्न पंक्तियों में कवि ने सूनी-साँझ का मानवीकरण रूप में इस प्रकार इस चित्रण किया है-

**सूनी-सी साँझ एक**
**दबे पाँव मेरे कमरे में आयी थी।**
**मुझको वहाँ देख**
**थोड़ा सकुचायी थी।**
**तभी मेरे में यह बात आयी थी,**
**कि ठीक है, अच्छी है**
**उदास है पर सच्ची है,**
**इसी की साँवली छाँह में कुछ देर रहूँगा।**

**8. देश-प्रेम**-अज्ञेय के काव्य में देश-प्रेम की भावना भी अभिव्यक्त हुई है। परन्तु उनकी राष्ट्रीय-भावना मैथिलीशरण गुप्त या दिनकर की राष्ट्रीय-भावना से अलग है। उनकी राष्ट्रीय-भावना में देश की निर्धन-जनता के प्रति अनुराग भी है तो मोटे-मोटे पूँजीपतियों के प्रति व्यंग्य भी है। कवि देश की निर्धन जनता के प्रति सहानुभूति दशाति हुए कहता है-

**इन्हीं तृण-फूस-छप्पर से**
**टैंक ढुलमुल गवारू**
**झोंपड़ों में ही हमारा देश बसता है।**
**इन्हीं के ढोल-मादल-बाँसुरी के**
**उमगते सुर से**
**हमारी साधना का रस सरसता है।**

'इतिहास की हवा', 'साँप', 'रेंक' आदि कविताओं में कवि ने तीक्ष्ण व व्यंग्यात्मक ढंग से अपने देश की स्थिति का चित्रण करके अपनी राष्ट्रीय-भावना को दर्शाया है।

**3. कला-पक्ष**-अज्ञेय की काव्य-भाषा विविधता लिए हुए है। वैसे तो उनके काव्य में अधिकांशतः शुद्ध, साहित्यिक व परिनिष्ठित खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है फिर भी उसमें विविधता देखी जा सकती है। **'निर्गन्धा इव किंशुका', 'द्रष्टा' उन्मेष्टा, संघाता, अर्यवाह**, जैसे शब्दों के प्रयोग से जहाँ उनकी काव्य भाषा तत्सम बहुला व संस्कृतिमयी बन जाती है वहीं **'और दे भी क्या सकता हूँ हवाला' 'बुझी फीकी चाँदनी में दिखे शायद'** जैसे वाक्यों के प्रयोग से उनकी काव्य-भाषा सरल, सहज-सी दिखाई देती है। तलैया, छोरियाँ, औलते, थिगली, फिरकी, तूमड़ी आदि जैसे देशज शब्दों का भी उनके काव्य में प्रयोग हुआ है तो कलैण्डर, पार्क, इजहार, जोखम आदि जैसे प्रचलित विदेशज शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

अज्ञेय ने अपने काव्य में मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग करके उसे लाक्षणिकता के गुण से युक्त कर दिया है। कवि ने 'हारिल', मछली, द्वीप, ज्वार आदि को प्रतीक बनाकर अपने भावों की मार्मिकता, गूढ़ता आदि को सफलता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके काव्य में दृश्य, श्रव्य, वस्तुपरक, भाव आदि विम्बों की योजना हुई है। कवि ने भावों की सफलाभिव्यक्ति के लिए उसे अलंकृत भी किया है। उनके काव्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, रूपक आदि अलंकारों का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है जिसके उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं-

**( अ ) उपमा - अरुणाली पर घुटन की एक स्याही-सी छा गई**

**( आ ) रूपक - नीचे महामौन की सरिता दिग्विहीन बहती है**

**( ई ) उत्प्रेक्षा - दूर पहाड़ों से काले मेघों की बाढ़**
**हाथियों का मानो चिंघाड़ रहा हो दूध**

अज्ञेय की आरम्भिक कविताएँ छन्दों में लिखी गई हैं और उनमें गीतिका, बरवै, रोला, हरिगीतिका, मालिनी, मन्दाक्रांता आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है परन्तु उन्होंने शीघ्र ही मुक्तक छन्द को अपनी भावाभिव्यक्ति का साधन बना लिया। उनके काव्य में प्रसाद व माधुर्य गुणों का समावेश है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -1**

1. अज्ञेय के काव्य संग्रह 'थग्नदूत' का प्रकाशन कब हुआ?
2. दिनमान पत्रिका का संपादन अज्ञेय जी ने कब से सम्भाला?

## 17.4 अज्ञेय का काव्य-शिल्प

अज्ञेय के काव्य का भाव-पक्ष अर्थात् अनुभूति पक्ष जितना वैविध्यपूर्ण है, उसका कला-पक्ष अथवा अभिव्यक्ति-पक्ष भी उतना ही अधिक प्रभावशाली है। अज्ञेय के काव्य-शिल्प को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित करके अध्ययन किया जा सकता है-

**1. भाषा**-अज्ञेय के काव्य में वैसे तो अधिकांश-स्थलों पर शुद्ध, साहित्यिक व परिनिष्ठित खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है परन्तु उनकी काव्य-भाषा में विविधता के भी दर्शन होते हैं। उनकी काव्य-भाषा को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है-

(1) **तत्सम प्रधान काव्य**-अज्ञेय ने अपने काव्य में अनेक स्थलों पर संस्कृतनिष्ठ तत्सम- शब्द-प्रधान भाषा का प्रयोग किया है। यथा-

**एक ज्योति**
**अस्मिता इयता की**
**ज्वाला**
**अपराजिता अनादृता**

(2) **साधारण बोल-चाल की भाषा** - अज्ञेय ने अपने काव्य में साधारण बोल-चाल की भाषा का भी प्रयोग किया है और उसमें देशज शब्दावली का भी प्रयोग किया है। इसका कारण यह है कि अज्ञेय ने काव्य के लिए बोलचाल की भाषा को ही आदर्श भाषा माना है। उनके काव्य में साधारण बोल-चाल की भाषा का उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है-

**कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।**
**मगर क्या तुम नहीं पहचान पाओगी :**
**तुम्हारे रूप के-**
**तुम हो, निकट हो, इसी जादू के**
**निजी किस सहज, गहर बाय से, किस प्यार से मैं कह रहा हूँ**

**( 3 ) मिश्रित भाषा**-अज्ञेय ने अपने काव्य में देशज, विदेशज, तत्सम, तद्भव आदि शब्दावली से युक्त मिश्रित भाषा का भी प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए-

**''प्रचण्ड शौर्यवान, खूब रंग-दारी है, अंट-संट वरदान !**
**खूब रंग-दारी है**
**विपरीत दोनों दूर छोरों द्वारा पुजकर**
**स्वर्ग के पुलपर**
**चुंगी के नोंकदार**
**भ्रष्टाचारी मैजिस्ट्रेट, रिश्वत-खोर थानेदार!!**

**2. लाक्षणिकता**-अज्ञेय जी ने अपने काव्य में लाक्षणिकता का समावेश करने के लिए, उसकी भाषा में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का भी प्रयोग किया है। इसके साथ-साथ उन्होंने ऐसी पदावली, वाक्यों आदि का भी प्रयोग किया जो अभिधेयार्थ से भिन्न लक्ष्यार्थ एवं सांकेतिक अर्थ की द्योतक है। यथा-

**कवि तुभ ( नभचारी ) मिट्‌टी की ओर मत देखना**
**गहरे न जाना कहीं**
**आँचल बचाना सदा**
**दामन हमेशा पाक रखना**
**पंकज-सा पंक में**

**3. प्रतीकात्मकता**-अज्ञेय ने अपना काव्य-भाषा में भावों की सफलाभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों का भी प्रयोग किया है। उनके द्वारा प्रयुक्त प्रतीक एक निर्दिष्ट अर्थ की प्रतीति कराने में सर्वथा समर्थ जान पड़ते है। उन्होंने प्रतीकों का नूतन प्रयोग किया है तथा इस नवीनता में विविधता भी दिखाई देती है। कवि ने 'हारिल' पक्षी को अपनी दुर्दम्य

सर्जन-इच्छा का, हारिल के पँजे में दबे 'तिनके' को सृजना के साधन का, 'नन्हीं शिखा' को वासना का, 'हरी घास' को व्यापक जीवन का प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है। इसी प्रकार कवि ने मन के उद्वेलन के लिए 'ज्वार' का, प्रेमी के लिए कुमुद का, आधुनिक राजनीतिज्ञों के लिए 'द्रोणाचार्य' का प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है। यथा-

**उड़ चल, हारिल, लिए हाथ में वही अकेला ओछा तिनका।**

**4. बिम्ब-योजना**-कवि अज्ञेय ने अपने काव्य में विभिन्न प्रकार के बिम्बों का प्रयोग करके अपनी अनुभूति को अत्यधिक प्रभावशाली, मनोहर, रोचक तथा रमणीय बना दिया है। उनके काव्य में ऐन्द्रिय, वस्तुपरक, भाव और आध्यात्मिक चारों प्रकार के बिम्बों का प्रयोग हुआ है। उदाहरण
के लिए-

**वस्तुपरक बिम्ब - इन्हीं तृण-फूस-छप्पर से**
**ढके ढुलमुल गँवारू**
**झोंपड़ों में ही हमारा देश बसता है।**

**ऐन्द्रिय बिम्ब - तुम्हारी देह**
**मुझको कनक चम्पे की कली है**
**दूर ही से**
**स्मरण में भी गन्ध देती है।**

**5. अलंकारों का प्रयोग** - अज्ञेय ने अपने काव्य में विविध प्रकार के नवीन व सजीव उपमानों का प्रयोग किया है तथा उपमानों के द्वारा वस्तु-वर्णन को सजीव और मार्मिक बनाकर प्रस्तुत किया है। कवि ने प्रकृति, समाज व मानव-जीवन के उपकरणों का ही प्रयोग किया है। उनकी काव्य-भाषा में सर्वाधिक उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है और उसके अतिरिक्त रूपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अन्योक्ति आदि अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है। यथा-

**उपमा - दामन हमेशा पाक रखना,**
**पंकज-सा पंक में**

**अन्योक्ति - उड़ चल, हारिल, लिए हाथ में यही अकेला ओछा तिनक।**

**6. छन्द का प्रयोग**-अज्ञेय ने अपनी आरम्भिक काव्य रचना में गीतिका, बरवै, हरिगीतिका, रोला, मालिनी आदि पारम्परिक मात्रिक और वर्णिक छंदों का प्रयोग किया है परन्तु बाद में कवि ने छन्दों की शास्त्रीयता के बन्धन से स्वतन्त्र होकर मुक्तक छन्द का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। उनके आरम्भिक काव्य में गेयता का गुण विद्यमान है। यथा-

**मिट्टी से जो छीन लिया है वह तज देना धर्म नहीं है,**
**जीवन साधना की अवहेलना कर्मवीर का कर्म नहीं है।**

इसी प्रकार उनके द्वारा प्रयुक्त मुक्तक छन्द का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

**बल्कि केवल यहीं ये उपमान मैले हो गए हैं**
**देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।**
**कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।**

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न -2**

1. दूसरा सप्तक का संपादन अज्ञेय जी ने कब किया?
2. 'शेखर-एक जीवनी' कितने भागों में लिखा गया?

## 7.5 सारांश

**अज्ञेय के वाक्य** - विन्यास पर अंग्रेजी का प्रभाव भी है। तत्सम - तद्‌भव शब्द प्रयोग से भाषा में कुछ ऐसा भी कर दिखाना है कि परिष्कार ही परिष्कार न दिखे। कहा गया है कि अज्ञेय में ध्वनि, , शब्द, अर्थ - छाया, वाक्य खण्ड सबमें अंग्रेजी का संवेदनात्मक सूक्ष्म उपयोग देखा जा सकता है। अज्ञेय छोटी कविता लम्बी कविता में भेद नहीं करते। सूक्ष्म, वर्णनात्मकता विम्बों की बहुलता, नाटकीयता दार्शनिकता, नगरबोध, समष्टि बोध, मृत्यु बोध, राष्ट्रीयता प्रतीकबद्धता और मिथलीय शब्दावली का प्रयोग आदि उनकी लम्बी कविता की विशेषताएँ हैं। प्रतीकों की विपुलता और मिथकों की विविधता के कारण अज्ञेय का काव्य शिल्प हृदयकारी बन पड़ा है।

## 17.6 कठिन शब्दावली

**मिथकीय** - मिथक से उत्पन्न

**परिष्कार** - शुद्धीकरण

**नगरबोध** - कस्बे की जानकारी

**प्रतीकोपखान** - मूर्तिपूजन

**बहुलता** - बहुतायत

## 17.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. 1933 ई. में
2. 1965 ई. में

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. 1951 ई. में
2. दो भागों में

## 17.8 संदर्भित पुस्तकें


1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
2. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. रमेश चन्द्र शाह, अज्ञेय का कवि कर्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।


## 17.9 सत्रिक प्रश्न

प्रश्न. अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

प्रश्न. प्रयोगवाद और नई कविता के प्रवर्तक के रूप में अज्ञेय सफल हुए हैं। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न. अज्ञेय की भाषा शैली का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए।

*****

# इकाई - 18

# सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय : व्याख्या भाग

**संरचना**


18.3 भूमिका

18.2 उद्देश्य

18.3 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : कविताओं का व्याख्या भाग

- 'उड़ चल, हारिल (कविता) : व्याख्या
- 'कलगी बाजरे की' (कविता) : व्याख्या भाग
- 'साँप' (कविता) : व्याख्या भाग
- 'न्याय कवि' आत्म स्वीकार (कविता) : व्याख्या भाग

18.4 सारांश

18.5 कठिन शब्दावली

स्वयं आकलन प्रश्न

18.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

18.7 संदर्भित पुस्तकें

18.8 सात्रिक प्रश्न


## 18.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं का गहनता से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन अज्ञेय की कविताओं की व्याख्या करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनकी उड चल, हारिल, कलगी बाजरे की, साँप तथा 'न्याय कवि : आत्म स्वीकार' कविता की व्याख्या करेंगे।

## 18.2 उद्देश्य

इकाई अठारह का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि–

1. उड चल, हारिल कविता का मूल भाव क्या है ?
2. कल्गी बाजरे की कविता में अज्ञेय ने किसके सौन्दर्य का वर्णन किया है?
3. साँप कविता के माध्यम से किसे सभ्य होने का संदेश दिया गया है?
4. न्याय कवि : आत्म स्वीकार का सार क्या है?

## 18.3 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : व्याख्या भाग

**कविता का सार–'उड़ चल हारिल'** अज्ञेय जी की एक महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है। मूलत: यह उनके काव्य-संग्रह **'इत्यलम'** में संकलित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने मानव को हारिल पक्षी की भाँति अपना जीवन ऊँचा उठाने के लिए निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। कविता का सार इस प्रकार है–

कवि मानव मन को संबोधित करते हुए कहता है कि उसे आस्था और विश्वास का तिनका, हारिल पक्षी की तरह चोंच में दबा कर लगातार आगे बढ़ते रहना चाहिए। कवि का मानना है कि भले ही दुनिया इस तिनके को तुच्छ मानती हो परन्तु यह बड़ा सहारा है। पूर्व में सूर्योदय हो रहा है, पक्षी को बिना किसी का इंतजार किए अपनी मंजिल को पाने के लिए उड़ चलना चाहिए। जब तक हाथों में ताकत है तब तक निर्माण कार्य रुकना नहीं चाहिए, जीवन की प्रगति रुकनी नहीं चाहिए। कवि पक्षी को निरन्तर ऊपर उड़ते जाने की प्रेरणा देता है और उसे अपने पंखों से हलचल मचाने को कहता है। हारिल के हाथ में तिनका उत्सकी रचना क्षमता का प्रमाण है। कवि हारिल पक्षी को उत्साहित

करते हुए कहता है कि उसे घबराना नहीं चाहिए, भले ही दिशाएँ उसे डराएँ, भले ही विश्व का उपहास उसे रोकने का प्रयत्न करे। कवि, हारिल से कहता है कि हालांकि उसका शरीर भी मिट्टी से बना है परन्तु उसने इसे कर्म में लगाकर नवजीवन दिया है। ईश्वर भी मिट्टी में प्राण फूँकता है, हारिल भी ब्रह्मा की तरह नव निर्माण करता है। इसी मिट्टी शरीर में परमात्मा का अंश आत्मा के रूप में रहता है जो इस ऊपर उठने की, प्रभु को पाने की लालसा प्रदान करता है। हारिल ईश्वर की रचनात्मक शक्ति का संदेशवाहक है। उसकी चोंच में दबा तिनका उसके जीवन का सहारा बनेगा। कवि उसे समझाता है कि अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहना ही जीवन सार्थक बनाता है। तिनका रास्ते की धूल है परन्तु स्वयं हारिल भी तो उसी प्रभु के चरणों की धूल समान हैं। आज उस धूल ने आकाश में उड़कर मानो ईश्वरत्व को छू लिया है। पूर्व में प्रात: का सूर्य उदय हो गया है, हारिल को उड़ चलना चाहिए।

**उड़ चल, हारिल, लिये हाथ में यही अकेला ओछा तिनका।**
**उषा जाग उठी प्राची में कैसी बाट, भरोसा किन का।**
**शक्ति रहे तेरे हाथों में-छूट न जाये यह चाह सृजन की;**
**शक्ति रहे तेरे हाथों में-रुक न जाये यह गति जीवन की।**

**शब्दार्थ-ओछा** = छोटा, तुच्छ। **उषा** = सवेरा। **प्राची** = पूर्व दिशा। **सृजन** = निर्माण।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित कविता **'उड़ चल हारिल'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने मानव को अपना जीवन ऊँचा उठाने के लिए हारिल पक्षी की भाँति आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि हारिल पक्षी को संबोधित करता हुआ कहता है, हे हारिल! तू अपने हाथों में यह अकेला, तुच्छ सा तिनका लेकर लगातार आगे बढ़ता चला जा। दूर पूर्व में सुबह हो रही है। अब इस बात की क्या चिन्ता करना कि रास्ता कैसा मुश्किल है, और किसी की मदद की उम्मीद भी करने का कोई लाभ नहीं। हे हारिल! तुम्हारे हाथों में जब तक निर्माण की ताकत रहे तब तक तुम्हारी नव-निर्माण की इच्छा समाप्त नहीं होनी चाहिए। जब तक तुम्हारे हाथों में ताकत है तब तक तुम्हारे जीवन की गति रुकनी नहीं चाहिए।

**विशेष**

1. हारिल पक्षी निर्माण का प्रतीक है। कवि उसे निरन्तर जागे बढ़ते और काम करने की प्रेरणा देता है।
2. भाषा सरल एवं प्रसाद गुण युक्तखड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग है।
5. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
6. अनुप्रास, रुपक, मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग है।

**ऊपर-ऊपर-ऊपर-ऊपर-बढ़ा चीरता चल दिग्मंडल**
**अनथक पंखों की चोटों से नभ में एक मचा दे हलचल!**
**तिनका? तेरे हाथों में है अमर एक रचना का साधन-**
**तिनका? तेरे पंजे में है विधना के प्राणों का स्पन्दन !**

**शब्दार्थ-दिग्मंडल** = दिशाओं का घेरा। **अनथक** = कभी न थकने वाले। **विधना** = विधाता, विश्व को बनाने वाली शक्ति। स्पन्दन = हिलना, गति।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित कविता **'उड़ चल हारिल'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने मानव को अपना जीवन ऊँचा उठाने के लिए हारिल पक्षी की भाँति आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि हारिल पक्षी को संबोधित करता हुआ कहता है हे हारिल! तू लगातार ऊपर ही ऊपर उड़ता चला जा। दिशाओं के घेरे को भी चीर कर पार निकल जा। हे हारिल! कभी न थकने वाले पंखों की चोटों से सारे आकाश में तू हलचल सी मचा दे। अर्थात् हारिल को लगातार संघर्षरत रहना चाहिए। है हारिल। तू अपने हाथों में पकड़े इस तिनके को बेकार अथवा छोटा मत समझ। यह तिनका तो रचना का अमर साधन है। यह तिनका जिसे संसार तुच्छ मानता है, इस सृष्टि में जीवन का संचार करने वाला, इस सृष्टि का प्राण है। अर्थात् छोटे से छोटा जीव भले ही वह तुच्छ से साधनों के साथ निर्माण में जुटे, उसका परिश्रम बेकार नहीं जाता है।

**विशेष**–

1. स्पष्ट किया गया है कि निर्माण के साधन छोटे–बड़े नहीं होते, निर्माण की इच्छा और निर्माण की शक्ति का महत्त्व सर्वोपरि होता है।
2. भाषा सरल एवं प्रसाद गुण युक्त है।
3. शब्द चयन सर्षया उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग है।
5. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
6. अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, तथा अतिश्योक्तिअलंकारों का प्रयोग है।

**काँप न, यद्यपि दसों दिशा में तुझे शून्य नभ घेर रहा है,**
**रुक न, यद्यपि उपहास जगत का तुझको पथ से हेर रहा है;**
**तू मिट्टी था, किन्तु आज मिट्टी को तूने बाँध लिया है,**
**तू था सृष्टि, किन्तु स्रष्टा का गुर तूने पहचान लिया है!**

**शब्दार्थ**–**शून्य** = खाली। **नभ** = आकाश। **हेर** = देखना। **स्रष्टा** = ईश्वर।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित कविता **'उड़ चल हारिल'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने मानव को अपना जीवन ऊँचा उठाने के लिए हारिल पक्षी की भाँति आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि हारिल पक्षी को संबोधित करता हुआ कहता है, हे हारिल पक्षी! यदि तुझे दसों दिशाओं से सूना आकाश घेर भी ले तो भी तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। भले ही सारा संसार तुम्हारे प्रयासों का मजाक उड़ाए तो भी तुम्हें रुककर बैठ नहीं जाना है। तुम्हें दुनिया की चिन्ता नहीं करनी है। हे हारिल! यह सच है कि तू भी मिट्टी से बना है परन्तु लेकिन तुमने अपने साहस एवं इच्छा शक्ति से इस मिट्टी को नई ताकत दी है। तू भले ही सृष्टि था, संसार का एक भाग या परन्तु तूने परमात्मा का सिद्धान्त या रहस्य जान लिया है। अर्थात् हारिल देखने में भले ही छोटा है, उसके पास निर्माण के साधन भी तुच्छ हैं फिर भी वह अपनी निर्माण की क्षमता को पहचान चुका है इसलिए ईश्वर के समान हो गया है।

**विशेष**

1. स्पष्ट किया गया है कि जो निर्माण करता है वही स्रष्टा है, ईश्वर है। साथ ही परिश्रम का महत्त्व भी प्रकट किया गया है।
2. भाषा सरल एवं प्रसाद गुण युक्त है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग है।
5. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
6. अनुप्रास स्वर–मैत्री अलंकारों का प्रयोग है।

**मिट्टी निश्चय है यथार्थ, पर क्या जीवन केवल मिट्टी है?**
**तू मिट्टी, पर मिट्टी से उठने की इच्छा किसने दी है?**
**आज उसी ऊर्ध्वंग ज्वाल का तू है दुर्निवार हरकारा,**
**दृढ़ ध्वज-दंड बनाना यह तिनका सूने पथ का एक सहारा।**

**शब्दार्थ-यथार्थ** = वास्तविक। **ऊर्ध्वंग** = ऊपर उठने वाली। **दुर्निवार** = जिसे रोका न जा सके। **हरकारा** = दूत, पत्रवाहक, संदेशवाहक।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित कविता **'उड़ चल हारिल'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने मानव को अपना जीवन ऊँचा उठाने के लिए हारिल पक्षी की भाँति आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि हारिल पक्षी को संबोधित करता हुआ कहता है, हे हारिल! मिट्टी की अपनी सच्चाई है कि सारी सृष्टि का निर्माण मिट्टी से हुआ है लेकिन जीवन केवल मिट्टी की तरह निर्जीव और अर्थहीन तो नहीं हो सकता। तू यदि जड़ मिट्टी का ही हिस्सा है तो भी मिट्टी से ऊपर उठने की कामना भी तो तुझे किसी ने दी होगी। हे हारिल! जिस परमात्मा ने मिट्टी के ऊपर उठने की प्रेरणा तुम्हें दी उसी ऊपर उठती हुई आग या चेतना का पत्रवाहक, संदेशवाहक तू भी है। तुझे रोक पाना संभव नहीं, क्योंकि तू सृजन का प्रतीक है। तुम्हारी चोंच में जो छोटा सा तिनका दबा है वहीं तुम्हारी विजय का ध्वज बनेगा, वही तुम्हें जिताएगा। यह तिनका ही सूने गगन में तुम्हारा सहारा बनेगा।

**विशेष-**

1. मनुष्य जीवन को मिट्टी कहकर कवि ने मनुष्य के ययार्थ पर प्रकाश डाला है।
2. भाषा सरल एवं प्रसाद गुण युक्त है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग है।
5. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
6. अनुप्रास व प्रश्न अलंकारों का प्रयोग है।

**मिट्टी से जो छीन लिया है, वह तज देना धर्म नहीं है;**
**जीवन-साधन की अवहेलना कर्मवीर का कर्म नहीं है!**
**तिनका पथ की धूल, स्वयं तू है अनन्त की पावन धूली-**
**किन्तु आज तूने नभ-पथ में क्षण भर बद्ध अमरता छू ली!**
**उषा जाग उठी प्राची में-आवाहन यह नूतन दिन का :**
**उड़ चल हारिल, लिये हाथ में एक अकेला पावन तिनका !**

**शब्दार्थ-तज** = त्याग। **अवहेलना** = उपेक्षा, त्याग। **अनन्त** = प्रभु। **नूतन** = नया। **पावन** = पवित्र।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियों **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित कविता **'उड़ चल हारिल'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने मानवता को अपना जीवन ऊँचा उठाने के लिए हारिल पक्षी की भाँति आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि हारिल पक्षी को संबोधित करते हुए कहता है है हारिल पक्षी! जो मिट्टी से छीन लिया है उसे अनायास ही त्याग देना धर्म नहीं है। अर्थात् सजीव मनुष्य के लिए मुर्दों की तरह जीवन जीना बेकार है। जीवन में निर्माण के जो भी साधन हमें प्राप्त हैं उनको बिना कारण के त्याग देना गलत है। यदि तिनका रास्ते की ध

ूल की तरह तुच्छ है तो हे हारिल! तू भी उस प्रभु के चरणों की धूल है परन्तु आज आकाश की ऊँचाइयों को चीर कर हे हारिल! तुम सचमुच अमर हो गए हो। हे हारिल! पूर्वी आकाश में सूर्योदय हो गया है। यह नए दिन का निमन्त्रण है। हे हारिल! नया युग आरम्भ हो गया है, परन्तु तू इसी अकेले तिनके को लेकर चला जा।

**विशेष**

1. अज्ञेय जी ने मनुष्य को हारिल की तरह कर्तव्यनिष्ठ और अपने प्रति ईमानदार बनने की प्रेरणा दी है।
2. भाषा सरल एवं प्रसाद गुण युक्त है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. संबोधन शैली का प्रयोग है।
5. दृश्य बिंब का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**● कलगी बाजरे की (कविता) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार**–**'कलगी बाजरे की'** अज्ञेय जी द्वारा रचित एक प्रसिद्ध एवं चर्चित कविता हैं। मूल रूप से यह कविता उनके काव्य-संग्रह **'हरी घास पर क्षण भर'** नामक काव्य-संग्रह से अवतरित है। उनकी यह कविता प्रयोगवादी आन्दोलन में नारे की तरह प्रयुक्त हुई है। इस कविता में कवि को विशाल खुले मैदान में, हरी घास के मखमली बिछौने में एक बाजरे का पौधा उगा हुआ दिखाई पड़ा जिस पर बाजरे का सिट्टा कलगी की तरह हिल रहा था। कवि स्पष्ट करता है कि यह उसकी सुन्दरता को घिसे पिटे उपमानों से उपमित नहीं कर सकता, क्योंकि उसकी सुन्दरता अद्वितीय है। वह बाजरे के सिट्टे से कहता है कि वह उसे शाम की लालिमा में रंगी नायिका की उपमा नहीं दे सकता, क्योंकि यह उपमा तो सैकड़ों कवियों ने, अनेक वस्तुओं को पहले भी दी है। वह इस बाजरे की कलगी को प्रात: की ओस में नहाई, ताजा खिली चम्पे की कली से भी उपमित नहीं करना चाहता, क्योंकि उसके अनुसार यह उपमा भी बासी या पुरानी है। कवि कहता है कि ऐसा नहीं है कि उसे बाजरे की कलगी अच्छी नहीं लगी, उससे कवि को प्रेम नहीं है, अपितु इसका कारण यही के ऐसी पुरानी, बासी पड़ चुकी उपमाओं से बाजरे की कलगी का अपमान होगा और यह कवि के भावों को ठीक से प्रकट करने में असमर्थ होगी। कवि घोषणा करता है कि मध्यकालीन उपमाएँ और प्रतीक मैले हो गए हैं, निष्प्राण और निरर्थक हो गए हैं।

कवि स्पष्ट करता है कि प्राय: देखा गया है कि बर्तनों को अधिक मलने से उसके ऊपर की कलई उतर जाती है, चमक गायब हो जाती है। यही हाल इन उपमाओं और प्रतीकों का हुआ है। सदियों से प्रयुक्तये उपमाएँ और प्रतीक निरर्थक हो चुके हैं। कवि बाजरे की कलगी से कहता है कि वह तो जानती है कि कवि गहरी संवेदना और आनन्द की अनुभूति से उसे स्वीकार करके उसे कहना चाहता है कि वह इस हरी, चिकनी घास के समान सुन्दर है। कवि का मानना है कि यह घास ही उस परमपिता की सच्ची प्रतीक है। कवि कहता है कि आज के शहरी जीयन में पले-बढ़े लोगों के लिए बागों में खिली जुही की कलियों अथवा फूलदान में सजी कलियाँ ही प्राप्य हैं, प्राकृतिक वातावरण में कुछ भी उनके पास नहीं रहता। इसके विपरीत घास उस ईश्वर के ऐश्वर्य का प्रतीक है जो उत्तकी इच्छा से हर कहीं उगता है। बाजरे का सिट्टा भी वैसा ही सहज, प्रकृति से उगा पदार्थ है। कवि कहता है कि बाजरे की कलगी में उसे उस परमात्मा के सौन्दर्य के दर्शन होते हैं और मन से उस पर न्योछावर हो जाता है। यह सम्पर्क भाव शब्दातीत है। कवि कहता है कि शब्दों में भाव व्यक्त करने की अपेक्षा अपने आप को मौन कर देना कहीं अधिक गहरा भाव है।

**हरी बिछली घास।**
**दोलती कलगी छरहरी बाजरे की।**
**अगर मैं तुमको ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका**
**अब नहीं कहता,**

**या शरद के भोर की नीहार-न्याही कुँई,**
**टटकी कली चम्पे की, वगैरह, तो**
**नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या सूना है**
**या कि मेरा प्यार मैला है।**

**शब्दार्थ-बिछली घास** = मुलायम परंतु फिसलन भरी घास, जिस पर फिसल जाएँ। **दोलती** = झूलती, हिलती। **कलगी** = सिट्टा। **नीहार** = कुहरा, पाला। **कुंई** = कुमुदनी। **टटकी** = खिली। **उथला** = कम गहरा, हल्का।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित **'कविता कलगी बाजरे की'** मैं अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक कविता में परम्परागत उपमानों का उपयोग अब सार्थक नहीं रहा। अत: आधुनिक भाव बोध को प्रकट करने के लिए आज नए उपमानों की आवश्यकता है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि चारों ओर नर्म, कोमल फिसलन भरी घास फैली है। विशाल चारागाह में एक बाजरे का पौधा उग आया है जिस पर बाजरे का भुट्टा हवा में नाच रहा है, हिल रहा है। कवि इस अद्‌भुत दृश्य को देखकर कहता है कि वह इस बाजरे के भुट्टे को शाम के लालिमा भरे आकाश की तारिका से उपमित नहीं करना चाहता और न ही इसकी उपमा शरद् ऋतु में भोर के समय कुहरे में स्नान करके आई कुमुदनी से करना चाहता है। न ही वह इसे अभी-अभी खिली चम्पे की कली कहना चाहता है। उसके ऐसा न करने का कारण यही है कि वह इन सबको इस बाजरे के सिट्टे के समान नहीं मानता। ऐसा नहीं है कि अब उसे प्रकृति से प्रेम नहीं रहा अथवा उसके हृदय में संवेदना सूख गई है और वह उथला हो गया है।

**विशेष**

1. कवि ने पुराने उपमानों को त्यागने का आग्रह किया है।
2. भाषा प्रवाह पूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. मुक्तछंद का प्रयोग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**बल्कि केवल यही ये उपमान मैले हो गये हैं।**
**देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।**
**कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।**
**मगर क्या तुम नहीं पहचान पाओगी:**
**तुम्हारे रूप के**
**तुम हो, निकट हो, इसी जादू के-**
**निजी किस सहज, गहरे बोध से, किस प्यार से मैं कह रहा हूँ-**
**अगर मैं यह कहूँ-**
**बिछली पास हो तुम**
**लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की?**

**शब्दार्थ-बासन** = बर्तन। **मुलम्मा** = ऊपर, चढ़ाया पानी।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित कविता **'कलगी बाजरे की'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक कविता में परंपरागत उपमानों का उपयोग अब सार्थक नहीं रहा। अतः आधुनिक भाव बोध को प्रकट करने के लिए आज नए उपनामों की आवश्यकता है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि बाजरे की कलगी से कहता है कि वह उसे इन सब उपमानों से उपनित नहीं करना चाहता। उसकी उपमा सांध्य तारे, कुमुदनी अथवा चम्पे की कली से नहीं करना, चाहता क्योंकि ये उपमान मैले पड़ गए हैं, घिस गए हैं। बार–बार प्रयोग होने से पुराने या निरर्थक हो गए हैं। इनके देवता उन्हें छोड़कर भाग गए हैं। कहने का भाव यह है कि ये उपमान अपना अर्थ, अपना महत्त्व खो चुके हैं। कई बार ऐसा होता है कि बर्तनों को अधि क रगड़ने से उन पर चढ़ा बनावटी पानी (मुलम्मा) गायब हो जाता है, उनका पानी उतर जाता है। हे बाजरे की कलगी! तुम जो जानती हो कि तुम्हारे सौंदर्य के निकट तुम ही हो, किसी दूसरी वस्तु से तुम्हारी उपमा कठिन है। मैं यह बात मन की गहराई से, गहरी संवेदना के स्तर से कह रहा हूँ। मैं सच्चे प्यार से यह बात कह रहा हूँ। यदि मैं तुम्हारी उपमा इस चमकदार, फिसलन भरी घास से करूँ तो ठीक रहेगा। हे पतली सी बाजरे की कलगी!, हवा में झूमती हुई तुम मुझे बहुत अच्छी लग रही हो।

**विशेष**–

1. कवि ने अपनी प्रयोगधर्मिता का परिचय देते हुए पुराने उपमानों को त्यागने की सलाह दी हैं।
2. भाषा प्रवाह पूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावभिव्यक्तिमें सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. मुक्तछंद का प्रयोग है।
6. रूपक तथा अन्वय अलंकारों का प्रयोग है।

**आज हम शहरातियों को**
**पालतू मालंच पर सँवरी जूही के फूल से**
**सृष्टि के विस्तार का–ऐश्वर्य का औदार्य का–**
**कहीं सच्चा, कहीं प्यारा एक प्रतीक**
**बिछली घास है,**
**या शरद की साँझ के सूने गगन की पीठिका पर दोलती कलगी अकेली**
**बाजरे की।**

**शब्दार्थ–औदार्य** = उदारता। **मालंच** = फूलदान, गमला। **विस्तार** = फैलाव। **प्रतीक** = चिन्ह।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित कविता **'कलगी बाजरे की'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक कविता में परम्परागत उपमानों का उपयोग अब सार्थक नहीं रहा। अतः आधुनिक भाव बोध को प्रकट करने के लिए आज नए उपमानों की आवश्यकता है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि आज हम शहर के लोग उद्यानों में उगाए जुही के फूलों को देखकर अथवा अपनी खाने की मेज पर सजे फूलदान में जुही के फूल देखकर सृष्टि के विस्तार, फैलाव अथवा सौंदर्य का आनन्द नहीं उठा सकते। अर्थात् आज का आदमी प्रकृति से पूरी तरह कट गया है। आज शहरी लोगों को प्रकृति का उदार, व्यापक रूप या तो हरी चिकनी घास के रूप में दिख सकता है या फिर शरद ऋतु की संध्या को सुनसान आकाश के नीचे तेज हवा के नीचे तेज हवा के झूले पर झूलती बाजरे की कलगी से इसका आनन्द मिल सकता है।

कहने का भाव यह है कि शहरी लोग प्रकृति के लिए समय नहीं निकाल पाते। घास और उसमें उगा अनाज का लहराता हुआ पौधा उन्हें आनन्दित नहीं करते हैं।

**विशेष**

1. कवि ने अपनी प्रयोगशीलता को नए उपमान चुनने की बात कहकर स्पष्ट किया है।
2. भाषा प्रवाह पूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. मुक्तछंद का प्रयोग है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**और सचमुच, इन्हें जब-जब देखता हूँ**
**यह खुला वीरान संसृति का घना हो सिमट आता है**
**और मैं एकान्त होता हूँ समर्पित**
**शब्द जादू हैं-**
**मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है?**

**शब्दार्थ-वीरान** = सुनसान। **संसृति** = संसार।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** द्वारा रचित कविता **'कलगी बाजरे की'** से अवतरित हैं। इस कविता में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक कविता में परम्परागत उपमानों का उपयोग अब सार्थक नहीं रहा। अत: आधुनिक भाव बोध को प्रकट करने के लिए आज नए उपमानों की आवश्यकता है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि मैं सचमुच जब कभी दूर तक फैली चिकनी घास और उसमें उगे बाजरे के भुट्टे को देखता हूँ तो सृष्टि का विस्तार सिमट कर मानो इनके सौन्दर्य में समा जाता है। मैं एकान्त में प्रकृति के इस सौन्दर्य को समर्पित हो जाता हूँ। इस पर न्योछावर हो जाता हूँ। माना शब्दों में प्रकृति के सौन्दर्य को अंकित करना महत्त्वपूर्ण है, उनमें जादू होता है परन्तु क्या मौन होकर सौन्दर्य का पान करना, प्रकृति का आनन्द लेना छोटी चीज है। प्रकृति को समर्पित हो जाना भी परम आनन्द देता है।

**विशेष-**

1. कवि ने प्राकृति के सौन्दर्य का आनन्द लेने की बात की है। यह आनन्द तभी मिलता है जब व्यक्ति अपने अहम् को त्यागकर प्रकृति को समर्पित हो जाता है।
2. भाषा प्रवाह पूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. मुक्तछंद का प्रयोग है।
6. अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाशअलंकारों का प्रयोग है।

**● साँप ( कविता ) व्याख्या भाग**

**कविता का सार**-'साँप' अज्ञेय जी की एक लघु कविता है, जो मूलत: उनके काव्य संग्रह **'इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये'** में संकलित है। यह लघु कविता अपने अर्थ-विस्तार और प्रभाव में बहुत व्यापक है। वर्तमान शहरी जिन्दगी की विरूपता और विद्रूपता पर यह बहुत गहरा और मार्मिक व्यंग्य भी है।

कवि किसी साँप को सामने देखकर उससे पूछता है कि वह सदा से जंगलवासी, असभ्य माना जाता रहा है, शहर में उसे बसना आज तक नहीं आया। साँप को शहर में रहने का कभी अवसर नहीं मिला है और इसलिए उसे सभ्य भी नहीं कहीं जा सकता। कवि उससे पूछता है कि वह सच-सच बतलाए कि उसने दूसरे को डसने की कला कहाँ से सीखी है, अपने भीतर इतना जहर कहाँ से इकट्ठा किया है? कवि कहना यह चाहता है कि दूसरों को ठगना, धोखा देना, हत्या करना तो सभ्य और शहरी लोगों का काम है और साँप तो शहर और सभ्यता से कोसों दूर रहता है तो फिर उसने डसना और लगातार जहर घोलना कहाँ से सीखा।

**साँप ! तुम सभ्य तो हुए नहीं-**
**नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।**
**एक बात पूछें ( उत्तर दोगे? )**
**तब कैसे सीखा डँसना-विष कहाँ पाया?**

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ 'आधुनिक हिन्दी कविता' नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता **'साँप'** से अवतरित है। इस कविता के रचयिता **'अज्ञेय'** हैं। इस लघु कविता में कवि ने शहरी जीवन पर साँप के माध्यम से गहरा व्यंग्य किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि साँप को संबोधित करते हुए कहता है। हे साँप! तुम अपने आपको सभ्य नहीं कह सकते क्योंकि तुम्हारा निवास कभी सभ्य समाज में नहीं हुआ। तथाकथित सभ्य-सुशिक्षित लोगों ने तुम्हें पालतु बनाकर नहीं रखा। शहर में बसने का रंग-ढंग भी तुम नहीं सीख पाए अर्थात् आज भी तुम जंगली हो, जंगल में रहना ही तुम्हें भाता है। भूले भटके शहर में आ भी जाओ तो तुम्हें अच्छा नहीं लगता। तुम स्वभाव से शहरी नहीं जंगली हो। कवि साँप से कहता है कि जब तुम सभ्य और शहरी होने का दावा नहीं करते तो एक बात का उत्तर दो कि तुमने हँसना कहाँ पर सीखा और यह जहर कहाँ से प्राप्त किया है अर्थात् डँसना और जहर घोलना तो नगर के लोगों की विशेषताएँ हैं। फिर साँप को ये विशेषताएँ कहाँ मिलीं ?

**विशेष**

1. शहरी सभ्यता की विकृतियों पर, कटुता पर गहरा व्यंग्य हुआ है।
2. भाषा व्यंग्यात्मक खड़ी बोली है।
3. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
4. संवाद शैली का प्रयोग है।
5. कविता छंदमुक्त है।
6. प्रश्न अलंकार का प्रयोग है।

**● नया कवि : आत्म स्वीकार ( कविता ) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार**- **'नया कवि : आत्म स्वीकार'** अज्ञेय जी की प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में कवि ने स्वयं को नया कवि बताया है तथा कहा है कि नया कवि काव्य के मूल तत्त्वों की खोज में सक्षम नहीं है। कवि आधुनिक कवियों की छिछली संवेदना और नकल करने तथा दूसरों का लिखा चुराने की मनोवृत्ति का मजाक उड़ाते हुए स्पष्ट करता है कि वह अपने को नए कवियों का प्रतिनिधि मानते हैं। कवि स्वीकार करता है कि दूसरों के अनुभूत सत्य को अपने कथन से जोड़कर अपना कह देना उसकी आदत है। कोई यदि शहद भरा छत्ता जंगल से तोड़ लाए तो उसके शहद को निचोड़कर उसे अपना कह देना उसे उचित लगता है। किसी भी अच्छी उक्ति को थोड़ा सा बदल कर अपना कह देना, किसी की गहन संवेदना को ईर्ष्यावश नकार देना, किसी भी हुनरमंद, मेधावी और कुशल कलाकार में कमियाँ निकालकर उसे उपेक्षित करना, किसी साधारण से मजदूर पर रौब गाँठ कर उसे रास्ते में हटा देना अर्थात् छोटे साहित्यकार को अपमानित करना उसकी आदत का हिस्सा है। किसी के लगाए पौधे को पानी देकर अपना कह

देना, किसी की लगाई बेल को बल्ली का थोड़ा सा सहारा देकर अपने आंगन में छाया कर लेना उसे गलत नहीं लगता। किसी की चटुल बात को चुरा लेना उसे सहज लगता है। कवि कहता है कि इस प्रकार वह दूसरों के विचार, भाव, शब्द कौशल और कलात्मकता को चुराने के लिए कहाँ-कहाँ नहीं भटका। उसने अत्यधिक मेहनत की है। इसलिए नया कवि चाहता है कि उसे पढ़ते समय हर पंक्ति पर प्रशंसा मिले। उसके विषय में पाठक जो मर्जी धारणा बनाएँ जैसी भी मूर्ति उसकी अपने मन में बनानी हो बनाए, उसे फर्क नहीं पड़ता।

**किसी का सत्य था**
**मैंने संदर्भ में जोड़ दिया।**
**कोई मधु-कोष काट लाया था,**
**मैंने निचोड़ लिया!**

**शब्दार्थ-सत्य** = सच। मधुकोष = छत्ता।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियां **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता **'नया कविः आत्म स्वीकार'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता **'अज्ञेय'** है। इस कविता में कचि ने स्वयं को नया कवि बताया है तथा अपने आत्म स्वीकार को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि वह नया कवि है। उसे दूसरों से कुछ भी उधार लेने में संकोच नहीं है। आज का नया कवि कहता है कि उसकी रचनाओं में जो सत्य अभिव्यक्त हुआ है वह आवश्यक नहीं कि उसी का हो। सत्य किसी का भी हो, नया कवि उसे अपने तरीके से संदर्भों से जोड़कर अपनी रचना बना लेता है। उसकी स्थिति उस व्यक्ति के जैसी है जो किसी अन्य द्वारा तोड़कर लाए गए शहद के छत्ते को निचोड़ कर शहद प्राप्त करता है और उस शहद को अपना कहने से संकोच नहीं करता। आज का नया कवि निडर होकर दूसरों के भाव, विचार, शैली का अनुगमन करता है, उन्हें चुराता है।

**विशेष**

1. कवि के अनुसार नए कवि दूसरों के अनुभव-सत्य चुराकर अपने शब्दों में ढाल कर रचना करने में शर्म अनुभव नहीं करते।
2. भाषा सरल एवं प्रवाह युक्तखड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्तहै।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**किसी की उक्ति में गरिमा थी**
**मैंने उसे थोड़ा-सा सँवार दिया।**
**किसी की संवेदना में आग का-सा ताप था।**
**मैंने दूर हटते-हटते उसे धिक्कार दिया।**

**शब्दार्थ-गरिमा** = गौरव, गुरुत्व। **ताप** = गर्मी।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता **'नया कविः आत्म स्वीकार'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता **'अज्ञेय'** हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को नया कवि बताया है तथा अपने आत्म स्वीकार को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि वह नया कवि है। वह किसी अन्य कवि की गौरवपूर्ण उक्ति को थोड़ा सजाकर, सँवार कर अपना बना लेता है। किसी की भावनाओं में सच्चाई की गर्मी देखकर उसकी संवेदनाओं को आज का नया कवि अपने अहंकार से कारण दुत्कार देता है, दूर धकेल देता है। उसकी नकल संभव नहीं है।

**विशेष**-

1. कवि के अनुसार नया कवि दूसरों की उक्तियां चुराने और गहन संवेदनाओं को ठुकराने में भी संकोच ना करता। उसकी संवेदना का क्षेत्र अत्यधिक सीमित है।
2. भाषा सरल एवं प्रवाह युक्तखड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है।
6. उपमा एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का प्रयोग है।

**कोई हुनरमंद था :**
**मैंने देखा और कहा, 'यों'।**
**थका भारवाही पाया-**
**धुड़का या कोंच दिया, 'क्यों ?**

**शब्दार्थ-हुनरमंद** = कौशलयुक्त। **भारवाही** = कुली, मजदूर।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता **'नया कविः आत्म स्वीकार'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता **'अज्ञेय'** है। इस कविता में कवि ने स्वयं को नया कवि बताया है तथा अपने आत्म स्वीकार को अभिव्यक्तिप्रदान की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि वह नया कवि है। उसे जब कोई अच्छा कलाकार, जिसके काम में दक्षता हो, तो उसमें कमियाँ निकालते हुए वह उसे उपदेश देने लगता है। अपने घमंड में वह किसी दूसरे को अधि क दक्ष मानने को तैयार ही नहीं है। जहाँ कहीं कोई भार में दबा, थकाहारा मजदूर इस नए कवि को मिलता है, वह उसे दिलासा देना तो दूर सदा ही उसे घुड़कता रहता है, कोंचता रहता है, चुभती बातें कहता रहता है। अर्थात् नया कवि अंहकारी होने के साथ-साथ संवेदनारहित भी है।

**विशेष**-

1. नए कवियों की मनोवृत्ति पर गहरा व्यंग्य किया है।
2. भाषा सरल एवं प्रवाह युक्तखड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**किसी की पौध थी**
**मैंने सींची और बढ़ने पर अपना ली,**
**किसी की लगायी लता थी,**
**मैंने दो बल्ली गाड़ उसी पर पर छवा ली**
**किसी की कली थी**

**मैंने अनदेखे में बीन ली**
**किसी की बात थी**
**मैंने मुँह से छीन ली।**

**शब्दार्थ-पौध** = पौधा। **लता** = बेल। **बीन ली** = बटोर ली।

प्रसंग-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता **'नया कविः आत्म स्वीकार'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता **'अज्ञेय'** है। इस कविता में कवि ने स्वयं को नया कवि बताया है तथा अपने आत्म स्वीकार को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जब किसी ने पौध लगाई, विचारों के पौधे रोपे तो नए कवि ने उसे थोड़ा सा सींचा हैं और फिर बड़े होने पर उन पर अपना अधिकार जता दिया। किसी ने कहीं बेल रोपी तो नए कवि ने उसे सहारा देने के लिए लकड़ी गाड़ दी और बेल जैसे ही उस पर चढ़ी है तो उस पर अपनी अधिकार जता दिया है। किसी के पौधे पर कली खिली तो नए कवि ने भावों की उस कली को आँख बचा कर तोड़ दिया और उसे अपना घोषित कर दिया। किसी की बात अच्छी लगी तो आज के कवि उसे अपनी कही बात कहकर प्रचारित कर दिया। इसलिए कवि नए कवि को चालाक, धूर्त और दम्भी मानता है जो दूसरों की कमाई पर जीता है। दूसरों के विचारों एवं भावों को चुराता है।

**विशेष**-

1. नए कवियों पर कटु व्यंग्य किया गया है।
2. भाषा सरल एवं प्रवाह युक्तखड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**यों मैं कवि हूँ, आधुनिक हूँ, नया हूँ**
**काव्य तत्त्व की खोज में कहाँ नहीं गया हूँ?**
**चाहता हूँ आप मुझे**
**एक-एक शब्द सराहते हुए पढ़ें।**
**पर प्रतिमा अरे वह तो**
**जैसी आपको रूचे आप स्वयं गढ़ें।**

**शब्दार्थ-यों** = वैसे। **स्वयं** = खुद। **रुचे** = अच्छा लगे। **गढें** = बनाएं।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता **'नया कविः आत्म स्वीकार'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता **'अज्ञेय'** है। इस कविता में कवि ने स्वयं को नया कवि बताया है तथा अपने आत्म स्वीकार को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कहने को तो मैं आधुनिक और नया कवि कहलाता हूँ। मैं काव्य-तत्त्व की खोज करता हुआ दूर-दूर तक भटका हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी मेहनत, मेरी कारीगरी की दाद दें। आखिर मैंने भी देश-विदेश से चुरा कर कितना कुछ अपनी रचनाओं में दिया है। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे एक-एक शब्द की प्रशंसा करें। मुझे स्थापित करने के लिए आप मेरा कौन-सा स्वरूप पसन्द करते हैं, उसे मैं आपकी अपनी रुचि पर छोड़ता हूँ।

**विशेष-**

1. कवि ने स्वयं को नया कवि बताते हुए नए कवियों पर करारा व्यंग्य किया है।
2. भाषा सरल एवं प्रवाह युक्तखड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
5. कविता छंद मुक्त है।
6. अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश अलंकारों का प्रयोग है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न**

1. 'उड़ चल, हाटिल' कविता किस काव्य संग्रह में संकलित है?
2. 'कलगी बाजरे की' कविता किस काव्य संग्रह में संकलित हैं।
3. 'साँप' कविता किस काव्य संग्रह में संकलित है?
4. अज्ञेय जी का पूरा नाम क्या है?

## 18.4 सारांश

अज्ञेय मात्र प्रयोगधर्मी कवि न होकर भाषा के सर्जक और शब्दान्वेषक के रूप में शब्द साहचर्य की खोज करते है एवं शब्द संयोजन द्वारा अर्थवत्ता की सृष्टि करते हैं। उन्होंने अपने काव्य में छंद, अलंकार आदि का प्रयोग किया है। अतः स्पष्ट है कि की अज्ञेय की काव्य भाषा शिल्प की द्वारेट से महत्वपूर्ण है।

## 18.5 कठिन शब्दावली

**बाट** - इंतजार में

**तंज देना** - त्याग देना

**छरहरी** - पतली

**नभ** - आकाश

## 18.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1. इत्यलम्
2. हरी घास पर क्षण भर
3. इन्द्रधनुष रौंधे हुए
4. सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन अज्ञेय

## 18.7 संदर्भित पुस्तकें


1. रमेश चंद्र शाह, अज्ञेय का कवि, कर्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. कृष्णदत्त पालीवाल, अज्ञेय कवि कर्म का संकट, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।


## 18.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. अज्ञेय की भाषा शैली का विवेचन कीजिए।

प्रश्न. कलगी बाजरे की कविता का सार लिखिए।

प्रश्न. नयी कविता, आत्म स्वीकार के कथ्य एवं शिल्प पर प्रकाश डालिए।

*****

# इकाई-19
# नागार्जुन : जीवन एवं साहित्य

**संरचना**


19.1 भूमिका

19.2 उद्देश्य

19.3 नागार्जुन : जीवन एवं साहित्य

19.3.1 जीवन परिचय

19.3.2 साहित्यिक परिचय

स्वयं आकलन प्रश्न-1

19.4 भाषा शैली

स्वयं आकलन प्रश्न-2

19.5 सारांश

19.6 कठिन शब्दावली

19.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

19.8 संदर्भित पुस्तकें

19.9 सात्रिक प्रश्न


## 19.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने सच्चिदान्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की कविताओं की व्याख्या भाग का अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम नागार्जुन के जीवन और साहित्य का विस्तार से अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनके जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय तथा उनकी भाषा शैली का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

## 19.2 उद्देश्य

इकाई उन्नीस का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह होंगे कि -

1. नागार्जुन का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2. नागार्जुन का मूल नाम क्या था?
3. नागार्जुन की प्रमुख साहित्यिक कृतियां कौन-कौन सी हैं?
4. नागार्जुन की भाषा शैली किस प्रकार की थी?

## 19.3 नागार्जुन : जीवन और साहित्य

नागार्जुन हिंदी के लब्धप्रतिष्ठत उपन्यासकार हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य में मुख्यत: दो विधाओं- कविता और उपन्यास पर अपनी लेखनी चलाई है। इन दोनों में उनका उपन्यासकार का रूप अधिक महत्त्व का है। वे हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में आंचलिकता के जनक एवं समाजवादी यथार्थववाद के प्रबल समर्थक है।

आधी शताब्दी से अधिक समय से सृजनरत नागार्जुन का रचनाकार व्यक्तित्व विविधतापूर्ण और बहुआयामी है। अपनी रचना यात्रा में नागार्जुन ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मोर्चों पर जो प्रेरणाएँ अर्जित की, वे उनकी रचना कि आधार भी बनती गयी। नागार्जुन जिन स्त्रोतों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं वह न केवल रचना के लिए बल्कि उनके व्यक्तित्व निर्माण के लिए भी प्रेरक सिद्ध हुआ। इसलिए नागार्जुन के प्रेरक स्त्रोतों की भी नियोजित परंपरा है। वे किसी को भी अपना प्रेरक मानने की भूल नहीं करते न ही वे इसके लिए संकीर्ण मानदंडों को स्वीकार करते हैं। नागार्जुन के प्रेरणा

स्रोत प्राचीन और समकालीन दोनों रूपों में उपलब्ध हैं। संस्कृत, पालि, प्राकृत के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य यदि उनको प्रेरित करता है, तो समकालीन इतिहास की विविध घटनाएँ और आंदोलन उसे रचना की प्रेरणा देते है।

नागार्जुन के रचना संसार में उपन्यासों के अध्ययन से स्पष्ट है कि वे अपने युग के प्रति अत्याधिक जागरुक है। उन्होंने युग की प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्या को गहराई से अनुभव कर रचनाओं में रुपायित किया है। उन्होंने वर्ग-संघर्ष का चित्रण कर पूँजीपतियों एवं उच्च वर्ग के प्रति निम्न वर्ग के विद्रोह को जगाया है। अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण आदि के यथार्थ चित्र उनके उपन्यासों में प्रखर है। वे वर्तमान शासन व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। उन्हें राजनीतिक नेताओं से घृणा है। स्त्री समाज से उनकी गहरी सहानुभूति है। वे नारी को जीवन के हर क्षेत्र में आगे लाना चाहते हैं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक अंधविश्वासों का खंडन किया है। उन्होंने राजनीतिक, राष्ट्रीय, कृषक तथा मज़दूर आंदोलनों का विशद चित्रण किया है। उन्होंने कृषक एवं समाज के निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति एवं कारणों पर प्रकाश डाला है।

नागार्जुन रूस की समाजवादी आर्थिक विचारधारा से अत्याधिक प्रभावित है। वे देश की युवा शक्ति से पूर्णतः आश्वस्त है। उनके उपन्यासों के पात्र कर्म को ही सबसे बड़ा धर्म मानते है। वे मुंशी प्रेमचंद के पात्रों की तरह परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेकते। इसके विपरीत व क्राँतिचेता है, और परिस्थितियों से जूझने, संघर्ष करने के लिए सदैव तत्पर है।

नागार्जुन की साहित्यिक कृतियों पर डॉ. प्रकाशचन्द्र भट्ट और डॉ. ज्ञानेशदत्त हरित दोनों ने शोध-प्रबंध लिखे है। इन ग्रंथों में नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित समाज के विभिन्न पक्षों और उनकी विचारधारा का जो रुप उद्घाटित हुआ है वह व्यवस्थित एवं वैविध्यपूर्ण है तथा उन्हें एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक चिंतक प्रमाणित करता है।

**19.3 जीवन जीवन परिचय**

भारतीय साहित्यकारों ने 'स्व' की अपेक्षा 'पर' को अधिक महत्त्व प्रदान किया है। वे अपने प्रति उदासीन रहकर संसार से विमुक्त हो साहित्य सेवा में लीन रहे हैं। उसी परंपरा का अनुसरण नागार्जुन ने भी किया है। हिंदी साहित्य में 'नागार्जुन', मैथिली में 'यात्री', लेखकों, मित्रों तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं में 'नागाबाबा', संस्कृत में 'चाणक्य' जैसे सम्मान सूचक नाम से पुकारे जाने वाले इस साहित्यकार का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र है। स्वभाव से विद्रोही और परपरायंजन्य बाबा का घरेलू नाम 'ढक्कन मिसिर' था।

**( अ )**

**जन्म** नागार्जुन की जन्मतिथि के बारे में विद्वानों के अनेक मत है। डॉ. जयकांत मिश्र ने 'ए हिस्ट्री और मैथिली लिट्रेचर में उनका जन्म सन 1908 माना है।।'

'हिंदी साहित्य कोश' में उनका जन्म सन् 1910 दिया गया है।'' डॉ. प्रकाशचंद्र भट्ट ने उनका जन्म 1911, 30 जून मास की किसी तिथि (ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा) को माना है। डॉ. ज्ञानेशदत्त हरित ने भी अपने प्रकाशित शोध -प्रबंध 'नागार्जुन व्यक्तित्व और कृतित्व' में सन 1911 को ही जन्म का वर्ष माना है। प्रो. अर्जुन जानू घरात ने नागार्जुन का जन्म 19।। में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को माना है। इसी तरह नागार्जुन की जन्मतिथि का कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं होता। उनके जन्मतिथि में यदि कोई प्रमाण है तो उनकी नानी, जिनके अनुसार जेठ के महीने में किसी दिन नागार्जुन का जन्म हुआ था। नागार्जुन ने स्वयं भी सन 1911 में ही अपना जन्म स्वीकार किया है। उनका जन्म मध्यमवर्ग मैथिल ब्राह्मण परिवार में सतलखा ग्राम में हुआ।

**• बचपन :**

नागार्जुन के बचपन में ही मां का देहावसान हो गया था। पिताजी संसारिक ममत्व से विमुक्त स्वभाव के हो गये थे। कहा जाता है उनके पिता ने वैद्यनाथ धाम में एक माह रहकर अनुष्ठान किया था, जिसके फलस्वरुप नागार्जुन

का जन्म हुआ। परिणामत: इस नव शिशु को दीर्घजीवी देखने की कामना से 'वैद्यनाथ धाम' पर ही माँ बाप ने बच्चे का नाम वैद्यनाथ मिश्र रखा। प्यार में उन्हें 'ठक्कन' कहकर पुकारते थे। उनका बचपन 'महिषी' गाँव में बीता। नागार्जुन नाम का वरण उन्होंने जब किया तब वे 1936 में श्रीलंका के विद्यालंकर परिवेश में पालि और बौद्ध दर्शन के आचार्य एवं प्रशिक्षक के रुप में गए।

**• परिवार :-**

नागार्जुन के पिता का नाम गोकुल मिश्र तथा माता का नाम उमादेवी था। नागार्जुन के जन्म के पूर्व चार भाई, बहनों का शैशवकाल में ही देहांत हो चुका था। नागार्जुन के पिता गोकुल मिश्र घुम्मकड, भगेडी, लापरवाह, रुढ़ीवादी, दरिद्र संस्कार हीन, कठोर और फक्कड़ तबीयत के व्यक्ति थे। उनकी माता उमादेवी सरल हृदय, ईमानदार, परिश्रमी, एवं दृढ़ चरिद्र महिला थी। माँ के प्रति पिता का कठोर व्यवहार से नागार्जुन ने आगे चलकर पारिवारिक निस्संगता का रूप ले लिया। तेरह वर्ष की आयु के बाद नागार्जुन घर के प्रति बिलकुल उदास हो गये।

**• शिक्षा :-**

नागार्जुन की आरंभिक शिक्षा गाँव की संस्कृत पाठशाला में हुई। कम पढ़े-लिखे एवं दरिद्र होने के कारण उनके पिता उन्हें कभी निम्न जाति के लोगों के साथ हँसके बोलने से मना नहीं करते थे। इसीलिए उनका बचपन निम्न वर्ग के लोगों के साथ बिता है। बालक नागार्जुन के हृदय में इसी कारण गरीबों के प्रति करुणा उत्पन्न हो गयी। इसका प्रतिफलन यह हुआ कि उनके उपन्यासों में निम्नवर्ग और गरीब जनता की चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने बचपन में जो विपत्तियाँ झेली, भेदभाव देखा, किसानों की दुर्दशा देखी इन सबका चित्रण उपन्यासों में मिलता है।

तेरह वर्ष की आयु में उन्होंने संस्कृत की प्रथम परीक्षा पास कर ली। यह परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद वे अपने गाँव में ही रहने लगे थे। पंडित मिश्र ने बालक नागार्जुन को संस्कृत के कुछ छदों की व्यवहारिक शिक्षा दी। अपने गाँव में संस्कृत की शिक्षा समाप्त करने के बाद किशोर नागार्जुन की बाद की शिक्षा काशी और कलकत्ता में हुई। संस्कृत में उन्होंने 'साहित्याचार्य' की उपाधि प्राप्त की। युवा नागार्जुन पालि भाषा तथा बौद्ध दर्शन के अध्ययन के लिए केलानिया (कोलंबो) में ही रहे। उन्होंने कलकत्ता में संस्कृत कॉलेज में पंद्रह रुपये की छात्रवृत्ति की और छात्रावास में मुक्त आवास में अध्ययन भी किया था।

**• नौकरी :-**

नागार्जुन ने काव्य तीर्थ की उपाधि का अध्ययन पूरा किये बिना ही वे सन 1934 में सहारनपुर में सौ रुपये मासिक वेतन पर प्राकृत से हिंदी में अनुवाद किया करते थे। परंतु एक वर्ष काम करने के बाद यह पद उन्होंने छोड़ दिया। जीविकोपार्जन की भूमिका में उन्होंने पंजाब में एक पत्रिका 'दीपक' का संपादन तथा श्रीलंका में अध्यापन किया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के संपादकीय
विभाग में भी संबद्ध रहे।

**• विवाह :-**

नागार्जुन का विवाह उन्नीस वर्ष की आयु में अपराजिता देवी से हुआ। नागार्जुन अपनी पत्नी को प्यार में 'अपू' कहकर संबोधित करते थे। उनके हृदय में अपनी पत्नी के प्रति सदैव सहानुभूति के भाव रहे है लेकिन अपनी यायावरी वृत्ति के कारण उन्हें यथोचित स्नेह नहीं दे पाये है, जो कि एक सद्गृहस्थ से अपेक्षित है।

**• संतान :-**

नागार्जुन को चार पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। पुत्र शोभाकांत, सुकांत, श्रीकांत और श्यामकांत और पुत्रियां उर्मिला और मंजु है। अब तक उनके पुत्र और पुत्रियों का विवाह हो चुका है। उपेक्षा वृत्ति एवं धनाभाव के कारण उनकी संतानें उच्चशिक्षा से वंचित रह गयी है।

• **आकर्षक व्यक्तित्व :-**

नागार्जुन के बाह्य व्यक्तित्व में कुछ भी ऐसा नहीं है जो कि उन्हें असाधारण सिद्ध कर सके। उनका साधारण मझोला कद तथा वर्ण श्याम है। शरीर से वे प्राय: अस्वस्थ रहते हैं। वे मोटे खद्दर का कुर्ता तथा पाजामा पहनते हैं। उनकी रहन-सहन बहुत सीधी है। किसी भी प्रकार का दिखावा उन्हें अप्रिय है। वे इस चमक दमक के युग में भी निम्न मध्यम वर्ग का जीवन व्यतीत करते थे। उनके बाह्य पक्ष के बारे में डॉ. प्रकाशचंद्र भट्ट के शब्दों में ''दुबला-पतला शरीर, मोटे खद्दर का कुर्ता, पजामा, मझोला कद आँखों पर ऐनक, पैरों में चप्पले, चेहरे पर उत्साह और पीड़ित वर्ग के प्रति व्यथा की मिली-जुली प्रतिक्रिया के भाव यही नागार्जुन है।'' यही सत्य है। उनका खान-पान अत्यंत सादा था। वे सुस्वादु पदार्थों के प्रशंसक भी थे। वे निरामिष भोजन करते थे। उन्हें सामिष भोजन में घृणा नहीं थी। लेकिन वे दमे के रोगी थे इसलिए उन्हें अधिकतम गरम पानी का प्रयोग करना पड़ता था। वे नागरिकता के आधुनिक कुप्रभाव से अछूते थे। ग्राम्यत्व उनके जीवन का आभूषण है और सरल जीवन का सौष्ठव उनके व्यक्तित्व का प्रमुख आकर्षण।

• **यायावर बाबा**

नागार्जुन यायावरी स्वभाव वाले बाबा गाँव से निकलकर देश के कोने-कोने में निरंतर भ्रमण करते हुए जनसाधारण से एकाकार होने के क्रम में निरंतर सत्य की खोज में सलंग्र रहे। इस खोज के पीछे मानवता के कल्याण की भावना सन्निहित थी। सत्य को बार-बार जाँचने-परखने के कारण साम्यवादी सहित विभिन्न राजनीतिक संगठनों और आंदोलनों के साथ उनके जुड़ने और अलग होने की बात सामने जाती है। यायावरी प्रवृत्ति के कारण 'यात्री' नाम से प्रतीक हो गए।

• **अंतरंग व्यक्तित्व :-**

''जीवन की सादगी, सरलता, स्पष्टत्वादित और खुलापन नागार्जुन के व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष की मूलभूत विषेशताएँ है।'' साथ ही एकांत प्रेमी, स्वाभिमानी, स्वभाव से विद्रोही, आडंबर और प्रदर्शन से बेहद नफरत आदि मुलभूत विशेषताएँ है। जीवन के कठोर संघर्षों में तपकर उनका व्यक्तित्व कुंदन की भाँति निखरा है दु:ख किसी को माँजता हो या न माँजता हो, नागार्जुन के व्यक्तित्व को उसने पूरी तरह मौजकर चमकाया है।

नागार्जुन के व्यक्तित्व को निखारने में उनके व्यक्तिगत जीवन के कटु संघर्षो के अलावा उस प्रगतिशील और वैज्ञानिक विचारदर्शन का योग भी है। जिसकी प्रारंभिक दिक्षा उन्हें स्वामी सहजानंद से मिली और जिसने उनके जीवन के निर्णायक और नाजुक मोड़ पर उनकी ओस्या को नया संबल, उनके संकल्प को नई दीप्ति और उनकी जिजीविषा की नई तेजस्विता प्रदान की। सरलता सादगी और सौम्यता के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व में वज्र कठोर दृढ़ता भी है।

### 19.3.2 साहित्यिक परिचय

• **कविता-संग्रह :-**

(1) युगधारा
(2) सतरंगे पंखों वाली
(3) प्यासी पथराई आँखें
(4) तालाब की मछलियाँ
(5) तुमने कहा था
(6) खिचड़ी विप्लव देखा हमने
(7) हजार-हजार बाँहों बाली
(8) पुरानी जूतियों का कोरस
(9) रत्नगर्भ
(10) ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!

(11) आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने

(12) इस गुब्बारे की छाया में

(13) भूल जाओ पुराने सपने

(14) अपने खेत में

(15) हरिजन गाथा (7 मई 1977)

- **प्रबंध काव्य**

(1) भस्मांकुर

(2) भूमिजा

(3) निबंध

(4) हिमालय की बेटियाँ

- **उपन्यास**

(1) रतिनाथ की चाची

(2) बलचनमा

(3) नवी पौध

(4) बाबा बटेसरनाथ

(5) वरुण के बेटे

(6) दुखमोचन

(7) कुंभीपाक ('चम्पा' नाम से भी प्रकाशित)

(8) हीरक जयंती ('अभिनन्दन' नाम से भी प्रकाशित)

(9) उग्रतारा

(10) जमनिया का बाबा (इसी वर्ष 'इमरतिया' नाम से भी प्रकाशित)

(11) गरीबदास

- **संस्मरण**

(1) एक व्यक्ति: एक युग

- **कहानी संग्रह**-

(1) आसमान में चन्दा तैरे

- **आलेख संग्रह**-

(1) अन्नहीनम् क्रियाहीनम्

(2) बम्भोलेनाथ

- **बाल साहित्य**-

(1) कथा मंजरी भाग-1

(2) कथा मंजरी भाग-2

(3) मर्यादा पुरुषोत्तम राम (बाद में 'भगवान राम' के नाम से तथा अब 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के नाम से प्रकाशित)

(4) विद्यापति की कहानियाँ

• **मैथिली रचनाएँ-**

(1) चित्रा (कविता-संग्रह)

(2) पत्रहीन नग्न गाछ

(3) पका है यह कटहल ('चित्रा' एवं 'पत्रहीन नग्न गाछ' की सभी कविताओं के साथ 52 असंकलित मैथिली कविताएं

• **हिंदी पद्यानुवाद सहित**

(1) पारो (उपन्यास)

(2) नवतुरिया

• **बाङ्ला रचनाएँ**

(1) मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा (देवनागरी लिप्यंतर के साथ हिंदी पद्यानुवाद)

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. नागार्जुन का जन्म कब हुआ?
2. नागार्जुन का वास्तविक नाम क्या था?

**19.4 भाषा शैली**

भाषा-शैली-नागार्जुन जी की भाषा-शैली सरल, स्पष्ट तथा मार्मिक प्रभाव डालनेवाली है। काव्य-विषय आपके प्रतीकों के माध्यम से स्पष्ट उभरकर सामने आते हैं। आपके गीतों में जन- जीवन का संगीत है। आपकी भाषा तत्सम प्रधान शुद्ध खड़ीबोली है, जिसमें अरबी व फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। अलंकार एवं छन्द कविता में अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग है। उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि अलंकार ही देखने को मिलते हैं। प्रतीक विधान और बिम्ब-योजना भी श्रेष्ठ है। साहित्य में स्थान निस्सन्देह नागार्जुन जी का काव्य भाव-पक्ष तथा कला पक्ष की दृष्टि से हिन्दी साहित्य का अमूल्य कोष है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. नागार्जुन के प्रथम काव्य संग्रह का क्या नाम था?
2. बलचनमा किसका उपन्यास है?

**19.5 सारांश**

वैद्यनाथ मिश्र जिन्हें उनके कलम नाम नागार्जुन से बेहतर जाना जाता है हिन्दी और मैथिली के अप्रतिम लेखक व कवि थे। अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार नागार्जुन ने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली, संस्कृत एवं बांग्ला भाषा में मौलिक रचनाएँ की तथा मैथिली, संस्कृत एवं बांग्ला से अनुवाद कार्य भी किया। नागार्जुन को जनकवि के रूप में भी जाना जाता है।

**19.6 कठिन शब्दावली**

**अंतिम** - जो अंत में हो

**गंवई** - छोटा गाँव

**टँगारी** - कुल्हाड़ी

**धराड़ी** - धरा

**मंगलशक्ति**- कल्याण करने वाली शक्ति

## 19.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न–1**

1. सन् 1911 ई.
2. वैद्यनाथ मिश्र

**अभ्यास प्रश्न–2**

1. युगधारा
2. नागार्जुन का

## 19.8 संदर्भित पुस्तकें

(1) डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय, नागार्जुन के काव्य में जनवादी चेतना, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।

(2) डॉ. नीतू सिंह, नागार्जुन के काव्य में विद्रोही चेतना पिलग्रिम्स पब्लिशिंग वाराणसी।

## 19.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. नागार्जुन का जीवन परिचय लिखिए।

प्रश्न. नागार्जुन का साहित्यिक परिचय दीजिए।

प्रश्न. नागार्जुन की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

*****

# इकाई-20
# नागार्जुन : काव्यगत विशेषताएँ

**संरचना**

20.1 भूमिका
20.2 उद्देश्य
20.3 नागार्जुन : काव्यगत विशेषताएँ
स्वयं आकलन प्रश्न-1
20.4 नागार्जुन का काव्य एवं शिल्प
स्वयं आकलन प्रश्न-2
20.5 सारांश
20.6 कठिन शब्दावली
20.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
20.8 संदर्भित पुस्तकें
20.9 सात्रिक प्रश्न

## 20.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने नागार्जुन के जीवन एवं साहित्य तथा भाषा शैली का अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम नागार्जुन के काव्य एवं शिल्प का भी गहनता से अध्ययन करेंगे।

## 20.2 उद्देश्य

इकाई इक्कीस का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. नागार्जुन के काव्य की मुख्य विशेषता क्या है?
2. नागार्जुन के काव्य में राजनीति का चित्रण किस प्रकार हुआ है?
3. नागार्जुन ने किस वर्ग को आधार बनाकर साहित्य लिखा है?
4. नागार्जुन ने किस प्रकार की जनभाषा का प्रयोग किया है?

## 20.3 नागार्जुन : काव्यगत विशेषताएँ

सुप्रसिद्ध मार्क्सवादी विचारधारा से आप्लावित जन कवि श्री नागार्जुन के काव्य की अन्तर्वस्तु का दायरा अत्यन्त व्यापक और विस्तृत है, क्योंकि भारतीय जनजीवन में स्वतंत्रता से लेकर आज तक जो कुछ घटित हुआ है, वह सब इनकी कविता में चित्रित है। एक ओर उनकी कविता दलित-पीड़ित, शोषित और उपेक्षितों के प्रति गहरी आत्मीयता व सहानुभूति प्रदर्शित करती है, दूसरी ओर पूँजीपतियों के प्रति गहरा आक्रोश-रोष भी प्रकट करती है। एक ओर उन्होंने ऐसी कविताएँ लिखी हैं, जो वर्ग-वैषम्य का उद्घाटन करती हैं तो दूसरी ओर प्रकृति प्रेम के दिव्य-भव्य चित्र भी उकेरे हैं। नागार्जुन की कविताओं का फलक अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत तथा बहुआयामी है। उन्होंने पचास वर्षों तक विभिन्न विषयों पर कुशलतापूर्वक लेखनी चलाई है। श्री अरुण कमल ने उनके काव्य की विशेषताओं पर टिप्पणी करते हुए लिखा है- **'एक-एक कतरे को एक-एक कविता को जोड़ने से जो नक्शा बनता है, वह इतना विस्तृत, इतना जन संकुल है कि किसी एक बिंब या सूत्र में उनके काव्य लोक को व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह हजार-हजार बाहों वाली कविताएँ हैं, हजार दिशाओं को इंगित करती हजार वस्तुओं को अपनी मुट्ठियों में थामे।' वास्तव में नागार्जुन का काव्य संसार 'मिथिला के रुचिर भूभाग से लेकर मुलुण्ड के अति सुदूर प्रदेश तक फैली**

**हुई काव्य भूमि, बिहार के सामन्ती उत्पीड़न से लेकर अमेरीकी साम्राज्यवाद तक की शोषण-श्रृंखला, भूमिहीन मजदूरों के दुर्दम संघर्ष से लेकर जुलियन रोजनबर्ग की महान संघर्ष संघर्ष गाथा और नितांत व्यक्तिगत जीवन-प्रसंगों से प्राप्त सुख-दुख से लेकर बाकी सारे जगत् के सुख-दुख मोतिया, नेवले और मधुमती गाय तक के, यह चौहद्दी है नागार्जुन के काव्य-महादेश की।'** उन्होंने राजनीतिक कविताओं में सामन्तों, पूँजीपतियों और भ्रष्ट राजनेताओं पर कटु कटाक्ष किए हैं। उनके व्यंग्य इतने पैने हैं कि धूल चाटने के सिवाय और कोई चारा नहीं रहता। डॉ. जगन्नाथ पंडित का कहना है-**'वे हिन्दी के पहले कवि हैं जिन्होंने नेताओं के नाम लेकर प्रत्यक्ष रूप से लिखा है। राजनेताओं के प्रति व्यक्त प्रतिक्रियाओं में नागार्जुन की राजनीतिक दृष्टि स्पष्ट होती है। नेता या अन्य व्यक्ति उनके काव्य में मूर्त रूप में तथा उनके चरित्र अमूर्त रूप में आए हैं और वे चरित्र उनकी राजनीति को सूचित करते हैं। ये नेता वर्गीय चरित्रों के प्रवक्ता बनकर आए हैं। आधुनिक नेताओं के प्रति नागार्जुन के मन में श्रद्धा नहीं है, क्योंकि वे मर्यादा और राजनीति के मूल रूप से अलग हैं। वे स्वार्थ में जनता के शुभ-लाभ भूल जाते हैं। टिकों के लिए मर्यादा को तोड़ते हैं।'** उपर्युक्त आलोचनाओं के परिप्रेक्ष्य व नागार्जुन जी के काव्य के अध्ययन के आलोक में उनके काव्य वैशिष्ट्य को निम्नलिखित बिंदुओं में विवेचित किया जा सकता है।

**1. राजनीतिक चित्रण**- कविवर नागार्जुन ने राजनीति के क्षेत्र में गम्भीरता से मनन-चिन्तन किया है और अनेक विषयों पर निर्भीक व निष्पक्ष होकर अपनी मौलिक विचार धारा प्रस्तुत की है। 'स्वदेशी शासक' में उन्होंने स्वतंत्रता-प्राप्ति पर ही प्रश्नचिह्न लगाया है, क्योंकि शहीदों ने प्राणोत्सर्ग करके भारतमाता को मुक्त कराया, परन्तु उसका फल चुनींदा व्यक्तिही भोग रहे हैं-

**'व्यर्थ हुई साधना, त्याग कुछ काम न आया**
**कुछ ही लोगों ने स्वतंत्रता का फल पाया**
**इसीलिए क्या लाठी-गोली के प्रहार हमने थे झेले?**
**इसीलिए क्या डंडा-बेड़ी डलवाई हाथ-पैरों में।**

वास्तव में वे भारतीय चेतना के समर्थ संवाहक हैं और राजनीति का उन्हें गहरा ज्ञान है। उन्होंने अनेक स्थलों राजनीतिक-साहित्यिक सम्बन्धों को उजागर किया है। विष्णु प्रभाकर का कहना है- **'इसमें सदेह नहीं है कि बाबा पर राजनीति में आकंठ डूबे हैं। आन्दोलन, प्रदर्शन, जेल कुछ भी नहीं छूटा उनसे। उसी को लेकर उनका व्यक्तित्व घनघोर रूप से विवादास्पद हो उठा है।'** डॉ. जगन्नाथ पंडित का कहना है- **'आजादी के बाद के हिन्दी के सबसे बड़े राजनीतिक कवि हैं तथा उन्होंने भारतीय समाज और राजनीति की विकास मान और ह्रासमान स्थितियों को रेखांकित किया है।'** श्री अरुण कमल का कहना है- **'आज नागार्जुन हिन्दी के सबसे बड़े राजनीतिक कवि हैं।'** उनकी एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि वे राजनीतिक दृष्टि से संवेदनशील कवि हैं। वास्तव में, वे उन कवियों में से है जिन्होंने भारतीय जनता के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर संघर्षों में भाग लिया है। शायद ही ऐसा कोई दूसरा कवि हो जिसने राजनीतिक घटनाओं, चरित्रों पर इतनी बड़ी संख्या में कविताएँ लिखी हों। सच्चे अर्थों में नागार्जुन जी दीन-दलित, पीड़ित व शोषित जनता के कट्टर समर्थक व वकील हैं। जहाँ-जहाँ वे अन्याय अत्याचार देखते हैं, वहाँ-वहाँ उसका डटकर कठोर शब्दों में विरोध करते हैं।

वे कहीं नेहरू जी की विदेश नीति की आलोचना करते हैं तो कहीं गाँधीवादी अनुयायियों को कठघरे में खड़ा करते है। साम्राज्यवादी देश-ब्रिटेन के साथ विदेश नीति के निर्धारण हेतु नेहरू जी वहाँ जाने लगे तो कवि ने उसका तीव्र विरोध किया, क्योंकि वे समाजवादी देशों के साथ अपनी विदेश नीति और मैत्री को सुदृढ़ करना चाहते थे-

**'पंडित जी जाने वाले हैं रानी के दरबार में**
**अपने ही हाथों गूँथेंगे मोती उसके हार में**
**मनमाने डूबकी लगाएँगे वहाँ टेम्स की धार में**
**दिल-दिमाग को पेश करेंगे, अबकी वह उपहार में।'**

**'आओ रानी हम ढोएंगे पालकी'** में नेहरू की विदेश नीति और बुर्जुआ नीति को बेनकाब किया है। **'खूब फँसे है नन्दा जी में'** नेताओं के चारित्रिक ह्रास और अवसरवादिता तथा भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है। उन्होंने स्वार्थी व अवसरवादी तथा घन लोलुप-भ्रष्टाचारी नेताओं को **'खादी पहने डोम'** कहकर खिल्ली उड़ाई है। उन्होंने अनेक स्थलों पर पुलिस की बर्बरता व निष्ठुरता को भी चित्रित करने का स्तुत्य प्रयास किया है-

**'जिनके बूटों से कीलित है भारत माँ की छाती**
**जिनके दीपों में जलती है तरुण आँत की बात्ती**
**ताजा मुंडों से करते जो पिशाच का पूजन**
**है असह्य जिनके कानों को बच्चों का कल कूजन।'**

उन्होंने **'तीन दिन-तीन रात'** में प्रशासन की निष्ठुरता व क्रूरता का अंकन किया है। **'नवादा'** कविता में पुलिस अत्याचारों की मुँह बोलती तस्वीर प्रस्तुत हुई है।

'शासन की बन्दूक' में भी व्यवस्था की क्रूरता व निष्ठुरता का चित्रण हुआ है। उन्होंने इन्दिरा गाँधी को प्रजातन्त्र की हत्यारिन, हिटलर की नानी और लोकतन्त्र के मानचित्र को रौंदने वाली घोषित किया है, जबकि शास्त्री जी को शक्तिदूत, शांति दूत, वामन का परमावतार तथा अपनी मिट्टी की महिमा का कलाकार कहा है नेताओं के प्रति उनकी विचारधारा में अन्तर्विरोध दृष्टिगोचर होता है, क्योंकि एक स्थल पर तो वे उनकी प्रशंसा करते हैं और दूसरे स्थल पर आलोचना। 'तुम रह जाते दस साल' में नेहरू शासन को अव्यवस्था का पूँज घोषित किया है और दूसरे स्थल पर वे कहते हैं-

**'विश्व वेदना की उष्मा के तुम प्रतीक अवतार**
**तुम अदम्य, तुम मैत्री शिक्षा करुणा के आगार**
**तुम विशाल संस्कृति की प्रतिमा,**
**तुम जन-जन की स्फूर्ति'**

राज नारायण को स्वाभिमान की जीवन्त प्रतिमा घोषित करते हुए वे कहते हैं-

**'नेहरू की पुत्री का हारायण हूँ**
**जी हाँ, मैं राजनारायण हूँ।'**

देसाई जी के व्यक्तिगत जीवन पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने लिखा है-

वे बोफोर्स की दलाली पर भी टिप्पणी करने से नहीं चूकते-

**बोफोर्स की दुलाली**
**गुपचुप हजम करोगे**
**नित राजघाट जाकर**
**बापू भजन करोगे।**

**2. यथार्थपरक प्रकृति चित्रण**-कविवर नागार्जुन ने प्रकृति का भी काल्पनिक चित्रण न करके यथार्थपरक चित्रण किया है। उनके प्रकृति चित्रण में भी न कृत्रिमता है और न वायवी कल्पना, बल्कि वे स्वयं के प्रकृति चित्रण को स्वानुभूत, यथार्थ और स्वयं देखा हुआ कहते हैं। उनकी मान्यता है-

**'कहाँ गया धनपति कुबेर वह। कहाँ गई उसकी वह अलका**
**नहीं ठिकाना कालिदास के। ब्योम प्रवाही गंगाजल का**
**ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या। मेघदूत का पता कहीं पर,**
**कौन बताए वह छायामय बरस पड़ा होगा न यहीं पर,**

**जाने दो वह कवि कल्पित था। मैंने तो भीषण जाड़ों में**
**नभचुम्बी कैलास शीर्ष पर। महामेघ को झंझानिल से।**
**गरज-गरज भिड़ते देखा है। बादल को घिरते देखा है।'**

वे यथार्थ की कटु-कठोर धरती के गीत गाते हुए मिट्टी से अपना सघन सम्बन्ध दिखाते हैं। उसके मन में प्रकृति के प्रति गहरी आत्मीयता और रागात्मक जुड़ाव है। डॉ. जगन्नाथ पंडित का कहना है- **'नागार्जुन के काव्य में प्रकृति अनेक रूपों में आई है और भारत का भूगोल विविध रूपों में चित्रित हुआ है। वहीं प्रकृति चित्रण में नवीन प्रणाली ग्रहण की गई है।'** उनकी यह नवीन दृष्टि जहाँ प्रकृति की नित्य नई-नई भंगिमाओं को सामने लाती है, वहीं कवि की सूक्ष्म संवेदन और पर्यवेक्षण 'शक्ति तथा सशक्त इन्द्रियबोध से परिचय कराती है। नागार्जुन की यह विशेषता है कि चाहे पौराणिक संदर्भ हो या ऐतिहासिक, दाम्पत्य प्रेम हो या वात्सल्य-सब में उनकी दृष्टि मूलत: यथार्थपरक है। जहाँ छायावादी कविता में प्रकृति अलंकार सज्जा और रहस्यात्मकता का जटिल रूप लेकर आती है, वहाँ नागार्जुन की प्रकृति यथार्थ के सहज, सरल और निश्छल रूप के साथ आती है। नागार्जुन के प्रकृति चित्रण में युग जीवन की कोई न कोई समस्या मुखर होती है। वे प्रकृति को आनन्द की वस्तु नहीं भौतिक जीवन को समृद्ध बनाने के साधन रूप में स्वीकारते हैं। नागार्जुन का यह प्रकृति-दर्शन परम्परागत काव्य धाराओं के प्रकृति दर्शन से भिन्न है। यही नागार्जुन के प्रकृति चित्रण की विशिष्टता है।

**3. वर्ग विषमता का उद्घाटन**-कविवर नागार्जुन ने अपनी कविताओं में किसान-मजदूर की दयनीय अवस्था का चित्रांकन किया है तथा साथ ही उनके रास्ते में आने वाली बाधाओं का भी चित्रण किया है।

भूमि के उन्नत बीज तथा बैलों को पौष्टिक आहार और सिंचाई हेतु पर्याप्त जल नहीं मिल पाता, अत: वे कहते हैं-

**'बीज नहीं है, बैल नहीं है वर्षा बिन अकुलाते हैं**
**नहर रेट बढ़ गया, खेत में पानी नहीं पटाते हैं**
**नहीं भूमि में कनमा भर भी दाना उपजा पाते हैं**
**पिछला कर्ज चुका न सके, साहू की झिड़की खाते हैं।'**

उन्होंने वर्ग वैषमय का उद्घाटन करते हुए **'पैसा चहक रहा'** में रईसों की शान-शौकत तथा ऐश्वर्यमय जीवन का चित्रण किया है। 26 जनवरी और 15 अगस्त नामक कविताओं में आर्थिक विषमता का वर्णन हुआ है। अट्टालिकाओं पर रंग-बिरंगी चद्दरों-परदों का लटकना तथा। दूसरी और उसके बाहर शिशुओं को कन्धे पर बिठाये पोटली में सत्तू बाँधे मजदूरिन का चित्र वर्ग विषमता को रेखांकित करते हैं। **'प्रेत का बयान'** में शिक्षकों एवं शिक्षा विभाग की उपेक्षा तथा समय पर वेतन न मिलने के कारण शिक्षकों की दयनीय अवस्था का चित्रण है। **'लक्ष्मी'** नामक कविता में उन्होंने महल-झोंपड़ी को आमने सामने रखकर बेकारी, मजदूरों की छंटनी, ऋणग्रस्तता जैसी समस्याओं का वर्णन किया है-

**'बेकार है जनबल। हाथों पर चल रही है छंटनी की आरी**
**ओर है न छोर है। अपव्यय का जोर है।**
**कब तक चलेगा ऋण कब तक उधारी।**
**झुकाकर व्यथित माथ। खाली मन खाली हाथ।**
**पूजे तुम्हें कैसे कोटि नर-नारी।'**

'अनुदान' में सेठ-धनिकों की निर्ममता-निष्ठुरता का अंकन हुआ है। इसी प्रकार उन्होंने कहीं बेकारी, महँगाई, मुद्रास्फीति, करवृद्धि, उत्पादन की कमी, जमाखोरी, राज्यों पर ओवर ड्राफ्ट होना, विदेशी ऋण, वस्तुओं का कृत्रिम अभाव आदि अनेक विषयों पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन व विवेचन किया है। उन्होंने महंगाई को **'रावण की नानी'**,

**सूर्पनखाँ के दाँत और महाकाल के डैने'** आदि कहकर उसकी विध्वंसकारी प्रवृत्ति व मारक क्षमता को उजागर किया है। महंगाई को खुद सरकार आश्रय देती है-

**'महँगाई की सूर्पणखाँ कैसे पाल रही हो।**
**शासन का गोबर जनता के मत्थे डाल रह रही हो।'**

**4. नारी के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण**- नागार्जुन की रचनाओं में नारी के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है। समाज में वह भी शोषित-पीड़ित मानवता का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने शोषित-दलित व पीड़ित नारी की समस्याओं को उठाकर नारी को एक नई दृष्टि प्रदान की है। कवि नारी के भोग्या जैसे घृणित रूप के प्रति विद्रोह करते हैं और उसे पुरुष के समकक्ष मानकर समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने के पक्षधर है। वे उसमें नारी जीगरण की भावना उद्दीप्त करते हैं और चिरकाल से शोषित-उपेक्षित नारी को मुक्त करवाना चाहते हैं। उसने उसकी पर्दा-प्रथा, कृत्रिम संकोच को भी अनुचित ठहराया है तथा बाल-विवाह, बेमेल विवाह का विरोध किया है तथा विधवा विवाह का समर्थन किया है। वास्तव में, उनका नारी के प्रति यथार्थवादी और प्रगतिशील दृष्टिकोण है। वे नारी के सुखद, सफल दाम्पत्य जीवन, समवयस्क दम्पति की अनिवार्यता पर जोर डालते हैं तथा रति के माध्यम से अनमेल विवाह पर कटाक्ष करते हैं-

**'क्यों बूढ़े को करने लगी पसन्द ?**
**क्या अनमेल समागम है अनिवार्य ?**
**सुर समाज की बुद्धि हो गई है भ्रष्ट करते हैं कैसे-कैसे खिलवाड़**
**बस यों ही ये ब्रह्मा, विष्णु, महेश।'**

कविवर नागार्जुन को नारी की परिपूर्णता उसके मातृत्व में दृष्टिगोचर होती है। **'मातृत्व नारी का चरमोत्कर्ष है**-आदि उक्तियाँ उनकी कविताओं में अनेक स्थलों पर बिखरी पड़ी हैं। वे स्वीकारते हैं कि नारी-पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं तथा एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। आधुनिकताओं पर वे कटु कटाक्ष करते हैं, क्योंकि नारी का यह रूप परम्परागत भारतीय नारी के प्रतिकूल है। इस प्रकार उनका नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण स्वस्थ और प्रगतिशील है। वे उसे समाज में महत्त्वपूर्ण-सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए कटिबद्ध हैं। डॉ. जगन्नाथ पंडित का कहना है- **'कुत्सित सैक्स की भावनाओं की जगह एक स्वस्थ, प्रगतिशील भावना उनके काव्य में व्यक्त हुई है। सहधर्मिणी, माँ और प्रेरक 'शक्ति के रूप में चित्रित नागार्जुन की नारी सामाजिक भूमिका पर प्रतिष्ठित है। वह रोमांस के लिए नहीं है, सामाजिक दायित्वों के निर्वाह के लिए है। इस तरह नागार्जुन ने दासता से नारी की मुक्ति का जो आह्वान किया है, वह जनवादी आन्दोलन का एक अंग है। नारी जीवन की विभिन्न विवशतापूर्ण स्थितियों को काव्य-बिम्बों में बाँधकर नागार्जुन ने समाज को स्थिति-बोध कराने की पहल की है।'**

**5. प्रेम के प्रति पवित्र दृष्टिकोण**-नागार्जुन की कविताओं में प्रेम के निश्छल, सात्विक, दिव्य और संयत रूप के दर्शन होते हैं। उन्होंने प्रेम के अलौकिक, अशरीरी और पवित्र प्रेम का चित्रण किया है। वे पत्नी के समक्ष अपना दोष स्वीकारते हैं -

**'मार्जना कर दोष मेरे। बहुते कुछ अविवाहित किया है**
**बहुत कुछ अनुचित किया है। क्षमा करदे मुदित मन से**
**क्योंकि तू सर्वसहा है।'**

**'प्रत्यावर्तन'** दाम्पत्य प्रेम की रचना है तथा **'इसीलिए तू याद आए'** में कवि अपनी प्रियतमा को प्रेरक शक्ति के रूप में स्वीकारता है। **'यह तुम थी'** में कवि नारी को बुढ़ापे की प्रेरक और जीवनदायिनी शक्तिस्वीकारता है। नवीन ढंग से व्याख्या करने वाली यह कविता नारी को उदात्त धरातल, पर स्थापित करती है। उसने अपनी प्रियतमा को **'जोत की फाँक'**, **'छरहरी टहनी'** और **'भादों की तलइया'** कहा है। वास्तव में कवि का यह प्रेम परकीया न हो कर

स्वकीया है। डॉ. शिव कुमार मिश्र के अनुसार- **'उनके यहाँ प्रेम महज स्त्री-पुरुषों के राग ही को अन्तिम संस्कार नहीं रह गया है, वरन् उससे आगे वात्सल्य अंचल, देश-देश के जन, देश की धरती और मनुष्य मात्र तक सीमित है। नागार्जुन की दाम्पत्य प्रेम की ये कविताएँ रोमानी मानसिकता की कविताएँ नहीं हैं, कवि एक बृहत्तर परिवेश से पूरी आत्मीयता से जुड़ा हुआ है।'** इस प्रकार स्पष्ट है कि उनका यह दाम्पत्य प्रेम लगभग सबसे अलग हटकर है उनका यह दाम्पत्य प्रेम एकांगी नहीं है, बल्कि उसमें समर्पण भाव है। अन्यत्र प्रगतिशील कवियों में भी प्रेम का ऐसा व्यापक और विशद चित्रण दृष्टिगोचर नहीं होता। इसी प्रकार यह 'दंतुरित मुस्कान' में भी उन्होंने बालक की सुकुमार चेष्टाओं और क्रीड़ाओं का मधुर और मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। कवि ने शिशु की मर्मस्पर्शी मुस्कान के शाश्वत प्रभाव का चित्रांकन करते हुए लिखा है-

**'तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान**
**मृतक में भी डाल देगी जान।'**

इस प्रकार उनका वात्सल्य वर्णन भी अत्यन्त मार्मिक आकर्षक व गहरा बन पड़ा है।

**6. राष्ट्रीय भावना ( राष्ट्रप्रेम )**- कविवर नागार्जुन की कविताओं में राष्ट्रीय भावना का भी मार्मिक और सुन्दर चित्रण हुआ है। उनके मन-प्राणों में राष्ट्रप्रेम की धुन बहुत गहरे तक समाई हुई है। उनकी स्वीकृति है कि लेखक की पहली वफादारी अपने देश के प्रति होती है। वे स्वतंत्र भारत में लोगों को दीन-हीन और दयनीय-विकृत दशा देखकर लिखते हैं-

**'सताती तुमको न क्या अपने वतन की पीर**
**हाय! नाहक देश माता के दृगों से बह रहा है नीर।'**

सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह देश आर्थिक दृष्टि से खोखला हो गया है, क्योंकि सारा वैभव, अमूल्य निधियों परिचय की ओर बह चली हैं-

**'हो गया हाँय पूरब उजाड़ खिंच गया खून, रह गया हाड़।'**

जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया और आक्रमणकारियों ने हिमालय, नेफा और लद्दाख को अपने पैरों के नीचे रौंदा, तो कवि का राष्ट्रप्रेम उद्दीप्त हो उठा-

**'जी करता है सीखूँ मैं बन्दूक चलाना**
**जी करता है सीखूँ मैं फौलाद गलाना**
**जी करता है जन-जन में भड़काऊँ शोले।**
**जी करता है नेफा पहुँचूँ दागू गोले।'**

कवि **'हिम कुसुमों के चंचरीक'** नामक कविता में प्रतिकूल वातावरण में रहकर, शारीरिक यातनाएँ सहकर देश में कटिबद्ध सैनिकों का प्रशस्ति-गान करता है। सैनिक के समक्ष एक ओर परिवार तथा दूसरी ओर देश रक्षा है-

**'हिम के फाहे बरसाये निसिदिन आसमान**
**सरहद पर पहरा देगा ही सैनिक जवान**
**व्रत है इसका देशाभिमान**
**छोटी बच्ची की छवि आँखों में छाई है।'**

वे **'पृथ्वी ही मेरी माता है'** कहकर अपनी राष्ट्रीय भावना को वाणी प्रदान करते हैं। डॉ. जगन्नाथ पंडित नागार्जुन की राष्ट्रीय भावना का विवेचन-विश्लेषण करते हुए लिखा है- **'नागार्जुन की राष्ट्रीय भावना उनके माज बोध का ही विकसित रूप है, जिसमें उन्होंने राष्ट्र की सांस्कृतिक सम्पदा, समाज की स्वतंत्रता और सकी रक्षा के भाव को सामने रखा है। राष्ट्रप्रेम की कविताओं में कहीं राष्ट्र के प्रति विनम्रता का भाव है, कहीं भोगोलिक सीमाओं की रक्षा का और कहीं उसकी दुर्दशा पर करुणा प्रदर्शित करने का। देश के पराभवकाल में इस**

**राष्ट्रीयता की भावना पनपी थी, वह भारतेन्दु, गुप्त जी और निराला से होती हुई नागार्जुन के काव्य में मूर्त हो गई। इन कविताओं में नागार्जुन ने एक सच्चे राष्ट्रप्रेमी और देश-सेवक के रूप में अपने भावों को व्यक्तकर राष्ट्रहित से जुड़े प्रश्नों को उठाया है।'**

**7. सरल-सहज आम बोलचाल की भाषा**-नागार्जुन ने अपनी कविताओं में सरल-सहज आम बोलचाल भाषा प्रयुक्त की है, इसलिए वे **'जन कवि'** कहलाते हैं। उन्होंने सार्थक शब्दों के प्रयोग, शब्दों की सादगी तर संयम पर बल दिया है। वे भाषा की सजावट-बनावट के पक्षधर नहीं हैं, बल्कि सीधी साधी सरल-सहज भाषा अपनाने के हिमायती हैं। वास्तव में, उनकी भाषा आम आदमी से तथा उसकी धड़कनों से सीधे जुड़ती। डॉ. शिवकुमार मिश्र का कहना है- **'जन सामान्य की भाषा भी, पंडितों तया काव्य रसिकों की भाषा भी। सारगर्भित उदात्त भाषा को छोड़ दिया जाए तो सामान्यतः उन्होंने सरल और सादी भाषा की ही प्रयोग किया है।'** ने उनकी भाषा पात्रानुकूल और वर्ग स्तर के अनुकूल है। वे उदात्त और गंभीर भावों के चित्रण में तत्सम् शब्दों का प्रयोग करते हैं और सरल सहज भावाभिव्यक्ति में आम बोलचाल की भाषा प्रयुक्त करते हैं। उन्होंने आँचलिक शब्द भी प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त किए हैं। जन-प्रचलित मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी उनकी कविताओं में अत्यधिक मात्रा में आई हैं। उन्होंने जन-आकांक्षाओं को उन्हीं के मुहावरों-कहावतों और शब्दों में व्यक्त करते हुए भाषा को एक नया तेवर और जीवन्तता प्रदान की है। वे कविता में अलंकारों की चित्रकारी सजाना भी उचित नहीं समझते, हालांकि उन्होंने अलंकारों को साधन रूप में स्वीकारा है साध्य रूप में नहीं।

**8. शैली**-नागार्जुन की कविताओं में शैली की दृष्टि से भी विविधता दृष्टिगोचर होती है। उनकी कविताओं पद-शैली, आत्मकथात्मक या स्वगत शैली, उद्‌बोधनात्मक शैली, नाटकीय शैली, सूक्तयात्मक शैली, वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक, विचारात्मक, आवृत्ति और प्रश्न आदि शैलियों का प्रयोग हुआ है। उनकी आत्म- कथात्मक शैली का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

**'दमा का सनातन मरीज। रात को थोड़ा सोने वाला।**
**घुमक्कड़ी का शौकीन। मैं यानी अर्जुन नागी**
**उर्फ वैद्यनाथ मिसिर उर्फ यात्री जी। लाकिन मौज तरौना बड़की।**
**थाना बहेड़ा। जिला दरभंगा। बिहार राज्य।**
**हो सो हवास। अपनी धर्मपत्नी आदरणीय श्रीमती अपराजिता देवी के चनु लफों के  मुताबिक।**
**हम तो आज तक इन्हें समझ नहीं पाये हैं।'**

कविवर नागार्जुन उद्‌बोधन शैली द्वारा भारतीय नवयुवकों को उद्‌बोधित व जाग्रत करते हुए कहते हैं कि ज्ञान की ज्योति लेकर ही अविधा का अन्धकार मिटाया जा सकता है-

**'मत चुओ आँसू सरीखे, बर्फ जैसे गलो**
**संकटों की आग में फौलाद जैसे तुम ढलो।'**

**'पुरानी जूतियों का कोरस'** नामक कविता में नाटकीय शैली प्रयुक्त हुई है **''भस्मांकुर'** में भी नाटकीय शैली का निर्वाह हुआ है। सूक्त्यात्मक शैली भी अनेक कविताओं में प्रयुक्त हुई है। **'चन्दू मैंने सपना देखा।' 'अन्न ब्रह्म की माया'**, **'अकाल और उसके बाद'** में आवृत्ति शैली का प्रयोग हुआ है। आवृत्ति शैली में शब्दों, वाक्याँशों या वाक्यों की पुनरावृत्ति या आवृत्ति होती है यथा-

**'कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास**
**कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास**
**कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त**
**कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।'**

वर्णनात्मक शैली भी उनकी अनेक कविताओं में दृष्टिगोचर होती है, यथा-

**'दूर कहीं पर अमराई में कोयल बोली**
**परत लगी चढ़ने झींगुर की शहनाई पर**
**वृद्ध वनस्पतियों की ठूँठी शाखाओं में पोर-पोर**
**टहनी-टहनी का लगा दहकने।**
**टूसे निकल, मुकुलों के गुच्छे गदराये**
**अलसी के नीले फूलों पर नभ मुस्काया।'**

इसी प्रकार, **नेवला, चंदना, वह फिर जी उठी, विजयी के वंशधर** आदि रचनाओं में भी वर्णनात्मक शैली ही प्रयुक्त हुई है। उन्होंने मंत्र शैली में भी कविताएँ लिखी हैं। **'पहेलियाँ'** में पहेली शैली प्रयुक्त हुई है। वैसे नागार्जुन की व्यंग्य शैली अधिक प्रभावशाली है क्योंकि इसमें उन्होंने पाखण्डियों-ढोंगियों और अवसरवादी नेताओं पर कटु कटाक्ष किए हैं।

सारांश यह है कि कविवर नागार्जुन ने अपनी रचनाओं में एक ओर तो वर्ग-विषमता का उद्घाटन हुआ है तो दूसरी ओर प्रकृति-प्रेम के दिव्य-भव्य चित्र उकेरे हैं। उन्होंने भ्रष्ट राजनेताओं की स्वार्थपरता, अवसरवादिता व पूँजीपतियों-धनिकों के साथ अपावन-सात्विक गठजोड़ पर कटु कटाक्ष किए हैं तथा राजनीति के कुत्सित व घिनौने स्वरूप पर भी कटु प्रहार किए हैं। नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यन्त प्रगतिशील रहा है और चिरकाल से उत्पीड़ित व उपेक्षित नारी की समस्याओं को उठाया है। कवि के मन-प्राणों में राष्ट्रप्रेम की धुन बहुत गहरे तक समाई हुई है। आम बोलचाल व जनसाधारण की भाषा का प्रयोग ही इन्हें 'जनकवि' बनाता है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. 'प्रेत का बयान' कविता के रचयिता का नाम बताओं।
2. नागार्जुन के पिता का क्या नाम था?

## 20.4 नागार्जुन का काव्य एवं शिल्प

कविवर नागार्जुन प्रगतिवाद के प्रमुख कवि हैं। निर्धन तथा शोषित जनों के प्रति सहानुभूति रखने वाले नागार्जुन मानवता के सच्चे उपासक और कलुष मान्यताओं के विरोधी थे। उन्हें एक व्यंग्यकार, कथाकार तथा कवि के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त हुई। इनके काव्य का भाव पक्ष पूर्णतया प्रगतिवादी है। अत: उनके काव्य का शिल्प पक्ष भी प्रगतिवादी काव्य के समान सहज एवं सरल है। यद्यपि उन्होंने अपनी आरम्भिक रचनाओं में तत्सम् प्रधान संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया है लेकिन आगे चलकर वे जनभाषा का प्रयोग करते हुए दिखाई देते हैं। उनकी काव्य भाषा भावानुगामनी है। कवि ने खड़ी बोली के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, बंगला, मैथिली आदि भाषाओं के शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। नागार्जुन के काव्य-शिल्प की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

**1. जनभाषा का प्रयोग**-वस्तुत: नागार्जुन प्रगतिवादी काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। यद्यपि 'जनवन्दना', 'काली सप्तमी का चाँद', 'शरद पूर्णिमा', 'कालिदास के प्रति', 'बादल को घिरते देखा है' आदि कविताओं में उन्होंने संस्कृतनिष्ठ तत्सम् प्रधान भाषा का प्रयोग किया है, लेकिन अन्यत्र उन्होंने सहज, सरल तथा सामान्य जनभाषा का ही प्रयोग किया है। उनकी काव्य भाषा आम लोगों की भाषा है, जिसमें तद्भव, देशज तथा विदेशज शब्दों का खुल कर प्रयोग देखा जा सकता है। 'तीन दिन तीन रात' नामक कविता में कवि द्वारा जिस भाषा का प्रयोग किया गया है, वह पूर्णतया जन भाषा ही कहीं जाएगी। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

**''दस गुनी कमाई पर ताँगा व रिक्शावाले**
**मस्त थे, मग्न थे तीन दिन तीन रात**

**डूबे ये ताड़ी और दारु में माटी के हजारों चुक्कड़**
**धुत थे, नग्न ये तीन दिन तीन रात**
**बस-सर्विस बंद ची तीन दिन तीन रात''**

उनकी भाषा में चहुँ, दूब, कँटीली, सिंह, पूँछ, भैंस, राख, धरती, दीठ, नाच, कलमुँही भावी सामान्य बोलचाल के शब्दों का प्रयोग देखा जा सकता है। जनवादी कवि होने के कारण वे लोक भाषिक शब्दों का अधिक प्रयोग करते हैं। घूँघट, उट-पटाँग, अनाप-शनाप, छलिया, देशज आदि शब्द उनकी कविताओं में प्रयुक्त हुए हैं। यही नहीं अपनी भाषा को सहज, सरल तथा व्यावहारिक बनाने के लिए वे उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का भी खुल कर प्रयोग करते हैं।

**डॉ. राम विलास शर्मा** ने उनकी भाषा के बारे में उचित ही लिखा है- **''वह संस्कृत का पण्डित है लेकिन वह अपनी भाषा का जातीय रूप पहचानता है। तत्सम् शब्दावली-यानि कोमलकान्त पदावली से वह अपनी रचना को कवित्व पूर्ण नहीं बनाता।''** अन्यत्र वे कहते हैं-

**''हिन्दी भाषा-किसान और मजदूर जिस तरह की भाषा बोलते और समझते हैं उसका निखरा हुआ काव्यमय रूप नागार्जुन के यहाँ है।''** कुल मिलाकर नागार्जुन की भाषा जन-साधारण की भाषा है, लेकिन वह पण्डितों और काव्य रसिकों को भी आनंद प्रदान करती है। यदि हम संस्कृतनिष्ठ भाषा की ओर ध्यान न दें तो उन्होंने प्रायः सहज, सरल और सादी भाषा का ही प्रयोग किया है।

**( 2 ) अलंकार-योजना**-नागार्जुन हालांकि अलंकारवादी कवि नहीं हैं। फिर भी उनकी कविताओं में अनायास रूप से अनेक शब्द एवं अर्थ अलंकारों का सफल प्रयोग देखा जा सकता है। इस संदर्भ में **डॉ. जगन्नाथ पण्डित** ने लिखा भी है- **''नागार्जुन के काव्य में अनुप्रास, वीप्सा, उपमा तथा उत्प्रेक्षा के प्रयोग अधिक हैं। वीप्सा के प्रति उनमें सबसे अधिक झुकाव है। पाश्चात्य अलंकारों में उन्हें मानवीकरण तया ध्वन्यर्थ व्यंजना अधिक प्रिय है।''** लेकिन उनकी रचनाओं में अलंकारों का प्रयोग पूर्णतया स्वाभाविक रूप से हुआ है। कवि ने अपनी कविताओं पर अनावश्यक अलंकारों का भार नहीं लादा। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

(i) ● अनुप्रास-
- भारी भरकम डाल की।
- फर-फर-फर फहराने वाला तिरंगा था।

(ii) **वीप्सा**-
- छोटे-छोटे मोती जैसे।
- बलि-बलि जाऊँ अपने इस मन पर।

(iii) **उपमा**-
- शंख सरीखे सुचड़ गलों में।
- पूस मास की धूप सुहावन

(iv) **मानवीकरण**-

''सत्य को लकवा मार गया है।
तुम हिमालय के कंधों पर।''

(v) **रूपक** -

''एक-एक शब्द है दुधारू गाय
उसका दुरुपयोग करना न हाय।''

(vi) **विरोधाभास-**

''हिमदग्ध होठों के प्राण-शोषी चुम्बन
तन-मन पर लेप गए ज्वालामुखी चन्दन।''

(vii) **असंगति**

**''वोट मिलना लगता आसान
कहीं पर भोज कहीं गुनगान
कहीं पर थोक नगद नवादान।''**

(viii) **विशेषण विपर्यय-**

**''कला गुलाम हुई इनके आगे
कविता पानी भरती है
सौ-सौ की मेहनत इनकी
मुस्कानों पर मरती है।''**

इस प्रकार नागार्जुन का अलंकार भण्डार काफी बड़ा है। इससे पता चलता है कि भाषा की शक्तियों पर उनका पूर्ण अधिकार था। वे आधुनिक कवियों की अपेक्षा अधिक अलंकार प्रिय नहीं हैं, क्योंकि वे अलंकारों को भावों की सजावट का साधन मानते थे। फिर भी उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य दोनों प्रकार के अलंकारों का सफल प्रयोग किया है। लेकिन हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि अलंकारों के प्रति उनका अधिक मोह नहीं था।

**3. प्रतीक योजना**-प्रतीक के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए विश्व कोश में उसे मूर्त का अमूर्त रूप कहा गया है। बेस्टर के अनुसार, **''प्रतीक अपने संपर्क, संदर्भ और परम्परा से किसी अदृश्य वस्तु की ओर संकेत करता है।''** इस प्रकार **एनसाइक्लोपिडिया ब्रिटैनिका** के अनुसार, ''उस दृश्य बस्तु को प्रतीक कहा जाता है जो मूल वस्तु का प्रतिविधान साहचर्य विधान के अनुसार करती है।'' अज्ञेय के अनुसार, **''प्रतीक वास्तव में ज्ञान का एक उपकरण है जो सीधे-सीधे अभिधा में नहीं बंधता और आत्मसात् करने या प्रेषित करने के लिए प्रतीक काम देते हैं।''** नागार्जुन ने भी अपनी कविताओं में असंख्य प्रतीकों का प्रयोग किया है। वे प्राय: अपनी भावाभिव्यक्ति को प्रभावशाली और अप्रत्यक्ष बनाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। कवि ने सभी प्रकार के प्राकृतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक तथा नव-निर्मित प्रतीकों का खुल कर प्रयोग किया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

**तीनों बन्दर बापू के** - इसमें बन्दर गाँधी जी के अनुयायियों और कांग्रेसी नेताओं की ओर संकेत करता है। इसी प्रकार से गिद्ध हिंसक, अत्याचारी, शोषक और साम्राज्यवादी देश का प्रतीक है। पुराने कांग्रेसियों के लिए कवि ने बहुत ही सटीक और प्रभावशाली प्रतीक का प्रयोग किया है।

**''परसों था जंगल का राजा, कल था घायल बूढ़ा शेर।''**

इसी प्रकार से कवि ने अवसरवादी तथा अत्याचारी प्रशांसकों के लिए उल्लू का प्रतीक बनाया है।

**''जयन्ती अशोक के सिंहों पर बेशर्म उल्तुओं की जमात।''**

परन्तु अवसरवादी नेताओं के लिए कवि ने जिन प्रतीकों का प्रयोग किया है, वह बहुत ही प्रभावशाली एवं सटीक बन पड़ा है।

**''देखा हमने चिड़िया खाना
सुना चीखना और चिल्ताना
धवल टोपियाँ फेंक रहे थे
मगर गधों से रैंक रहे थे**

**धोती कुर्ते में ये हाथी**
**सुअर ऊँट थे जिनके साथी**
**बैलों के पीछे अनबोले**
**मचल रहे थे साँप सपोले**
**यार पास था, कार पास थी**
**बुढ़िया कंगारु उदास थी।''**

**4. बिम्ब योजना**–आधुनिक कवियों ने अपनी काव्य–रचनाओं में बिम्ब योजना की ओर विशेष ध्यान दिया है। अंग्रेजी के कवि बर्डस्वर्थ ने समस्त काव्य को मानव प्रकृति का कलात्मक बिम्ब घोषित किया है। उधर ह्यूम ने बिम्ब विधान को काव्य की आत्मा स्वीकार किया है। लेविस बिम्ब की परिभाषा देते हुए लिखते हैं– **''बिम्ब एक ऐन्द्रिय चित्र है जो कुछ अंत्रों में अलंकृत होता है, जिसके सन्दर्भ के मानवीय संवेदनाएँ निहित रहती हैं तथा जो पाठक के मन में विशिष्ट रागात्मक भाव उद्दीप्त करता है।''** डॉ. केदार शर्मा के अनुसार, **''भाषा और भाव के पश्चात् काव्य में जिस सशक्त वस्तु की उपेक्षा होती है वह ठोस वस्तु बिम्ब है। बिम्ब से कविता में भाषा के संयम अभिव्यक्ति की सशक्तता आती है। काव्य में बिम्ब का महत्त्व असंदिग्ध है।''**

कविवर नागार्जुन बिम्ब विधान की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध हैं। उनकी रचनाओं में दृश्य, श्रव्य, स्पर्श, अलंकृत आदि सभी प्रकार के बिम्ब प्रयुक्त हुए हैं, लेकिन ऐन्द्रिय वस्तु–परक तथा भावात्मक बिम्ब इनको अधिक प्रिय हैं।

नागार्जुन की कविताओं में गतिशील बिम्ब के जीवन्त उदाहरण देखे जा सकते हैं। 'खुरदरे पैरश कविता गतिशील बिम्ब का जीवन्त उदाहरण है। यह बिम्ब करुणा और सहानुभूति के भाव उत्पन्न करता है। 'फिसल रही चाँदनी' नामक कविता में गतिशील बिम्ब का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

**''पीपल के पत्रों पर फिसल रही चाँदनी**
**पिछवाड़े बोतल के टुकड़ों पर**
**नाच रही, कूद रही, उछल रही चाँदनी**
**दूर उधर, बुर्जी पर उछल रही घाँदनी।''**

इसी प्रकार से एक अन्य स्थल पर कवि ने वर्ग–वैषम्य का उद्‌घाटन करते हुए एक चाक्षुष बिम्ब की योजना की है जो कि हमारी संवेदनशीलता और करुणा को जगाता है।

**''फटी दरी पर बैठा है चिर रोगी बेटा**
**राशन के चावल में कंकड़ बीन रही पत्नी बेचारी**
**गर्भसार से अलस शिथिल है अंग–अंग**
**मुँह पर उसकी मटमैली आभा**
**छप्पर पर बैठी है बिल्ली।''**

अन्यत्र कवि ने घ्राण, श्रव्य, आस्वाद्य तथा स्पर्श बिम्बों का भी सफल प्रयोग किया है। इन बिम्बों के प्रयोग के कारण कवि की असंख्य कविताएँ महत्त्वपूर्ण बन पड़ी हैं। विशेषकर विम्बात्मकता के कारण कवि के कथ्य का प्रभाव दोगुणा हो जाता है।

**5. छंद योजना**–जहाँ तक छंद योजना का प्रश्न है, नागार्जुन ने छंदबद्ध और छंदमुक्त दोनों प्रकार की कविताएँ लिखी है। निराला के समान नागार्जुन भी छन्द मुक्ति आन्दोलन के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने परम्परागत छन्दों का अधि क प्रयोग नहीं किया। जहाँ कहीं किया भी है वहाँ वे मात्रा एवं वर्ण गणना की ओर विशेष ध्यान नहीं देते। अक्सर देखने में आया है कि वे एक ही कविता में अनेक छन्दों का प्रयोग कर देते हैं। **'बरवै'** उनका सर्वाधिक प्रिय छंद है और इसका उन्होंने सर्वाधिक प्रयोग भी किया है। डॉ. हरदयाल लिखते भी हैं– **''आधुनिक काल में इस छंद का ( बरवै**

**छंद ) सबसे अधिक प्रयोग नागार्जुन ने किया है।....... किन्तु उन्होंने इस छंद के साथ अन्त्यानुप्रास को लेकर कहीं-कहीं छूट भी ली है और उसे पदान्तर प्रवाही बना दिया है।''**

**'शासन की बन्दूक'** नामक कविता में कवि ने दोहा छन्द का प्रयोग किया है। उदाहरण द्रष्टव्य है-

**''खड़ी हो गई चांपकर कंकालों की हूक।**
**नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक ॥**
**उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक।**
**जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक॥**

दोहा, गीत, छंद-बद्ध कविता, मुक्तक तथा विभिन्न लोक धुनों पर आधारित कविताएँ काफी प्रभावशाली बन पड़ी हैं। जहाँ तक छंदबद्ध कविताओं का प्रश्न है कहीं तो वे एक कविता में एक ही छंद का प्रयोग करते हैं तो कहीं एक कविता में कई छन्दों का प्रयोग कर देते हैं। हरगीतिका, कवित्त, उल्लाला आदि छन्दों का उन्होंने खूब प्रयोग किया है। प्रगतिवादी कवियों में नागार्जुन ही एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने आँसू छन्द का प्रयोग किया है।

इसके साथ-साथ कवि ने अपनी असंख्य कविताओं की रचना मुक्तछंद में की है। नागार्जुन ने अष्टपदी, दशपदी, एकादशपदी, द्वादशपदी, चतुर्दशपदी, पंचदशपदी, षोडशपदी, सप्तदशपदी तथा अष्टदशपदी कविताएँ भी लिखी हैं। मुक्तछंद का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

**''सत्य को लकवा मार गया**
**वह लंबे काठ की तरह**
**पड़ा रहता है सारा दिन सारी रात**
**वह फटी-फटी आँखों से**
**टुकुर-टुकुर ताकता रहता है सारा दिन, सारी रात''**

**6. शैली**-शैली प्रत्येक कवि की अपनी होती है। शैली के द्वारा ही हम कवि की भाषा प्रयोग को जान सकते हैं। नागार्जुन ने अपनी कविताओं में विविध प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। वे प्रायः उद्बोधन शैली, नाटकीय शैली, आकृति शैली, प्रश्न शैली, वर्णनात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, आत्मकथात्मक और प्रतीक शैली का प्रयोग करते हैं। **'भस्मांकुर'** में कवि ने नाटकीय शैली का प्रयोग किया है तथा 'अकाल और उसके बाद', **'चंदू मैंने सपना देखा', 'अग्न ब्रह्म की माया'** में आवृत्ति शैली का सफल प्रयोग किया है। वस्तुतः आवृत्ति और व्यंग्यात्मक उनकी दो उल्लेखनीय शैलियाँ हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

**आवृत्ति शैली-**

**''चंदू मैंने सपना देखा, कल परसों ही छूट रहे हो**
**चंदू मैंने सपना देखा, खूब पतंगे लूट रहे हो।**
**चंदू मैंने सपना देखा लाए हो तुम क्या कलैंडर**
**चंदू मैंने सपना देखा, तुम हो नाहर, मैं हूँ बाहर**
**चंदू मैंने सपना देखा, अमुजा से पटना आए हो**
**चंदू मैंने सपना देखा, मेरे लिए शहद लाए हो।''**

**व्यंग्यात्मक शैली-**

**''हमें अँगूठा दिखा रहे हैं तीनों बंदर बापू के**
**कैसी हिकमत सिखा रहे हैं तीनों बंदर बापू के**
**प्रेम पगे हैं, शहद सने हैं, तीनों बंदर बापू के**
**गुरुओं के भी गुरु बने हैं तीनों बंदर बापू के**

**सौवीं बरसी मना रहे हैं तीनों बंदर बापू के**
**बापू को ही बना रहे हैं, तीनों बंदर बापू के।''**

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि नागार्जुन प्रगतिवादी कवि होने के साथ-साथ प्रयोगवादी कवि भी थे। उन्होंने अपनी कविताओं में सामान्य बोल-चाल की भाषा का प्रयोग किया है। वे यदि ग्रामीण शब्दावली का प्रयोग करते हैं तो कहीं-कहीं परिष्कृत शब्दावली का भी प्रयोग करते हैं। कभी-कभी वे नए-नए शब्द भी गढ़ लेते हैं। छन्दों की दृष्टि से उनकी कविताओं में विविधता देखी जा सकती है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. नागार्जुन संस्कृत और मैथिली में किस उपनाम से रचना करते थे?
2. भस्मांकुर कैसा काव्य है?

## 20.5 सारांश

नागार्जुन एक जनकवि थे उनके साधारण एवं सरल व्यक्तित्व की छाप उनके साहित्य में स्पष्ट तौर पर झलकती है। इनकी रचनाओं में भाषा शैली कोई दिखाता तथा बनावटीपन नहीं है। उनके साहित्य में भाषा शैली सरल स्पष्ट तथा प्रभाव डालने वाली है। काव्य में विशिष्ट प्रतीक वियान उभरकर सामने आता है। नागार्जुन के गीत काव्य में जन संगीत रमा हुआ है तथा भाषा में तत्सम प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

## 20.6 शब्दार्थ

**कंवललकड़ी** - कमल की जड़

**चंचपत्र** - चेंच का साग

**जंगला** - एक प्रकार का वृक्ष

**बकाची** - एक प्रकार की मछली

**लक्षा** - एक लाख की संख्या

## 20.7 स्वयं आकलन प्रश्न के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. नागार्जुन
2. गोकुल मिश्र

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. यात्री
2. खण्डकाव्य

## 20.8 संदर्भित पुस्तकें

1) विजय बहादुर सिंह, नागार्जुन का रचना संसार, वाणी प्रकाशन दिल्ली।

2) तारानंद वियोगी, युगों का पात्री (नागार्जुन की जीवनी), राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

## 20.9 सात्रिक प्रश्न

1) नागार्जुन की काव्यगत विशेषताएं लिखिए।

2) नागार्जुन की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

*****

# इकाई–21
# नागार्जुन : व्याख्या भाग

**संरचना**


21.1 भूमिका

21.2 उद्‌देश्य

21.3 नागार्जुन : व्याख्या भाग

- यह दंतुरित मुस्कान (कविता) : व्याख्या भाग
- प्रेत का बयान (कविता) : व्याख्या भाग

स्वयं आकलन प्रश्न

21.4 सारांश

21.5 कठिन शब्दावली

21.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

21.7 संदर्भित पुस्तकें

21.8 सात्रिक प्रश्न


## 21.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं एवं नागार्जुन के काव्य एवं शिल्प का अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम नागार्जुन की कविताओं की व्याख्या करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनकी यह दंतुरित मुस्कान तथा प्रेत का बयान कविता का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे ।

## 21.2 उद्देश्य

इकाई इक्कीस का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि–

1. नागार्जुन की प्रमुख कविताएँ कौन–कौन सी है?
2. यह दंतुरित मुस्कान कविता का मूल भाव क्या है?
3. प्रेत का बयान कविता का सार क्या है?

## 21.3 नागार्जुन : व्याख्या भाग

### ● 'यह दंतुरित मुस्कान' (कविता) : व्याख्या भाग

**कविता का सार**–'यह दंतुरित मुस्कान' नागार्जुन की एक महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है। इस कविता के माध्यम से कवि ने एक माँ के हाथों में एक छोटे बच्चे की मनोहारी दंतुरित मुस्कान को देखकर अपना वात्सल्य प्रकट किया है। कवि बच्चे की दंतुरित मुस्कान पर मुग्ध होकर कहता है कि उसकी मुस्कान मुर्दे में ना जान डालने वाली है। उसका धूल से सना शरीर ऐसा लगता है जैसे उसकी झोंपड़ी में कमल का फूल खिल उठा हो। ऐसा लगता है जैसे उसके प्राणों का स्पर्श पाकर पत्थर पिघलकर जल बना होगा। उसका स्पर्श करते ही चाहे बाँस हो या बबूल शेफालिका के फूलों की वर्षा करने लगते हैं। शिशु कवि को एकटक देखता है तो कवि को लगता है कि वह उसे पहचान नहीं रहा। कवि उसकी ओर से अपनी आँख फेरकर उसे एकटक देखने की थकान से बचाना चाहता है। शिशु की माँ शिशु का परिचय कवि से कराती है। प्रवासी कवि उसे तथा उसकी माँ को धन्यवाद कहता है। शिशु की माँ अपनी अंगुलियों से शिशु को पंचामृत चखाती है कि शिशु तिरछी निगाह से कवि को देखने लगता है। बालक की आँखें कवि की आँखों से पुन: मिल जाती हैं। कवि को शिशु की दंतुरित मुस्कान बहुत ही मोहक लगती है।

**तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान**
**मृतक में भी डाल देगी जान**
**धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात.....**
**छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात**
**परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,**
**पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण**
**छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल**
**बाँस या कि बबूल ?**

**शब्दार्थ- दंतुरित** = बच्चों के नए-नए दाँत। **मृतक** = मरा हुआ, बेजान, मुरदा। **धूलि-धूसर-गात** = धूल-मिट्टी से सना हुआ शरीर। **जलजात** = कमल का फूल। **परस** = स्पर्श, छुअन। **प्राण** जीवन। **पाषाण** = पत्थर। **शेफालिका** = एक फूल का नाम। **बबूल** = एक काँटेदार पेड़।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'यह दंतुरित मुस्कान'** से अवतरित हैं। इन पक्तियों के रचयिता हिंदी के जनवादी कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने एक छोटे बच्चे की मनोहारी मुस्कान को देखकर, मन में उमड़े अपने वात्सल्यपूर्ण भावों को प्रकट किया है।

**व्याख्या**-कवि इन पंक्तियों में माँ की गोद में अपने दाँत दिखाकर हँस रहे एक नन्हें बालक की दंतुरित मुस्कान के प्रभा का अंकन करते हुए कहता है कि उसकी यह दंतुरित मुस्कान मरते हुए व्यक्ति के शरीर में भी नए प्राणों का संचार करने के क्षमता रखती है। धूल में सना हुआ उसका यह शरीर इतना सुंदर प्रतीत होता है मानो कमल का फूल तालाब को छोड़कर उसकी झोपड़ी में खिल गया हो। कवि आगे कहता है कि उसे ऐसा प्रतीत होता है जैसे उस बालक की साँसों का स्पर्श पाकर ही कठोर पत्थर पिघल गए हों और पिघलकर उन्होंने पानी का रूप धारण कर लिया हो। कवि को यह भी लगता है कि बाँस अथवा बबूल की झाड़ियाँ भी उस छोटे बच्चे का स्पर्श पाकर शेफालिका के फूलों की वर्षा करने लगी हो। कवि के कहने का भाव यह है वि बालक की मधुर मुस्कान और कोमल स्पर्श को देखकर कठोर से कठोर मानव मन भी कोमल भावों से भर जाता है।

**विशेष-**

1. नन्हें बालक की मुस्कान एवं स्पर्श के अद्‌भुत प्रभाव का चित्रण हुआ है।
2. भाषा भावपूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, अतिश्योक्तिपूर्ण, उत्प्रेक्षा, अपह्नूति व संदेह अलंकारों का प्रयोग है।
4. पंक्तियाँ छंद मुक्त हैं।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
6. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावभिव्यक्ति में सहायक है।
7. प्रसाद व माधुर्य गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**तुम मुझे पाए नहीं पहचान?**
**देखते ही रहोगे अनिमेष !**
**थक गए हो?**
**आँख लूँ मैं फेर ?**
**क्या हुआ यदि हो सके परिचित न पहली बार ?**
**यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज**

**मैं न सकता देख**
**मैं न पाता जान**
**तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान**

**शब्दार्थ-अनिमेष** – बिना पलक झपकाए, लगातार, एकटक। **परिचित** = जाना पहचाना। **माध्यम** = साधन, दो को मिलाने वाला।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'यह दंतुरित मुस्कान'** से अवतरित हैं। इन पंक्तियों के रचयिता हिंदी के जनवादी कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने एक छोटे बच्चे की मनोहारी मुस्कान को देखकर, मन में उमड़े अपने वात्सल्यपूर्ण भावों को प्रकट किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि अपनी ओर टकटकी लगाकर देख रहे बालक को संबोधित करते हुए कहता है कि वह उसे शायद पहचान नहीं पाया है, इसलिए वह इसे लगातार देखे जा रहा है। फिर वह उससे पूछता है कि वह उसे लगातार देखते रहने के कारण कहीं थक तो नहीं गया है, क्या वह उसे थकने से बचाने के लिए अपनी आँखें उसकी आँखों के सामने से हटा लें। अर्थात् वह स्वयं उसे न देखे ताकि शिशु की आँखों को आराम मिल सके। फिर कवि बालक से कहता है कि कोई विशेष बात नहीं है कि आज हम दोनों का आपस में परिचय नहीं हो पाया है। यह भी सत्य है कि यदि आज तुम्हारी माँ हम दोनों को आपस में मिलाने का साधन न बनी होती तो आज न तो मैं तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान को देख पाता और न ही मैं तुम्हें जान पाता।

**विशेष**-

1. कवि द्वारा स्पष्ट किया गया है कि वह बालक की मनमोहिनी मुस्कान को उसकी माँ के कारण ही देख पाया है।
2. भाषा भावपूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. प्रश्न अलंकार का प्रयोग है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।
5. वात्सल्य रस का परिपाक हुआ है।
6. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
7. प्रसाद व माधुर्य गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!**
**चिर प्रवासी में इतर, मैं अन्य।**
**इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क**
**उँगलियों माँ की कराती रही हैं मधुपर्क**
**देखते तुम इधर कनखी 'मार**
**और होती जब कि आँखें चार**
**तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान**
**मुझे लगती बड़ी ही छविमान !**

**शब्दार्थ-धन्य** = सम्मान के योग्य। **चिर प्रवासी** = लंबे समय तक घर के बाहर दूर देश में रहने वाला। **इतर** = अन्य, अलग-अलग, दूसरा। **मधुपर्क** = दही, घी, शहद, जल और दूध के मिश्रण से बना पेस्ट, जिसे पंचामृत कहा जाता है, आत्मीयता से भरा वात्सल्य। **कनखी मार** = तिरछी निगाह से देखकर आँखें हटा लेना। **आँखें चार होना** = प्यार होना। **छविमान** = बहुत सुंदर।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों **'आधुनिक हिन्दी कविता'** हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'यह दंतुरित मुस्कान'** नामक कविता से अवतरित हैं। इन पंक्तियों के रचयिता हिंदी के जनवादी कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने एक छोटे बच्चे की मनोहारी मुस्कान को देखकर, मन में उमड़े अपने वात्सल्यूर्ण भावों को प्रकट किया है।

**व्याख्या**–वास्तव में कवि माँ की गोद में अपनी दंतुरित मुसकान के साथ खेल रहे छोटे बच्चे को संबोधित करते हुए कहता है कि हे नन्हें बालक! वास्तव में तुम सम्मान के योग्य हो तथा तुम्हारी माँ भी सम्मान के योग्य है। मैं तो दूर देश का निवासी हूँ। मैं तुम्हारा अपना न होकर पराया हूँ। हे प्रिय बालक! मैं तो लंबी यात्राएँ करने के बाद इस देश में मेहमान की भाँति आता हूँ। अतः तुम्हारा और मेरा कोई संपर्क अब तक नहीं रहा है। दूसरी ओर तुम्हारी माँ तो प्रतिदिन अपनी अंगुलियों के कोमल स्पर्श से मानो तुम्हें पंचामृत का पान कराती रही है। अर्थात् बालक की माँ की कोमल अंगुलियों का बालक के मुख पर स्पर्श ही उसे पंचामृत पिलाने के समान है। कवि बालक को पुनः संबोधि त कर कहता है कि जब तुम मेरी तरफ तिरछी निगाहों से देखते हो, तो मेरी आँखों से तुम्हारी आँखें मिल जाती हैं, उस वक्त मुझे तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान बहुत ही सुंदर दिखाई देती है।

**विशेष**–

1. कवि ने बालक के दर्शन कराने के लिए उसकी माँ का धन्यवाद किया है।
2. भाषा भावपूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. संवाद शैली का प्रयोग है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं भावाभिव्यक्ति में सहायक है।
4. वात्सल्य-रस का परिपाक हुआ है।
5. प्रसाद व माधुर्य गुण सर्वत्र व्याप्त है।
6. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
7. पंक्तियाँ छंद मुक्त हैं।

**• प्रेत का बयान (कविता) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार**–'प्रेत का बयान' नागार्जुन जी की एक प्रसिद्ध एवं चर्चित कविता है। इस कविता के माध्यम से कवि ने बिहार राज्य के प्राथमिक शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है। यह कविता एक प्राथमिक शिक्षक के प्रेत व यमराज के मध्य हुए संवाद पर आधारित है। एक प्राइमरी शिक्षक मृत्युपरांत जब यमलोक पहुँचता है तब यमराज उससे उसकी मृत्यु का कारण पूछते हैं, तब वह प्रेत जो मानवीय हड्डियों का ढाँचा मात्र या, अपनी मृत्यु का कारण आर्थिक दुर्दशा के कारण भूख से मरना बताता है। यमराज भी उस भूखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षक प्रेत का बयान सुनकर निरुत्तर हो जाते हैं।

**''ओ रे प्रेत''**
**कड़ककर बोले नरक के मालिक यमराज**
**''सच-सच बतला''**
**कैसे मरा तू?**
**भूख से, अकाल से?**
**बुखार कालाजार से?**
**पेचिस बदहजमी, प्लेग महामारी से?**
**कैसे मरा तू, सच-सच बतला।''**

**शब्दार्थ- प्रेत** = भूत। अकाल सूखा। **कालाजार** = कालाज्वर (एक बीमारी का नाम)।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-इन पक्तियों में कवि कहता है कि जब बिहार के एक प्राइमरी स्कूल का शिक्षक निधन के पश्चात् यमलोक पहुँचा, तब उस शिक्षक के प्रेत (आत्मा) से नरक के स्वामी यमराज कड़कर बोले, 'ओ रे प्रेत। तू सच-सच बता कि तेरी मृत्यु कैसे हुई। तू भूख से, सूखे से, बुखार से, काला ज्वर से, पेचिस से, बदहजमी से, प्लेग से अथवा महामारी किससे मरा है? तू इनमें से किस
बीमारी अथवा कारण से मरा है? यह मुझे सच-सच बता।'

**विशेष**-

1. यमराज एवं प्रेत के मध्य संवाद से पता चलता है कि किसी की मृत्यु हुई है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. संवाद शैली का प्रयोग है।
4. पुनरुक्तिप्रकाश व प्रश्न अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
5. तद्‌भव शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**खड़ खड़ खड़ खड़ हड़ हड़ हड़**
**काँपा कुछ हाड़ों का मानवीय ढाँचा**
**नचाकर लंबे चमचो-सा पंचगुरा हाथ**
**रुखी-पतली किट-किट आवाज में**

**शब्दार्थ-मानवीय** = मनुष्य संबंधी।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियों **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षक की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि यमराज की कड़कदार आवाज को सुनकर प्रेत ता मनुष्यों जैसा कुछ हड्डियों का ढाँचा खड़-खड़-खड़-खड़, हड़-हड़ हड़-हड़ करके काँपने लगा। फिर वह मानवीय ढाँचा अपने लंबे चमचों जैसे पंचगुरे हाथ को नचाने लगा और उसकी कुछ रुखी-पतली किट-किट की आवाज निकलने लगी।

**विशेष**-

1. प्रेत को मानवीय हड्डियों का ढाँचा बताकर स्पष्ट किया गया है कि बिहार राज्य में प्राथमिक शिक्षकों की आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय है। उनके वेतन से उन्हें भरपेट भोजन भी नहीं मिल पाता है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. संवाद शैली का प्रयोग है।
4. पुनरुक्तिप्रकाश व उपमा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
5. तद्‌भव शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**प्रेत ने जवाब दिया-**
**"महाराज**
**सच-सच कहूँगा**
**झूठ नहीं बोलूँगा**
**नागरिक हैं हम स्वाधीन भारत के**
**पूर्णिया जिला है, सूबा बिहार के सिवान पर**
**थाना धमदाहा, बस्ती रूपडली**
**जाति का कायस्थ**
**उमर कुछ अधिक पचपन साल की**
**पेशा से प्राइमरी स्कूल का मास्टर था।"**

**शब्दार्थ-जवाब** = उत्तर। **स्वाधीन** = स्वतंत्र। **सीवान** = सीमा। **पेशा** = व्यवसाय। **प्राइमरी** = प्राथमिक ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचविता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि यमराज के प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रेत बोला, महाराज! मैं आपसे सब कुछ सच-सच कहूँगा। कुछ भी झूठ नहीं बोलूँगा। मैं स्वतंत्र भारत का नागरिक हूँ। हम बिहार राज्य की सीमा पर स्थित पूर्णिया जिले की रूपडली बस्ती, थाना धमदाहा के निवासी हैं। मेरी जाति कायस्थ है। जब मेरी मृत्यु हुई, उस समय मेरी उम्र कुछ अधिक करीबन पचपन साल की थी तथा पेशे से मैं एक प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक था।

**विशेष-**

1. प्रेत द्वारा अपने बयान में बताया गया है कि वह एक प्राथमिक शिक्षक था।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. संवाद शैली का प्रयोग है।
4. अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का प्रयोग हुआ है।
5. तद्भव शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**तनखा थी तीस रुपैया, सो भी नहीं मिली।**
**मुश्किल से काटे हैं**
**एक नहीं, दो नहीं नौ नौ महीने**
**घरनी थी, माँ थी, बच्चे थे चार**
**आ चुके हैं, वे भी दयासागर, करुणा के अवतार!**
**आप ही की छाया में**
**मैं ही या बाकी**
**क्योंकि करमी की पत्तियाँ अभी कुछ शेष थीं**
**हमारे पुश्तैनी पोखर में**
**मनोबल शेष या सूखे शरीर में**

**शब्दार्थ-तनखा** = वेतन। **घरनी** = पत्नी। **पुश्तैनी** = खानदानी। **पोखर** = कुंड। **मनोबल** = मानसिक ताकत। **शेष** = बाकी।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि यमराज के प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रेत आगे कहने लगा कि मेरी तनख्वाह तीस रुपया मासिक थी, परंतु मुझे वह भी प्राप्त नहीं हुई। मैंने वेतन के अभाव में बड़ी मुश्किल से एक, दो नहीं नौ महीने बड़ी मुश्किल से व्यतीत किए हैं। मेरे घर में मेरे अतिरिक्त मेरी पत्नी, मेरी माँ तथा मेरे चार बच्चे भी थे। परंतु हे दया के सागर! हे करुणा के अवतार। अब तो वे सभी आप ही के पास आ चुके हैं। अर्थात् भूख के कारण उनकी मृत्यु हो चुकी है। अपने घर में अब केवल मैं ही बचा था क्योंकि हमारे खानदानी कुंड में अभी करमी की कुछ पत्तियाँ बची हुई थीं, जिन्हें खाकर मैं अभी तक जीवित था। दूसरा, मेरे सूखे शरीर में मेरी मानसिक शक्ति भी अभा तकै मुझे मरने नहीं दे रही थी।

**विशेष**-

1. प्रेत द्वारा अपने बयान में अपनी व अपने परिजनों की मृत्यु का कारण भूख बताया गया है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. संवाद शैली का प्रयोग है।
4. अनुप्रास व पुनरुक्तिप्रकाश अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
5. तद्‌भव शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**अरे वाह!**
**भभाकर हँस पड़ा नरक का राजा**
**दमक उठी झालरें कंपमान सिर के मुकुट भी**
**फर्श पर ठोककर सुनहला लौह दंड**
**अविश्वास की हँसी हँसा दंडपाणि महाकाल**
**बड़े अच्छे मास्टर हो!**
**आये हो मुझको भी पढ़ाने !**
**मैं भी बच्चा हूँ**
**वाह भाई वाह!**
**तो तुम भूख से नहीं मरे?**

**शब्दार्थ- दमकना** = चमकना। **लौहदंड** = लोहे का डंडा। **दंडपाणि**= यमराज।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-इन पक्तियों में कवि कहता है कि प्रेत अर्थात् मास्टर का बयान सुनकर नरक का राजा यमराज, अरे वाह। कहता हुआ भभाकर हँस पड़ा। उसके हँसने से उसके सिर पर रखे मुकुट की झालरें काँपने लगीं तथा कंपन के

कारण चमकने लगीं। फिर उसने अपने हाथ में पकड़ा हुआ लोहे का डंडा जोर से फर्श पर ठोका तथा फिर महाकाल यमराज जोर से अविश्वासपूर्ण हँसी हँसने लगा। उसने प्रेत अर्थात मास्टर से कहा कि तुम तो बड़े अच्छे मास्टर हो, शायद यहाँ मुझे भी पढ़ाने आए हो। क्या मैं तुम्हें कोई बच्चा दिखाई देता हूँ कि तुम जो कुछ कहोगे, मैं उसे मान लूँगा। वाह भाई वाह। तो तुम्हारे कहने का अर्थ है कि तुम भूख से नहीं मरे।

**विशेष**

1. यमराज द्वारा मास्टर के बयान पर अविश्वास जताया गया है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. संवाद शैली का प्रयोग है।
4. अनुप्रास व प्रश्न अलंकारों का है।
5. तद्भव शब्दावली की प्रधानता है।हुआ है
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**हद से ज्यादा डालकर जोर**
**होकर कठोर**
**प्रेत फिर बोला**
**अचरज की बात है**
**यकीन नहीं करते आप क्या मेरा**
**कीजिए, न कीजिए आप चाहे विश्वास**
**साक्षी है धरती, साक्षी है आकाश**
**और और और और और भले**
**नाना प्रकार की व्याधियाँ हो भारत में**

**शब्दार्थ-हद** = सीमा। **अचरज** = आश्चर्य। **यकीन** = विश्वास। **नाना प्रकार** = विभिन्न प्रकार।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि यमराज का अविश्वास देखकर प्रेत अर्थात् मास्टर हद से अधिक अपनी बात पर जोर डालकर कठोर होकर पुन: कहने लगा कि यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आप मेरा विश्वास नहीं कर रहे हैं। आप चाहे मेरी बात पर विश्वास करें या न करें परंतु मेरे कथन के साक्षी तो स्वयं धरती एवं आकाश हैं और भारत भर में भले ही विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ हों, परंतु भूख जैसी तो किसी बीमारी का हमें पता ही नहीं हैं।

**विशेष-**

1. प्रेत द्वारा स्पष्ट किया गया है कि उसे भूख नाम की किसी बीमारी का पता नहीं है, हालांकि उसकी मृत्यु भूख से ही हुई है। यही इस कविता का व्यंग्य है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास व वीप्सा अलंकारों का प्रयोग है।
4. संवाद शैली का प्रयोग है।
5. तद्भव शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**किन्तु**
**उठाकर दोनों बाँह**
**किट-किट करने लगा जोरों से प्रेत**
**किंतु भूख या क्षुधा नाम हो जिसका**
**ऐसी किसी व्याधि का पता नहीं हमको**
**सावधान महाराज,**
**नाम नहीं लीजिएगा**
**हमारे समक्ष फिर कभी भूख का॥''**

**शब्दार्थ-क्षुधा** = भूख। **व्याधि** = बीमारी। **समक्ष** = सामने।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-कवि कहता है कि यमराज के प्रश्न का जवाब देते हुए अपनी दोनों बाहें ऊपर उठाकर प्रेत जोर से किट-किट करने लगा तथा कहने लगा कि भूख अथवा क्षुधा जिस चीज का नाम है, ऐसी किसी बीमारी का मुझे ज्ञान नहीं है। हे महाराज! सावधान आप भी मेरे सामने फिर कभी भूख का नाम मत लेना।

**विशेष**-

1. प्रेत के बयान से प्रतीत होता है कि शिक्षक की मृत्यु भूख के कारण हुई।
2. भाषा सरल, सहज व भावपूर्ण खड़ी बोली है।
3. तद्‌भव शब्दावली की प्रधानता है।
4. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।
5. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।
6. संवाद शैली का प्रयोग है।

**निकल गया भाप आवेग का**
**तदनतर शांत - स्तंभित स्वर में प्रेत बोला**
**''जहाँ तक मेरा अपना संबंध है**
**सुनिए महाराज**
**तनिक भी पीर नहीं**
**सरलता निकले थे प्राण**
**सह न सकी आँत जब पेचिश का हमला....''**

**शब्दार्थ-आवेग** = जोश। **तदनंतर** = उसके पश्चात। **स्तंभित** = जड़वत। **तनिक** = थोड़ा। **पीर** = पीड़ा।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जब यमराज के प्रश्न का जवाब देते हुए प्रेत का आतंरिक भाप जोश के साथ निकलं गया तब उसके पश्चात् वह शांत हो गया तथा जड़वत स्वर में पुनः बोला- हे महाराज! सुनिए

जहाँ तक मेरा अपना संबंध है, मुझे थोड़ी भी पीड़ा नहीं है, दु:ख नहीं है। मुझे किसी प्रकार की दुविधा नहीं है। जब मेरी आँत पेचिश का आक्रमण सह नहीं पायी तब मेरे शरीर से मेरे प्राण बड़ी सरलतापूर्वक निकले थे।

**विशेष–**

1. प्रेत ने अपनी मृत्यु का कारण बताया है कि वह पेचिस के कारण मरा था।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. संवाद शैली का प्रयोग है।
4. तद्भव शब्दावली की प्रधानता है।
5. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।
6. अनुप्रास अलकार का प्रयोग हुआ है।

**सुनकर दहाड़**
**स्वाधीन भारतीय प्राइमरी स्कूल के**
**भुखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षक प्रेत की**
**रह गए निरुत्तर**
**महामहिम नर्केश्वर।**

**शब्दार्थ–दहाड़** = तीव्र आवाज। **स्वाधीन** = स्वतंत्र। **प्राइमरी स्कूल** = प्राथमिक विद्यालय। **निरुत्तर** = मौन। **नर्केश्वर** = के स्वामी, यमराज।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'प्रेत का बयान'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि **'नागार्जुन'** हैं। इस कविता में कवि ने यमराज एवं एक प्राइमरी शिक्षक के वार्तालाप के माध्यम से बिहार राज्य के प्राइमरी शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा पर प्रकाश डाला हैं

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि इस प्रकार जब यमराज ने एक स्वतंत्र भारत के प्राथमिक विद्यालय के भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए स्वाभिमानी शिक्षक प्रेत की अपनी मृत्यु के कारण को बयान करती तेज आवाज सुनी तब नरक के स्वामी महामहिम यमराज मौन हो गए। उन्हें शिक्षक को कोई जवाब देते नहीं बना। वे निरुत्तर हो गए।

**विशेष–**

1. शिक्षक प्रेत की मृत्यु की विवशता का सजीव चित्रण हुआ है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
5. तद्भव शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न**

1. बच्चन सिंह ने नागार्जुन की कविताओं को किसकी संज्ञा दी?
2. 'बादल को घिरते देखा है' कविता किस काव्य संग्रह में संकलित है?
3. 'आकाल और उसके बाद' कविता किस काव्य संग्रह में संकलित है?
4. 'प्रेत का बयान' कविता नागार्जुन के किस काव्य संग्रह में संकलित है?

## 21.4 सारांश

यह दंतरित मुसकान' नागार्जुन की एक प्रसिद्ध कविता है। माँ कैसे अपने पुत्र की दंतुरित मुस्कान देकर वात्सल्य से भर जाती है तथा वह वात्सल्य झलकता हुआ नजर आता है। नागार्जुन का मानना है कि बच्चे की कट मुसकान मृत व्यक्ति में भी जान डाल सकती है। **'प्रेत का बयान'** कविता बेहद चर्चित कविता है जिसमें बिहार राज्य के प्राथमिक शिक्षकों की आर्थिक दुर्दशा को स्पष्ट तौर विम्बों एवं प्रतीको के माध्यम से दर्शाया गया है।

## 21.5 कठिन शब्दावली

**नभनदी** - आकाश गंगा

**धनोत्तम** - चेहरा

**भंगिमा** - कुटिलता

**रंभाना** - गाय का शब्द करना

**श्वेतता** - उज्जवलता

## 21.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1. नुक्कड़ कविता
2. युगधारा
3. सतरंगे पंखों वाली
4. युगधारा

## 21.7 संदर्भित पुस्तकें


1) डॉ. नामवर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

2) डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय, नागार्जुन के काव्य में जनवादी चेतना, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।


## 21.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. 'यह दंतुरित मुसकान' कविता का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न. 'प्रेत का बयान' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

प्रश्न. प्रेत का बयान कविता के माध्यम से नागार्जुन के काव्य की विशिष्टता कीजिए।

*****

# इकाई-22
# नरेश मेहता : जीवन एवं साहित्य

**संरचना**

22.1 भूमिका
22.2 उद्देश्य
22.3 नरेश मेहता : जीवन और साहित्य
22.3.1 जीवन परिचय
22.3.2 साहित्यिक परिचय
स्वयं आकलन प्रश्न-1
22.4 भाषा शैली
स्वयं आकलन प्रश्न-2
22.5 सारांश
22.5 कठिन शब्दावली
22.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
22.7 संदर्भित पुस्तकें
22.8 सात्रिक प्रश्न

## 22.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने नागार्जुन की कविताओं की विस्तारपूर्वक व्याख्या की है। प्रस्तुत इकाई में हम नरेश मेहता के जीवन और साहित्य का अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनके जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय व उनकी भाषा शैली का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

## 22.2 उद्देश्य

इकाई बाईस का अध्ययन करने के जानने में सक्षम होंगे कि-

(1) नरेश मेहता का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(2) नरेश मेहता की पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या थी?

(3) नरेश मेहता की प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ कौन कौन से है?

(4) नरेश मेहता की भाषा शैली किस प्रकार की थी?

## 22.3 नरेश मेहता : जीवन और साहित्य

जीवन की घटनाओं के विवरण का नाम ही जीवनी है। जीवनी लेखक जहाँ पर नायक के जीवन में छिपे उसके व्यक्तित्व विकास के रहस्य व उसकी मुख्य जीवन-धारा को प्रत्यक्ष सामाजिकों के समक्ष प्रस्तुत कर देता है, वहाँ जीवनी लेखन अपनी सार्थकता को प्राप्त करती है। जीवनी लेखन मे मात्र वाह्य व्यक्तित्व का प्रकाशन नहीं किया जाता अपितु आन्तरिक व्यक्तित्व का वास्तविक निरूपण किया जाता है। इसमें लेखक निष्पक्ष रूप से एक न्यायाधीश की भाँति जीवनी-नायक के जीवन-क्रम का घटनाकार विवेचन करता है। वह चरित नायक के देवत्व व पक्ष सत्य का सन्तुलित रूप सामने रखकर पाठक वर्ग के जीवनोपयोगी तथ्यों का संकलन करता है। वह न तो उसकी अत्यधिक प्रशंसा करता है और न ही अत्यधिक निन्दा, तथापि उसके वास्तविक रूप का स्वाभाविक चित्रण करने में ही सतत् सहयोग देता है। 'जीवनी साहित्य की सृष्टि किसी व्यक्ति या महापुरूष के जीवन के लक्ष्य को केन्द्रित करके की जाती है। इस विधा में जीवनी-नायक के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध जीवन के जन्म से लेकर मृत्यु तक की तमाम मार्मिक एवं

भावना पूर्ण घटनाओं का बड़ा ही तथ्यपूर्ण एवं यथार्थपूर्ण अंकन होता है।'' जीवनी लेखक तटस्थभाव से व्यक्ति-विशेष का वर्णन करता है। वह अपनी तरफ से तथ्यों को घटाने व बढ़ाने का अधिकारी नहीं होता है। जीवनी मात्र किसी व्यक्ति-विशेष के जीवन क्रम का तथ्यात्मक सार-संग्रह ही नहीं होता बल्कि उसमें शिल्प-वैशिष्ट्य की प्रधानता का पोषण भो प्रदर्शित होता है।

अत्याधुनिक हिन्दी साहित्य की गद्य एवं पद्य विधाओं में विशिष्ट स्थान रखने वाले नरेश ने अपने साहित्य में कड़वी वास्तविकता एवं घोर अतियथार्थवाद का प्रकाशन किया है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास नाटक एवं एकांकी आदि हिन्दी साहित्य की विधाओं को बड़ी ही सफलता पूर्वक प्रणीत किया है। वे प्रयोगवादी कवियों की अति वैयक्तिकता व अहं से प्रभावित होकर सदैव एक सामाजिक व्यक्तित्व का प्रकाशन किया है। उन्होंने पौराणिक आख्यानों के माध्यम से आज की पीढ़ी में व्याप्त विकृतियों, विषमताओं एवं उनके मनोविचारों का स्वाभाविक चित्रण किया है। सामाजिक सांस्कृतिक बोध भी नरेश मेहता की जीवनी का एक प्रसंगानुकूल जीवन्त प्रतिमान है। उन्होंने जीवन जगत से सम्बद्ध अनेक पीड़ाओं एवं अवसादों को सहते हुए कभी भी निराशा का वरण नहीं किया। शैशवावस्था से ही वे ठोस विचारों वाले व्यक्ति रहे हैं। उनका बचपन बहुत ही सुखमय रहा, किन्तु कैशोर्य बहुत ही कड़वाहट भरा था। वैचारिक व्यवहारिक एवं कायिक स्वच्छता पर इन्होंने विशेष ध्यान दिया है। सदैव तर्कपूर्ण अनुकरणीय सन्दर्भो को गहन चिन्तन-मनन के उपरान्त व्यक्त करने में नरेश मेहता सतत् संलग्न रहे हैं। उनका व्यक्तित्व भी उनके कृतित्व की भाँति बहुव्यापी, सुदृढ़ एवं विशिष्ट रहा है। ''उनका सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व, बहुआयामी, तर्कनाशक्ति एवं स्वभावगत मिलन-प्रियता निश्चित रूप से किसी भी सम्पर्की व्यक्ति पर अपना अमिट प्रभाव छोडती है। वे अध्यात्म चिन्तन में गहरी रूचि रखते हैं। संगीत प्रेमी एवं ज्योतिष के प्रति आशक्त हैं। उनका व्यक्तित्व अनुकरणीय एवं वन्दनीय है।''

### 22.3.1 जीवन परिचय

**जन्म** - आधुनिक हिन्दी साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र 'कविवर नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी, 1922 ई. को मालवा के शाजापुर संज्ञक अंचल में हुआ था।'' इनके पिता एक सम्पन्न गुजराती ब्रह्मण थे, जिनका नाम प. बिहारी लाल था। पं. बिहारी लाल जी स्वभावत: परम् वैष्णव थे, जिन्होंने राममार्गी भक्ति-परम्परा में दीक्षा ग्रहण की थी। आजीवन अनवरत् साहित्य-साधना करते हुए श्री मेहता जी ''23 नवम्बर, 2001 ई. को इस असार संसार को छोड़कर स्वर्ग लोक सिधार गये।'' उनके परलोक गमन से हिन्दी साहित्य जगत में एक अपूरिति क्षति हुई है, जिसकी प्रपूर्ति आज तक सम्भव न हो सकी।

### 2.2 पारिवारिक परिवेश

आधुनिक युग के प्रख्यात कवि, विशिष्ट कथाकार, प्रसिद्ध उपन्यासकार, कुशल नाट्यकार, सफल एकांकीकार एवं गम्भीर विचारक नरेश मेहता का पारिवारिक परिवेश अत्यंत विडम्बनात्मक रहा। समूल संसृति में माँ की ममता की समता में किसी की अभिव्यक्ति सम्भव नहीं है। जीवन के प्रारम्भिक चरण में ही दुर्भाग्य की बदली इनके प्रारब्धाकाश में घुमड़-घुमड के छाने लगी। ढाई वर्ष की अवस्था में ही इनकी माता का अवसान हो गया, जिससे अल्पायु में ही इन्हें माँ की ममता से वंचित होना पड़ा। माँ की मृत्यु के समय मेहता जी एक अबोध बालक थे। इनके पिता से इनकी माता की मृत्यु का दर्द नहीं सहा गया। पत्नी-वियोग में बालक नरेश की परवाह न करते हुए पिता पं. बिहारी लाल ने सन्यास ग्रहण कर लिया। ऐसे संकटतापन्न क्षण में मेहता जी का जीवन पूर्णतया दायित्व विहीन हो गया। तदोपरान्त इनके चाचा पं. श्री शंकरलाल ने इनका पालन-पोषण किया। इस प्रकार चाचा जी के स्नेहपूर्ण संरक्षण में नरेश मेहता का बाल्यकाल धीरे-धीरे व्यतीत होने लगा।

नरेश मेहता का प्रारम्भिक जीवन सुखमय व्यतीत हुआ, किन्तु बाद में इन्हें अपार अभाव ग्रस्तता का शिकार होना पड़ा। फलत: बालक नरेश मेहता का स्वभाव अर्न्तमुखी हो गया। पारिवारिक मतभेद और असहमति ने इन्हें काफी हद तक प्रभावित किया, जिसकी वजह से इनके व्यक्तित्व में कड़वाहट भर उठी। इनका बचपन बहुत सुखमय रहा किन्तु किशोरावस्था में किचित् कड़वाहट का अनुभव करने के नाते परिवार के प्रति उदासीनता का भाव जाग्रत हुआ।

अपनी धारणा में वे चट्टान की भाँति दृढ़ हैं। आपका पारिवारिक परिवेश पाण्डित्यपूर्ण रहा, साथ ही साथ अध्ययन की अवधि में काशी निवास से वहाँ की सारश्वत-चेतना का प्रभाव भी आप पर पड़ा। आचार्य केशव प्रसाद मिश्रा, आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी तथा आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के स्नेह-सानिध्य में इन्हें पढ़ने-रहने का अवसर मिला। वहीं से इनमें वैदिक वाङ्मय के प्रति जिज्ञासा एवं अभिरूचि जगी। इनका वैष्णव-संस्कार शिवत्व के सम्पर्क में आकर औपनिषदिक चिन्तन में आकारत हुआ। जिसके प्रणयनार्थ इन्होंने अपने प्रतिकूल परिवेश में भी सतत् सार्थक प्रयास किया है। ''सन् 1957 में वे राजधानी दिल्ली को छोड़ महानगर प्रयाग चले गये। और वहीं पर रहकर अपने साहित्य सृजन में सुंलग्न रहे।

**सामाजिक परिवेश**

कविवर नरेश मेहता का व्यक्तित्व बाल्यकाल से ही क्रान्तिकारी रहा है। इन्होंने सामाजिक विद्रूपताओं के समनार्थ सतत् प्रयत्न करते हुए अपनी जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों को जिया है। सामाजिकता के परिप्रेक्ष्य में सदैव इनका शुभाकांक्षी मन समता-मूलकता की परिकल्पना कर उसी को मूर्त रूप देने का अभिलाषी रहा है। ''सन 1942 के स्वाधीनता आन्दोलन में इन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। छात्र आन्दोलन तथा कांग्रेस कम्यूनिस्ट पार्टी से 15 वर्षों से इनका सम्पर्क रहा। दिल्ली में रहकर इन्होंने ट्रेड यूनियन के एक साप्ताहिक का प्रकाशन किया। 'कृति जैसे प्रमुख मासिक पत्र के भी ये सम्पादक रहे। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों में छः वर्ष ये कार्यक्रमाधिकारी भी रहे। इतने व्यापक अनुभव के बाद सन् 1959 में इन्होंने स्वतंत्र लेखन का निर्णय लिया तथा 20 वर्ष पर्यन्त प्रयाग में स्थायी रूप से रहे। इनकी रचनायें राष्ट्र भारती, आजकल तथा नयी कविता के अंकों में प्रकाशित हुई। 'दूसरा सप्तक' में भी आपकी 10 कवितायें छपी। इनके अतिरिक्त अनेक स्वतंत्र काव्य संकलन भी हैं जिनमें विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। इनमें कार्य का यथार्थवादी सामाजिक स्वरूप मिलता है। इनके सामाजिक विचारों में व्यापकता है तथा इसके विकास की ललक भी है। ये सामाजिक परिवेश के प्रति अत्यधिक जागरूक कवि है। इन्होंने समयानुकूल नवीनता को स्वीकार किया।''

इस प्रकार सामाजिक परिवेश के प्रति समयानुकून नवीनता को स्वीकारे हुये नरेश मेहता अपने सामाजिक स्वरूप को प्रणीत किया है। निरन्तर समान हित में चिन्तर मनन व लेखन करते रहने के कारण इन्हें सामाजिकों द्वारा विशिष्ट प्यार व सम्मान प्रदान किया गया। ऐसे में मूलतः देखा जाय तो ज्ञात होता है कि नरेश मेहता का सामाजिक परिवेश पूर्णतया साहित्यिक रहा है. जिसमें रहकर उन्होंने सदैव समाज की हित की बात की है। 'नरेश मेहता के व्यक्तित्व के दो पहलू हैं एक तो हर आदमी से दोस्ती करना पर समाज से दूर रहना, दूसरे हर चीज़ को पीछे पड़कर चलते जाना।'' आज वह जिस जगह पर पढ़े जाते हैं, सहृदय सामाजिक उनकी इसी गुणात्मकता से उनके विशिष्ट सामाजिक व्यक्तित्व का बोध करता है।

**शिक्षा-दीक्षा**

आधुनिक युग के बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न विशिष्ट साहित्यकार कविवर नरेश मेहता का विद्यार्थी जीवन भी बड़ी तत्परता पूर्वक व्यतीत हुआ था। ''नरसिंग मठ से हाईस्कूल उत्तीर्ण करने के बाद इन्होंने माधों कालेज, उज्जैन से इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की।'' शिक्षार्जन के दौरान मेहता जी को गणित बहुत कम आती थी। इसलिए गणित के प्रति उनके मन में सदैव एक उदासीनता बनी रही। उसी दौरान भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन चल रहा था, जिसमें मेहता जी ने एक सक्रिय छात्रनेता की भूमिका अदा किया। सन् 1942 के आन्दोल में मेहता जी को जेल तक की यात्रा करनी पड़ी। फलतः औपचारिक अध्ययन-कार्य बाधित हो गया। ''इसके उपरान्त इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से बी.ए. एवं एम.ए. की उपाधि प्राप्त की।'' निज अध्ययनकाल में ही मेहता जी ने देहरादून से केन्द्रीय प्रशिक्षण सस्थान द्वारा 'सेकेण्ड लेफ्टीनेण्ट' का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी दौरान इनका एक उपन्यास प्रकाशित हुआ। जिसका नाम था 'ट्रेन्विज के पीछे।' उग्र विचार धारा से परिपूर्ण होने के कारण तत्कालीन अधिकारियों द्वारा यह उपन्यास जब्त कर लिया गया। फिर भी वे उससे तनिक भी हतोत्साहित नहीं हुए अपितु उन्हें एक प्रगतिपरकतापूर्ण विशिष्ट ऊर्जा

ही प्राप्त हुई। इन्हीं सामाजिक विरोधों से मेहता जी को सामाजिक विडम्बनाओं के ज्ञानार्जन की प्रबल प्रेरणा भी मिलती रही। अच्छे गुरू की प्राप्ति परम् सौभाग्य से हुआ करती है। श्री मेहता जी बड़भागी थे कि उन्हें आचार्य केशव प्रसाद मिश्र आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी और 'आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जैसे दीक्षा गुरू मिले, जिनके स्नेह-सानिध्य में रहकर नरेश मेहता जी को कुछ विशिष्ट सत्य तथ्य सीखने समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

**लेखकीय प्रेरणा के स्रोत**

कविवर नरेश मेहता प्रयोजनवादी काव्यधारा के सर्वोत्कृष्ट रचनाकार रह रहे हैं। 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', संपादित द्वितीय 'तार सप्तक में इनकी दस रचनाएँ प्रकाशित हुई। ये एक कुशल चिन्तक, आधुनिक युग-बोध के प्रचारक, नवीन चेतना के संचारक तथा नई कविता के सर्वाग्रणी कवि रहे हैं। इनकी ख्याति मात्र एक कवि के रूप में ही नहीं, अपितु सफल गद्यकार के रूप में भी है। इन्होंने अपनी उर्वर कल्पना-शक्ति एवं प्रखर प्रतिभा के द्वारा हिन्दी साहित्य की अन्यान्य विधाओं को समृद्धतर बनाने का उत्कृष्ट प्रयास किया है। इन समस्त रचनात्मक उपलब्धियों की लेखकीय प्रेरणा का स्रोत आधुनिक सामाजिक व पारिवारिक विसंगतियाँ रही हैं। यद्यपि नरेश मेहता व्यक्तिवादी विचारधारा के पोषक नहीं थे फिर भी उन्हें भीड़ भी बहुत प्रिय नहीं लगती थी। अर्थात वे अपनी व्यक्तिगत अस्मिता का विसर्जन नहीं करना चाहते थे। इसके विरोधी प्रवृत्ति के प्रपोषक यान्त्रिक सामाजिकता को मेहता जी सदैव नष्ट करना चाहते थे। अपनी इसी आकांक्षा के प्रपूर्णार्थ मेहता जी सतत् संलग्न रहे, जिस दौरान उन्हें अनेक सामाजिक आघातों-प्रत्याघातों को सहन करना पड़ा। ऐसी विरोधी विषम विडम्बनाओं में जूझते समय नरेश मेहता को साहित्य-सृजन के परिप्रेक्ष्य में एक विशिष्ट प्रेरणा की प्राप्ति हुई। बाल्यकाल से ही माँ की ममता और पितों के स्नेह से वंचित, अभाव ग्रस्त जीवन व्यतीत करने वाले नरेश मेहता के जीवन की कठिनाइयों व अनुभूतिगत पीड़ाएँ ही श्री मेहता जी को अनवरत् साहित्य-साधना में संलग्न रहने की प्रेरणा देते रहे।

नरेश मेहता की महत्त्वकांक्षा सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम' की रही है। वे हमेशा विश्वमानवतावाद की प्रतिष्ठापना करना चाहते थे, किन्तु जब उन्हें उनकी इच्छा पूर्ण हों मूर्तिमान होते नहीं प्रतीत होती थी. तो उनका भावुक हृदय आन्दोलित हो उठता था, जिससे उन्हें साहित्यिक रचना- हेतु अपरिमित प्रेरणा की प्राप्ति होती रही। इनके चाचा और दीदी शान्ति दोनों ही लेखक थे। सरस्वती', 'माधुरी, चाँद आदि तत्कालीन पत्रों में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थी। लेकिन बीस वर्ष की अल्पायु में शान्ति की असामयिक मृत्यु से उनकी काव्य सम्भावनाएँ अप्रस्तुत ही रह गयी। यही सम्भावनायें आगे चलकर कवि नरेश में उजागर हो उठी।''

''पिता की वीतरागत्व, चाचा का संरक्षण, माता की अकाल मृत्यु, पैतृक वैष्णव भाव की मनोभूमि पर नरेश के व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है। प्रारम्भ से सुविधाओं के स्थान पर अभाव मिले। अभावों के फलस्वरूप कवि का व्यक्तित्व अन्तर्मुखी बना। किशोर जीवन के अनुभवों ने कवि के जीवन में कड़वाहट भी और उनका सम्वेदनशील मन भीड़ में भी अकेला महसूस करने लगा। कवि की यौवनावस्था पर प्रकृति का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा, जब वह नरसिंग मठ में थे। इस प्रकृति-प्रभाव ने 'उत्सवा' में आकर प्रकृति के महाकाव्य का रूप लिया।'' इन्हीं जीवनागत अनुभूतियों की कड़वाहट व मृदुता के सहजन्यपूर्ण सयोग से कविवर नरेश मेहता को साहित्य सृजन हेतु अपार प्रेरणा की प्राप्ति हुई।

**22.3.2 साहित्यिक परिचय**

नरेश जी का रचना संसार विपुल एव व्यापक है। इसमें पद्य और गद्य दोनों शामिल है। यद्यपि दोनों के लिए नरेशजी ने भरपूर योगदान दिया है, फिर भी उनका कवि उनके अन्य रूपों से अधिक चर्चित रहा है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनका उपन्यासकार अल्पचर्चित है। अपने उपन्यासों में वे यथार्थ के सन्निकट पहुँचे हैं जो उनकी हस्ती का सही परिचय कराते हैं। हमारा अध्ययन नरेशजी के काव्य तक सीमित है। अत: उनकी काव्य कृतियों का क्रमानुसार सम्यक् किन्तु संक्षिप्त विवेचन आगे प्रस्तुत किया जाए।

| फुटकल काव्य | प्रकाशन काल |
| --- | --- |
| 1. दूसरा सप्तक | १९५१ |
| 2. बनपाखी सुनो | १९५७ |
| 3. बोलने दो चीड़ को | १९६१ |
| 4. मेरा समर्पित एकांत | १९६३ |
| 5. उत्सव | १९७९ |
| 6. तुम मेरा मौन हो | १९२८ |
| 7. अरण्य | १९८५ |
| 8. आखिर समुद्र से तात्पर्य | १९८८ |
| 9. पिछले दिनों नंगे पैरो | १९८९ |
| 10. देखना एक दिन | १९९० |
| **आख्यान काव्य** | **प्रकाशन काल** |
| 1. संशय की एक रात | १९६२ |
| 2. महाप्रस्थान | १९७५ |
| 3. प्रवाद पर्व | १९७७ |
| 4. शबरी | १९७८ |
| 5. प्रार्थना पुरुष | १९८६ |

**दूसरा सप्तक ( १९५१ )**

सप्तक परंपरा तथा नयी कविता के श्रेष्ठ कवियों में श्री नरेश मेहता अपनी विशिष्टताओं के कारण अडिग एवं श्रेष्ठ स्थान के अधिकारी हैं। यद्यपि उनका कवि दस वर्ष की आयु में ही उसकी सूचना दे चुका था फिर भी धीरे धीरे उनके शैक्षणिक काल में विकसित होते होते सन् १९५९ ई में अज्ञेय द्वारा संपादित नयी कविता का आद्य संकलन दूसरा सप्तक के माध्यम से हिन्दी काव्य क्षेत्र में प्रस्फुटित हुआ था। तद्पश्चात् कवि ने अपना एक अहम् स्थान हिन्दी काव्य साहित्य में बनाया। लेकिन उनको सुनने और मानने के लिए युगीन और परवर्ती आलोचक तथा साहित्यकार तैयार नहीं थे। इस सबन्ध में 'दूसरा सप्तक' की भूमिका में नरेशजी कहते हैं – **''यह सब कहने का मैं अधिकारी नहीं माना जा सकता; और साथ ही मुझे आप लोगों की दंभी, क्रोधपूर्ण उपेक्षा भरी तथा सहानुभूति की नानावर्णी आँखें दीख रही हैं। उनमें से कुछ चाहेंगी कि मेरी वाणी किस प्रकार दबा दी जाय।''** बहुत कोशिशों के बावजूद भी वह वाणी दबी नहीं।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न–1**

1. नरेश मेहता कौन से सप्तक में रखते हैं?
2. नरेश मेहता का जन्म कब हुआ?

**भाषा-शैली**–नरेश मेहता ने अपने साहित्य में आधुनिक खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया है। इनकी भाषा अत्यधिक सरल, सहज तथा रोचक है। भाषा में प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है। यथा प्रसंग इनकी भाषा में अभिधा शब्द शक्ति की प्रधानता है। शब्दों के चयन, उपमान, प्रतीक व बिंबों के प्रयोग के प्रति ये अत्यधिक सजग रहते हैं। प्रयोगवादी एवं नए कवि होने के नाते इनकी भाषा में अनेक नए उपमानों, प्रतीकों तथा बिंबों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। मृत्तिका कविता से एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

**''जब तुम**
**मुझे हाथों से स्पर्श करते हो**
**तथा चाक पर चढ़ाकर घुमाने लगते हो**
**तब मैं-**
**कुंभ और कलश बनकर**
**जल लाती तुम्हारी अंतरंग प्रिया हो जाती हूँ।''**

इनकी भाषा में एन्द्रिक, अभिव्यंजनापरक, अनुभूतिपरक तथा अलंकृत बिंबों का सार्थक प्रयोग हुआ है। अलकारों की दृष्टि से भी इनकी भाषा काफी सशक्त है। इन्होंने अपनी भाषा में अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा व मानवीकरण आदि अलंकारों का मुक्त हस्त प्रयोग किया है। इनकी अधिकांश कविताएँ छंद-मुक्त हैं। इन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के लिए अपने कथ्य के अनुरूप वर्णनात्मक, चित्रात्मक, भावात्मक, प्रतीकात्मक, आत्मकथात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया है। आत्मकथात्मक शैली का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

**''मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ-**
**जब तुम**
**मुझे पैरों से रौंदते हो**
**तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो**
**तब मैं-**
**धन-धान्य अवतार मातृरूपा हो जाती हूं।''**

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. 'वन पाखी सुनो' काव्य संग्रह किसका है?
2. 'संशय की एक रात' कैसा काव्य है?

### 22.5 सारांश

नरेश मेहता हिन्दी के यशस्वी एवं शीर्षस्थ लेखकों में से है जो भारतीय की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं। साहित्यकार नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नई व्यंजना के साथ-साथ नया आयाम भी दिया है। नरेश महता जी ने इन्दौर में प्रकाशित चौथा संसार हिन्दी दैनिक का भी संपादन किया।

### 22.6 कठिन शब्दावली

**शंकन** - भय
**हंकारी** - घमंडी
**सँधव** - सिंध देश का घोड़ा
**चंचल** - नटखट
**टकासी** - दो पैसे का सूद

### 22.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. दूसरा सप्तक
2. 15 फरवरी, 1922 ई.

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. नरेश मेहता
2. आख्यान काव्य

## 22.8 संदर्भित पुस्तकें

1) प्रभाकर श्रोत्रिय, भारतीय साहित्य के निर्माता - नरेश मेहता, साहित्य अकादमी, दिल्ली।

2) कमल किशोर गोमनका, नरेश मेहता को याद करते हुए, समकालीन प्रकाशन, दिल्ली।

## 22.9 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. नरेश मेहता के जीवनवृत पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

प्रश्न. नरेश मेहता का साहित्यिक परिचय दीजिए।

प्रश्न. नरेश मेहता की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

*****

# इकाई–23
# नरेश मेहता : काव्यगत विशेषताएँ

**संरचना**

23.1 भूमिका
23.2 उद्देश्य
23.3 नरेश मेहता : काव्यगत विशेषताएँ
स्वयं आकलन प्रश्न–1
23.4 नरेश मेहता का प्रकृति चित्रण
स्वयं आकलन प्रश्न–2
23.5 नरेश मेहता का अभिव्यंजना शिल्प
स्वयं आकलन प्रश्न–3
22.6 सारांश
23.7 कठिन शब्दावली
23.8 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
23.9. संदर्भित पुस्तकें
23.10 सात्रिक प्रश्न

## 23.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने नरेश मेहता के जीवन और साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम नरेश मेहता की काव्यगत विशेषताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनके प्रकृति चित्रण तथा अभिव्यंजना शिल्प का भी अध्ययन करेंगे।

## 23.2 उद्देश्य

इकाई तेईस का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि –

1. नरेश मेहता के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं ?
2. नरेश मेहता के काव्य में प्रकृति का चित्रण किस प्रकार हुआ है ?
3. नरेश मेहता का अभिव्यंजना शिल्प किस प्रकार का है ?
4. नरेश मेहता किस प्रकार भारतीय संस्कृति के उद्‌बोधक रहे हैं ?

## 23.3 – नरेश मेहता : काव्यगत विशेषताएँ

नरेश मेहता जी का काव्य विविधोन्मुखी है। उनके काव्य में जहाँ एक और प्रयोगवाद एवं नई–कविता की विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, वहीं दूसरी तरफ उनकी कविताओं में कविता की परंपरागत प्रवृत्तियाँ भी पाई जाती हैं। कविता की परंपरागत प्रवृत्ति उपदेश के दर्शन उनके द्वारा रचित 'मृत्तिका' कविता के इस उदाहरण में देखे जा सकते हैं–

**''यह सबसे बड़ा देवत्व है कि–**
**तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो**
**और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।''**

नए कवि के रूप में इनकी रचनाओं में दो बातें उभर कर सामने आती हैं-**मानव मूल्य और अस्तित्व की खोज तथा आधुनिक संकट से उत्पन्न आशंका और भय की अभिव्यक्ति।** मानव के भविष्य के प्रति उनका विश्वास उनकी हर रचना में विद्यमान है।

'समय का जल' कविता में वे कहते हैं-

**''आओ इस झील को अमर कर दें**
**छूकर नहीं**
**किनारे बैठकर भी नहीं**
**एक संग झाँक इस दर्पण में**
**अपने को दे दें हम,**
**इस जल को-जो समय है।''**

**इनके काव्य की प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-**

**( 1 ) आधुनिक बोध**-इनकी रचनाओं में सर्वत्र आधुनिकता का स्वर बोलता है। समकालीन कविता रचनाकारों में ये अपने प्रबंध काव्यों के कारण भी अत्यधिक चर्चा में रहे हैं। इन्होंने अपने प्रबंध काव्यों, जो पुराणों पर आधारित हैं, में अपने बौद्धिक प्रभाव की छाप छोड़ी है। इन्होंने अपने प्रबंध काव्य 'संशय की एक रात' में राम-रावण युद्ध का वर्णन करते हुए राम को धीरोदात्त एवं मर्यादा पुरुषोत्तम वाले रूप से हटाकर एक संशयग्रस्त मनुष्य के रूप में चित्रित किया है। इन्होंने अपने प्रबंध काव्य प्रवाहपर्व में सीता वनवास की घटना तथा 'महाप्रस्थान' में पांडवों के हिमालय में गलने की कथा को लिया है। इन कथाओं को उन्होंने आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ही लिखा है।

**( 2 ) भारतीय संस्कृति के उद्घोषक**-नरेश मेहता को भारतीय संस्कृति से विशेष लगाव है। चाहे उन पर साम्यवादी विचारधारा का प्रभाव रहा हो लेकिन उन्होंने भारतीय संस्कृति को ही श्रेष्ठ माना है। क्योंकि यह अहिंसा पर आधारित है। उन्होंने लिखा है ''मुझे लगता है कि भारतीयता, शेष मानवता से इसी अर्थ मे भिन्न है कि हमारी विकास यात्रा हिंसा से अहिंसा की ओर जा रही है जबकि शेष मानवता की यात्रा हिंसा से घोर हिंसा की ओर।'' इसी कारण उन्होंने 'संशय की एक रात' में राम के मुँह से कहलवाया है-

**मैं सत्य चाहता हूँ**
**युद्ध से नहीं**
**खड्ग से भी नहीं**
**मानव का मानव से सत्य चाहता हूँ**

भारतीय संस्कृति सदा शांति की उपासक, रही है। यह तलवार के बल पर प्राप्त की गई विजय को सच्ची विजय नहीं मानती क्योंकि युद्ध की स्थिति में दोनों पक्षों के हृदय में सदा ही युद्ध चलता रहता है। नरेश मेहता भी इसे स्वीकार करते हैं-

**''युद्ध क्या ऐसे ही होते समाप्त**
**जब शस्त्रों से ये**
**शेष कर दिए जाते हैं**
**युद्ध स्थल में**
**तब अंतस्थल में युद्ध**
**अशेष हो**
**जीवन भर चलते रहते हैं।''**

**( 3 ) सामाजिक चित्रण**–कोई भी साहित्यकार समाज से कट कर साहित्य सृजन नहीं कर सकता क्योंकि साहित्य और समाज सदा आपस में जुड़े–से रहते है। नरेश मेहता ने भी समाज को छोटे–बड़े विषयों पर अपनी लेखनी चलाकर व्यक्तिगत स्वतंत्रता, युद्ध शांति, सामाजिक शोषण, तीर्थ–पर्व आदि को प्रस्तुत किया है। वर्तमान युग की विसंगतियों को प्रकट करते हुए उन्होंने लिखा है–

**'लोमड़ियों की तरह चालाक**
**आकाश**
**जूठे प्यासे-सा**
**एक शहर**
**फटे विज्ञापन-सी**
**एक शाम !'**

नरेश मेहता ने वर्तमान को बोझिल, खंडित और निस्सार जीवन मूल्यों से भरा हुआ माना है। कवि नहीं चाहता कि किसी भी अवस्था में समाज की पीड़ा को शासक के द्वारा बढ़ाया जाए। शासन का अर्थ समाज का नाश करना नहीं है–

**यदि मानवीय प्रश्नों का उत्तर मात्र**
**युद्ध है, खड्ग है तो-**
**लो समर्पित है**
**तुम्हें मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए।**

**( 4 ) प्रकृति चित्रण**–हम जानते हैं कि संसार का कोई भी कवि प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण किए बिना नहीं रह सकता। नरेश मेहता ने भी अपने द्वारा रचित काव्य में प्रकृति को बहुत अधिक महत्त्व दिया है। 'बनपाखी सुनो', 'अरण्या', 'बोलने दो चीड़ को' आदि काव्य ग्रंथों में प्रकृति के विभिन्न रूप सुंदर ढंग से दर्शाए गए हैं–

**हिमालय के आंगन में**
**समीप में लगा बरसने स्वर्ण**
**पिघलते हिमवानों के बीच**
**खिलखिला उठा दूब का वर्ण।**

नरेश मेहता जी ने प्रकृति का अति सुंदर ढंग से मानवीकरण किया है। उन्होंने 'महाप्रस्थान' में हिमालय के सजीव चित्रों की पृष्ठभूमि में कथानक का विकास किया है–

**कैसा है यह मुहुर्त !**
**आकाश के पूर्व शिखरों पर खड़ा**
**प्रत्यूष-**
**दक्षिणवर्त शंख फूँक रहा है।**

**( 5 ) मानवतावाद**–नरेश मेहता ने मानवतावाद को महत्त्व देते हुए प्रत्येक मानव को उच्चता प्रदान करने का प्रयत्न 'किया है। उनकी दृष्टि में कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है। सभी मानव एक समान हैं। उनकी दृष्टि किसी राज्य या देश तक सीमित नहीं है। वे सारे संसार को एक कुटुम्ब के समान मानते हैं। उनके काव्य में व्यक्तिगत सुखों का कोई महत्त्व नहीं है बल्कि वे तो सारे जगत् को सुखी देखना चाहते हैं, जिससे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव स्पष्ट रूप से झलकता है। वे राजा को भी प्रजा के लिए बड़ा नहीं मानते क्योंकि यदि राजा स्वयं को अधिपति मान कर अधिकार जमाना आरंभ कर दे तो वह प्रजा का सच्चा पालक नहीं हो सकता–

**अधिपति होने का अर्थ**
**राजा तो है**
**पर राष्ट्र नहीं।**
**जिस दिन ऐसा मान लिया जाएगा**
**इतिहास की वह सब से गलत परम्परा होगी।**

'प्रवाद पर्व' में राम स्वयं उस धोबी का पक्ष लेते हैं जिसने सीता के चरित्र पर उँगली उठाई थी जबकि लक्ष्मण आदि उसे दंडित करना चाहते थे।

**'वह अनधिकार चेष्टा है**
**केवल इसलिए कि**
**उसने सीता के चरित्र पर तर्जनी उठाई है।**
**यदि वह ऐसा ही दोष**
**किसी अनाम नारी पर लगाता हो?**
**राज्य की यह आतुरता, कर्मठता**
**केवल सीता या हमारे लिए ही क्यों?'**

**(6) प्रेम-भाव की महत्ता**-नरेश मेहता के लिए प्रेम का भाव अति कोमल और स्वाभाविक है क्योंकि वे जानते हैं कि कविता का केन्द्र बिन्दु ही प्रेम होता है। हालांकि उन्होंने प्रेम-काव्य बहुत अधिक नहीं लिखा लेकिन उनकी कविताओं में प्रेमानुभूति निश्चित रूप से विद्यमान है। संख्या में ऐसी कविताओं के कम होने पर भी व प्रभावशाली हैं-

**तुम यहाँ बैठी हुई थी अभी उस दिन।**
**सेब-सी बन लाल**
**चिकने चीड़-सी वह बाँह अपनी टेक पृथ्वी पर यहाँ।**
**इस पेड़ जड़ पर बैठ,**
**मेरी राह में, इस धूप में।**
**बह गया वह नीर,**
**जिस को पर्दो से तुम ने छुआ था।**

**(7) भाषा-शैली**-नरेश मेहता ने अपने साहित्य में आधुनिक खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया है। इनकी भाषा अत्यधिक सरल, सहज तथा रोचक है। भाषा में प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है। यथा प्रसंग इनकी भाषा में अभिध ा शब्द शक्ति की प्रधानता है। शब्दों के चयन, उपमान, प्रतीक व बिंबों के प्रयोग के प्रति ये अत्यधिक सजग रहते हैं। प्रयोगवादी एवं नए कवि होने के नाते इनकी भाषा में अनेक नए उपमानों, प्रतीकों तथा बिंबों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। मृत्तिका कविता से एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

**''जब तुम**
**मुझे हाथों से स्पर्श करते हो**
**तथा चाक पर चढ़ाकर घुमाने लगते हो**
**तब मैं-**
**कुंभ और कलश बनकर**
**जल लाती तुम्हारी अंतरंग प्रिया हो जाती हूँ।''**

इनकी भाषा में एन्द्रिक, अभिव्यंजनापरक, अनुभूतिपरक तथा अलंकृत बिंबों का सार्थक प्रयोग हुआ है। अलंकारों की दृष्टि से भी इनकी भाषा काफी सशक्त है। इन्होंने अपनी भाषा में अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा व मानवीकरण आदि अलंकारों का मुक्त हस्त प्रयोग किया है। इनकी अधिकांश कविताएँ छंद-मुक्त हैं। इन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के लिए अपने कथ्य के अनुरूप वर्णनात्मक, चित्रात्मक, भावात्मक, प्रतीकात्मक, आत्मकथात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया है। आत्मकथात्मक शैली का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

**''मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ-**
**मुझे पैरों से रौंदते हो**
**तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो**
**धन-धान्य अवतार मातृरूपा हो जाती हूँ।''**

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. 'महास्थान' काव्य संग्रह का प्रकाशन कब हुआ?
2. दूसरा तारसप्तक का प्रकाशन कब हुआ?

### 23.4 नरेश मेहता का प्रकृति चित्रण

मनुष्य प्रकृति में जन्म लेता है और उसी में विलीन हो जाता है। इसलिए प्रकृति उसके पास की वस्तु है और प्रत्येक कवि के काव्य में उसका सुन्दर चित्रण हुआ हैं। कवि नरेश मेहता भी इससे अछूते नहीं है। उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति का मनोरम चित्रण किया है। उनकी दृष्टि में प्रकृति प्रतिस्पर्धा की वस्तु नहीं है, अपितु वह सौन्दर्ययुक्त और कल्याणमय है। प्रकृति किसी भी प्राणी के साथ भेदभाव नहीं करती। वह सभी को उसके साथ रहने के लिए समान अवसर प्रदान करती है। हम कल्पना का सकते हैं कि प्रकृति की गतिविधियों यदि एक दिन रूक जाएँ तो सृष्टि का क्या होगा। एक दिन यदि धूप न निकले तो रात नहीं होगी। कवि 'उत्सवा' में कहता है-

**''इस कोमल गांधार धूप को**
**कभी अपने अंगों पर धारा है?**
**प्रतिदिन पीताम्बरा यह**
**वैष्णवी**
**किसके अनुग्रह-सी**
**आकाश में देव वस्त्रों सी**
**अकलंक बनी रहती है।''**

प्रकृति को कवि ने सांस्कृतिक अनुभूति का अविभाज्य अंग माना है। इसलिए प्रकृति उनके काव्य का केन्द्र बिन्दु रही है तथा उन्होंने पूरे वेग के साथ इसका चित्रण किया है। कवि फूल को भी एक मन्त्र के रूप में देखता है और कहता है-

**''धरती को कहीं से छुओ**
**एक ऋचा की प्रतीति होती है।**
**देवदारूओं की देह-यष्टि**
**क्या उपनिषदीय नहीं लगती**
**तुम्हें नहीं लगता कि**
**इन भोजपत्रों में**
**एक वैदिकता है?''**

नरेश मेहता जी का मानना है कि काव्यात्मकता तो अपने 'स्व' के गुरुत्वाकर्षण की उल्लंघना है। इस 'स्व' में जो संकीर्णताएँ हैं, जो विकार हैं, जो आसुरी प्रवृत्तियाँ हैं उनसे मुक्ति पाने का जो निरन्तर यज्ञ अन्तस में चलता है, उसमें हमें यह प्रकृति दृष्टि किस सीमा तक सहायता देती है, इसका गहरा साक्षात्कार 'उत्सवा' की कविताएँ कराती हैं। प्रकृति में कहीं भी प्रतिद्वन्द्विता की भावना नहीं है। प्रकृति में हर संभव समरसता है। इसमें क्रिया, कारण और फल विद्यमान रहता है।

कवि ने समस्त प्रकृति को एक कटुम्ब के रूप में चित्रित किया है। इसे देखकर कवि में नवीन संकल्प उदित होते हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में कवि ने वायु की गन्ध को प्रकट करने का प्रयत्न किया है। इसे भले ही साधारण पाठक अनुभव न कर सके, लेकिन सहृदय पाठक इस गंध की अनुभूति अवश्य पा लेता है–

**''मैं अपनी आयु की वानस्पतिक गंध**
**फूल को सौंप देना चाहता हूँ**
**ताकि वह**
**मेरे पुण्यों की मयूर पंखी उत्सवता बन**
**सूर्य के धूप-मुकुट की**
**जयकार बने।''**

इन पंक्तियों में कवि ने अपनी कल्पना शक्ति का सुन्दर परिचय दिया है जिसे पढ़कर पाठक सोचने पर विवश हो जाता है। कवि ने प्रकृति का कल्याणकारी रूप प्रस्तुत किया है। वह मात्र दान करना जानती है, लेकिन किसी वस्तु की आकाँक्षा नहीं रखतीं। इसलिए कवि उठता है–

**''फूल ही नहीं**
**वनस्पति मात्र की भाषा**
**उसका वर्ण है**
**और वन**
**इसी वर्ण-भाषा में लिखा गया उपाख्यान है।**

कवि ने प्रकृति को विराट चेतना के रूप में प्रस्तुत किया है। इस विराट बोध के अन्तर्गत सारा ब्रह्माण्ड एक परमसत्ता की ही अभिव्यक्ति है। उन्होंने प्रकृति को कहीं आलम्बन, उद्दीपन, अलंकरण और कहीं मानवीकरण रूप में प्रस्तुत किया है। हिमालय का आलम्बन रूप यहाँ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है–हिमालय का आलम्बन रूप यहाँ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है–

**''हिमालय के आंगन में**
**समीप में लगा बरसने स्वर्ण**
**पिघलते हिमवातों के बीच**
**खिलखिला उठा दूब का वर्ण**
**शुक छाया में सूना कूल।''**

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कवि नरेश मेहता ने प्रकृति का नवीन रूप प्रस्तुत किया है जो उनके अन्य प्रकृति-कवियों से अलग ले जाता है। साथ ही उन्होंने प्रकृति का मानवी, अलंकृत आदि रूप भी प्रस्तुत किया है। अत: वे प्रकृति के नव्य चित्रकार हैं।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. 'मृत्तिका' कविता के कवि का नाम क्या है?
2. 'अरण्य' काव्य संग्रह का प्रकाशन कब हुआ?

### 23.5 कवि नरेश मेहता का अभिव्यंजना शिल्प

कवि नरेश मेहता एक सजग शिल्पकार हैं। उन्होंने अपने काव्य में जनमानस की भाषा का प्रयोग किया है। इसलिए उन्हें मानस मन से जुड़ा हुआ कवि कहा गया है। भले ही कवि प्रयोगवादी है, लेकिन उनके काव्य में भारतीय धर्म-दर्शन तथा देश की गौरवमय सस्कृति का यचार्थ चित्रण मिलता है। उनके शब्द ही उनकी आत्मा की पहचान हैं।

कवि ने अपने काव्य में तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी, आँचलिक और स्वय निर्मित शब्दों का प्रयोग किया है। उनके द्वारा स्वनिर्मित शब्द चमत्कार के कारण पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। 'कौतुहलता' और 'अनुग्रहता' जैसे शब्द उनकी प्रयोगवादी अति के सूचक हैं। उनकी भाषा में सर्वत्र चित्रात्मकता और प्रसंगानुकूलता विद्यमान है।

कवि ने अपने काव्य में सभी बिम्बों का सुन्दर प्रयोग किया है, जिससे भाषा में सजीवता आ गई है। उनके काव्य में प्रयुक्त बिम्ब के कुछ सजीव उदाहरण प्रस्तुत हैं-

**दृश्य विम्ब-''ध्रुव से ध्रुव तक**
**धू-धू करती**
**यह कर्म की**
**कृत्या**
**अपनी अग्नि गुंजलक में**
**सारे अक्षांश और देशान्तरों को लपेटे।''**

**प्राण-बिम्ब-**
**'धूप का महोत्सव**
**दाक्षिनात्य चंदनगंधी हवाएँ**
**गंधमादन की पुष्पीय विपुलता।''**

कवि ने अपने काव्य में रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है। उनके काव्य में अलंकारों का प्रयोग ऊपर से लादा गया प्रतीत नहीं होता, अपितु उन्होंने अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग किया है। उनके काव्य में उपमा अलंकार का सुन्दर उदाहरण द्रष्टव्य है-

**''और हम**
**जल की विशाल हिल्लोलता में**
**विवश नारिकेल से**
**डूबते-उतराने लगते हैं।''**

अपने काव्य में उन्होंने उपमानों का सुन्दर प्रयोग किया है। उन्होंने अपने काव्य में इतिहास, धर्म, दर्शन, और संस्कृति से जुड़े उपमानों का प्रयोग किया है। इनके प्रयोग से उनके काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो गया है। कुछ उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं-

(1) सत्ता के गोमुख पर बैठकर।

(2) अपने राजसी कुलगोत्र को।

(3) तुम, मात्र कौस्तुभ थीं, आदि।

नरेश मेहता ने अपने काव्य में प्रतीकों का अत्याधिक प्रयोग किया है। उनके पात्र राम, सीता युधिष्ठिर आदि प्रतीक रूप में प्रयुक्त हुए हैं। रावण सत्तालोलुप्ता और आसुरी शक्तियों का प्रतीक है, तो राम अनासक्त कर्म का। इसी प्रकार गोमुख मूल स्रोत का प्रतीक है और कंगूरा अस्तित्व का।

'प्रवाद-पर्व' में कवि ने प्रश्नवाचक वाक्यों का सुन्दर प्रयोग किया है जिसके काव्य का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया है-

**''मनुष्य**
**क्या केवल साधन है?**
**क्या केवल माध्यम है?**
**या और वह साधारण जन**
**क्या निरंकुश है?**
**क्या अराजक है??**
**क्या राजद्रोही है?**

नरेश मेहता ने अपने काव्य में व्यावहारिक एवं सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होने वाले मुहावरों का प्रयोग किया है।

नरेश मेहता ने जैसे-दस्तक देना, आंच न आना, तर्जनी उठाना आदि।

कहीं-कहीं कवि ने सम्बोधन शैली का प्रयोग किया है। एक उदाहरण देखिए-

**''यह कैसी विवशता है मित्रों!**
**परन्तु यह संभव है, बन्धुओं**
**आप सब भी इससे सहमत हों कि...।''**

कवि ने अपने काव्य में सर्वत्र मुक्त छन्द का प्रयोग किया है, फिर भी उनके काव्य में लयात्मकता दृष्टिगोचर होती है।

**एक उदाहरण द्रष्टव्य है-**
**''ध्रुव से ध्रुव तक**
**धू-धू करती**
**यह कर्म की कृत्या...।**

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भाषा-शिल्प की दृष्टि से कवि नरेश मेहता का काव्य उत्तम कोटि का है। उन्होंने अपने काव्य में भिन्न प्रकार की शब्दावली का मिश्रण किया है जिससे काव्य की कृत्रिमता नष्ट हो गई है। भाव, भाषा एवं शैली की दृष्टि से उनका काव्य प्रथम श्रेणी में स्थान पाने का अधिकारी है।

**स्वयं आकलन प्रश्न**

**अभ्यास प्रश्न-3**

1. 'बोलने दो चीड़ को' का प्रकाशन कब हुआ?
2. 'मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ' पंक्तियों के रचियता का नाम क्या है?

**23.6 सारांश**

नरेश मेहता दूसरे सप्तक के प्रमुख कति है। नरेश मेहता ने अपने साहित्य सृजन में सीधे एवं सरल विम्बों का वर्णन एवं प्रयोग किना है। भाषा विषयानुकूल, भावपूर्ण एवं प्रवाहमयी है। नरेश मेहता जी ने अपने काव्य में अनुप्राम,

रूपक, उपमा, उत्प्रेषा एवं मानक्की करण जैसे अलंकारों का प्रयोग किया है। परंपरागत एवं नवीन छंदों का प्रयोग किया है। नवीन उपमानों के साथ-साथ भी नरेश मेहता ने अपने साहित्य सृजन में प्रयोग किया है।

## 23.7 कठिन शब्दावली

**ढिंढोरा** - घोषणा करने का ढोल

**नंखना** - फेकना

**शंकरमत** - एक प्रकार का लोहा

**महराब** - द्वार आदि पर बनाई गई रचना

**विवादित** - गुंजित

## 23.8 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

**अभ्यास प्रश्न-1**

1. 1975 ई.
2. 1951 ई.

**अभ्यास प्रश्न-2**

1. नरेश मेहता
2. 1985 ई.

**अभ्यास प्रश्न-3**

1. 1961 ई.
2. नरेश मेहता

## 23.9 संदर्भित पुस्तकें

(1) प्रभाकर क्षोत्रिय, (सं.) नरेश मेहता रचना संचय, साहित्य अकादमी, दिल्ली।

2) नरेश मेहता, संपूर्ण कविताएँ, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली

## 23.10 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. नरेश मेहता की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

प्रश्न. नरेश मेहता के प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न. नरेश मेहता के अभिव्यंजना शिल्प पर विवेचन कीजिए।

*****

# इकाई–24
# नरेश मेहता : व्याख्या भाग

**संरचना**

24.1 भूमिका

24.2 उद्देश्य

24.3 नरेश मेहता : व्याख्या भाग

- 'तीर्थ जल' (कविता) : व्याख्या भाग
- 'पीले फूल कनेर के (कविता) : व्याख्या भाग
- 'मेघ मैं' (कविता) : व्याख्या भाग

स्वयं आकलन प्रश्न

24.4 सारांश

24.5 शब्दार्थ

24.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

24.7 संदर्भित पुस्तकें

24.8 सात्रिक प्रश्न

## 24.1 भूमिका

पिछली इकाई में हमने नरेश मेहता की काव्यगत विशेषताओं का विस्तार से अध्ययन किया है। प्रस्तुत इकाई में हम नरेश मेहता की कविताओं की व्याख्या करेंगे। इसके अन्तर्गत हम उनकी 'तीर्थ जल', 'पीले फूल कनेर के' तथा 'मेघ मैं' कविता की विस्तारपूर्वक व्याख्या करेंगे।

## 24.2 उद्देश्य

इकाई चौबीस का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि–

1. नरेश मेहता की कविताओं की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?
2. तीर्थ जल कविता का मूल भाव क्या है?
3. पीले फूल कनेर के कविता का सार क्या है?
4. मेघ मैं कविता में किसका वर्णन किया गया है?

## 24.3 नरेश मेहता : व्याख्या भाग

**● 'तीर्थजल' (कविता) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार**–'तीर्थजल' नरेश मेहता की एक प्रसिद्ध तथा चर्चित कविता है। इस कविता में कवि ने तीर्थ स्थानों पर स्थित सरोवरों, कुण्डों में कैद जल की व्यथा को अभिव्यक्ति दी है। 'तीर्थ जल' अपने भक्तों से, अनुयाइयों से प्रार्थना करता है कि वे उस काई को काट डाले, हटा डालें, हटा दें, जिसने उसे चारों ओर से घेर रखा है, बन्दी बनाया है, सड़ने को विवश किया है। सुन्दर मेहराबों, गोलाकार पत्थरों से बने–दरवाजों की कैद उस जल को परेशान करती है। वह जल पछताता हुआ कहता है कि वह अभागा, भटका हुआ है क्योंकि अपने स्रोत से मटक कर, कट कर वह यहाँ आकर कैद हो गया है। उस तीर्थजल की पीड़ा भरी, घायल आवाजें चारों ओर गूँज रही हैं और मानों कह रही हों कि उसे अकेले, सबसे अलग–थलग नहीं रहना, अपने स्रोत जल से जुड़ना है।

तीर्थजल स्वयं को अन्धे साँप से उपमति करता है जो अंधेरे में निरन्तर भटकता हुआ इधर मंदिर के कुण्ड तक आ पहुँचा और यहाँ कैदी बनकर रह गया। जो घाट उसे घेरकर खेड़े हैं, बन्दी बनाए हैं उससे वह अंधेरे में है। किनारे

पर उगा विशाल वट वृक्ष अपनी गहरी छाया इस तीर्थजल पर डालता है। जल और भी अंधकार में डूब जाता है। धूप उसके निकट से हार मानकर चोरी से निकल जाती है। 'तीर्थजल' अपने स्रोत जल को पीकर वंश रहित हो गया है।

तीर्थजल अपनी वर्तमान स्थिति को बताता हुआ कहता है कि अब उसमें पर्वों की मिट्टी बहती नहीं दिखती, वह सतह पर बैठ गई है। 'तीर्थजल' श्रद्धानत तीर्थयात्रियों से कहता है कि उन्होंने उस जैसे भटके पानी को पवित्र मानकर तीर्थजल, मुक्तिदायी जल कहना आरम्भ कर दिया। यह ठीक नहीं हुआ। आज भी इसी अंधेरे में सड़ रहे जल को पवित्र मान कर भक्त लोग इसके जल से आचमन कर रहे हैं। 'तीर्थजल' तीर्थयात्रियों को हट जाने के लिए कहता है। उसे लगता है कि वे उसकी गति में बाधा है। जल की लहरें मानों लगातार चिल्ला रही हैं कि वे बन्धन तोड़कर मुक्तहोना चाहती हैं। वह अपने पितृजल, प्राकृतिक स्रोत से जुड़कर संघर्ष करना चाहती हैं। उसके पितृजल से, विशाल नदियों बनी हैं जो भारत की आर्थिक समृद्धि का कारण है।

**हमें शेष से जोड़ो–**
**काटो ये काई के बन्धन,**
**भाँगो सुन्दर महराबों की पावरकारा।**
**नवजल के उत्सों की गति को छोड़**
**भटक आयी जलधारा–**
**बन्दी पाखी–सा एकाकीपन**
**घायल स्वर में शतः निनादित**
**''हमें शेष से जोड़ो,**
**जोड़ो, जोड़ो''** –

**शब्दार्थ – शेष** = अपने से इतर, अन्य सभी। **महराबों** = द्वार आदि पर बनी हुई अर्द्धमंडलाकार रचना। **पायरकारा** = पत्थरों की कैद। **पात्री** = पक्षी। **निनादित** = गुंजित।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'तीर्थजल'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता **नरेश मेहता** जी हैं। इस कविता में कवि ने तीर्थ पर स्थित सरोवरों, कुंडों में कैद जल की पीड़ा को उजागर किया है।

**व्याख्या**–इस पंक्तियों में कवि कहता है कि तीर्थ स्थल पर संचित किया गया तालाब का पानी व्याकुल होकर कहता है कि वह एकांकी जीवन से परेशान हो चुका है। वह अपने स्रोत के शेष जल से, धारा से जुड़ना चाहता है। तीर्थजल पर काई छाई है। वह किनारों पर काई जमी है। वह काई को काटने के लिए प्रार्थना करता है। तीर्थजल सुन्दर मेहराबों, पत्थर की गोलाकार सीमाओं को तोड़ने की प्रार्थना करता है। वह कहता है कि वह तो स्रोत से उमड़ी किसी नई जलधारा से छिटक कर यहाँ आ पहुँचा और बंदी बना लिया गया। अब तो वह किसी कैद पक्षी की तरह अकेला छटपटा रहा है। इसकी घायल आवाज में एक ही चीख बार–बार गूँजती है जो कहती है कि उसे भी शेष जलधार से जुड़ना है, एकमेक होना है।

**विशेष**–

1. तीर्थजल का मानवीकरण हुआ है। तीर्थजल अपने स्रोत से कटकर कैद हो गया है। इसलिए व्याकुल है और छटपटा रहा है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्तछंद एवं आत्मकथात्मक शैत्ती का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास मानवीकरण, रूपक व उपमा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**सहज भाव से पिताजलों से दूर**
**हमारी यह जलधारा**
**अंधकार में अन्य सर्प-सी पथ टटोलता**
**(इस) कुण्ड बीच आ समा गई है-**
**पाट घेरकर खड़े हो गए**
**वट की सर्पिल छाहें जल में देख**
**धूप कतरा जाती है।**

**शब्दार्थ- पिताजलों** = मूल स्रोत का पानी। **सहज** = सरल, प्राकृतिक। **अन्यसर्प** = अन्धा सांप। **सर्पिल** = टेढ़ी-मेढ़ी। **कतरा जाती** = किनारा कर जाती, दूर भागती।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'तीर्थजल'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचविता **नरेश मेहता** जी हैं। इस कविता में कवि ने तीर्थ पर स्थित सरोवरों, कुंडों में कैद जल की पीड़ा को उजागर किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में तालाब में कैद तीर्थजल कहता है कि वह अपनी स्रोत से निकली जलधारा, उस हिमखण्ड से कट गया है जो उसके पिता के समान था। सहज जीवन तो उसी जल से जुड़कर संभव था जिससे यह वह कट गया है। उसकी जलधारा तो अंधेरे में अंधे साँप की तरह अपना रास्ता खोजती हुई भटक कर यहाँ आ पहुँची है। इस तालाब में जलधारा आकर कैद हो गई है। अब तो इसके चारों ओर पक्के घाटों की बाड़ भी बन गई है। वह अब यहाँ से कभी स्वतंत्र नहीं हो सकता। किनारे पर उगे बड़े-बड़े वटवृक्ष की छाया, उलझी हुई इतनी गहरी है कि उसे देख धूप भी हार मानकर दूर भाग जाती है। तीर्थजल ठण्डे, अधेरे में जीने को अभिशप्त है।

**विशेष-**

1. तीर्थजल की व्यथा-कथा अभिव्यक्त हुई है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्तछंद एवं आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. उपमा, अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है।

**अब न हमारी**
**पिताजलों-सी माटी सनी देह होती है।**
**अपना कल्मष धोने को**
**इस भटके जल को तीर्थ पुकारा**
**तुमने-**
**गति मर कर अथाह हो गयी,**
**स्रोत स्वयं का पीकर हम**
**निर्वंश हो गए।**

**शब्दार्थ- सनी** = लिपटी। **कल्मष** = पाप, गन्दगी। **अथाह** = असीम। **निर्वंश** = संतान रहित, वंश नाश।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'तीर्थजल'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता नरेश मेहता जी हैं। इस कविता में कवि ने तीर्थ पर स्थित सरोवरों, कुंडों में कैद जल की पीड़ा को उजागर किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में तीर्थजल कहता है कि अब मेरे शरीर में अपनी मूल जलधारा से मिलने वाली मिट्टी नहीं रहती मेरा जल मटमैला नहीं हो पाता। बहते जल के साथ मिट्टी बहकर उसे मटमैला बनाती है, खड़े जल में मिट्टी तह में बैठ जाती है तीर्थजल, मनुष्य को उपात्तंभ देता हुआ कहता है कि अपनी गति खो चुके, मृतप्राय: हो चुके पानी को तुमने तीर्थजल कहकर उसमें अपने पाप धोने शुरु कर दिए। वह कहता है कि मेरी प्राणशक्ति नष्ट हो गई है इसलिए मैं गहरे कुण्ड में स्थिर हो गया हूँ। मेरे गहराई बढ़ गई है। मेरा जीवन तो अभिशप्त है, मैं तो अपने स्रोत को, उद्घ्गम को ही पी डाला। अब मैं कुलहीन हूँ। मेरी कोई धारा आगे नहीं बहेगी न स्रोत से आश्रय पाएगी।

**विशेष**

1. तीर्थजल अत्यधिक दु:खी हैं। वह अपने स्रोत से बिछुड़ने के कारण अपने को मृत मानता है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्तछंद एवं आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. उपमा व अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

**कलमश धोते-धोते अब हम जल न रह सके**
**पुण्य हमारा लेकर वे यात्रीजन**
**इन घाटों पर जीर्ण वस्त्र से**
**स्नेह धर गए।**
**कहीं हमारे जल में फिर से**
**परंपरागत ज्वार न आये,**
**पिताजलों की भाँति कहीं हम**
**सिन्धुकोड़ के लिए न हों फिर से उत्कंठित,**
**तुमने ये अभिषिक्त शिलाएँ रखकर**
**हमको उद्‌गमहीन कर दिया**
**सदा-सदा को।**

**शब्दार्थ**-**कल्मष** = कालिख, पाप, मैल। **सिन्धुकोड़** = समुद्र की गोद। **ज्वार** = उछाल, लहर। **उत्कंठित** = बेचैन। **अभिषिक्त** = मंत्रों से पवित्र, पूजित। **शिलाएँ** = चट्टानें। **उद्‌गमहीन** = स्रोत से रहित।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित, कविता **'तीर्थजल'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता **नरेश मेहता** जी हैं। इस कविता में कवि ने तीर्थ पर स्थित सरोवरों, कुंडों में कैद जल की पीड़ा को उजागर किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में तीर्थ जल अपनी व्यथा-कथा सुनाता हुआ कहता है कि लोगों का पाप धोते-धोते अब तो मैं जल भी नहीं रहा, कीचड़ बन गया हूँ। जो भी तीर्थयात्री मेरे पास आए उन्होंने मेरा सारा पुण्य हर लिया, छीन लिया। उसके बदले में वे पुराने कपड़ों जैसा अपना स्नेह छोड़ गए। कहने का भाव यह है कि उनके स्नेह में भी वासीपन था, रूढ़िवादिता थी। वे मेरे किनारे पर मंत्रों से पवित्र की गई शिलाओं का बाँध बनाकार चले गए। वे डरते थे कि मेरे पानी में कभी तूफान न उठ जाए और मैं अपने स्रोत से निकली धारा में मिलने के लिए मचलने न लगें। उन्हें यह भी भय था कि कहीं मैं पुन: सागर की गोद में पनाह लेने के लिए उतावला होकर बांध तोड़कर बहने न लगूँ। इसी डर से उन्होंने पवित्र शिलाओं से मुझे घेरकर मुझे हमेशा के लिए, मेरे स्रोत से काट दिया।

**विशेष**-

1. तीर्थजल अपनी कैद के लिए मनुष्यों के स्वार्थ को दोषी मानता है। स्वयं पुण्य कमाने के लिए उसने तीर्थजल को गन्दा किया, बाँध कर रख दिया।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्त छंद एवं आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास, उपमा, पुनरुक्तिप्रकाश व मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
7. अब भी अधर आचमन को लालायित ओ यात्रीजन

**हटो, हमारे गति के बाधक**
**जल जिह्वाएँ ज्वार उगलतीं-**
**तोड़ो, तोड़ो,**
**इन पाथरी दीवारों के उसे पार**
**पिताजलों का पुण्यलोक है**
**जिनके गतिरथ नदियाँ लिखते।**

**शब्दार्थ- आचमन** = जल को ओठों से लगाना। **बाधक** = रुकावट। **जलजिह्वाएँ** = लहरें। **ज्वार** = जल का उभार, ऊँची लहरें। **गतिरथ** = **गति का रथ**।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'तीर्थजल'** से अवतरित हैं। इस कविता के रचयिता **नरेश मेहता** जी हैं। इस कविता में कवि ने तीर्थ पर स्थित सरोवरों, कुंडों में कैद जल की पीड़ा को उजागर किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में तीर्थजल तीर्थयात्रियों को संबोधित करते हुए कहता है, हे तीर्थयात्रियों। अभी भी तुम्हारे होंठ मेरे जल का पान करने के लिए, आत्मशुद्धी के लिए मेरे जल को अपने मुख में लेने के लिए उतावले हैं। दूर हट जाओ। तुमने ही मेरी गति को बाधित किया है, मुझे कैदी बना रखा है। आज मेरे पानी में ज्वार उठ रहा है, भयंकर उथल-पुथल है और जल अपनी लहरों रूपी जिह्वाओं से अपना क्रोध व्यक्त कर रहा है। वह चिल्ला रहा है कि इन बन्धनों को तोड़ डालो, मुझे स्वतंत्र करो। इन पथरीली दीवारों के पार, इन घाटों के बन्धनों से परे मेरा स्रोत, मेरे पूर्वजों का पवित्र संसार है जिससे निकले जल का रथ नदियों के रूप में अबाध गति से आगे बढ़ता है। मैं उसी का अंश बनना चाहता हूँ।

**विशेष**-

1. तीर्थस्थल का पानी उत्तेजित होकर तीर्थयात्रियों को दूर रहने के लिए कहता है। वह मुक्तहोकर अपने स्रोत से जुड़कर बहना चाहता है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. मुक्तछंद एवं संबोधन शैली का प्रयोग है।
5. प्रसाद गुण का प्रयोग है।
6. अनुप्रास, मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

● **पीले फूल कनेर के (कविता) : व्याख्या भाग**

**कविता का सार–'पीले फूल कनेर के'** नरेश मेहता विरचित एक महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है। कनेर के फूल लाल, पीले और सफेद रंग के होते हैं। कवि कहता है कि कनेर के पीले फूल वन में खिले हैं। यह उस बड़ी-बड़ी आँखों वाली नायिका का रास्ता देख रहे हैं, जिसकी आँखें दुपहर के फूलों की तरह खिली और निर्मल हैं। वह चंचल हिरणी सी गोपिका पूरे वन में दौड़ रही है और जानने का प्रयत्न कर रही है कि बेंतवन से आने वाली बाँसुरी की आवाज में उसी का नाम पुकारा जा रहा है, उसे ही मिलन समय का संकेत दिया जा रहा है। उसकी लाल-लाल मदमाती आँखें कोयलों और तोतों के संग उस आवाज को पाने के लिए भटक रही हैं। यह कुएँ, बावड़ी, यमुना तट, झाऊ के घास के मैदानों और पथिकों को पूछती घूमती हैं। वह उस रास स्थल को खोज रही है जो मदमस्त करता है। उधर वटवृक्षों की शाखाओं पर बटेर का जोड़ा बैठा सगुण, शुभ मुहूर्त का पता बता रहा है। शोर मचा रहा है। कनेर के पीछे फूल खिले हुए हैं। फागुन मास आ गया है। नदी का तट पानी कम होने के कारण मिट्टी से भर गया है। उसके किनारे कुछ ऊँचे दिखाई दे रहे हैं। आस-पास सरसों की फसल लहरा रही है। सर्वत्र पीला चँवर फैला हुआ है। पनघट सूना पड़ गया है। फाल्गुन की मादक पछुआ मेंहदी और महुए की सुगन्ध लेकर बह रही है। जैसे विहिणी की नींद उड़ती है वैसे ही उसने लज्जा त्यागकर प्रिय का वरण किया है।

विरहिणी गोपिका की छत पर कऊआ बोल रहा है। अवश्य कोई मेहमान आने वाला है। गोपिका अपने प्रिय को उपालंभ देते हुए कहती है कि इस बहार के मौसम में उसका प्रिय दूर है जिससे उसका फागुन आँसू बहाने में बीत रहा है, बरसात का मौसम बन गया है। कवि कहता है कि गोपियों को लगता है कि आकाश में पीली चाँदनी उग आई है। उसके प्रियतम प्रातः से गए हुए शाम तक नहीं लौटे। चारों ओर कनेर के फूल खिले हैं।

**पीले फूल कनेर के**
**पच अंगोरते सिन्दूरी बड़री अँखियन के**
**फूले फूल दुपेर के।**
**दौड़ी हिरना**
**बन-बन अंगना**
**बेंतवनों की चोर मुरलिया**
**समय संकेत सुनाए**
**नाम बजाए**
**साँझ सकारे,**
**कोयल तोतों के संग हारे**
**ये रतनारे-**
**खोजे कूप, बावली झाऊ,**
**ये रतनारे-**
**खोजे कूप, बावली झाऊ,**
**बाट, बतोही, जमुन कछारें**
**कहाँ रास के मधु पलास है?**
**बट शाँखों पर सगुन डाकते मेरे मिवुन बटेर के**
**पीले फूल कनेर के**

**शब्दार्थ- पथ** = रास्ता। **अँगोरते** = जोहते, देखते। **बड़री** = बड़ी-बड़ी। **सिन्दूरी** = लाल, मदिरा से लाल। **दुपेर** = दोपहर। **हिरना** = हिरणी। **बेंतवन** = बेंत की वेल के वन। **मुरलिया** = बाँसुरी। **सकारे** = सवेरे। **रतनारे** = लाली लिए हुए। **झाऊ** = झाड़। **बटोही** = पथिक। **कछारें** = रेती। **रास** = नृत्य। **मधु** = मादक। **पलास** = एक फूल। **डाकते** = पुकारते, शोर करते। **मिथुन** = जोड़ा।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में सकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक कवि **'नरेश मेहता'** विरचित कविता **'पीले फूल कनेर के'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने कनेर के फूलों के बहाने से प्रकृति चित्रण किया है। फाल्गुन मास में लाल, पीले और सफेद कनेर फूल खिलते हैं।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि वनस्थली में कनेर के पीले फूल खिल उठे हैं। दुपहर में कनेर के फूल आँखे फाड़े इंतजार कर रहे हैं कि वह बड़ी-बड़ी आँखों वाली नायिका आएगी अवश्य, वे उसके इंतजार में आँख नहीं झपक रहे। वह नायिका बाँसुरी की आवाज पर मुग्ध होकर वन-वन भटक रही है, उस आवाज का पीछा कर रही है। सुदूर बेंतवनों में छुपे नायक कृष्ण की बाँसुरी चोरी-चोरी मिलन समय और स्थान का संदेश सुना रही है। उसी नायिका का नाम बार-बार उस बाँसुरी में सुनाई पड़ता है। उस नायिका के रतनारे नयनों कोयल, तोतों के संग हर दिशा में उड़कर मानों उस बाँसुरी वादक प्रियतम को खोज रहे हैं, परन्तु वह बेंतवन में छुपा है, दिखाई नहीं देता। वह पगली कुंओं, बावड़ियों, झाऊ घास के मैदानों, रास्तों पर उसे खोजती है पथिकों से उसका पता पूछती है। वह यमुना के रेतीले तटों पर भी उसे खोज आई है। वह बार-बार रास के मादक नृत्य का स्थल खोज रही है उसे लगता है कि जरूर कहीं कृष्ण उसे रासलीला के लिए पुकार रहा है। वट वृक्षों की शाखाओं पर बटेर पक्षियों के जोड़े रासलीला के सगुण बता रहे हैं, उधर पूरे वन में कनेर के पीले फूल खिले हैं।

**विशेष-**

1. कनेर के फूलों के बहाने कवि द्वारा प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण किया गया है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4. प्रसाद एवं माधुर्य गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
6. अनुप्रास, पुनररुक्तिप्रकाश एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग है।

**पाट पट गए, कगराए तट,**
**सरसों घेरे खड़ी हिलती पीत चंवरिया सूनी पनघट**
**सखि! फागुन की आया मन पे हलद चढ़ गई**
**मेंहदी महुए की पछुआ में**
**नींद सरीखी लाज उड़ गई-**

**शब्दार्थ- पाट** = नदी का विस्तार, चौड़ाई। **पट गए** = भर गए। **कगराए** = ऊँचे किनारे। **चंवरिया** = चंवर। **सरीखी** = सम्मान। **पछुआ** = पश्चिमी हवाएँ।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध सास्कृतिक कवि **'नरेश मेहता'** विरचित कविता **'पीले फूल कनेर के'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने कनेर के फूलों के बहाने से प्रकृति चित्रण किया है। फाल्गुन मास में लाल, पीले और सफेद कनेर फूल खिलते हैं।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि नदी का पाट नदी की धीमी गति के कारण मिट्टी से भर गया है। नदी तट कुछ और ऊँचा हो गया है। सरसों के पीले फूल चारों ओर खिले हैं। ऐसा अनुभव होता है कि सूने पनघट पर कोई नायिका अपने पीले चंवर को डुलाती हुई खड़ी है। एक सखी दूसरी से कहती है कि सावन आ जाने से मन खिल उठा है। मेंहदी और महुए की सुगन्ध पश्चिमी हवाओं से चारों ओर फैल रही है। ऐसे वातावरण में सुन्दरी की लाज ऐसे उड़ गई जैसे आँखों से नींद उड़ जाती है। प्रिय मिलन की लालसा में, इस बहार के मौसम में, नायिका की आँखों की नींद उड़ गई है और वह लाज त्याग अपने प्रिय से मिल रही है।

**विशेष**-

1. प्रकृति के माध्यम से नायिका के प्रेम भाव को उजागर किया गया है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।
3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।
4 प्रसाद एवं माधुर्य गुण का प्रयोग है।
5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हआ है।
6. अनुप्रास एवं उपमा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

**कागा बोले मोर अटरिया**
**इस पाहुन बेला में तूने**
**चौमासा क्यों किया पिया?**
**यह टेसू-सी नील गगन में-**
**हलद चाँदनी उग आई री**
**उग आई री**
**अभी न लौटे उस दिन गए सबेर के !**
**पीले फूल कनेर के!**

**शब्दार्थ** - **कागा** = कऊआ। **मोर** = मेरी। **अटरिया** = अटारी, छत के ऊपर की कोठरी। **पाहुन** = मेहमान। **चौमासा** = बरसात। **हलद** = हल्दी के रंग की पीली।

**प्रसंग**-प्रस्तुत काव्यांश **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में संकलित हिन्दी के सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक कवि **'नरेश मेहता'** विरचित कविता **'पीले फूल कनेर के'** से अवतरित है। इस कविता में कवि ने कनेर के फूलों के बहाने से प्रकृति चित्रण किया है। फाल्गुन मास में लाल, पीले और सफेद कनेर फूल खिलते हैं।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में एक नायिका कहती है कि आज उसकी छत पर कौआ बोल रहा है। अवश्य ही कोई मेहमान आने वाला है। वह अपने प्रियतम से शिकायत करती हुई कहती है कि इस बसंत बहार के अवसर पर वह उसे क्यों रुला रहा है। क्यों उसकी आँखों से बरसात करवा रहा है। नीले आकाश में टेसू के पीले फूलों की तरह पीली-पीली सी चाँदनी खिल उठी है, रात हो गई है। प्रातः के गए हुए कनेर के वह पीले फूल, वह कृष्ण जो कनेर के फूलों सा सुन्दर है, अभी भी नहीं लौटा है। नायिका गोपी प्रतिक्षारत है।

**विशेष**-

1. नायिका के विरह का मार्मिक चित्रण हुआ है। उसके लिए फागुन भी आँसुओं में भीगा चौमासा (बरसात) है।
2. भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है।

3. शब्द चयन सर्वथा उचित एवं सार्थक है।

4. प्रसाद एवं माधुर्य गुण का प्रयोग है।

5. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हआ है।

6. अनुप्रास, उपमा एवं प्रश्न अलंकारों का प्रयोग है।

- **मेघ मैं ( कविता ): व्याख्या भाग**

**कविता का सार**- 'मेघ मैं' नरेश मेहता की महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित कविता है। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित करते हुए स्वयं को स्वर्गलोक में विचरण करने वाला बताया है। परंतु जब वह धरती पर आकर सूखाग्रस्त भूमि, पीड़ित लोगों को देखता है, तो इच्छा व्यक्त करता है कि वह वहीं रहकर लोगों के कष्ट दूर करेगा। वह अपने को धरती माता का सच्चा पुत्र सिद्ध करेगा।

**मैं नतशिर**
**थे नैनमेघ भी झुके हुए,**
**हरियाली पर रथ उतारने के पहले**
**ज्यों पूछा करते मेघ, गगन से-**
**कितने योजन का जल पृथ्वी तक है गहरा ?**
**दूर कहीं**
**नीचे बॉसों के जंगल की घाटी में कोई हवा भर गयी-**
**ग्वाले की वंशी सी गाती हवा जंगली**
**टेर रही बदली की गायें।**

**शब्दार्थ- नतशिर** = सिर झुकाए। **नैनमेघ** = आँखों के बादल। **योजन** = आठ कोस की दूरी। **टेर रही** = बुला रही।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियों **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि मैं अपना सिर झुकाए हुए था और मेरी आँखों में अश्रुजल भी रुका हुआ था मानो वह आकाश की हरियाली पर उतरने से पहले आकाश से पूछ रहा हो कि पृथ्वी पर कितने योजन तक गहरा जल है। दूसरी ओर दूर किसी बाँसों के जंगल की घाटी में हवा भर गई थी। वह हवा किसी ग्वाले की बाँसुरी की भाँति गाती हुई बादल रूपी गायों को बुला रही थी।

**विशेष**-

1. कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में प्रस्तुत किया है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, रूपक, प्रश्न एवं उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. कविता छंद मुक्त है।
5. तत्सम्म शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**तन मन जिसकी बिजली हो वह**
**हरिण मेघ मैं-**
**कब मोहित हो नीचे उतर रहा था**
**( मुझको ) ज्ञात नहीं था।**
**मुझे लगा नीचे धरती पर कोई बादल उतर चुका है,**
**मैंने रुकने की आज्ञा दी-**
**मेरी गर्जन गूँज बन गयी,**
**मेरे सारे नील देश में दौड़ गये गर्जन के घोड़े !**
**वह विद्युत् भुजबन्ध कसे, या गरज रहा मुझ जैसा ही,**

**शब्दार्थ- हरिण** = हिरण। **मेघ** = बादल। **आज्ञा** = आदेश। **विद्युत** = बिजली।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से ली गई हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में यहाँ कवि कहता है कि मैं वह हिरण रूपी बादल हूँ, जिसका तन-मन बिजली है। मैं कब धरती को आकर्षण में बँधकर नीचे उतर रहा था, इसका मुझे कुछ पता नहीं था। जब मैं नीचे उतर रहा था तब मुझे लगा कि मुझसे पहले भी कोई बादल धरती पर उतर चुका है। तब मैंने गरजकर उस बादल को रुक जाने का आदेश दिया। मेरी गर्जना इतनी तीव्र थी कि वह गूँज बनकर दूर-दूर तक फैल गई। मेरी गर्जना रूपी घोड़े मेरे सारे नील-प्रदेश में दौड़ गए। तब मैंने उस बादल को देखा, जिसने बिजली को अपनी भुजाओं के बंधन में कस रखा था तथा जो मेरी ही तरह गरज रहा था।

**विशेष-**

1. बादल की गर्जन-तर्जन का वर्णन हुआ है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, रूपक व मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. कविता छंद मुक्त है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**मैं शम्पा का कशाघात देने को ही था-**
**झील हँसी**
**लावण्य सिमट आया था भूमी का,**
**झरनों का पानी बनकर।**
**मैं मोहित हो गया स्वयं की उस सोती छाया पर-**
**मैं नारसीसस !!**
**दूर आक के पत्तों से था दूध झर रहा**
**वह सफेद थी हँसी व्यंग्य की**
**पेड़ों पर का लगा गोंद वे भूरे बन्दर**

**नाच-नोच कर चबा रहे थे,**
**तभी अचानक हाथी के कानों से बड़े-बड़े सागौनी पत्ते लगे बदन में**
**दूब, बूँद का मुकुट बाँध उत्सव लगती थी।**

**शब्दार्थ- शम्पा** = आकाशीय बिजली। **कशाघात** = कोड़े बरसाना। **लावण्य** = सौंदर्य। **नारसीसस** = आत्ममुग्ध। **दूब** = घास।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि बादल के रूप में मैं अन्य बादल को, जो धरती पर उतर चुका था, अपनी आकाशीय बिजली का कोड़े बरसाने जैसा आघात देने ही वाला था कि बिजली की चमक में मुझे झील हँसती हुई दिखाई दी। मुझे उस चमक में झरनों का बहता पानी दिखाई दिया। झरनों के पानी के रूप में धरती का सौंदर्य सिमट आया लगता था। उस दृश्य को अपनी सोती हुई छाया के रूप में अनुभव कर मैं आकर्षित हो गया। वस्तुतः मैं आत्ममुग्ध हो गया था। तभी बिजली की उस चमक में मुझे आक के पत्तों से दूध जैसा पदार्थ झरता हुआ दिखाई दिया। मानो वह कोई व्यंग्यपूर्ण सफेद हंसी हो। पेड़ों पर लगे हुए गोंद को पूरे बंदर नोच-नोच कर चबाते हुए खा रहे थे। तभी अचानक मुझे दूब दिखाई दी, जिसके शरीर पर हाथी के कानों जैसे बड़े-बड़े सागौनी पत्ते लगे हुए थे, वह दूब अपने सिर पर बूंद का मुकुट बाँधकर उत्सव मनाती हुई प्रतीत हो रही थी।

**विशेष-**

1 बरसात के प्राकृतिक दृश्य को चित्रित किया गया है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, रूपक, उत्प्रेक्षा, पुनरुक्तिप्रकाश, उपमा व मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. कविता छंद मुक्त है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**उतर रही थी घोषमयी वह पर्वतीय रेवा आँधी-सी**
**अन्तर में कंकर स्वयं भर कर-**
**उतर रही हो कोई अश्वपंक्ति पर्वत से टाप बजाती।**
**हिमकन्या यमुना की सारी चंचलता अब कहाँ गयी?**
**वह मन्द-मन्द मैदान सींचती-**
**लगता जैसे ब्याह हो गया इस मैदान देश से,**
**इसीलिए वह अंग चुराती।**

**शब्दार्थ-पोषमयी** = शोर मचाती। **रेवा** = नर्मदा नदी का एक नाम। **अश्वपंक्ति** = घोड़ों का समूह।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि फिर मुझे नर्मदा नदी दिखाई दी, जो आँधी की भाँति शोर मचाती हुई पर्वत से उतर रही थी। उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे घोड़ों का समूह अपने हृदय में कैंकर भरकर टापों का शोर करता हुई पर्वत से उतर रहा हो। इस नदी की चंचलता को देखकर हिमपुत्री यमुना नदी की सारी चंचलता खो गई प्रतीत होती थी। फिर नर्मदा नदी अपनी मंद गति से मैदानों को सींचती हुई आगे बढ़ने लगी। उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे इस मैदानी प्रदेश में उसका विवाह हो गया है और इसीलिए वह अपने अंगों को चुराती हुई आगे बढ़ रही है।

**विशेष**–

1. नर्मदा नदी की विशालता का वर्णन हुआ है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, प्रश्न, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. कविता छंद मुक्तहै।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**कल जब बरस गया था मैं पानी-पानी हो**
**मुझे लहर की जलकन्याएँ मोहित करके**
**चाह रही हैं बहा बहा कर ले जाना**
**उन दूर खजूरों के निर्जन कुञ्जों में,**
**बेबस बेचारा में पानी।**
**मैं प्रवाह में कहीं न घर से दूर बहा दूँ**
**इसीलिए वह धीवर पत्नी मनु की खातिर**
**बाँस टिपारी में दिया धर**
**नारियल की डोरी से हैं संकेत चढ़ाती-**
**उस पार**
**दूर के निचले तट से**
**मुँह पर हाथों पर घेरा दे**
**कोई खड़ा टेरता जाता अपनी श्रद्धा।**

**शब्दार्थ - निर्जन** = सूना। **कुंज** = उपवन। **बेबस** = विवश। **धीवर** = मछुआरा।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि कल जब मैं बादल के रूप में पानी–पानी होकर बरस गया था तब लहरों रूपी जलकन्याएँ मुझे मुग्ध करके अपने साथ बहाकर दूर खजूरों के सूने उपवन में ले जाना चाह रही थी। दूर एक बेबस मछुआरा खड़ा था और मैं पानी बनकर तेजी से बह रहा था। दूसरे किनारे पर खड़ी मछुआरे की पत्नी यह सोचकर कि कहीं मैं अपने प्रवाह में उस मछुआरे को घर से दूर बहाकर न ले जाऊँ, वह एक बाँस की टिपारी में एक दीपक रखकर नारियल की डोरी से उसे ऊँचा करके अपने मछुआरे पति को उस पार अपने होने का संकेत दे रही थी। दूर दूसरे किनारे पर जिसका तट नीचा था, वह मछुआरे अपने मुँह पर अपने हाथों का घेरा देकर अपनी पत्नी के प्रेम को समझता हुआ उसके प्रति अपनी पुकार प्रकट कर रहा था।

**विशेष**–

1. इन पंक्तियों में मछुआरा दंपत्ति के प्रेम को अभिव्यक्ति दी गई है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. कविता छंद मुक्त है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**श्रद्धा तक आने के पहले टेर हवा के सँग उड़ जाती–**
**मैं सरिता–**
**मेरी पानी की छाती पर से स्वर चिड़ियाँ**
**चीं चीं चीं चीं कर उड़ी जा रहीं**
**श्रद्धा के बहरे कानों तक**
**जिनमें उस ऊँचे प्रपात के घोर नाद का भरा हुआ है**
**पिघला सीमा–**
**उस ऊँचे प्रपात से जैसे चट्टान की अहरह गिरती।**
**मीलों की वेकुअम गुफा में**
**जैसे केवल शब्द भरे हों, नाद भरा हो।**
**वह जीवन की टेर**
**मरण हुँकार पी गयी,**
**शायद एस्कीमो सा लड़ता होगा मछुआ**
**शब्द डेल से।**

**शब्दार्थ– सरिता** = नदी। **नाद** = शोर। **टेर** =पुकार।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में कवि कहता है कि दूसरे तट पर खड़ा मछुआरा बेशक अपनी पत्नी के प्रेम के वशीभूत हो, उसके प्रति अपनी प्रेमपूर्ण पुकार कर रहा था परंतु उसकी पुकार उसकी पत्नी तक नहीं पहुंच रही थी, अपितु हवा के साथ उड़ जा रही थी। कवि पानी रूप में नदी बना हुआ था। उसके पानी की छाती पर चीं चीं चीं चीं करते हुए चिड़ियाँ उड़ रही थीं। दूसरे किनारे पर खड़ी उसकी पत्नी तक मछुआरे की प्रेम पुकार इसलिए भी नहीं पहुँच पा रही थी, क्योंकि वहीं पास में एक झरना अत्यंत ऊँचाई से शोर करता हुआ गिर रहा था। उसके शोर में जैसे पिघला हुआ शीशा भरा था और उस ऊँचे झरने की आवाज किसी भारी भरकम चट्टान के गिरने के आवाज जैसी भयंकर थी। इस भयंकर शोर के कारण मछुआरे की पत्नी (श्रद्धा) बहरी हो रही थी। ऐसा लग रहा था कि जैसे मीलों दूर फैली इस वेकुअम गुफा में केवल शब्द भरे थे, केवल शोर भरा था। मछुआरे की जीवन को तलाशती पुकार को मरण हुँकार पी गई लगती थी। संभवतः वह मछुआरा शब्द रूपी व्हेल से एस्कीमों की तरह लड़ रहा था।

**विशेष**–

1. मछुआरा को मनु तथा उनकी पत्नी को श्रद्धा का रूप दिया गया है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास व रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।
4. कविता छंद मुक्त है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।
7. मुझ में तीर्थों का जल विचरण करता आया,

**रात वरुण के नील महल में पूषा ने या सोम पिलाया-**
**''क्या मैंने है सोम पिया ?**
**ताड़ तुम्हारी शाखों पर हम नहीं रूकेंगे**
**इन मंडराती चीलों से कह दो हट जाएँ-**

**शब्दार्थ- विचरण** = घूमना। **वरुण** = जल। **पूषा** = चन्द्रकला विशेष। **सोम** = अमृत।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियां **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में सकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जब मैं पानी रूप में आगे बढ़ा जा रहा था, तब अनेक तीर्थों का जल घूमता हुआ मेरे जल में आकर मिल गया। रात्रि के समय ऐसा अनुभव हुआ जैसे वरुण देवता के नील-महल में चन्द्रकला विशेष ने मुझे अमृत पिला दिया हो। मैं समझ नहीं पाया कि मैंने वह अमृत पीया या नहीं। परंतु मुझ पर कुछ ऐसा नशा हुआ कि मुझे लगा जैसे मैं बादल हूँ और ताड़ से कह रहा हूँ कि हम तुम्हारी इन ऊँची शाखाओं पर रूकेंगे नहीं, अत: तुम अपने ऊपर मंडरा रही चीलों से कह दो कि वे हट जाएँ और हमारा मार्ग न रोके।

**विशेष-**

1. प्रकृति का अद्‌भुत चित्रण हुआ है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास एवं प्रश्न अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**ऐं क्या मैंने है सोम पिया ?**
**किन्तु न जाने क्यों ये गायें**
**मुझे मारने सींग तानती दौड़ रही हैं मैदानों में।''**
**कल का बादल आज बरस कर हरा हो गया-**
**मैं जब उतरा रेत देश में,**
**सूखे ये नैनों के ओसिस**
**चमड़े की मश्कें थी प्यासी....**
**मैं यदि उसकी दो चमड़े की गागर भर दूँ**
**तो पनीर वह मुझे खिलाये**
**ऊँट पालने वाले की ईरानी लड़की।**

**शब्दार्थ - ओसिस** = हरी घास। **गागर** = घड़ा।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित है। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि वह समझ नहीं पा रहा था कि उसने वह सोम पिया या नहीं परंतु उसे अनुभव रहा था कि पता नहीं क्यों ये गायें इन मैदानों में मुझे मारने के लिए सींग तानकर मेरी ओर बढ़ी आ रही हैं। पुन: कवि कहता है कि कल जो बादल आया था, आज वह बरस कर प्रसन्न हो गया है। कवि कहता है कि बादल के रूप में जब मैं एक रेतीले स्थान पर उत्तरा तब वहाँ के लोगों की आँखों में प्यास साफ नजर आती थी। उनकी चमड़े से बनी पानी भरने की मशकें खाली थीं। वे ऊँट पालते थे। एक ऊँट पालने वाले की ईरानी लड़की चाह रही थी कि यदि मैं अपने जल से चमड़े से बनी उनकी गागरें भर दूँ, तो वह मुझे पनीर खिलाएगी।

**विशेष**-

1. सूखे प्रदेश के निवासियों का बादलों के प्रति प्रेम वर्णित है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास व मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4 वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण सर्वत्र व्याप्त है।

**मैं जब उतरा प्यास व जंगल-के-जंगल,**
**चावल की घाटी सूखी थी,**
**फटी बिवाई-सी नदियों की गोद बिछी थी।**
**मैं तराइयाँ लाँघ जरा कुछ नीचे उतरा**
**लगे उलझने विद्युचरण पेड़ों काँटों में,**
**किन्तु आज मन आलोकित था**
**घेर-घेर कर बेर, झाड़ियाँ, ताड़, नारियल**
**अपनी झुलसी पीली पल्कें मिचका-मिचका लगे टोकने-**

**शब्दार्थ- तराई** = तलहटी। **आलोकित** = प्रकाशित।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि बादल के रूप में अपना अगला अनुभव बताता हुआ कहता है कि जब मैं जंगल में उतरा अर्थात् बरसा तब मैंने देखा कि तमाम जंगल के जंगल ही प्यास से व्याकुल थे। जिन खेतों में चावल उगाए जाते हैं, उन खेतों की तमाम घाटियों सूखी पड़ी हुई थी। नदियों में भी पानी नहीं था। नदियों के गोद की मिट्टी सूख कर ऐसे फट गई थी जैसे पाँवों में बिवाइयों पड़ने पर पाँव फट जाते हैं। कवि कहता है कि यह देखने के बाद मैं तलहटी लाँघ कर कुछ नीचे उत्तरा तो मेरे अंदर की बिजली के चरण पेड़-काँटों से उलझने लग गए, परंतु मेरा मन आज आलोकित हो रहा था। वहाँ उतरते ही बेर, झाड़ियों, ताड़ एवं नारियल के वृक्षों ने मुझे घेर लिया और गर्मी से झुलसी अपनी पीली पलकों को मिचका-मिचका कर मुझे टोकने लगे।

**विशेष**-

1. इन पंक्तियों में कवि ने सूखे, जंगलों, प्यासी घाटियों का वर्णन किया है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, उपमा व पुनरुक्तिप्रकाश अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**''मेघहंस...! तुम अब न लौटना मानसरोवर**
**अपने जलकलशों की छाया इस चौमासे हम पर करना''**
**भुज भर मिलों नर्मदा-गंगा**

**लगे पकड़ने मेरी छाया, खेत सलोने।**
**गाम गोयरे पहुंचा ही था**
**''पानी राजाः पानी बाबा!''**
**कह के. लगे माँगने ककड़ी भुट्टे**
**नाच-नाच कर वे सन्थाली, भील-मिलाले लड़की-लड़के।**

**शब्दार्थ- जलकलश** = जल के घड़े।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि जब वह बादल के रूप में एक सूखे जंगल में उतरा तब बेर, झाड़ियों, ताड़ एवं नारियल के वृक्षों ने उसे टोककर कहा कि हे मेघ रूपी हंस। अब तुम लौटकर वापस मानसरोवर मत जाना। वर्षा के इन चार महीनों में तुम अपने जलकलशों की छाया हम पर करना अर्थात् यहीं बरतना। कवि कहता है कि फिर सुंदर खेत मेरी छाया को पकड़कर कहने लगे कि तुम नर्मदा और गंगा से अपनी भुजाएँ भरकर मिलो अर्थात् अपने पानी से उन्हें भर दो। कवि कहता है कि मैं बादल के रूप में अभी एक गाँव में पहुँचा ही था कि वहाँ के सन्ध ाली भील, भिलाके लड़की लड़के मुझे पानी राजा! पानी बाबा कहकर एवं नाच-नाच कर मेरा स्वागत करने लगे और मुझसे ककड़ी एवं भुट्टे माँगने लगे।

**विशेष**-

1 संन्थाल प्रदेश में बादल के स्वागत का भावपूर्व चित्रण हुआ है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, रूपक, मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हआ है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**बैलों ने पहली फुहार को शिवा समझकर**
**नन्दी-सी निज पीठ बढ़ा दी।**
**मैदान देश की वधु सरिताएँ भारनता-सी क्यों चलती हैं?**
**शायद पानी का शिशु कन्धे पर है सोया।**
**मैं लौटा था गगनलोक का स्वर्ग देखकर**
**एकाकी, निर्जन उजाड़ जो,**
**स्वर्गलोक में कल्पवृक्ष का ठूंठ खड़ा है,**
**गगन पिरेमिड में रम्भा की ममी सो रही,**
**दरवाजों पर हड्डी का ताला लटका है।**

**शब्दार्थ- निज** = अपनी। **सरिताएँ** = नदियाँ। **एकाकी** = अकेला। **निर्जन** = सूना। **ममी** = परिरक्षित शव।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पक्तियों में कवि कहता है कि जब मैंने बादल के रूप में अपनी पहली फुहारें धरती पर डाली, तब बैलों ने खुश होकर मुझे शिव समझा तथा नंदी (शिव का वाहन) की तरह मेरी तरफ अपनी पीठ बढ़ा दी कि मैं उस पर बैठ जाऊँ। वहीं मैदानी क्षेत्र में सूखी नदियों को देखकर मेरे मन में प्रश्न हुआ कि मैदानी स्थानों की सरिता रूपी वधुएँ किसी गर्भवती की भाँति धीरे-धीरे क्यों चलती है तो लगा कि शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि पानी रूपी शिशु (कम पानी) इनके कंधों पर सोया है। कवि कहता है कि मैं तो आकाश लोक में स्थित स्वर्ग का दर्शन करके आया था, परंतु यहाँ आकर मैंने देखा कि यहाँ एकांत एवं निर्जन उजड़े स्थान पर जो वृक्ष खड़े हैं, वे स्वर्ग के कल्पवृक्ष के ठूँठ हैं। यहाँ के आकाश रूपी पिरामिड में रंभा (स्वर्ग की अप्सरा) की पनी (परिरक्षित शव) सो रही है, जिसके दरवाजों पर हड्डियों का ताला लटका हुआ है।

**विशेष**-

1. वर्षा के अभाव में संथाल प्रदेश के सूखे का मार्मिक चित्रण हुआ है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, उपमा, प्रश्न आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**गगन बिहारी कल का**
**आज नीम-सा लहर रहा हूँ,**
**रात-रात तक बोलूँगा अब गाम किनारे के पीपल का पत्ता बनकर,**
**पहरू जैसा।**
**मुझे द्वार पर लता रूप में उगा देखकर**
**मुझे द्वार पर लता रूप में उगा देखकर**
**किसी वधू ने मेरी लता अँगुली में था जीवन बाँस धमाया।**
**ईट पत्थरों की बाँहों से मुझे घेर लो**
**मैं न चाहता और भटकना शून्यलोक में-**
**बरस रहा हूँ चट्टानों पर, खलिहानों में,**
**नगर, ग्राम के मन आँगन पर,**
**मैं पृथ्वी का सदा पुत्र हूँ**
**है धरती ही माता मेरी!!**

**शब्दार्थ- गगन** = आकाश। **द्वार** = दरवाजा। **लता** = बेल।

**प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ **'आधुनिक हिन्दी कविता'** नामक हमारी हिन्दी की पाठय पुस्तक में संकलित कविता **'मेघ मैं'** से अवतरित हैं। इसके रचयिता नरेश मेहता हैं। इस कविता में कवि ने स्वयं को मेघ के रूप में चित्रित किया है।

**व्याख्या**-इन पंक्तियों में कवि कहता है कि सूखाग्रस्त क्षेत्र की दुर्दशा को अनुभव कर मैं, बादल जो कल तक आकाश में विचरण किया करता था। आज यहाँ के लोगों का कष्ट अनुभव करके किसी नीम की भाँति लहरा रहा हूँ अर्थात् इनके कटु दु:ख में शामिल हूँ तथा स्वयं को भी कष्ट में महसूस कर रहा हूँ। अब मैंने निश्चय किया है कि मैं गाँव के किनारे के पीपल के पत्ता बनकर रात-रात तक बोलता रहूँगा जैसे कोई पहरेदार बोलता है। कभी किसी द्वार पर मुझे किसी बेल के रूप में उगा हुआ देखकर किसी वधू ने मेरी बेल रूपी अँगुली में जीवन रूपी बाँस थमाया था। मैं अब यहीं बरसना चाहता हूँ। अत: चाहता हूँ कि सब मुझे ईट-पत्थर की दीवारों रूपी बाँहों से घेर लें ताकि मैं यहाँ से कहीं जा न पाऊँ। मैं अब किसी शून्य लोक में और मटकना नहीं चाहता। इसलिए अब मैं चट्टानों पर, खेत-खलिहानों में, नगर एवं गाँव के मन रूपी आँगन में बरस रहा हूँ, मैं तो पृथ्वी का सच्चा पुत्र हूँ। वास्तव में धरती ही मेरी माता है।

**विशेष-**

1. बादल रूप में कवि सबके कष्टों को हरने हेतु धरती पर बरस जाना चाहता है।
2. भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, उपमा, पुनरुक्तिप्रकाश आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
4. वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
5. तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।
6. प्रसाद गुण का प्रयोग है।

**स्वयं आकलन के लिए अभ्यास प्रश्न**

1. नरेश मेहता का इंतकाल कब हुआ?
2. 'पीले फूल कनेर के' रचयिता कौन हैं?
3. 'प्रवाद पर्व' का प्रकाशन कब हुआ?
4. दूसरे सप्तक में नरेश मेहता की कितनी कविताएँ छपी थी?

## 24.5 सारांश

नरेश मेहता की चर्चित कविताओं में एक तीर्थ जल है जिसमें मेहता जी ने स्थानों में स्थित कुण्डों तथा सरोवरों में जल की व्यथा को दर्शाया है। पीले फूल कनेर के कविता में नरेश मेहता जी द्वारा एक फूल के माध्यम से सुकृति का मनमोहक चित्रण किया है साथ ही विरह वेदना में अपने प्रियतन की प्रतीक्षा में कवि स्वयं को बादल रूप में मानकर स्वर्ग में विचरण करता हुआ दर्शाया गया है।

## 24.6 कठिन शब्दावली

**पाखी** – पत्नी

**पथ** - मार्ग

**दुपेर** - दोपहर

**रास** - नृत्य

**नैनमेघ** - आँखों के बादल

## 24.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1. 23 नवम्बर, 2001 ई.
2. नरेश मेहता
3. 1977 ई.
4. दस

## 24.7 संदर्भित पुस्तकें


1. नरेश मेहता, संपूर्ण कविताएँ, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. प्रभाकर क्षोत्रिय, (सं.) नरेश मेहता रचना संचय, साहित्य अकादमी दिल्ली।


## 24.8 सात्रिक प्रश्न

प्रश्न. 'तीर्थ जल' कविता का सार लिखिए।

प्रश्न. 'पीले फूल कनेर के' कविता का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न. 'मेघ मैं' कविता के प्रतिपाद्य का वर्णन कीजिए।

*****

बी०ए० हिन्दी
द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र-DSC-IC
कोर्स कोडः HIND 202

# आधुनिक हिन्दी कविता

इकाई 1 से 24

लेखक : अविनाश कुमार
फूला देवी
भीम सिंह

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ समरहिल, शिमला-05

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| इकाई–1 | भारतेन्दु हरिश्चंद्र : जीवन एवं साहित्य | |
| इकाई–2 | भारतेन्दु हरिश्चंद्र : काव्यगत विशेषताएँ | |
| इकाई–3 | भारतेन्दु हरिश्चंद्र : व्याख्या भाग | |
| इकाई–4 | अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : जीवन एवं साहित्य | |
| इकाई–5 | अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : काव्यगत विशेषताएँ | |
| इकाई–6 | अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : व्याख्या भाग | |
| इकाई–7 | मैथिलीशरण गुप्त : जीवन एवं साहित्य | |
| इकाई–8 | मैथिलीशरण गुप्त : काव्यगत विशेषताएँ | |
| इकाई–9 | मैथिलीशरण गुप्त : व्याख्या भाग | |
| इकाई–10 | जयशंकर प्रसाद : जीवन एवं साहित्य | |
| इकाई–11 | जयशंकर प्रसाद : काव्यगत विशेषताएँ | |
| इकाई–12 | जयशंकर प्रसाद : व्याख्या भाग | |
| इकाई–13 | सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : जीवन एवं साहित्य | |
| इकाई–14 | सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : काव्यगत विशेषताएँ | |
| इकाई–15 | सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : व्याख्या भाग | |
| इकाई–16 | सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय : जीवन एवं साहित्य | |
| इकाई–17 | सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय : काव्यगत विशेषताएँ | |
| इकाई–18 | सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय : व्याख्या भाग | |
| इकाई–19 | नागार्जुन : जीवन एवं साहित्य | |
| इकाई–20 | नागार्जुन : काव्यगत विशेषताएँ | |
| इकाई–21 | नागार्जुन : व्याख्या भाग | |
| इकाई–22 | नरेश मेहता : जीवन एवं साहित्य | |
| इकाई–23 | नरेश मेहता : काव्यगत विशेषताएँ | |
| इकाई–24 | नरेश मेहता : व्याख्या भाग | |